धीरे बहे दोन रे

रूस में बदलती संस्कृति के चित्रण का
महान मानवीय उपन्यास

मिखाइल शोलोखोव
अनुवादक गोपीकृष्ण 'गोपेश'

प्रथम खण्ड



राजकमल प्रकाशन

© १९६५ राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली।

मूल्य आठ रुपये

प्रकाशक
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
दिल्ली
मुद्रक
[illegible] प्रिंटमन नई दिल्ली ५

क्रम

Not by the plough is our glorious earth furrowed
Our earth is furrowed by horses hoofs
And sown is our earth with the heads of Cossacks
Fair is our quiet Don with young widows
Our father the quiet Don blossoms with orphans
And the waves of the quiet Don are filled
with fathers' and mothers tears.

Oh thou our father the quiet Don !
Oh why dost thou our quiet Don so sludgy flow ?
How should I the quiet Don but sludgy flow !
From my depths the cold springs beat
Amid me the quiet Don the white fish leap

Old Cossack Songs

Not by the plough is our glorious earth furrowed
Our earth is furrowed by horses' hoofs
And sown is our earth with the heads of Cossacks
Fair is our quiet Don with young widows
Our father the quiet Don blossoms with orphans
And the waves of the quiet Don are filled
with fathers' and mothers' tears.

Oh thou our father the quiet Don!
Oh why dost thou our quiet Don so sludgy flow?
How should I the quiet Don but sludgy flow!
From my depths the cold springs beat
Amid me the quiet Don the white fish leap

Old Cossack Songs

भाग १

१

मेलेखोव परिवार का फ़ार्म गाँव के अन्तिम छोर पर था। उत्तर की ओर ढलान में बाड़े का फाटक था। फाटक दोन की ओर खुलता था। बाड़े के बाद पचास फुट लम्बा ढाल था। किनारे की खड़िया काई से मढ़ी हुई थी। ऊपर की ओर सम्बुक के सीपों का पसारा था, बाद में गोल चिकने पत्थरों की जहाँ-तहाँ से टूटी पट्टी थी और इसके नीचे नदी की इस्पाती नीली सतह थी। लहरिया ना हवा के थपेड़े रह रहकर छेड़ जाते थे। पूर्व में बेंतों की टट्टियों वाले खलिहानों के पार हेतमान का चौड़ा रास्ता था, चिरायते की भूरी झाड़ियाँ थीं, जानवरों के खुरों से रौंदी जंगली घास के हलके भूरे गमिन झाड़ थे, चौराहे पर खड़ा सलीब था और फिर क्षण-क्षण पर छा जाने और कट जाने वाली धुंध से लिपटा स्टेपी का मैदान था। दक्षिण में खड़िया की पहाड़ियों का सिलसिला था। पश्चिम में सड़क थी। सड़क चौक को पार कर चरागाहों की ओर निकलती थी।

पिछली लड़ाई से पहले की तुर्की लड़ाई चल रही थी कि प्रोकोफ़ी मेलेखोव नाम का कज़्ज़ाक अपने गाँव को लौटा। लौटा तो अपने साथ एड़ी से चोटी तक शाल में लिपटी एक बीवी लाया। बीवी अपना चेहरा सदा ढके रहती। उसकी उजड़ी उजड़ी प्यासी-प्यासी-सी आँखों की झलक शायद ही कभी किसी को मिलती। उसका रेशमी शाल अजीब अजीब-सी सुगन्धियों से महक-महक करता और शाल के इन्द्रधनुषी

नमूनों को देखकर गाँव की स्त्रियाँ ईर्ष्या से भर उठतीं। कैदी बनाकर लाई गई यह औरत प्रोकोफी के सगे-सम्बन्धियों से कटी-कटी रहती। यह देख प्रोकोफी के पिता बूढ़े मेलखोव ने जल्दी ही लड़के का हिस्सा बाँट कर दिया और फिर जीवन भर लड़के के यहाँ कदम नहीं रखा। अपमान का काँटा उसे सदा-सदा सालता रहा।

प्रोकोफी ने सारा प्रबन्ध जल्दी-जल्दी कर डाला। बढ़इयों से उसने अपनी झोंपड़ी बनवाई, ढोरों के बाड़े की बाड़ स्वयं खड़ी की और शरद के शुरू होते-होते अपनी दबी घुटी विदेशी पत्नी को साथ ले नये घर की ओर चल पड़ा। दुनिया भर के सामानों से लदी बैलगाड़ी आगे आगे चली। क्या बूढ़े क्या बच्चे—सभी लोग गलियों में दौड़े चले आए। पुरुष तो होठों ही-होठों में मुसकराकर रह गए, किन्तु स्त्रियाँ व्यंग्य-बाण बरसाने लगीं। मटकुर्बने कज्जाक लड़कों की भीड़ हल्ला गुल्ला करती उन दोनों के पीछे हो ली। किन्तु प्रोकोफी अपने ओवरकोट के बटन खोले इस तरह धीरे धीरे आगे बढ़ता रहा, जैसे कि हल की लीकों पर चल रहा हो। इस बीच अपनी बड़ी बड़ी काली-काली हथेलियों में उसने पत्नी की दुबली कलाई कस रखी। सिर पर स्ट्रॉ का सफेद टोप सधा रहा और उसके नीचे बालों के गुच्छे इस तरह ऐंठे रहे जैसे कि दुनिया के सामने सीना तानकर खड़े हों। गालों की हड्डियों के नीचे की झिल्लियाँ फूल-फूल और काँप-काँप उठती रहीं और तनी हुई भौंहों के बीच पसीने की बूँदें चमकती रहीं।

इसके बाद वह फिर कभी गाँव में नज़र नहीं आया और कज्जाकों की सभा-समारोहों में भी हिस्सा नहीं लिया। दोन के किनारे बने अपने मकान में एकाकी जीवन व्यतीत करता रहा। उसके विषय में अनेक विचित्र कथाएँ गाँव में फैल गई। चरागाह की सड़क के पार गायों के बछड़ों को चराने वाले लड़कों ने कहा—

एक दिन शाम को दिन ढल रहा था कि हमने प्रोकोफी को देखा। वह अपनी पत्नी को गोद में लिये तातार टीले पर चढ़ा। वहाँ एक पुरानी एक छिपीली चट्टान के सहारे उसने औरत को बिठा दिया। फिर दोनों ही सामने के स्टेपी मैदान के आर-पार टकटकी बाँधकर देखते रहे और

तब तक टहलता रहा जब तक कि अँधेरा न हो गया। उसके बाद प्रोकोफ़ी उठा, उसने अपनी पत्नी को भेड़ की खाल से ढका और घर को लौट आया।

गाँव-का-गाँव अटकलें लगाने लगा कि आखिर प्रोकोफ़ी ऐसा विचित्र व्यवहार करता क्यों है। औरतें तो इस पचायत में इस तरह डूबतीं कि एक-दूसरे की जुएँ बीनना तक भूल जातीं। प्रोकोफ़ी की पत्नी के विषय में भी तरह-तरह की अफ़वाहें फैल गईं। कुछ लोग कहते कि उसके रूप में जादू है और कुछ कहते कि नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। आखिरकार एक दिन यह भेद भी खुला। हुआ यह कि एक फ़ौजी की अत्यन्त साहसी पत्नी मावरा नमक लेने के बहाने दौड़ी-दौड़ी प्रोकोफ़ी के घर गई। प्रोकोफ़ी नमक लाने के लिए उठकर कोठरी में गया कि मावरा ने उसकी पत्नी पर नज़र डाली तो खुला कि प्रोकोफ़ी की तुर्की औरत भयानक है।

थोड़ी देर बाद मावरा का तमतमाया चेहरा पतली-सी गली में दीखा। वहाँ वह औरतों की भीड़ जुटाकर प्रोकोफ़ी की पत्नी का मज़ाक उड़ाने लगी—

'न जाने उसने उसमें ऐसा क्या देखा? वह भी कोई औरत है! जानवर है जानवर! उससे कहीं खूबसूरत तो हमारे यहाँ की वे लड़कियाँ हैं जिनके रंग थोड़े ढके हुए हैं। अल्लाह झूठ न बुलवाए, बड़ी-बड़ी काली-काली आँखें शैतान की तरह चमक करती हैं। अब तो पूरे दिन हैं।'

'पूरे दिन हैं?' स्त्रियाँ आश्चर्य से बोलीं।

'मैं कोई दुधमुँही बच्ची तो नहीं हूँ? तीन-तीन तो मैंने खुद जने हैं।'

'चेहरा कैसा है?'

'उसका चेहरा? पीला—आँखों में चमक नहीं। अजनबी जगह शायद पसन्द नहीं आता। और नई बात बतलाऊँ, वह पाजामा पहनती है, पाजामा—प्रोकोफ़ी का पाजामा!'

यहाँ औरतों की साँस नीचे-की-नीचे और ऊपर-की-ऊपर रह गई।

मैं तो खुद देखकर आई हूं बस यह है कि उसमें धारियाँ नहीं हैं। यह प्रोकोफी का रोजमर्रा के पहनने का पाजामा होगा। और हाँ वह लम्बी कुरती भी पहनती है। उस उधार दी तो मोजों में ठुंसा पाजामा निकल आए। मेरा तो उसे देखते ही खून ठण्डा पड़ गया।

इसके बाद तो गाँव में सब यही कहते कि प्रोकोफी की स्त्री डाइन है। अस्ताखोव-परिवार प्रोकोफी की बिलकुल बगल में रहता था। अस्ताखोव के लड़के की बहू कसम खाती हुई बोली अभी उस दिन मैंने देखा कि प्रोकोफी की औरत नंगे पाँव सिर के बाल खोले बैठी हमारी गाय दुह रही है। बस उसके बाद में ही गाय के थन सिकुड़ने लगे तो बच्चे की मुट्ठी के बराबर रह गए। दूध तो फिर गाय ने दिया ही नहीं और थोड़े ही दिनों बाद मर भी गई।

उस साल जानवरों की मौतें गैर-मामूली तौर पर हुई। हर दिन मरी हुई गायों और बछड़ों के धड़ दोन के कछार में नजर आए। फिर घोड़ों की बारी आई। गाँव की चरागाह में चरते चरते घोड़ों के झुण्ड-के-झुण्ड गायब होने लगे। गाँव की गली-गली में बदनामी पंख लगाकर उड़ने लगी।

एक दिन कज्जाकों ने मिलकर एक सभा की और फिर सब-के-सब प्रोकोफी के घर गये। प्रोकोफी बाहर निकलकर सीढ़ियों पर आया और अभिवादन में झुका—साथ बुजुर्गो क्या हुक्म है ?

कोई कुछ नहीं बोला। भीड़ सीढ़ियों की तरफ बढ़ी। वहाँ शराब के नशे में चूर एक बूढ़े ने चीखकर कहा अपनी डाइन को घसीटकर घर के बाहर ला। हम लोग उससे सवाल जवाब करेंगे

यह सुनते ही प्रोकोफी अन्दर की ओर भागा किन्तु कुछ लोगों ने उस बीच में ही पकड़ लिया। एक हट्टा-कट्टा लूकानिया नाम से पुकारे जाने वाले कज्जाक ने उसका सिर दीवार से भिड़ा दिया और बोला—हंगामा न कर। मार धाड़ करने की जरूरत नहीं। हम तुझे हाथ नहीं लगायेंगे लेकिन तेरी औरत को छोड़ेंगे नहीं उसे जमीन में गाड़ देंगे। सारे गाँव के जानवर मरें इससे तो यही बहतर है कि उसे ही खतम कर दिया जाए। देख मुँह में सुमे नहीं तो दीवार से

टकराकर तेरा सिर चूर-चूर कर डालूँगा।

डाइन को खींचकर अहाते में ले आओ। सीढ़ियों पर खड़े लोग चीखे। प्रोकोफ़ी की रेजीमेंट के उसके अपने एक साथी ने हाथ उस तुर्की औरत के सिर के बाल एक हाथ में कसे और दूसरे से चिल्लाहट को दबाने के लिए उसका मुँह दबाया। वह उसे बरसाती से घसीटता हुआ लाया और लाकर उसे भीड़ के कदमों में डाल दिया। लोगों के शोर-गुल को चीरती एक पतली-सी चीख निकली।

प्रोकोफ़ी ने कोई आधे दर्जन कज्जाकों को धक्का देकर एक ओर कर दिया, झपटता हुआ अन्दर गया और दीवार पर टँगी कटार को लिए दौड़ता हुआ बाहर आया। कज्जाक एक-दूसरे पर गिरते-पड़ते घर से बाहर भागे। प्रोकोफ़ी चमचमाती हुई कटार को अपने सिर के चारों ओर सनसनाता सीढ़ियों से नीचे आया। भीड़ पीछे हटी और भाग अहाते में जहाँ-तहाँ बिखर गए।

लूशनिया शरीर का भारी था। वह खलिहान तक पहुँचते पहुँचते प्रोकोफ़ी के हाथ आ गया। प्रोकोफ़ी ने कटार के एक तिरछे वार से बाएँ कंधे से कमर तक उसका शरीर एक का दो कर दिया। बाड़ के बेंतों को चीरती हुई भीड़ खलिहान पार कर स्टेपी की ओर भागा।

लगभग आधे घंटे बाद भीड़ ने फिर हिम्मत बाँधी और लोग प्रोकोफ़ी के फ़ार्म में पहुँचे। दो लोग बड़ी सावधानी से रास्ते की तरफ़ बढ़े। बावर्चीख़ाने की ड्योढ़ी पर खून में डूबी प्रोकोफ़ी की पत्नी पड़ी मिली। उसका सिर अजीब-सी हालत में पीछे की तरफ़ झूल रहा था। होंठ पीड़ा से ऐंठ रहे थे और जबान मुँह से बाहर लटक रही थी। प्रोकोफ़ी का सिर हिचकियों के कारण रह-रहकर काँप रहा था। वह बिलखते हुए, एक छोटी-सी गेंद-जैसी चीज को शून्य दृष्टि से निहारते हुए भेड़ की खाल में लपेट रहा था। बच्चा समय से पहले ही पैदा हो गया था।

प्रोकोफ़ी की पत्नी उसी दिन शाम को मर गई। उसकी बूढ़ी माँ को बच्चे पर दया हो आई और उसने बच्चे के लालन-पालन का भार अपने ऊपर ले लिया। उसके शरीर पर चोकर-भुसी का प्लास्टर चढ़ाया

मैं तो खुद देखकर आई हूँ बस यह है कि उसमें धारियाँ नहीं हैं। वह प्रोकोफी का रोजमर्रा के पहनने का पाजामा होगा। और हाँ वह लम्बी कुरती भी पहनता है। उसे उघाड़ दो तो मोजों में ठुसा पाजामा निकल आए। मेरा तो उसे देखते ही खून ठण्डा पड़ गया।

इसके बाद तो गाँव में सब यही कहते कि प्रोकोफी की स्त्री डाइन है। अस्ताखोव परिवार प्रोकोफी की बिल्कुल बगल में रहता था। अस्ताखोव के लड़के की बहू कसम खाती हुई बोली "अभी उस दिन मैंने देखा कि प्रोकोफी की औरत नंगे पाँव सिर के बाल खोले बड़ी हमारी गाय दुह रही है। बस उसके बाद में ही गाय के थन सिकुड़ने लगे तो बच्चे की मुट्ठी के बराबर रह गए। दूध भी फिर गाय ने दिया ही नहीं और थोड़े ही दिनों बाद मर भी गई।

उस साल जानवरों की मौतें ग़ैर-मामूली तौर पर हुई। हर दिन मरी हुई गायों और बछड़ों के धड़ दोन के कछार में नजर आए। फिर घोड़ों की बारी आई। गाँव की चरागाह में चरते चरते घोड़ों के झुण्ड-के-झुण्ड ग़ायब होने लगे। गाँव की गली-गली में बदनामी पख लगाकर उड़ने लगी।

एक दिन कज्ज़ाकों ने मिलकर एक सभा की और फिर सब-के-सब प्रोकोफी के घर गये। प्रोकोफी बाहर निकलकर सीढ़ियों पर आया और अभिवादन में झुका— लायक बुज़ुर्गों क्या हुक्म है?

कोई कुछ नहीं बोला। भीड़ सीढ़ियों की तरफ बढ़ी। वहीं शराब के नशे में चूर एक बूढ़े ने चीखकर कहा "अपनी डाइन को घसीटकर घर के बाहर ला। हम लोग उससे सवाल जवाब करेंगे।"

यह सुनते ही प्रोकोफी अन्दर की ओर भागा किन्तु कुछ लोगों ने उसे बीच में ही पकड़ लिया। एक हट्टे-कट्टे सूर्नाचिया नाम से बुलाए जाने वाले कज्ज़ाक ने उसका सिर दीवार से सटा दिया और बोला— "हंगामा न कर। शोर-शराबा करने की जरूरत नहीं। हम तुझे हाथ नहीं लगायेंगे लेकिन तेरी औरत को छोड़ेंगे नहीं। उसे खोदकर ज़मीन में गाड़ देंगे। सारे गाँव के जानवर मरें इससे तो यही बेहतर है कि उसे ही खतम कर दिया जाए। देख मुँह न खोले नहीं तो दीवार से

टकराकर तेरा सिर चूर चूर कर डालूँगा।

डाइन को खींचकर अहाते में ले आओ। अटारियों पर खड़े लोग चीखे। प्रोकोफ़ी की रेजीमेंट के उसके अपने एक साथी ने हाथ उस तुर्की औरत के सिर के बाल एक हाथ में थामे और दूसरे से चिल्लाहट को दबाने के लिए उसका मुँह दबाया। यों उसे बरसाती में घसीटता हुआ लाया और लाकर उसे भीड़ के कदमों में डाल दिया। लोगों के शोर-गुल को चीरती एक पतली-सी चीख निकली।

प्रोकोफ़ी ने कोई आधे दर्जन कज़्ज़ाकों को धक्का देकर एक ओर कर दिया, झपटता हुआ अन्दर गया और दीवार पर टँगी कटार को लिये दौड़ता हुआ बाहर आया। कज़्ज़ाक एक-दूसरे पर गिरते-पड़ते घर से बाहर भागे। प्रोकोफ़ी चमचमाती हुई कटार को अपने सिर के चारों ओर सनसनाता सीढ़ियों से नीचे आया। भीड़ पीछे हटी और लोग अहाते में जहाँ-तहाँ बिखर गए।

यूशनिया शरीर का भारी था। वह खलिहान तक पहुँचते पहुँचते प्रोकोफ़ी के हाथ आ गया। प्रोकोफ़ी ने कटार के एक तिरछे वार से बाएँ कन्धे से कमर तक उसका शरीर एक का दो कर दिया। बाड़ के बेंतों को चीरती हुई भीड़ खलिहान पार कर स्टेपी की ओर भागा।

लगभग आध घंटे बाद भीड़ ने फिर हिम्मत बाँधी और लोग प्रोकोफ़ी के फ़ार्म में पहुँचे। दो लोग बड़ी सावधानी से रास्ते की तरफ़ बढ़े। बावर्चीख़ाने की ड्योढ़ी पर ख़ून में डूबी प्रोकोफ़ी की पत्नी पड़ी मिली। उसका सिर अजीब-सी हालत में पीछे की तरफ़ झूल रहा था। होंठ पीड़ा से ऐंठ रहे थे और ज़बान मुँह से बाहर लटक रही थी। प्रोकोफ़ी का सिर हिचकियों के कारण रह रहकर काँप रहा था। वह बिलखते हुए, एक छोटी-सी गेंद-जैसी चीज़ को शून्य दृष्टि से निहारते हुए उसे भी शाल में लपेट रहा था। बच्चा समय से पहले ही पैदा हो गया था।

प्रोकोफ़ी की पत्नी उसी दिन शाम को मर गई। उसकी बूढ़ी माँ को बच्चे पर दया हो आई और उसने बच्चे के लालन-पालन का भार अपने ऊपर ले लिया। उसके शरीर पर चोकर-भूसी का प्लास्टर चढ़ाया

गया और उसे घोड़ी का दूध पिलाया गया। एक महीने बाद कहीं जाकर विश्वास हुआ कि बालक जी जाएगा। अब सोकन देखने में तुर्की सा लगते। उस बच्चे को गिरजे में ले जाया गया और उसका बपतिस्मा कराया गया। नाम बाबा के नाम पर रखा गया—पन्तेला।

प्रोकोफी निर्वासन का दण्ड भोगकर बारह वर्ष बाद रूसी लिबास से लैस गाँव को लौटा तो तराशी हुई ललछरी दाढ़ी में जहाँ-तहाँ सफेद बाल नज़र आए। इस रूप में वह कज्ज़ाक तो जैसे लगा ही नहीं। अब उसने अपने बेटे को अपनी माँ से वापस लिया और अपने काम में आ बसा।

पन्तेला बड़ा हुआ तो उसका रंग और ढंग गया। स्वभाव ऐसा कि उस पर हुक्म किसी का न चले। नाक-नक्शा और गठन ऐसी कि उसे देखा तो उसकी माँ की याद आए। प्रोकोफी ने उसकी शादी पड़ोस के एक कज्ज़ाक से कर दी।

इसके बाद से तुर्की खून कज्ज़ाक खून में घुलने मिलने लगा। इस प्रकार नुकीली नाकोंवाला देखने-सुनने में बहुत ही सुन्दर लोगों का मेलेखोव-परिवार गाँव में अस्तित्व में आया। गाँववाले इस परिवार के लोगों को तुर्क कहने लगे।

प्रोकोफी की मृत्यु हुई तो पन्तेली ने काम सम्हाल लिया। उसने अपना घर फिर से छवाया फ़ार्म में एक एकड़ ज़मीन और बढ़ाई नये ढोर बनवाये और लोहे की चादर की छतवाली एक खत्ती तैयार करवाई। यहीं नहीं, टीन का काम करने वाले कारीगर से उसने कच्चे लोहे की पत्तियों की दो मौसम उजागरियाँ बनवाई और एक दिन स्वयं ही जाकर खत्ती की छत पर वह उन्हें जमा आया। होते होते मेलेखोव के नेत आँगन की शोभा बढ़ गई। फ़ार्म हर दृष्टि से पूर्ण और भरा-पूरा लगने लगा।

ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ी पैन्तेली प्रोकोफ़ियविच गठीला और फटफटा होता गया। वह चौड़ा गया पीठ कुछ झुकी किन्तु वृद्ध होने पर भी हट्टा-कट्टा रहा—हड्डियाँ कहाँ एक नहीं। हाँ जवानी के दिनों में शाही फ़ौजों के प्रदर्शन के सिलसिले में टाँग तोड़ लेने के कारण वह हर्डिल रेस में लँगड़ाता अब तक था। बाएँ कान में चाँदी की अर्ध चन्द्र बाली वह अब

भी पहनता और उसके सिर तथा दाढ़ी के बाल अब भी काले लगते और चमकते। गुस्सा उसका खराब होता। गुस्से मे वह अपने आपे से बाहर हो जाता। इसका कुप्रभाव उसकी पत्नी पर पड़ा। कभी वह ओला जागता हुस्न थी पर आज समय से पहले बूढ़ी लगने लगी थी और उसके चेहरे पर झुरियों ने अपना जाला-सा बुन लिया था।

पन्तेली के दो लड़के हुए। बड़ा प्योत्र अपनी माँ को पड़ा—भारी भरकम उठी हुई नाक हलके भूरे बाल पीले रंग की हलकी भलक मारती आँखें। छोटा ग्रिगोरी अपने पिता को गया—उम्र में छः साल छोटा होने पर भी प्योत्र से आया हाथ लम्बा पिता की तरह बाज़ों-सी नाक नीली पुतलियों वाली तिरछी आँखें चहरे की हड्डियाँ नुकीली भरा हुआ चहरा। ग्रिगोरी अपने पिता की ही भाँति कुछ आगे की ओर झुककर चलता यहाँ तक कि उसकी मुसकान भी पिता की मुसकान से मिलती।

पन्तेली के एक लड़की भी थी। पिता की दुलारी देखने में सुन्दर नाम दून्या—क़द लम्बा बदन छरहरा आँखें बड़ी। उसकी पुत्रवधू प्योत्र की पत्नी का नाम दारिया था। उसके एक नन्हा-मुन्ना सा बच्चा भी था।

यह था पन्तेली का पूरा परिवार।

२

तड़के के झुटपुटे के आसमान में तारे अब भी जहाँ-तहाँ से झाँक रहे थे। बादलों के नीचे से हवा चली आ रही थी। दोन के ऊपर धुंध लहरें ले रही खड़िया की तरह पहाड़ी के ढाल पर जमा हो रही और फनहीन भूरे साँप की तरह नाले-नालियों की ओर रेंगती जा रही थी। नदी का बायाँ किनारा रेत का पसारा जंगल के पीछे के ताल-तलैया खेतों के दलदली खेत और ओस से नहाए पेड़ सुबह के उजाले में लौ-सी दे रहे थे। क्षितिज के पार सूर्य ने अंगड़ाई ली किन्तु दर्शन नहीं दिए।

घर में सबसे पहले पन्तेली प्रोकोफ़ियविच की नींद खुली। क़सीदे के काम वाली क़मीज़ के बटन बन्द करता वह बाहर निकलकर सीढ़ियों पर आया। अहाते की घास रुपहली ओस से ढकी दीखी। उसने पशुओं को

सड़क पर निकला। दारिया दूध दुहने सामने से गुजरी तो उसके नंगे उजले पैरों की पिंडलियों पर ओस छिड़क उठी। उसके पीछे धुआँ देता सा सपाट बादल-सा उठता रहा। पैन्तेली प्रोकोफ़ियेविच ने कुछ गाना तब दारिया के पाँवों से दब गई घास की पत्तियों का सिर उठाते देखा और सोने के कमरे में लौट आया।

सपाट खुली खिड़की से सामने का बाग दिखलाई दे रहा था। खिड़की के थामे पर फूलती हुई चेरी के पेड़ों की लाल पंखुड़ियाँ पड़ी हुई थीं। ग्रिगोरी पीठ के बल पड़ा सो रहा था। एक हाथ पाटी पर झूल रहा था।

ग्रिगोरी चलता है मछली पकड़ने? पन्तेली ने पूछा।

क्या? ग्रिगोरी ने धीमे स्वर में पूछा और एक टाँग नीचे लटका दी।

चलो आज शाम तक मछली पकड़ेंगे।' पैन्तेली बोला।

नाक से गहरी साँस ले ग्रिगोरी ने खूँटी पर लटका रोज पहनने का पाजामा उतारकर पहना, सफ़ेद ऊनी मोज़े चढ़ाये और दबी हुई एड़ियों को सीधा करते हुए धीरे धीरे अपने सलिपरों में डाले।

माँ ने मछली का चारा उबाला है कि नहीं? पिता के पीछे-पीछे बरसाती में आते हुए ग्रिगोरी ने भारी स्वर में पूछा।

हाँ उबाल दिया है। तू नाव पर चल मैं आया एक मिनट में।

बूढ़े ने ज़ोरों से महकती उबली राई जग में भरी गिरे हुए दाने सावधानी से उठाये और लंगड़ाता हुआ नदी के किनारे की ओर चल दिया।

किस तरफ चला जाए? ग्रिगोरी ने पूछा।

काले किनारे की तरफ। अभी उस दिन जिस लट्ठे के आस-पास बैठे थे आज भी वहीं किस्मत आजमाएँगे।

अपने पीछे के हिस्से से ज़मीन को रगड़ते हुए नाव ने किनारा छोड़ा और लहरों पर बह चली। धारा हिचकोले देती उसको थपेड़े की थपकियाँ देती उसे अपने आप वहाँ से चली। ग्रिगोरी ने डाँड नहीं साधे बल्कि पतवार सम्हाली।

तम्बाकू क्यों नहीं पी रहे हो? पिता ने पूछा।

बीच धार म सा आ जाएँ पहल।

खास बड़ी धारा का काटते हुए नाव वाए तट का आर मुडी। उस पार स आती मुर्गों की कुरड् कू उनक काना म पडी। पानी क बाहर उभरी कन्करीली काली चट्टान को खरोंचती नाव नीचे क ताल म आ गई। तट स कोई चालीस फुट दूर झुके हुए एल्म वृक्ष की ऐंठी हुई डालियाँ पानी से मुक्त दीखीं। पेड के चारो ओर फन की भवरें बचती स नाव और चक्कर काट रही था।

मैं चारा पानी मे फेंकता हू तब तक तुम बसी ठीक करो। धीमे स पत्लमी बाला। जग क भाप छोडते मु ह म हाथ डाला और पानी क ऊपर राई छितरा दा। आवाज हुई 'गिक'! ग्रिगोरी ने फूल हुए दाने हुक में फसाए और मुसकरा उठा।

चली आओ सुनती हो छोटा मछलियो तुम भी और बडी मछलियो तुम भी

पानी म बसी की डोरी क चक्र पडे डारी कडी पडी और फिर ढीली हो गई। ग्रिगोरी ने बसी के सिरे पर अपना पाँव जमाया और होशियारी स इधर उधर चली टटोली।

पापा आज तकदीर साथ नहीं देगी। चाँदनी इन दिना घटाव पर है। वह बोला।

दियासलाई लाया है ?

'हाँ।

'जरा जला

बूढ़ा धुआँ उडाने लगा। उसने एल्म-वृक्ष की चाटी क पीछ ठिठके सूरज पर एक नजर डाली। बोला न जाने क्य काप[1] फन जाए कभी तो अँधियारी रातों में भी हाथ लग जाता है।

'लगता है कि छोटी मछलियाँ चार मे मुह लगा रही हैं।

पानी म थपेड नाव क दोनो ओर जोर-जार स लगते रहे। अपनी चौडी ऐंठती पूँछ से पानी मथती कराहती हुई एक चार फुटी काप मछली

---

१ एक प्रकार की मछली।

सड़क पर निकाला। दारिया दूध दुहने सामने से गुजरी तो उसके नंगे उजले पैरों की पिंडलियों पर ओस छिड़क उठी। उसके पीछे धुआँ देता-सा सपाट बादल-सा उठता रहा। पैन्तली प्रोकोफियविच ने कुछ क्षण तक दारिया के पाँवों से दब गई घास की पत्तियों का सिर उठाना देखा और सोने के कमरे में लौट आया।

सपाट खुली खिड़की से सामने का बाग दिखलाई दे रहा था। खिड़की के चौखटे पर फूलती हुई चेरी के पेड़ों की लाल पंखुड़ियाँ पड़ी हुई थीं। ग्रिगोरी पीठ के बल पड़ा सो रहा था। एक हाथ पाटी पर झूल रहा था।

ग्रिगोरी चलता है मछली पकड़ने ? पंतेला ने पूछा।

क्या ? ग्रिगोरी ने धीमे स्वर में पूछा और एक टाँग नीचे लटका दी।

चलो आज शाम तक मछली पकड़ेंगे।' पैन्तली बोला।

नाक से गहरी साँस ले ग्रिगोरी ने खूँटी पर लटका रोज पहनने का पाजामा उतारकर पहना सफेद ऊनी मोजे चढ़ाये और दबी हुई एड़िया को सीधा करते हुए धीरे धीरे अपने सख्त पैरों में डाले।

माँ ने मछली का चारा उबाला है कि नहीं ? पिता के पीछे-पीछे दरसाती में आते हुए ग्रिगोरी ने भारी स्वर में पूछा।

हाँ उबाल लिया है। तू नाव पर चल मैं आया एक मिनट में।

बूढ़े ने बोरा से महकती उबली राई अंजुरी में भरी गिरे हुए दाने सावधानी से उठाये और लंगड़ाता हुआ नदी के किनारे की ओर चल दिया।

किस तरफ चला जाए ? ग्रिगोरी ने पूछा।

काले किनारे की तरफ। अभी उस दिन जिस लट्ठे के पास पास बैठे थे आज भी वहीं किस्मत आजमाएँगे।

अपने पीछे के हिस्से से जमीन को रगड़ते हुए नाव ने किनारा छोड़ा और लहरों पर बह चली। धारा हिचकोरे देती उलटने की धमकियाँ देती उसे अपने साथ बहा ले चली। ग्रिगोरी ने डाँड नहीं साधे केवल पतवार सम्हाली।

ऐसे क्यों नहीं रहे हो ? पिता ने पूछा।

'बीच धार म ला आ जाए पहले ।

जाल बड़ी धारा का काटते हुए नाव बाएँ तट का ओर मुड़ी । उस पार स आती मुर्गे की कुरड-कूँ उनक कानों म पड़ी । पानी के बाहर उभरी कंकरीली काली चट्टान को सराहती नाव नीचे के ताल म आ गई । तट ॥ कोई चालीस फुट दूर झुक हुए एल्म वृक्ष की ऐंठी हुई डालियाँ पानी से मुक्त होता । पेड़ क चारों ओर फेन की भवरें बचनों स नाव और चक्कर काट रही थी ।

मैं चारा पानी मे फेंकता हू तब तक तुम बसी ठीक करो । धीमे स पैन्तली बाला । जग क भाप छोड़ते मु ह म हाथ डाला और पानी के ऊपर राई छितरा ग । आवाज हुई शिक ! ग्रिगोरी ने फूल हुए दाने हुक में फँसाए और मुसकरा उठा ।

चली आयो सुनती हो छोटी मछलियो तुम भी और बड़ी मछलियो, तुम भी '

पानी में बसी का डारी क चक-चक डारी कड़ी पड़ी और फिर ढीली हो गई । ग्रिगोरी ने बसी के सिरे पर अपना पाँव जमाया और होशियारी स इधर उधर थला टटोली ।

"पापा आज तकदीर साथ नहा देगी । चाँदनी इन दिनों घटाव पर है । वह बोला ।

"दियासलाई लाया है ?

"हाँ ।

"जरा जला

बूढ़ा धुआँ उड़ाने लगा । उसने एल्म-वृक्ष की शाखों के पीछे ठिठके सूरज पर एक नजर डाला । बोला न जाने कब काप[1] फँस जाए कभी तो अँधियारी राता म भी हाथ लग आती है ।

'लगता है कि छोटी मछलियाँ चारे म मुँह लगा रही हैं ।

पानी के थपड़ नाव के दोनों भार जोर-जोर स लगते रह । अपनी चौड़ी ऐंठती पूँछ से पानी मथती कराहता हुई एक चार फुटी काप मछली

---

१ एक प्रकार की मछली ।

उछलकर ऊपर आई। आग नाव भर में फैल गया। कार्प की चमक ऐसी थी मानो मछली रतनारे तांबे में ढली हो!

अब जरा ठहर! बाँह से भीगी हुई दाढ़ी पोंछकर पंतेलेई बोला।

डूबे हुए वृक्ष की शाखाओं और नंगी डालियों के बीच दो कार्प एक साथ उछलकर ऊपर आईं। तीसरी जरा छोटी हवा में और किनारों के पास ही पानी में इस तरह तरने लगी जैसे कि हाथ न आने की ज़िद ठान बैठी हो।

ग्रिगोरी बेचैनी से सिगरेट का गीला सिरा चबाने लगा। कुहरे से ढका सूर्य अभी आधा ही निकला था। पन्तेली ने बचे हुए चारे को छितराया उदासी से होंठ सिकोड़े और बंसी के गतिहीन सिरे को एकटक निहारने लगा।

ग्रिगोरी ने सिगरेट का बचा खुचा हिस्सा पानी में फेंक दिया और क्रोध में भरकर उसका हवा में उड़ना देखता रहा। मन ही मन पिता को कोसता रहा। उसने उसे इतनी जल्दी जो उठा दिया था। खाली पेट सिगरेट पीने से उसका मुँह खराब हो गया और उसमें सूअर के जले हुए बालों की-सी बास आने लगी। वह झुककर एक चुल्लू पानी लेने को हुआ ही था कि बंसी के सिरे पर हल्की-सी हरकत हुई और वह धीरे धीरे डूबने लगी।

'खींच लो!' बूढ़े ने साँस ली।

ग्रिगोरी ने उत्तेजना में बंसी कसकर पकड़ ली किन्तु वह धनुषाकार हो गई और उसका सिरा पानी में चला गया।

पकड़े रहो! नाव को किनारे से धकेल पन्तेली ने लम्बी साँस लेते हुए कहा।

ग्रिगोरी ने बंसी ऊपर उठानी चाही पर मछली भारी थी इसलिए बंसी चरमराकर टूट गई। ग्रिगोरी लड़खड़ा गया और गिरते गिरते बचा।

"बैल की तरह ज़ोरदार है" पिता ने ताज़ा चारे में कँटिया फँसाते हुए कहा लेकिन कोशिश बेकार गई। ग्रिगोरी ने हँसते हुए बंसी में नया सूत बाँधा और उसे पानी में फेंका। परन्तु सीसा नीचे तक पहुँचा ही था

कि ग्रंगी का सिरा झुक गया।

'मछली क्या है शैतान है!' वह बोला। मछली सब नहीं पा रही थी और बीच धार में जाने का प्रयत्न कर रही थी।

बंसी खींचने से धार बीच से फट गई और उसके पीछे हरे पानी की दीवार सी बन गई। अपनी छोटी मोटी उँगलियों में पन्तेली ने बलर की मूठ थाम ली।

'देखना मछली कहीं बंसी न तोड़ दे।

चिन्ता न करो।

इस बीच एक बड़ी लाल पीली कार्प ऊपर उछली और पूँछ फटकारती झाग उठाती फिर लहरों में गोता लगा गई।

मछली बड़ा जोर लगा रही है। मेरा तो हाथ ही कटा जा रहा है नहीं तुम रहने दो!

'पकड़े रहो ग्रीशा!' पिता ने चीखकर कहा।

मैं पकड़े हुए हूँ।

ऐसा कहीं मछली नाव के नीचे न सरक जाए।

ग्रिगोरी ने साँस खींचकर कार्प को नाव की तरफ खींचा। बूढ़े ने झटके से पानी उलीचने वाला बलर बाहर किया किन्तु कार्प ने अपनी आखिरी ताकत लगाई और पानी में पैठी।

'इसका सिर ऊपर उठाओ ताकि थोड़ी हवा मुँह में चली जाएगी। बस इसके बाद ठंडी पड़ जाएगी।" पन्तेली ने आदेश भरे स्वर में कहा।

थकान से चूर हुई मछली को ग्रिगोरी ने एक बार फिर नाव की ओर खींचा। वह मुँह फाड़े लहरों पर उतराती रही नाक नाव के ऊपर के ऊबड़-खाबड़ हिस्सों से रगड़ खाती रही और उसके नारंगी सुनहरे सुफने झिलमिलाते रहे।

खतम हो गई! बलर के सहारे मछली को ऊपर उठाते हुए पन्तेली बोला।

बाप-बेटे आधा घंटे तक बैठे रहे और कार्प ने उछलना बन्द कर दिया।

बसा लपेट लो आज का शिकार हो चुका।' अन्त में बूढ़े ने कहा।

ग्रिगोरी ने नाव किनारे म आने की धार बढ़ाई और नाव खेते समय अनुमान लगाया कि पिता क होंठों पर कोई बात आ आकर लौट जाती है। पर पन्तली चुपचाप बैठा पहाड़ी क आँचल में बसी हुई भोपड़ियों को देखता रहा।

ग्रिगोरी सुना उसने बोर की ओर अपने पाँव क नीचे खींचा और संन्दिग्ध स्वर म कहना आरम्भ किया मैं देखता हूँ कि तुम और अक्सीनिया अस्ताखोवा

यह सुनते ही ग्रिगोरी ने नीचे से ऊपर तक लाल हो मुँह फेर लिया।

मैं चेताए देता हूँ। बूढ़े के स्वर म अब क्रोध घुल गया था— 'स्तीपान हमारा पड़ोसी है और मैं तुम्हें उसकी औरत के साथ छूट लेने नहा दूँगा। इस तरह की चीज से कभी भी तूफान खड़ा हो सकता है। मैं तुम्हें पहले स खबरदार किये देता हूँ। अब कभी मैंने तुम्हें उसक साथ देखा तो खाल उधड़कर रख दूँगा।

पन्तेली ने अपनी गाँठोंवाली मुट्ठी कसी और आँखें दबाकर बटे की आर देखने लगा। बेटे के चेहरे पर खून छलछला आया।

यह सब झूठ है! ग्रिगोरी भुनभुनाया और पिता की नाक के निलछरे सिरे की ओर देखने लगा।

चुप रहो! पिता चीखा।

लोग बकते हैं ता

बकवास न कर कुत्ते का बच्चा!

ग्रिगोरी पतवारों की ओर झुक गया। नाव उछल उछलकर आगे बढ़ती रही। दोनों मुँह सिये रहे। तट के समीप आते ही पिता ने कहा 'मेरी बात का खयाल रह आज स तेरा रात का बाहर निकलना बन्द महाते के बाहर कदम न पड़े।

ग्रिगोरी चुप रहा। नाव किनारे पहुँची तो बोला मछली क्या औरतों को दे दूँ?

'नहीं म जाकर बेच आ। बूढ़े ने स्वर म कामलता लाकर कहा 'जा मिल उसस अपने लिए सिगरेट वगैरह खरीद ला।

ग्रिगोरी होंठ चबाता हुआ पिता क पीछे चलता गया। उसकी क्रोध

स भरी आँखें बूट की सापड़ी छग्ता रहा। उसन मन ही-मन सोचा—'चाहे जो करो चाहे तो मर पर काट दो पर मैं रात का तो बाहर जाऊँगा ही।

घर पहुँचने पर उसने मछली को सावधानी से धोया। उसके नथुनों में एक डंडी फँसाई और उसे बेचने के लिए चल पड़ा।

फ़ाम के फाटक पर ही उसकी भेंट अपने पुराने मित्र मीस्का कोश्नोव से हो गई। मीस्का अपनी चाँदी जड़ी पेटी से खिलवाड़ करता चहलक़दमी कर रहा था। उसकी आँखें पीली और गोल थीं। आँखों के तारे बिल्ली की आँखों के तारों की तरह लम्बे थे। इससे आदमी चमकदीदा और चरमबाज मालूम होता था।

"कहाँ चले मछली लेकर ?" मीस्का ने पूछा।

"आज ही पकड़ी है। माखाव के हाथों बेचने जा रहा हूँ।

मीस्का ने एक नजर में ही मछली के वजन का अनुमान लगा लिया बोला "पन्द्रह पाउण्ड होगी।

साढ़े पन्द्रह पाउण्ड है। हमने तराजू पर तोली है।'

मुझे साथ ले चलो मैं मोल भाव करूँगा। मीस्का ने प्रस्ताव रखा।

"चलो।

और मुझे क्या मिलेगा ?

'डरो नहीं। इस बात को लेकर झगड़ा नहीं होगा। ग्रिगोरी ने हँसकर कहा।

गिरजे की प्रार्थना अभी अभी समाप्त हुई थी। गाँव के लोग लौट रहे थे। तीनों भाई बन्धु लम्बे डग भरते हुए अगल-बगल चले आ रहे थे। एक भुजाहीन अलेक्सी उनमें सबसे बड़ा था और बीच में चल रहा था। फ़ौजी ट्यूनिक के कड़े कॉलर के कारण उसकी गर्दन सीधी रहती। घुंघराली काली काली नुकीली दाढ़ी कभी इधर तो कभी उधर को निकली नजर आती। बायी आँख रह रहकर झपक उठती। बात यह है कि बहुत वर्ष पहले निशानेबाजी करते समय हाथ की बन्दूक फट गई थी और लोहे का एक टुकड़ा उछलकर गाल में घुस गया था। तब से ही उसकी आँख समय असमय निरन्तर ही झपकती रहती थी। तभी से गाल में आर-पार

ग्रिगोरी ने नाव किनारे से आगे की ओर बढ़ाई और नाव खेते समय अनुमान लगाया कि पिता के होंठों पर कोई बात आ आकर लौट जाती है। पर पन्तली चुपचाप बैठा पहाड़ी के आँचल में बसी हुई झोपड़ियों को देखता रहा।

ग्रिगोरी सुनो उसने बोरे की गाँठ अपने पाँव के नीचे खींची और सदिग्ध स्वर में कहना प्रारम्भ किया मैं देखता हूँ कि तुम और अक्सीनिया अस्ताखोवा

यह सुनते ही ग्रिगोरी ने नीचे से ऊपर तक लाल हो मुँह फेर लिया।

मैं चेताए देता हूँ। बूढ़े के स्वर में अब क्रोध घुल गया था— स्तीपान हमारा पड़ोसी है और मैं तुम्हें उसकी औरत के साथ छूट लेने नहीं दूँगा। इस तरह की चीज़ से कभी भी तूफ़ान खड़ा हो सकता है। मैं तुम्हें पहले से खबरदार किए देता हूँ। अब कभी मैंने तुम्हें उसके साथ देखा तो खाल उधेड़कर रख दूँगा।

पैन्तेली ने अपनी गाँठोंवाली मुट्ठी कसी और आँखें दबाकर बेटे की ओर देखने लगा। बेटे के चेहरे पर खून छलछला आया।

यह सब झूठ है! ग्रिगोरी भुनभुनाया और पिता की नाक के निकट सिरे की ओर देखने लगा।

चुप रहो! पिता चीखा।

लोग बकते हैं वो

बकवास न कर कुत्ते का बच्चा!

ग्रिगोरी पतवारों की ओर झुक गया। नाव उछल-उछलकर आगे बढ़ती रही। दोनों मौन बने रहे। तट के समीप आते ही पिता ने कहा मेरी बात का खयाल रहे आज से तेरा रात को बाहर निकलना बन्द अहाते के बाहर कदम न पड़े।

ग्रिगोरी चुप रहा। नाव किनारे पहुँची तो बोला मछली क्या औरतों को दे दूँ?

नहीं ले जाकर बेच आ। बूढ़े ने स्वर में कोमलता लाकर कहा जो मिले उससे अपने लिए सिगरेट वगैरह खरीद ला।

ग्रिगोरी होंठ चबाता हुआ पिता के पीछे चलता गया। उसको क्रोध

स भरी आँखें सूर्य का सामने देखती रहा । उसने मन ही-मन सोचा—'वाह रे मेरा चाहे तो मर पर शोर दा पर मैं रात को तो बाहर जाऊँगा ही ।'

घर पहुँचने पर उसने मछली को सावधानी से धोया । उसके पंखुड़ों में एक बड़ी फँसाई और उसे बेचने के लिए चल पड़ा ।

फ़ार्म के फाटक पर ही उसकी भेंट अपने पुराने मित्र मीत्का कोर्शुनोव से हो गई । मीत्का अपनी चाँदी जड़ी पेटी से खिलवाड़ करता चहलक़दमी कर रहा था । उसकी आँखें पीली और गोल थीं । आँखों के तारे बिल्ली की आँखों के तारों की तरह लम्बे थे । इससे आदमी चमकदार और चरकबाज़ मालूम होता था ।

'कहाँ चल मछली लेकर ?' मीत्का ने पूछा ।

'आज ही पकड़ा है । मास्टोव के हाथों बेचने जा रहा हूँ ।

मीत्का ने एक नज़र में ही मछली के वज़न का अनुमान लगा लिया बोला 'पन्द्रह पाउण्ड होगी ।

'साढ़े पन्द्रह पाउण्ड है । हमने तराज़ू पर तोली है ।

मुझे साथ ले चलो मैं भाव ताव करूँगा । मीत्का ने प्रस्ताव रखा ।

चलो ।

और मुझे क्या मिलेगा ?'

'डरो नहीं । इस बात को लेकर झगड़ा नहीं होगा ।' ग्रिगोरी ने हँसकर कहा ।

गिरजे की प्रार्थना अभी अभी समाप्त हुई थी । गाँव के लोग लौट रहे थे । तीनों शामिल बन्धु लम्बे डग भरते हुए अगल-बगल चले आ रहे थे । एक मुखाहीन अलेक्सी उनमें सबसे बड़ा था और बीच में चल रहा था । फ़ौजी ट्यूनिक के कड़े कॉलर के कारण उसकी गर्दन सीधी रहती । घुँघराले बालों वाली नुकीली दाढ़ी कभी इधर तो कभी उधर को निकली नज़र आती । बायी आँख रह रहकर झपक उठती । बात यह है कि बहुत वर्ष पहले निशानेबाज़ी करते समय हाथ की बन्दूक फट गई थी और लोहे का एक टुकड़ा उछलकर गाल में घुस गया था । तब से ही उसकी आँख समय असमय निरन्तर ही झपकती रहती थी । तभी से गाल के आर-पार

ग्रिगोरी ने नाव किनारे से आगे की ओर बढ़ाई और नाव खेते समय अनुमान लगाया कि पिता के होंठों पर कोई बात आ आकर लौट जाती है। पर पन्तेली चुपचाप बैठा पश्चिमी के आँचल में बसी हुई झोपड़ियों को देखता रहा।

ग्रिगोरी सुनो उसने चोर की गाँठ अपने पाँव के नीचे खींची और मद्धिम स्वर में कहना प्रारम्भ किया मैं देखता हूँ कि तुम और अक्सीनिया अस्ताखोवा

यह सुनते ही ग्रिगोरी ने नीचे से ऊपर तक लाल हो मुँह फेर लिया।

मैं चेताए देता हूँ। बूढ़े के स्वर में अब क्रोध घुल गया था—'स्तेपान हमारा पड़ोसी है और मैं तुम्हें उसकी औरत के साथ छूट लेने नहीं दूँगा। इस तरह की चीज़ में कभी भी तूफान खड़ा हो सकता है। मैं तुम्हें पहले से खबरदार किए देता हूँ। अब कभी मैंने तुम्हें उसके साथ देखा तो खाल उधड़वा कर रख दूँगा।

पन्तेली ने अपनी गाँठोंवाली मुट्ठी कसी और आँखें दबाकर बेटे की ओर देखने लगा। बेटे के चेहरे पर खून छलछला आया।

यह सब झूठ है! ग्रिगोरी भुनभुनाया और पिता की नाक के निलछरे सिरे की ओर देखने लगा।

चुप रहो! पिता चीखा।

लोग बकते हैं तो

बकवास न कर कुत्ते का बच्चा!

ग्रिगोरी पतवारों की ओर झुक गया। नाव उछल उछलकर आगे बढ़ती रही। दोनों मुँह सिये रहे। तट के समीप आते ही पिता ने कहा मेरी बात का ख़याल रख आज से तेरा रात का बाहर निकलना बन्द अहाते के बाहर कदम न पड़े।

ग्रिगोरी चुप रहा। नाव किनारे पहुँची तो बोला मछली क्या औरतों को दे दूँ?

'नहीं ले जाकर बेच आ। बूढ़े ने स्वर में कोमलता लाकर कहा जो मिले उसमें अपने लिए सिगरेट वगैरह खरीद ला।

ग्रिगोरी होंठ चबाता हुआ पिता के पीछे बढ़ता गया। उसकी क्रोध

म भरी भाँखें कूट की झापड़ी छन्ता रहा। उसने मन-ही-मन सोचा— चाहे आ करो चाहे तो मर पर काट दो पर मैं रात का तो बाहर जाऊँगा ही।

घर पहुँचने पर उसन मछली को सावधानी से धोया। उसक नथुना में एक डंडी फँसाई भौर उम बचने क लिए चल पड़ा।

फाम क फाटक पर ही उसकी भेंट भपने पुराने मित्र मीस्का कारगूनोव स हो गई। मीस्का भपनी चाँदी जड़ी पटी स खिलवाड़ करता चहलक़दमी कर रहा था। उसकी भाँखें पीली भौर गोल थीं। भाँखों के तार बिल्ली की भाँखों क तारों की तरह लम्बे थ। इसस भादमी चमकदीदा भौर चरकबाज़ मालूम होता था।

कहाँ चल मछली लकर ? मीत्का ने पूछा।

भाज ही पकड़ी है। माखोव के हाथो बचने जा रहा हू।

मीत्का ने एक नजर म ही मछली के वजन का भनुमान लगा लिया। बोला पन्द्रह पाउण्ड हागी।

साढ़ पन्द्रह पाउण्ड है। हमने तराज़ू पर तोली है।

मुझे माथ ल चलो मैं माल भाव करूँगा। मीत्का ने प्रस्ताव रखा। चला।

भौर मुझ क्या मिलगा ?

'डरो नहीं। इस बात को लकर झगड़ा नही हागा। ग्रिगोरी ने हंसकर कहा।

गिरजे की प्राथना भभी भभी समाप्त हुई थी। गाँव क लाग लौट रह थे। तीनों शामिल बधु लम्ब डग भरत हुए भगल-बगल चल भा रहे थे। एक भुजाहीन भलेक्सी उनम सबस बड़ा था भौर बीचम चल रहा था। फ़ौजी ट्यूनिक क कड़े कॉलर क कारण उसकी गदन सीधी रहती। घुघराल बाल। काली नुकीली दाढ़ी कभी इधर सो कभी उधर का निकली नजर भाती। बायी भाँख रह रहकर झपक उठती। बात यह है कि बहुत वष पहल निशानेबाज़ी करते समय हाथ की बन्दूक फट गई थी भौर लोहे का एक टुकड़ा उछलकर गाल में घुस गया था। तब से ही उसकी भाँख समय भसमय निरन्तर ही झपकती रहती थी। तभी से गाल के भार-पार

ग्रिगोरी ने नाव किनारे से आगे की ओर बढ़ाई और नाव खेते समय अनुमान लगाया कि पिता के होंठों पर कोई बात आ आकर लौट जाती है। पर पैन्तली चुपचाप बैठा पहाड़ी के आँचल में बसी हुई झोंपड़ियों को देखता रहा।

ग्रिगोरी सुना उसने चोर की गाँठ अपने पाँव के नीचे खींची और सदिग्ध स्वर में कहना प्रारम्भ किया मैं देखता हूँ कि तुम और अक्सीनिया अस्ताखोवा

यह सुनते ही ग्रिगोरी ने नीचे से ऊपर तक लाल हो मुँह फेर लिया।

मैं बताए देता हूँ। बूढ़े के स्वर में अब क्रोध घुल गया था— स्तीपान हमारा पड़ोसी है और मैं तुम्हें उसकी औरत के साथ छूट लेने नहीं दूँगा। इस तरह की चीज़ से कभी भी तूफान खड़ा हो सकता है। मैं तुम्हें पहले से खबरदार किए देता हूँ। अब कभी मैंने तुम्हें उसके साथ देखा तो खाल उधेड़कर रख दूँगा।

पैन्तेली ने अपनी गाँठवाली मुट्ठी कसी और आँखें सिकोड़कर बेटे की ओर देखने लगा। बेटे के चेहरे पर खून छलछला आया।

यह सब झूठ है! ग्रिगोरी भुनभुनाया और पिता की नाक के निचले सिरे की ओर देखने लगा।

चुप रहो! पिता चीखा।

लोग बकते हैं ता

बकवास न कर कुत्ते का बच्चा!

ग्रिगोरी पतवारों की ओर झुक गया। नाव उछल उछलकर आगे बढ़ती रही। दोनों मौन लिए रहे। तट के समीप आते ही पिता ने कहा मेरी बात का ख्याल रख आज से तेरा रात को बाहर निकलना बन्द अहाते के बाहर कदम न पड़े।

ग्रिगोरी चुप रहा। नाव किनारे पहुँची तो बोला मछली क्या औरतों को दे दें?

नहीं ले जाकर बेच आ। बूढ़े ने स्वर में कोमलता लाकर कहा जो मिले उसमें अपने लिए सिगरेट वगैरह खरीद ला।

ग्रिगोरी होंठ चबाता हुआ पिता के पीछे चलता गया। उसको क्रोध

से भरी आँखें बूढ़े की नापकी ढूँढता रहीं। उसने मन ही-मन सोचा—'चाहे जो करो चाहे तो मर पर काट दो पर मैं रात भर तो बाहर आऊँगा ही।

घर पहुँचने पर उसने मछली को सावधानी से धोया। उसके नथुनों में एक छड़ी फँसाई और उसे बेचने के लिए चल पड़ा।

फार्म के फाटक पर ही उसकी भेंट अपने पुराने मित्र मीत्का कोर्शुनोव से हो गई। मीत्का अपनी चाँदी-जड़ी पेटी से खिलवाड़ करता चहलकदमी कर रहा था। उसकी आँखें पीली और गोल थीं। आँखों के तारे बिल्ली की आँखों के तारों की तरह लम्बे थे। इससे आदमी चमकीला और चरकबाज मालूम होता था।

कहाँ चले मछली लेकर? मीत्का ने पूछा।

आज ही पकड़ा है। मास्कोव के हाथ बेचने जा रहा हूँ।

मीत्का ने एक नजर में ही मछली के वजन का अनुमान लगा लिया बोला पन्द्रह पाउण्ड होगी।

साढ़े पन्द्रह पाउण्ड है। हमने तराजू पर तौली है।

मुझे साथ ले चलो मैं मोल भाव करूँगा। मीत्का ने प्रस्ताव रखा।

"चलो।

और मुझे क्या मिलेगा?

'डरो नहीं। इस बात को लेकर झगड़ा नहीं होगा। ग्रिगोरी ने हँसकर कहा।

गिरजे की प्रार्थना अभी अभी समाप्त हुई थी। गाँव के लोग लौट रहे थे। तीनों शामिल बन्धु लम्बे डग भरते हुए बगल-बगल चले आ रहे थे। एक भुजाहीन अलेक्सी उनमें सबसे बड़ा था और बीच में चल रहा था। फौजी ट्यूनिक के कड़े कॉलर के कारण उसकी गर्दन सीधी रहती। घुँघराली काली नुकीली दाढ़ी कभी इधर तो कभी उधर को निकली नजर आती। बायीं आँख रह रहकर झपक उठती। बात यह है कि बहुत वर्ष पहले निशानेबाजी करते समय हाथ की बन्दूक फट गई थी और लोहे का एक टुकड़ा उछलकर गाल में घुस गया था। तब से ही उसकी आँख समय असमय निरन्तर ही झपकती रहती थी। तभी से गाल के आर-पार

जलन का एक दाग भी पड़ गया था। बायाँ हाथ कोहनी से कट गया था, पर प्रलक्सी एक हाथ से ही सिगरेट रोल कर लेने में माहिर था। दोने से बटुए का दवाता दाँत से वाजिब लम्बाई का कागज काटता उसे मोड़ता उसमें तम्बाकू भरता और रोल कर लेता। देखनेवाला सोच भी नहीं पाता कि यह करने क्या जा रहा है कि सिगरेट बनकर तैयार हो जाती।

एक हाथ होने पर भी वह गाँव का सर्वश्रेष्ठ लड़ाका था। उसकी मुट्ठी साधारण नाप की मुट्ठी की भाँति खास तौर पर बड़ी नहीं थी— बस तिरबोजे-सी थी। पर एक बार की बात है कि खेत जोतते समय वह बैल से नाराज हो गया। लेकिन कुछ नहीं उसने एक घूंसा मारते ही बैल खेत में लम्बा हो गया और उसके कानों से खून बह चला। फिर तो वह मर ही गया।

प्रलक्सी के बाकी दोनों भाई मार्तिन और प्रोखार सूरत-शक्ल में उसकी कार्बन कॉपी थे। बस ही थोड़े बच्चे उतना ही भारी भरकम शरीर। अन्तर था तो केवल इतना ही कि उन दोनों के हाथ बदस्तूर थे।

सो ग्रिगोरी ने शामिल-बन्धुओं का अभिवादन किया पर मौक्सा पाते बढ़ता चला गया। कारण यह था कि एक बार हाथापाई होने पर प्रलक्सी ने उसके खूबसूरत दाँतों पर जरा भी रहम न दिखाया था और एक हाथ ऐसा जमाया था कि उसके दो दाँत फर्श पर आ गिरे थे।

ग्रिगोरी पास आया तो प्रलक्सी की आँख एक साथ पाँच बार झपकी। बोला बेचते हो?

खरीदोगे?

'क्या माँग?

'एक जोड़ी बैल और एक औरत।

क्रोध से आँख झपकाते हुए प्रलक्सी ने अपने हाथ का बचा हुआ भाग झटका।

'तुम भी क्या आदमी हो! क्या कहने हैं! अभी औरत माँगते हो फिर भोमाएँ माँगोगे!

जाओ अपना काम करो नहीं तो कहीं ऐसा न हो कि शामिल

परिवार का नाम निशान तक मिट जाए।" ग्रिगोरी ने दाँत पीसे।

गिरजे की बाड़ के कोने में गोबरपाल जमा थे। गिरजे का सरकस एक कलहंस ऊपर उठाए चीख रहा था "मास पचास कोपक में आ रहा है। कोई कुछ और लगाता है?" कलहंस टेढ़ी गर्दन से चारों ओर खड़े लोगों पर नफरत बरसा रहा था।

एक ओर सफेद बालोंवाला एक बूढ़ा कुछ लोगों में घिरा हाथ नचा नचाकर कुछ कह रहा था। उसका सीना क्रॉसों और तमगों से भरा हुआ था।

"ग्रीश्का बाबा तुर्की युद्ध की कोई अपनी रामकहानी सुना रहे होंगे।" मीत्का ने उधर इशारा ग्रिगोरी का ध्यान खींचा। "आओ, जरा सुनें तो सही।"

"उधर कहानी सुनोगे और इधर कोप सड़ने और फूलने लगेगी।" ग्रिगोरी ने विरोध किया।

"ठीक है, फूल जाएगी तो वजन बढ़ जाएगा।"

स्क्वायर में फायर-ब्रिगेड-शेड के पीछे थी मोखोव के मकान की हरी छत। दोनों लम्बे डग भरते हुए आगे बढ़े कि बाहर की कोठरी के पास से गुजरते ही ग्रिगोरी ने थूका और सिर ऊपर उठाया। सहसा ही पीपे के पीछे से पतलून के बटन लगाता पेटी दाँतों में दबाए एक बूढ़ा सामने आया।

"बटन लग नहीं रहे क्या?" मीत्का ने व्यंग्य से कहा। बूढ़े ने आखिरी बटन बन्द किया और पेटी मुँह से निकाली।

"तुम्हें इससे क्या लेना-देना।"

"तुम्हारी दाढ़ी या नाक इसमें फँस जाए तो तुम्हारी बुढ़िया एक हफ्ते में भी न धो पाए इसे।"

"मैं अभी तुम्हें फँसा दूँगा, तब मानोगे।" बूढ़ा नाराज हो गया।

मीत्का की आँखें धूप में चौंधियाईं तो उसने उन्हें सिकोड़ा, बोला "बहुत जल्दी बुरा मानते हो!"

"भाग जा यहाँ से! सूअर का बच्चा! क्यों परेशान कर रहा है मुझे? पेटी का मजा चखना चाहता है क्या?"

ग्रिगोरी चुपचाप मुसकराता रहा कि सीढ़ियाँ पास आ गई।

जंगले की रेलिंग में जंगली अंगूर-लता लिपटी हुई थी। सीढ़ियों के ऊपर आलसी छाँह बिखरे हुए थे।

'देखा मीत्का, कुछ लोग ऐसे भी रहते हैं।' ग्रिगोरी बोला।

'दरवाजे का हत्था तक सुनहला है।' बरामदे का दरवाजा खोलते हुए मीत्का ने नाक बजाई, 'अब जरा सोचो कि वह बूढ़ा खबीस यहाँ रहता है।'

'कौन?' दरवाजे के पीछे से किसी ने पूछा।

ग्रिगोरी सकुचाते हुए अन्दर घुसा।

'किससे मिलना है?'

अन्दर मुलायम बेंत की हिलने-डुलने वाली कुर्सी पर एक लड़की बैठी हुई थी। उसके हाथ में कटारियों की एक तश्तरी थी। ग्रगर खड़ा हो गया और कटारी का रस लगे उसके भरे गुलाबी हृदयाकार होंठों को चुपचाप निहारने लगा। लड़की ने सिर टेढ़ा करके लड़कों का ऊपर से नीचे तक देखा।

ग्रिगोरी की सहायता को मीत्का आगे बढ़ा और खाँसकर बोला, 'आपको मछली तो नहीं खरीदनी है?'

'मछली? अभी बतलाती हूँ।"

उसने कुर्सी सीधी की और उठकर कमीज के काम वाले स्लीपरों में पैर डाले। उसके सफेद लिबास में धूप छनी। मीत्का की निगाह लड़की की टाँगों की धुँधली-सी रूपरेखा और उसकी कमीज को सहराती हुई चौड़ी बेल पर पड़ी। वह उसकी नंगी पिंडलियों की चटक सफ़ेदी देखकर अचरज में पड़ गया। पीली सिर्फ छोटी गोल एड़ियों के ऊपर की खाल थी, सो धूप उस पिलाई में भी घुसा हुआ था।

'देखो ग्रीश्का, कैसे कपड़े हैं? बिलकुल प्याज की तरह! हर चीज आर पार नज़र आती है।' ग्रिगोरी को कुहनी मारी।

लड़की गलियारे के रास्ते के दरवाजे से लौटी और आराम से कुर्सी पर बैठ गई।

'उधर बावर्चीखाने में जाओ।' उसने आज्ञा दी।

ग्रिगोरी पर्जों के बल मकान में घुसा। उसके जाने के बाद पलकें झपकाता हुआ मीश्का लड़की के सिर के उजले रिबन को देखता रहा। रिबन ने उसके बालों को दो सुनहरे गोलों में बाँट दिया था। लड़की भी अपनी शरारती शोख आँखों से मीश्का को समझती रही।

गाँव के हो? उसने पूछा।

'जी!

किसके लड़के हो?

कारगूनोव का लड़का हूँ।

क्या नाम है?

मीश्का!

लड़की ने अपने रतनारे नाखूनों को ध्यान से देखा और तेजी से पर समेट लिए। मछली तुमम से किसने पकड़ी?

मेरे दोस्त ग्रिगोरी ने।

तुम भी मछली पकड़ते हो?

जब कभी मन होता है तब।

बंसी से?

'जी।

एक बार मछली के शिकार पर मैं भी आना चाहती हूँ। जरा देर चुप रहकर वह बोली।

ठीक है अगर आप आना चाहेंगी तो मैं ले चलूँगा।

'कैसे भला? कैसे होगा सब-कुछ?

'आपको बहुत सवेरे उठना पड़ेगा।

मैं उठ तो बैठूँगी, लेकिन जगाना तुम्हें पड़ेगा।

खैर यह तो हो जाएगा पर आपके पिता ?

क्यों पिता?

मीश्का मुसकराया वह मुझे चोर समझ बैठें और मेरे ऊपर कुत्ते छोड़ दें तो?

बकवास है। मैं उस कोने के कमरे में अकेली सोती हूँ। वह रही खिड़की। उसने अँगुली से इशारा किया "तुम आना तो खिड़की खटखटा

देना। मैं जग आऊँगी।

इस बीच ग्रिगोरी का दबी आवाज और रसोइये का मोटा सचकीला स्वर रह रहकर बावर्चीखाने से सुन पड़ा। मीत्का चुप हो गया और अपनी पटी म जड़ी चौदा पर अँगुलियाँ फेरता रहा।

तुम्हारी शादी हो गई ? होठों होठो में मुसकराते हुए लड़की बोली।

'क्यों ?

'ओह ! कुछ नही, यो ही पूछ लिया।'

'नही अभी मेरी शादी नही हुई।

एकाएक मीत्का लज्जा से लाल हो उठा। लड़की गरमपर से भाई फश पर फैली झरबेरियों की एक टहनी उठाकर उससे खलन और शोखी से मुसकराने लगी।

मीत्का लड़कियाँ तुम्हे पसन्द करती है ?

"कुछ करती हैं, कुछ नही करती।

झूठ न बोलो और तुम्हारी आँखें बिल्लियों-जैसी क्यों है ?

बिल्लियों-जैसी ? अब मीत्का का चेहरा पूरी तरह लाल हो गया।

'हाँ बिलकुल बिल्लियों-जसी हैं।

शायद मेरी माँ की आँखें ऐसी थी और उन्ही से मुझे मिली हैं। मैं क्या कर सकता हूँ ?

तुम्हारे घरवाले तुम्हारी शादी क्या नही करते मीत्का ?

मीत्का अब सम्हल चुका था। लड़की के शब्दों म छिपे व्यंग्य का समझते ही उसकी पीली पुतलियाँ चमक उठा।

"मुर्गा बड़ा तो हो मुर्गियाँ बहुत मिल जाएँगी !

लड़की ने आश्चर्य से भवें ऊपर उठाइ और क्रोध स भरी अपना कुर्सी से उठ खड़ी हुई। उसकी दाम्भिक मुसकान ने मीत्का को बिच्छू की तरह डस लिया।

सहसा सीढ़ियों पर आहट हुई। बकरी के बच्चे की खाल क जूते पहने घर का मालिक सर्गेई प्लातोनोविच मोखोव मीत्का क सामने से गुजरा और उसकी ओर बिना देखे ही पूछा, मुझसे कोई काम है ?

पापा ! ये लोग एक मछली लाए हैं। लड़की ने जवाब दिया।
और ग्रिगोरी लौटा तो मछली उसके हाथ में नहीं थी।

२

ग्रिगोरी गाय को जाने के बाद जब घूम फिरकर लौटा तो मुर्गे ने पहली बाँग दी। बरसातों से खटास से भरी झाड़-लताओं और दूसरी चीज़ों की महक आती रही।

ग्रिगोरी दबे परों कमरे में घुसा, कपड़े उतारे, इतवार के दिन का खास पतलून सावधानी से खूँटी पर टाँगा, क्रॉस बनाया और फिर लेट गया। फर्श पर चाँदनी का सुनहरा जाल-सा लहरा रहा था। खिड़की के चौखटे की परछाइं चाँदनी को जहाँ-तहाँ से काट रही थी। कसीदाकारी वाले तौलिया से ढकी, कोने में रखी चाँदी की देव-मूर्तियाँ हल्के हल्के चमक रही थीं। बिस्तरे के ऊपर की टाँड पर मक्खियाँ भिनभिना रही थीं।

रसोई में उसका नन्हा मुन्ना भतीजा बावर्चीखाने में रोने न लगता तो ग्रिगोरी को नींद आ जाती। पर पालना गाड़ी के बिना ग्रीज़ के पहिए की भाँति चूँ चरमर करने लगा। साथ ही भाभी दार्या की नाक से भरी गुनगुनाहट उसके कानों में पड़ी—

'सो जा मेरे लाल ! तेरे कारण तो मेरी नींद हराम हो गई है।' और वह महीन स्वर में गुनगुनाने लगी—

'अरे अरे तू रहा कहाँ ?

मैं घोड़ों की निगरानी में लगा रहा—

और भला क्या तूने देखा ?

मैंने देखा ऐसा घोड़ा—

जिसकी काठी में सोने की गाँठ लगी थी

पालने की भली लगने वाली तालमय चूँ चरर-मरर के बीच ऊँघते ऊँघते ग्रिगोरी को याद आया 'अरे, कल प्योत्र कैम्प में चला जाएगा। दार्या बच्चे के साथ अकेली रह जाएगी। हमें कटाई प्योत्र के बिना करनी पड़ेगी।

उसने गरम तकिय म अपना सिर गड़ा लिया पर स्वर उसक कानो में बराबर पड़ते रहे—

और कहाँ है तेरा घोड़ा
घोड़ा मेरा फाटक बाहर—
और कहाँ है तेरा फाटक ?
फाटक बह बह गया बाढ़ म

घोड़े की निरन्तर हिनहिनाहट ने उसे और नहीं सोने दिया। आवाज से उसने पहचाना। वह प्योत्र का फौजी घोड़ा था। दारया क गीत न उसकी पलकों पर फिर नींद उतार दी—

और कहाँ है बसहसों की सुघर जोड़ियाँ ?
वे सब चली गइ कि जहाँ जल-बेंत उगे हैं—
और, कहाँ जल-बेंत उगे हैं ?
उन्हें लड़कियाँ काट ल गइ—
और लड़कियाँ भला कहाँ हैं ?
उन्हें ब्याहकर लोग ल गए—
और कहाँ कज्जाक हैं सभी ?
सभी लाम पर चल गये हैं

थोड़ी देर बाद आँखें मींचता हुआ ग्रिगोरी अस्तबल म गया और प्योत्र क घोड़ को हाँककर सड़क पर ल आया। मकड़ी का एक जाला आकर उसक चेहरे पर चिपका और ग्रिगोरी की ऊँघ एकदम भाग गई।

दोन क आर-पार चाँदनी की तिरछी लहरदार किरणें बनी रहीं। नदी के ऊपर लटक रही धुन्ध और धुन्ध के ऊपर अनाज के छितराय हुए दानों से जगमगाते तारे। ऐस म घोड़े ने पैर बहुत सँभाल सँभालकर जमाये। पानी की ओर का ढाल खराब था। दूर स बत्तखों की आवाज आई। कछार क पास छिछले पानी मे एक मछली का छपाका हुआ जैसे उसने किसी छोटी मछली पर झपट्टा मारा हो।

ग्रिगोरी बहुत देर तक नदी के किनारे खड़ा रहा। चारों ओर स एक तरह की बास-सी आ रही थी। घोड़े क होंटों स एक बूँद गिरी।

ग्रिगारी का मन एक सुखद शून्यता से भर उठा मानो उसकी सब चिन्ताएं मिट गई। लौटते समय उसने पूर्व के आकाश पर नज़र डाली तो देखा कि रात का फासला कट रहा है।

वह दौड़कर अस्तबल में गये अपनी माँ के प्रकोष्ठ में पहुँचा।

अरे ग्रीश्का तू है ? वह बोला।

और हो भी कौन सकता है ?

घोड़े को पानी पिला आया ?

हाँ। उसने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया।

माँ ने आँचल में कड़ लगे और झोपड़ी की लौटी तो उसके मूड-भंग पाँवों ने आहट की।

'जाकर आस्ताखोव को जगा दे। स्तीपान ने कहा था कि मैं प्यादों के साथ जाऊँगा।

प्रभात की अनुभूति ने ग्रिगारी के शरीर को सनसनी कँपकपी से भर दिया। उसके रोंगटे खड़े हो गए। उसने दौड़कर आस्ताखोव के घर की तीन सीढ़ियाँ पार कीं। दरवाज़ा खुला हुआ था। स्तीपान बावर्चीखाने में कम्बल पर सो रहा था और उसकी पत्नी का सिर उसके वक्ष पर था।

ग्रिगोरी ने सुबह के झुटपुटे में देखा कि अक्सीनिया की चादर घुटनों पर इकट्ठी हो गई है और बर्फ की छाल सी सफ़ेद उसकी टाँगें फैली हुई हैं। वह एक क्षण खड़ा एकटक देखता रहा। सहसा उसकी ज़बान जैसे सूखने लगी और दिमाग में लोहा-सा भर उठा कि वह पड़ने लगा। उसने दबा में अपनी आँखें उधर से हटाईं और अजीब-सी आवाज़ में चिल्लाया अरे! कोई है यहाँ ? उठो!

अक्सीनिया एक सिसकी के साथ जागी।

आह! कौन है ? उसने तुरन्त ही चादर अपनी नंगी टाँगों पर डाल ली। स्तार तकिये पर गिरी पड़ी थी। सुबह के समय औरतों की नींद प्राय बहुत ही गहरी होती है।

मैं हूँ। माँ ने तुम्हें जगाने को मुझे भेजा है।

अभी उठते हैं। पिस्सुओं के कारण हम ज़मीन पर ही सो रहे

कि यह भी मोसका के मित्र की भाँति ही सड़क पर हाथा के दन गड़ी हो आए—चिन्ता नहीं कि गिरे ता बिच्छू के पौवो के नीचे जा पड़। किन्तु उनकी माँ खिड़की पर खड़ी देख रही थी और उसके गाठ काँप से काँप रहे थ। दूया दुखी होकर घर के अन्दर भाग गई। इस बीच पानी जोर म बरसने लगा। छत के ठीक ऊपर बिजली कड़की और दोन क पार तक लहरती चली गई।

बरसाती म पत्तली और पसाने म तर ग्रिगारी ने पानी की सतह पर तरने वाले जाल को झटके स खींचकर बगल के कमरे स बाहर निकाला।

कच्चा धागा और बड़ी सूई जल्दी करो। ग्रिगारी न पुकारकर दूया म कहा। दारया जाल की मरम्मत करन बठ गई। बच्चे का सुनाती हुई उसकी सास भुनभुनाई—

धन्य है बूढ़े महाराज भला और तुम्हारे दिमाग म क्या आएगा। भला सोन का वक्त हुआ। मिट्टी के तेल की कीमत दिना दिन बढ़ती हा जाती है। कहाँ चले जा रहे हो भला? इस समय जाल म क्या फँसाओग तुम? इस गारखधन्धे म कहीं डूब न मरना। देखते नहीं हो आसमान धरती पर टूटा पड़ रहा है। झाड़ के झुण्ड म कैसी बिजली चमक रही है! हे यीशु! हे माँ-मरी!

क्षण भर का बावर्चीखान म तेज नीली चमक भर गई और भयानक नीरवता छा गई। बन्द दरवाजों पर पानी की बौछारें बजती रहीं। इसी समय बिजली —
खिड़कियों म … छिपा लिया। दारया ने
न पाँवों के … चिह्न बनाया। बूढ़ा
लाल होकर … खिल्ली की खोप …
दूया
क्षमा करना … अपराधों।
यहाँ स छुड़ान … भ
ग्रिगोरी आ
भला यह

चौखा श्रौरता मरम्मत करो मरम्मत। कितने दिन हुए कि मैंने तुमसे जाल ठीक करने को कहा था।'

'इस समय कौन-सी मछली पकड़ोगे तुम?' पत्नी ने उस पर चोट की।

'अगर तुम्हें अक्ल नहीं तो जबान बन्द रखो। मछलियाँ तूफान से डरती हैं। इसी समय तो वे घाट की ओर आएँगी। अब तक तो पानी गदला भी हो गया होगा। दून्या, दौड़कर जा देख कि पानी बहने की आवाज सुनाई देता है या नहीं?'

दून्या प्रसन्न से दरवाजे की ओर बढ़ी।

वृद्धा इलीनिचना से चुप नहीं रहा गया। जोर देकर बोली 'तुम्हारे साथ पानी में जान देने कौन जायेगा? दारया नहीं जा सकती। उसको ठंड लग जाएगी।'

'मैं जाऊँगा और मेरे साथ ग्रिगारी जायेगा। रहा दूसरे जाल की बात तो अकसीनिया को और किसी और औरत को बुला लेंगे।'

दून्या हाँफती हुई अन्दर आई। उसकी बरौनियों से पानी की बूँदें टपक रही थीं और उसके बदन से तर काली धरती की महक आ रही थी।

'पानी बड़े जोरों से बह रहा है।' उसने लम्बी साँस लेते हुए कहा।

'तू चलेगी?'

'और कौन आएगा?'

'और औरत को बुला लेंगे।'

'तो ठीक है।'

'अपना कोट पहन ले और भागकर अकसीनिया के पास चली जा।' पन्तेली बोला, 'वह चले तो उससे कहना कि मलाश्का और फ्रालोवा को भी लेती चले।'

'वह ठंड में भी नहीं जमेगी।' ग्रिगारी ने कहा, 'बछिया सूअर की तरह फूली हुई है।'

माँ ने सलाह दी 'ग्रीश्का बेटे तुम थोड़ी-सी सूखी घास मोजे में दबा

कि वह भी मीरखा के मित्र की भाँति ही सड़क पर हाथा म बन खड़ी हो जाए—चिन्ता नही कि गिरे ता बिच्छू के पौधों क बीच जा पड़े। किन्तु उसकी माँ खिड़की पर खड़ी देख रही थी और उसके होंठ क्रोध से काँप रहे थे। दूया दुखी होकर घर क अन्दर भाग गई। इस बीच पानी जोर म बरसने लगा। छत क ठीक ऊपर बिजली कड़की और दोन क पार तक लहराती चली गई।

बरसाती म पन्तली और पसीन स तर ग्रिगोरी ने पानी की सतह पर तरने वाल जाल को झन्के स खींचकर बगल क कमरे से बाहर निकाला।

बच्चा धागा और बड़ी सूई जल्दी करो। ग्रिगोरी ने पुकारकर दूया स कहा। दारया जाल की मरम्मत करन बैठ गई। बच्चे को सुलाती हुई उसकी सास भुनभुनाई—

धन्य है बूढ़ महाराज भला और तुम्हारे दिमाग म क्या आएगा। चला सोन का वक्त हुआ। मिट्टी क तेल की कीमत दिनों दिन बढ़ती जा जाती है। कहाँ चल जा रहे हो भला? इस समय जाल में क्या फँसाओग तुम? इस गारसथन्य म कहीं डूब न मरना। देखते नहीं हो आसमान धरती पर टूट पड़ रहा है। झाड़ क भट्ट में कसी बिजली चमक रही है। हे यीशु! हे माँ-मेरी!

क्षण भर को वातर्कोलान म तज नीली चमक भर गई और भयानक नीरवता छा गई। बन्द दरवाजा पर पानी की बौछारें बजती रहीं। इसी समय बिजली कड़की। दूया न जाल म मुँह छिपा लिया। दार्या ने खिड़कियों और दरवाजा की ओर देखकर क्रास का चिह्न बनाया। वृद्धा न पाँवों क पास बैठी पाँवों म अपनी पीठ रगड़ती बिल्ली को क्रोध से लाल होकर देखा।

दूया इस बिल्ली को बाहर भगा। माँ-मरी मर अपराधों को क्षमा करना दूया बिल्ली का भगा दे बाहर अहाते म! कि भाग यहाँ स चुड़ैल कहीं की! थुक थू

ग्रिगोरी जाल को नीच रखकर मन ही मन हँसा।

भला यह शोर-गुल काहे का है? बस बस बहुत हो लिया। पन्तेली

चाचा 'औरतों मरम्मत करो मरम्मत। कितने दिन हुए कि मैंने तुमसे जाल ठीक करने को कहा था ।'

इस समय कौन-सी मछली पकड़ोगे तुम ? पत्नी ने उस पर चोट की।

अगर तुम्हें अक्ल नहीं तो जबान बन्द रखो। मछलियाँ तूफ़ान से डरती हैं। अभी सबकी सब घाट की ओर आएँगी। अब तक तो पानी गदला भी हो गया होगा। दून्या दौड़कर जा देख कि पानी बहने की आवाज़ सुनाई देती है या नहीं

दून्या वमन से दरवाज़े की ओर बढ़ी।

बूढ़ी इलीनिच्ना से चुप नहीं रहा गया। ज़ोर देकर बोली "तुम्हारे साथ पानी में जाल देने कौन जायेगा ? दार्या नहीं जा सकती। उसको ठंड लग जाएगी।"

मैं जाऊँगा और मेरे साथ ग्रिगारी जायेगा। रही दूसरे जाल की बात' तो अक्सीनिया को और किसी और औरत को बुला लेंगे।

दून्या हाँफती हुई अन्दर आई। उसकी बरौनियों से पानी की बूँदें टपक रही थीं और उसके बदन से तर काली धरती की महक आ रही थी।

पानी बड़े ज़ोरों से बह रहा है। उसने लम्बी साँस लेते हुए कहा।

तू चलेगी ?

और कौन जाएगा ?

और औरत को बुला लेंगे।

तो ठीक है।

अपना कोट पहन ले और भागकर अक्सीनिया के पास चली जा। पन्तली बोला 'वह चले तो उससे कहना कि मलाश्का और मालोवा को भी लेती चले।

'वह बर्फ़ में भी नहीं जमेगी। ग्रिगारी ने कहा 'बधिया सूअर की तरह फूली हुई है।"

माँ ने सलाह दी ग्रीश्का बेटे तुम थोड़ी-सी सूखी घास सीने में दबा

आह आ! कहीं किनारे के पास से अक्सीनिया चीखी। भयभीत होकर ग्रिगोरी आवाज की दिशा में तैरा।

अक्सीनिया!

हवा और बहते हुए पानी की हरहराहट के सिवा और कुछ सुनाई न पड़ा।

अक्सीनिया!" भय से पीला हो ग्रिगोरी फिर चिल्लाया।

ओ ग्रिगोरी! दूर से पैन्तेली की आवाज आई। सहसा ही कुछ उसके परों में चिपका और उसे अपने हाथों में पकड़ने लगा। यह जाल था।

'ग्रीश्का कहाँ हो तुम?' अक्सीनिया की भर्राई हुई आवाज आई।

तुमने मेरी आवाज का जवाब क्यों नहीं दिया? घुटनों और हाथों के बल तट की ओर रेंगते हुए वह नाराज होकर बोला।

एड़ी के बल बैठते हुए उन्होंने जाल सुलझाया। बादल की फटती हुई सीप तोड़कर चाँद निकला। चरागाहों के पार में बिजली की दबी हुई गड़गड़ाहट सुनाई दी। धरती घुमकर चमकने लगी। वर्षा से आकाश निमग्न हो उठा।

जाल को सुलझाते समय ग्रिगोरी ने अक्सीनिया पर दृष्टि जमाई। अक्सीनिया का चेहरा खड़िया की तरह सफेद था किन्तु कुछ ऊपर को उठे हुए उसके रतनारे होंठों पर मुस्कान थी।

'लहरों ने किस तरह मुझे किनारे से टकराया?' वह बोली मेरे तो होश हवास ही गुम हो गए। डर से मेरी जान निकल गई मैंने सोचा कि तुम डूब गए।

उनके हाथ एक-दूसरे से छू गए। अक्सीनिया अपने हाथ उसकी कमीज में डालने लगी।

'तुम्हारी बाँह कितनी गर्म है!' उसने आह भरते हुए कहा और मैं तो ठंड से जमी जा रही हूँ।

'जरा देखो कि मछली जाल बचाकर कहाँ से भागी,' ग्रिगोरी ने उस जाल के बीचों-बीच कोई पाँच फुट लम्बी फटी हुई जगह दिखलाई।

इस बीच कोई किनारे किनारे दौड़ता हुआ आया। ग्रिगोरी पहचान

गया कि यह दुन्या है। उसने चिल्लाकर कहा तागा मिल गया ?

हाँ पर तुम यहाँ क्यों बठ हुए हो ? पापा न मुझे तुम्हारे पास भेजा है। वह तुम्हें ठिकान पर चाहते हैं अभी। हमने बोरी भरी मछलियाँ पकड़ी हैं।' उसके स्वर म विजय भरा गव स्पष्ट भलक रहा था।

अक्सानिया के दाँत सर्दी स बजते रहे कि उसने आन सी डाला। इसके बाद व सब पूरी शक्ति लगाकर ठिकान का ओर दौड़ ताकि बदन में कुछ गर्मी आ जाए।

पन्तली छालों म भरी अगुलियों म सिगरेट रोल कर रहा था। गव म वाला पहली बार में ही आठ मछलियाँ और फिर दूसरी बार ... न रखा और उसन पाँव म बोरे की ओर इशारा किया। अक्सीनिया न उत्सुकता म बोरे के अन्दर नजर डाली तो हिलती डुलती मछलियों की ... सुनाई पड़ी।

... अब एक बार फिर हम घुटन घुटन तक पानी म आयेंगे और उसके बाद घर ... आइका जा पानी म। घर जाती क्यों नहीं ?

ग्रिगारी न मुड़ पड़े पाँव आग बढ़ाए। अक्सानिया इस तरह काँप रही थी कि जान की थरथराहट स ग्रिगारी का उसके कम्पन का अन्दाज हो रहा था।

काँपो नहीं।

मैं काँपना कब चाहती हूँ पर करूँ क्या ?

सुना, मछलियाँ जाएँ जहन्नुम में। चलो घर चलें।

तभी एक बड़ी-सी कार्प-मछली जाल पर उछली। ग्रिगारी न जाल खींचकर घेरा कम लिया। अक्सानिया ऊपर को दौड़ी। पानी बालू स टकराया और लौट गया। जाल म एक मछली तड़फड़ान लगी।

चरागाह म होकर लौटना है ?

नहीं जगल क रास्त नजदीक पड़ेगा। ग्रिगोरी न कहा।

आ रह हो तुम ?

तुम चलो। हम तुम्हें पकड़ लेंगे जरा जाल साफ कर लें।

अक्सीनिया न त्योरी चढ़ाई स्कट माड़ी कन्धों पर मछलियों का बोरा लादा और लगभग दुलकी चाल स चल दी। ग्रिगारी न जाल

ता होने दो। लेकिन तुम्हारे गाने में कुछ मजा नहीं। हाँ तुम्हारा प्रीश्का खूब गाता है। उसकी आवाज आवाज नहीं है चाँदी का तार है।"

स्तोपान ने सिर पीछे को झटका खाँसा और धीमे सुरील स्वर म गाना शुरू किया

आज सवेर तड़क-तड़के
सूरज चमका
आसमान का कन-कन दमका

तोमालीन न औरतों की तरह अपने गाल पर हथेली रखी और अपने पतले दम भरे स्वर म टेक पकड़ी। जोर पड़ने स उसक माथ की नीली नसें फूलने लगीं तो उन्हे देख-देखकर प्योत्र मुसकराने लगा।

उमर की बारी
सुन्दर नारी
रस की माती
हाँ इठलाती
पानी भरने चली सकारे—
नदी किनारे

क्रिस्तोनिया की ओर सिर कर लटा स्तोपान कुहनी क बल मुड़ा। क्रिस्तोनिया मिलाओ स्वर—

और जवान
गया तुरत ही
सब-कुछ जान—
कसकर घोड़ा भूरी भूरी
उसने तय कर डाली दूरी—

स्तोपान न मुसकराते हुए प्योत्र की ओर देखा। प्योत्र भी गाने लगा। घनी दाढ़ी स ढँके जबड़ा को खोल क्रिस्तोनिया न ऐसी टीप मारी कि ऊपर का मोमजामा काँपने लगा

घोड़ा कसकर जवान
आया बीच मदान

ताकि गोरी पर मारे
नैनों के तीर तान

क्रिस्तोनिया ने अपने नंगे पर समेट लिए और प्योत्र के फिर से शुरू करने की राह देखने लगा। स्तीपान आँखें मूँदे पसीने से तर चेहरा छाया में कर धीमे धीमे गाने लगा। अब कभी स्वर मन्द्र-सप्तक पर रहता तो कभी तार-सप्तक पर पहुँच जाता।

गोरी सुनो मेरी बात—
इसकी घोड़े की बात—
प्यास कर रही है ज़ोर
इसे जाने दो जाने दो उस नदिया की ओर

और फिर क्रिस्तोनिया के भारी स्वर की गूंज में दूसरे स्वर डूब गए। आस पास की गाड़ियों में बैठे लोगों ने भी उसके स्वर में स्वर मिलाए। पहियों के लोहे के हाल झनझनाते रहे, धूल के कारण घोड़े रह रहकर छींकते रहे और गीत के ज़ोरदार स्वर हवा में सरगम भरते रहे। ऐसे में उजले पंखों वाला एक पक्षी तपते मैदान से उड़ता दिखाई पड़ा। उसने ऊपर पालोंवाली गाड़ियों, गर्द के बादल उड़ाते घोड़ों और सड़क के किनारे चलते धूल पड़ गई सफ़ेद कमीज़ोंवाले लोगों की ओर अपने मनके जैसी आँखों से देखा और चीखता हुआ खड्ड की ओर उड़ गया।

पर पक्षी गढ़े में उतरा और उसका काला सीना इधर उधर घूमते जानवरों के खुरों से सपाट बनी घास में छिपा कि सड़क का सारा दृश्य उसकी आँखों से ओझल हो गया। गाड़ियाँ अब भी उसी तरह सड़क पर चलती रहीं और पसीने से तर घोड़े चाहे अनचाहे अब भी गर्द के बादल उड़ाते उसी तरह आगे ही आगे क़दम रखते रहे। पर, इस बीच एक नई बात यह हुई कि कज़्ज़ाक अपनी अपनी गाड़ियों से उतर अपने नेता की ओर दौड़े और उस चारों ओर से घेर हँस-हँसकर लोट-पोट होने लगे।

स्तीपान अपनी गाड़ी में तना खड़ा था। उसने एक हाथ से मोमजामे का पाल साध रखा था और दूसरे से वह ताल देता जा रहा था। वह एक दिल पकड़ने वाला गाना पूरी आवाज़ से, बहुत ही चलती हुई धुन में

छेड़े हुए था

अरे, पास मे न बैठो
मेरे पास तो न बैठो
नहीं तो कहेंगे लोग तुम्हे प्यार मुझसे है—
तुम आ रहे हो पास
तुम्हे प्यार की है आस
तुम्हें बड़ा विश्वास
लेकिन छोकरी नही मैं ऐसी-वैसी ऐरी-गैरी

फिर तो दजनों कंठों ने जो स्वर मिलाए तो आवाज की गूँज से सड़क के किनारे की धूल-गर्द बराबर हो गई

लेकिन छोकरी नही मैं ऐसी-वैसी ऐरी-गैरी
लेकिन छोकरी नही मैं जिसे पा सकोगे तुम—
अपना सकोगे तुम—
मैं लुटेरे की दुलारी
मैं लुटेरे की जनी
लेकिन छोकरी नही मैं जिसे पा सकोगे तुम—
अपना सकोगे तुम—
फिर प्यार हो गया है मुझे राजा के कुमार से—
क्या पा सकोगे तुम ?

फेग्नेत वोदोस्कोव सीटी बजाने लगा। घोड़ो ने कमों पर जोर डाला। गाड़ी से बाहर झांक झांककर प्यात्र हसने और अपनी टोपी हिलाने लगा। स्तीपान ने खुशी से खिलकर अपने कंधे झुका लिए। सड़क पर धूल के बादल उड़ने लगे। बिना पेटी की लम्बी कमीज पहन पसीने से तर क्रिस्तोनिया गाड़ी से नीचे कूद पड़ा और लट्टू की तरह घूम घूमकर कज्जाक-नाच नाचने लगा। रेशमी भूरी धूल में उसके पैरो के निशान जहाँ-तहाँ बन गए।

४

रात को उन्होंने एक ढूह के पास डेरा डाला। ढूह में ऊपर का हिस्सा

रेतीला था।

पश्चिम म मेघ जमा होने लगे और उनके काले पर्तों स पानी की बूँदें चूने लगी। घोड़ों को पास के ताल म पानी पिलाया गया। पास की पुलिया के ऊपर के उदास सरपत हवा क आगे झुक झुक गए।

ताल की छोटी छोटी लहरियों पर बिजली चमकी तो उसकी परछाइं अक्सर ही टूट टूट गई। हवा वर्षा की बूँदों को इस तरह इधर उधर छितराने लगी जैसे धरती की काली हथेलियों पर नाज के टके फेंक रही हो!

कज्जाकों ने पिछले पैरों का बाँध घोड़ों को चरने छोड़ दिया और उनकी देखभाल क लिए तीन आदमी तैनात कर दिए। बाकी लोगों ने आग जलाई और गाड़ियों के बमों पर बर्तन लटका दिए।

क्रिस्तोनिया ज्वार पकाने लगा। अब उसे चम्मच स हिलाते हुए उसने चारों ओर बैठे हुए कज्जाकों [illegible] एक कहानी सुनानी शुरू की

एक टीला था—इसी टील की तरह ऊँचा। उस समय मेरे पिता जिन्दा थे। मैंने उनसे कहा—बिना इजाजत क क्या अतामान[1] हमको टीला खादने देगा?

अब क्या दून का हाँक रहा है? घोड़ों क पास स लौटते हुए स्तीपान पूछा। फिर सिगरेट जलाने क लिए उसने एक छोटा-सा अंगारा उठाया तो उससे बहुत देर तक खिलवाड़ करता रहा।

'ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति दे। मैं बतला रहा था कि मेरे स्वर्गीय पिता और मैंने खजाने की खोज कैसे की। वह मरकूलोव का टीला था। पिता बोले, क्रिस्तोनिया आओ मरकूलोव का यह टीला खोद डालें।' उनसे कभी बाबा ने कहा होगा कि उसमें खजाना गड़ा हुआ है। पिता ने भगवान स वायदा किया 'मुझे खजाना दे दोगे तो मैं एक शानदार गिरजा बनवा दूँगा।' हम चल दिए। वह आम जगह

---

[1] जारशाही रूस के जमाने में कज्जाक बस्ती और सरदार की अगरी के लिए जिन लोगों का चुनाव करते थे, उन्हें 'अतामान' कहते थे। मोटे तौर पर अतामान का अर्थ समझिए—मुखिया या सरदार।

थी इसलिए भगवान ही हमको रोक सकता था। वहाँ तक पहुँचते पहुँचते धूप ढलने लगी, इसलिए रात तक हम रुके रहे, फिर हमने धुर ऊपर पत्थरों से खुदाई शुरू की। छः फुट गहरा गड्ढा हमने खोदा। धरती पत्थर की तरह सख्त थी। मैं पसीने से तर-बतर हो गया। पिता प्रार्थनाएँ गुनगुनाते रहे, पर विश्वास करो भाइयो, मेरे पेट में तो चूहे इस तरह कूदने लगे कि बस! तुम्हें तो मालूम है गर्मियों में हम खाते क्या हैं, यही दही और क्वास। पिता बोले, 'पूह! क्रिस्तोनिया तू पापी है। मैं प्रार्थना कर रहा हूँ और तू अपनी भूख को वश में नहीं रख सकता। मुझसे तो बदबू के मारे साँस भी नहीं ली जा रही। निकल जा तू टीले के बाहर, नहीं तो फावड़े से तेरा सिर तोड़ डालूँगा। तेरी बदबू से खजाना जमीन में धँस जाएगा।' मैं टीले के नीचे जाकर पेट पकड़कर पड़ रहा, पर मेरे पिता, वह बहुत ही मजबूत थे—पक्की ही खुदाई करते रहे। उन्हें एक पत्थर की सिल मिली। उन्होंने आवाज लगाई। मैंने एक गैंता लगाकर उसे उठाया। यकीन करो भाइयो, चाँदनी रात थी और इस पर भी पत्थर के नीचे इतनी चमक थी कि...

'अब हाँक रहे हो क्रिस्तोनिया!' मूँछों के सिरे खींचते हुए प्योत्र मुसकराया।

'कौन हाँक रहा है! जाओ जहन्नुम में!' क्रिस्तोनिया ने चौड़ी मोहरी के पाजामे को झटक अपने श्रोताओं की ओर निहारा, 'नहीं मैं झूठ नहीं बोलता। भगवान् सुन रहा है। वही चमक थी, मैंने देखा तो पत्थर का कोयला निकला। करीब चालीस पूड था। पिता बोले, क्रिस्तोनिया, अन्दर आ जा और इसे खोद डाल। सुबह तक मैं उसे खोदता रहा। सुबह मैंने देखा और वह... वह सामने था...'

'कौन?' तोमासीन ने पूछा।

'अरे भगवान... और कौन! मौके की बात वह सवारी पर उधर ही निकला। तुम्हें किसने खोदने की इजाजत दी? और न जाने क्या क्या कहता रहा। उसने हमें पकड़ लिया और खींचकर गाँव में ले गया। ग्यारहवें साल हम कामेन्स्काया की अदालत में पेश हुए, लेकिन मेरे पिता पहले ही मामला समझ गए और इस दुनिया से चल दिए। हमने लिखकर

भेज दिया कि वह नहीं रहे।

क्रिस्तोनिया ने उबली हुई ज्वार का अपना बर्तन उठाया और ताड़ा से चम्मच मांग चल दिया।

"और तुम्हारे पिता ने क्या किया फिर? उन्होंने गिरजा बनवाने का वायदा किया था न, बनवाया नहीं?" उसके लौटने पर स्तीपान ने पूछा।

"तुम तो बेवकूफ हो, स्तीपान! लेकिन इस कायर के बदले में भला वह क्या बनवाते?"

"जब उन्होंने वायदा किया था तो उन्हें पूरा करना चाहिए था!"

"यह बात तो नहीं हुई थी कि चाहे कोयला निकले और चाहे खज़ाना" हँसी का एक ठहाका गूँजा। आग मचककर जलने लगी। क्रिस्तोनिया ने सिर ऊपर उठाया और बिना यह सब समझे कि लोग क्यों हँस रहे हैं, खुद भी इस तरह ठहाके लगाने लगा कि दूसरों की आवाज़ दब गई।

५

जब स्तीपान अस्ताखोव के साथ अक्सीनिया की शादी हुई तब वह सत्रह बरस की थी। वह दोन के उस पार स्तेपी मैदान में बसे दुबरावका नामक गाँव की लड़की थी।

अपनी शादी से एक साल पहले वह अपने गाँव से कोई आठ वर्स्ट[1] दूर खेत जोत रही थी कि उसके पचास-वर्षीय पिता ने रात में उसके हाथ बाँध लिए और उसके साथ बलात्कार कर डाला। "मुँह से साँस भी निकली तो तुझे जान से मार डालूँगा। लेकिन अगर मुँह बन्द रखेगी तो मैं तेरे लिए प्लश जाकिट, सिल्क मोज़े और गालोश जूते ला दूँगा। याद रख, गला घोंट दूँगा!" बाप ने लड़की से कहा।

अक्सीनिया फटा पेटीकोट पहने रात में ही भागी भागी घर आई

[1] पुराना रूसी नाप। एक वर्स्ट लगभग २/३ मील के बराबर होता है।

दिल म उसके लिए काई स्नेह नही रहा रही कवल स्त्रियोचित करुणा और अभ्यास से बनी आदतें। एक साल क अन्दर ही बच्चा मर गया। जीवन का क्रम पूर्ववत् चलन लगा और जब ग्रिगोरी मलखोव पर अक्सीनिया की निगाह पडी ता अक्सीनिया यह सोचकर सिहर उठी कि वह उस भल हट्ट कट्ट जवान की ओर खिच रही है। वह उस प्यार करता और बडे धीरज और लगन से बदले म प्यार पाना चाहता। इसी धीरज और लगन स अक्सीनिया कॉप गई। उसने देखा कि ग्रिगोरी को स्तीपान का काई डर नही है। वह समझ गई कि स्तीपान क कारण ग्रिगोरी पीछे नहीं हटेगा। उसने यह मुसीबत टालनी चाही और पूरी ताकत स अपने मन पर काबू पाना चा । लेकिन उसने अनुभव किया कि इस पर भी इतवार या छुट्टियो क दिन वह बनाव सिंगार किए बिना रह नहा पाती। वह अपने आपको ओझा देती और किसी-न किसी बहान ग्रिगोरी के सामन पड ही जाती। ग्रिगारी की लुभी और प्यार स भरी निगाह को अपन आप पर जमी देखकर वह प्रसन्न हो उठती। एक दिन वह तडक उठी और दूध दुहन गई तो स्वय ही मुसकरा उठी। और इस मुसकान का कारण समझे बिना अपन आप सोचने लगी— आज का दिन खुशियों स भरा है पर क्या ? आह ग्रिगारी ग्रोश्का ! वह आज की इस नई भावना से सिहर उठी। पर भावना थी कि उसक तन मन म समा गई था। अक्सीनिया अपन विचारो म डूबी हासियारी स राह टटोलने लगी जस कि मार्च क महीन म बर्फ गल रही हो और ऐस म वह दोन पार कर रही हो।

सो स्तीपान को कम्प क लिए विदा कर उसने निश्चय किया कि मैं ग्रिगारी क सामने कम-स कम पड गी। और मछली क शिकार क बाद की उस घटना स उसक निश्चय को बल ही मिला।

८

ट्रिनिटी[1] के दो दिन पहल गॉव की चरागाही जमीन का बँटवारा

[1] ममीहा लोगों का त्रिमूर्ति-समारोह।

हुआ। व्यवस्था में पन्तेली ने भी हिस्सा लिया। शाम को खाने के समय घर लौटा तो भुनभुनाते हुए जूते उतार फेंके और मकान से पूरे अपने परों को ज़ोर से खुजलाता हुआ बोला—

हम लाल किनारे के पास की टुकड़ी मिली है। यहाँ की घास कोई इतनी अच्छी नहीं होती। ऊपरी हिस्सा जंगल तक चला गया है। जगह जहाँ-तहाँ फटी फटी है। कहीं-कहीं लम्बा नुकीला घास उगी हुई है।

अच्छा तो घास काटना कब है? ग्रिगोरी ने पूछा।

छुट्टियों के बाद।

तो दार्या को भी साथ ले जाओगे? बुढ़िया ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा।

पन्तेली ने उसे झिड़क दिया मैं अकेला जाऊँगा। ज़रूरत पड़ी तो उसे भी साथ ले लूँगा। खाना तैयार करो न तुम यहाँ खड़ी मुँह क्या फला रही हो।

बूढ़ा पत्नी ने भट्ठी का तख्ता खोला और शोरबा (बन्दगोभी का गरम शोरबा) बाहर निकाला। पन्तेली काफी देर तक खाने पर बैठा दिन भर की बातों और अतामान की चालबाज़ियों की चर्चा चलाता रहा। अतामान ने कज़ाकों को ठग लिया था।

दार्या टुपकी पिछले साल ही उसने कौन कम बदमाशी की थी। ज़मीनों के बटवारे के समय उसने मलाश्का को किस तरह अटने की कोशिश की थी।

वह हमेशा से ही हरामखोर रहा है कुत्ते का बच्चा। पन्तेली ने जवाब दिया।

लेकिन पापा हमें कौन फिराएगा और कटी हुई घास की टाल कौन लगाएगा? दून्या ने डरते हुए पूछा।

क्यों तुम नहीं करोगी?

मैं अकेला तो कर नहीं सकती।

हूँ! अक्सीनिया अस्ताखोव से कह देंगे। स्तीपान भी तो हमसे अपनी घास काटने को कह गया है।

दो दिन बाद मीश्का कोरशुनोव सफ़ेद टाँगोंवाले स्टलियन घोड़े

पर सवार होकर मेलेखाव के अहाते की ओर आया। उस समय मंद की बूँदें पड़ रही थीं। गाँव में घना कोहरा छाया हुआ था। मीश्का झुका और आँगन का छोटा दरवाज़ा खोल अन्दर घुसा। बुढ़िया ने सीढ़ियों से ही उसे ललकारा—

"ओ शैतान की औलाद! क्या चाहिए तुझे?" उसके स्वर में स्पष्ट असन्तोष झलका। बूढ़ी के हृदय में डील-डौल में भारी-भरकम झगड़ालू मीश्का के लिए ज़रा भी प्यार न था।

"इलीनिच्ना, तुम्हें ऐसी क्या परेशानी है?" मीश्का ने घोड़े को जंगले से बाँधते हुए पूछा, "मैं ग्रिगोरी के पास आया हूँ। कहाँ है वह?"

"शेड में सो रहा है वह। लेकिन किसी ने तुम्हें पीटा है क्या? तुम्हारी टाँग बेकार हो गई है क्या, जो घोड़े पर चढ़े फिरते हो?"

"हर बात में तुम भला अपनी टाँग क्यों अड़ाती रहती हो!" मीश्का को क्रोध आ गया। अपने चमचमाते जूतों पर चाबुक झाड़ता वह ग्रिगोरी को खोजने चल दिया। ग्रिगोरी गाड़ी के नीचे सोता मिला। अपनी बायीं आँख दबाते हुए मीश्का ने उस पर एक चाबुक झाड़ा। बोला, "उठ बे मुज़िक[*]!"

मुज़िक से बड़ी कोई गाली उसे नहीं सूझी। ग्रिगोरी उछलकर बैठ गया मानो स्प्रिंग पर पड़ा रहा हो।

"क्या बात है?"

"उठो, बहुत सो चुके!"

"बेवकूफ़ी की बातें न करो मीश्का, नहीं तो मुझे गुस्सा आ जाएगा।"

"उठो, मुझे तुमसे कुछ ज़रूरी बातें करनी हैं।"

"हुआ क्या?"

मीश्का गाड़ी की बगल में बैठ गया और एक छड़ी से जूतों की मिट्टी झाड़ते हुए बोला, "ग्रीश्का, मेरी बदइज़्ज़ती हो गई है।"

"कैसे?"

---

[*] मुज़िक ज़ारकालीन रूस में छोटे, बेपढ़े लिखे किसान को कहते थे।

"खो न मीत्का ने गालियों की बौछार कर डाली वह लेफ्टिनेंट है न इसलिए शान दिखलाता है। उसने क्रोध से कहा। उसकी टाँगें काँप रही थीं। ग्रिगारी उठकर बैठ गया।

कौन है लेफ्टिनेंट ?

उसकी आस्तीन पकड़ मीत्का ने शान्ति से कहा घोड़े पर झटपट जीन कसो और चरागाह को चलो। मैं उसे दिखला दूँगा। मैंने उससे कहा जाइए हुजूर ! हम देख लेंगे। वह बोला, 'तुम अपने सब साथियों और हिमायतियों को ले आओ। मैं सबको हरा दूँगा। मेरी घोड़ी ने पीटर्सबुर्ग में अफ़सरों की हर्डिल रेस में इनाम जीते हैं। भला उसकी घोड़ी से मुझे क्या लेना-देना ! भाड़ में झोंको उन्हें ! मैं उन्हें अपने स्टेलियन से आगे नहीं निकलने दूँगा।

ग्रिगोरी ने झटपट कपड़े पहने। क्रोध से लाल मीत्का उसे हड़बड़ाने लगा।

'वह मोखोव परिवार से मिलने आया है। ठहरा भला-सा नाम है उसका। शायद लिस्तनित्स्की। लम्बा-चौड़ा है देखने में गम्भीर है। आँखों पर चश्मा चढ़ाता है। खैर ता चढ़ाये चश्मा। चश्मा उसकी मदद नहीं कर सकता। मैं उसे अपने घोड़े के पास तक फटकने नहीं दूँगा !

ग्रिगोरी हँसा और अपनी बूढ़ी घोड़ी पर सवार हो मीत्का के साथ चल दिया। निकला ओसारे के दरवाज़े से ताकि कहीं पिता से मुठभेड़ न हो जाए। लिस्तनित्स्की की घोड़ी से मीत्का के घोड़े की दौड़ हुई। मीत्का जीत गया।

कल ही इसने डेढ़ सौ वेस्ट तय किये हैं। अगर यह थकी न होती तो कारगूनोव तुम मुझसे आगे न निकल पाते। पेड़ से पीठ सटाए, सिगरेट पीते हुए लिस्तनित्स्की ने झाग छोड़ती हुई अपनी घोड़ी की ओर संकेत कर कहा।

हो सकता है। मीत्का ने उदारता से कहा।

मीत्का का स्टेलियन ज़िले में सबसे अच्छा है। एक लड़के ने कहा। वह अभी अभी ही वहाँ आया था।

"घोड़ा अच्छा है। मीत्का बोला और अपने स्टेलियन की गर्दन पर

हाथ फेरने लगा।

फिर ग्रिगोरी और मीत्का गाँव का चक्कर लगाते हुए घर लौट पड़े। मिश्तनिश्का ने उनसे विदा ली। उसने दो अंगुलियाँ अपनी टोपी के अन्दर डालीं और मुड़ गया।

दोनों घर के पास पहुँचे ही थे कि ग्रिगोरी ने अक्सीनिया को अपनी ओर आते देखा। वह एक डाली को छीलती चली आ रही थी। ग्रिगोरी को देखते ही उसने अपना सिर झुका लिया।

तुम शर्म से लाल क्यों हुई जा रही हो? हम कोई नये तो हैं नहीं! मीत्का ने चिल्लाकर कहा और आँख मारी।

सामने देखता हुआ ग्रिगोरी उसके समीप आया ही था कि उसने झकझोर कर चलता हुई अपनी घोड़ी को हल्के से चाबुक मारी। घोड़ी ने अपने पिछले पैरों पर खड़े होकर अक्सीनिया के ऊपर धूल की बौछार कर दी।

पागल शैतान कहीं का!

ग्रिगोरी घोड़ी को उसके पास ले जाकर बोला पहचानती नहीं?

'तुम इस काबिल नहीं।

और इसीलिए मैंने तुम पर धूल का बादल उछाला। इतना अकड़ो मत!

मुझे जाने दो। घोड़ी की नाक के सामने हाथ नचाते हुए अक्सीनिया बोली कुचल डालोगे मुझे अपने घोड़े से?

घोड़ी है घोड़ा नहीं।

मुझे इससे क्या जान दो मुझे!

अक्सीनिया गुस्सा क्यों हो? उस दिन की चरागाह वाली बात पर तो नाराज़ नहीं हो?

ग्रिगोरी ने उसकी आँखों में आँखें डालीं। अक्सीनिया ने कुछ कहने की कोशिश की कि एकाएक उसकी काली आँख की कोर में एक आँसू झलक आया। उसके होठ थरथराने लगे। आँसू कठिनाई से पीती हुई बोली ग्रिगोरी चले जाओ मैं गुस्सा नहीं हूँ मैं और वह चली गई।

ग्रिगोरी को आश्चर्य हुआ। दूसरे ही क्षण वह फाटक पर खड़े मीत्का

के पास जा पहुँचा।

शाम को मिलोगे न ? मीश्का ने पूछा।

'नहीं।

क्या क्या बात है ? अक्सीनिया ने रात की दावत दी है क्या ?

ग्रिगोरी ने माथे पर हाथ फेरा और कोई जवाब नहीं दिया।

६

ट्रिनिटी के नाम पर गाँव के घरों में बची रही फ़र्श पर बिखरी मगवाइन सूखी पत्तियों का चूरा फाटकों और सीढ़ियों पर बँधी ओक तथा ऐश के पेड़ों की डालियों की सिकुड़ी-सूखी पत्तियाँ।

ट्रिनिटी के बाद ही लोग घास को सुखाने के काम में लग गए। सुबह से ही चरागाह त्योहार के अवसर पर बने औरतों के स्कर्टों, एप्रनों की कसीदाकारी के चटख रंगों और रंगीन रूमालों से सजने लगी। सारा गाँव घास की कटाई के लिए निकल पड़ा। घास काटने और ढेंगा करनेवाले ऐसे सज रहे थे जैसे कोई त्योहार मनाने जा रहे हों। दोन से मालदार की झाड़ियों तक के सारे इलाके में इन दिनों जैसे नई जान आ जाती थी। इस बार मेलखोव परिवार ने काम तब आरम्भ किया जब आधा गाँव चरागाह में पहुँच गया।

पैन्तेली प्रोकोफ़ेयेविच काफ़ी देर तक सोते रहते हैं आप।' पसीने से तर घास काटने वाले अभिवादन करते हुए बोले।

मेरी गलती नहीं है—टटा वही औरतों का है। बूढ़े ने हँसकर बैलों को कच्चे चमड़े की चाबुक से ठेला।

पड़ोसी, सलाम थोड़ी देर हो गई आपको है न ? स्ट्रॉ-टाप लगाए एक कज्ज़ाक बोला। वह सड़क के किनारे खड़ा अपना हँसिया तेज़ कर रहा था।

तुम्हारा खयाल है कि घास सूख जाएगी ?

मगर अब भी कटाई शुरू न की तो ज़रूर सूख जाएगी।

गाड़ी के पीछे अक्सीनिया बैठी थी। धूप से बचने के लिए उसने अपना चेहरा पूरी तरह से ढक रखा था पर आँखों की ओट से अपने

सामने बैठे ग्रिगोरी को एकटक देखे जा रही थी।

दार्या भी अच्छे से अच्छे कपड़े पहने पास ही बैठी थी। उसके पैर एक ओर को लटक रहे थे। उसका बच्चा उसकी गोद में औंधा पड़ा था और वह अपनी नीली नसों वाली छातियों से उसे दूध पिला रही थी। दून्या गाड़ी की गद्दी पर बैठी इधर उधर कर रही थी। खुशी से नाचती उसकी निगाहें चरागाह और सड़क पर चलते लोगों का लेखा जोखा ले रही थी। उसका धूप से सँवरा चेहरा जैसे कह रहा था— मेरे मन में उमंग है और मैं खुश हूँ क्योंकि नीलम का धुला आसमान खुशी बरसा रहा है क्योंकि मेरी आत्मा भी उसी नीलम-शान्ति से जगमगा रही है। मैं खुश हूँ। मेरे पास भर मन का सब-कुछ है।

पैन्तेली ने सूती कमीज की आस्तीन मुट्ठी पर मढ़ी और टोपी के नीचे से बहते हुए पसीने को पोंछा। कमीज उसकी झुकी हुई पीठ पर तनी सी लगी और उस पर जहाँ-तहाँ नम धब्बे नजर आए। सूरज की तिरछी किरणों ने एक भूरा बादल भेदा और चरागाह, गाँव, यहाँ से वहाँ तक फैली दूरी और दोन की रुपहली पहाड़ियों को अपने धुँधले प्रकाश से नहला दिया।

दिन उमस अपने साथ लाया। नन्हे-नन्हे बादल औंधाते-से हवा के पंखों पर उड़ते रहे। सड़क पर चलते पैन्तेली के बैलों तक को वे रफ्तार में मात न दे सके। बूढ़े ने चाबुक उठाया और हवा में लहराया। उसकी समझ में न आया कि बैलों के हड्डु-चाउओं पर चोट करे या न करे! शायद बैलों ने उसके मन की दुविधा समझ ली और उसी तरह धीरे धीरे चलते रहे। चरागाह में खलिहानों के आस-पास जहाँ घास कट चुकी थी जमीन में पीले-हरे टुकड़े लौ देते लगे। पर जिस जगह की घास कटी न थी वहाँ की रेशमी हरी घास काले रंग की झाड़ मारती हवा में सरसराती रही।

'वह रही हमारी टुकड़ी।' पन्तेली ने अपना चाबुक नचाया।

थके हुए बैलों को ग्रिगोरी ने खोल दिया। बूढ़े के कान की बाली चमक रही थी। वह टुकड़ी के अपने निशान को देखने चला।

'हँसिए ले आओ।' हाथ घुमाते हुए क्षण भर बाद उसने कहा।

घास को रौंदता हुआ ग्रिगोरी उसके पास पहुँचा। घास पर उसके पाँवों से लहरिया मार्ग बनता चला गया। पैन्तेलो ने दूर के घटाघर की ओर मुँह कर क्रास का चिह्न बनाया। उसकी नोकदार नाक ऐसे चमक रही थी जैसे उसे अभी अभी चमकाया गया हो। उसके फूले हुए गालों पर पसीने की बूँदें बह रही थीं। ऐसे में दाढ़ी में छिपे उजले चमकीले दाँत निकाल वह हँसा अपनी गर्दन दाईं ओर मोड़ी और घास पर हँसिया चलाने लगा। देखते देखते कटी हुई घास का साफ़सुथरा अर्द्धवृत्त उसके पैरों के पास जमा हो गया।

ग्रिगोरी अधमुँदी आँखों से अपने पिता का अनुकरण करता रहा और घास हँसिए से काट-काटकर जमा करता रहा। औरतों के एप्रन उसके सामने इन्द्रधनुष बुनते रहे, पर उसकी आँखें सिर्फ़ कसीदे के काम के एक सफ़ेद ऐप्रन की खोज करती रहीं। उसने अक्सीनिया की ओर देखा और जरा देर बाद अपने पिता के कदमों से क़दम मिलाते हुए फिर घास काटने लगा।

अक्सीनिया उसके दिमाग़ में बराबर नाचती रही। आधी आँखें बन्द कर उसने कल्पना में अक्सीनिया को चूमा और उससे बड़े ही प्यार भरे शब्दों में बातें कीं। वह स्वयं नहीं जान पाया कि वे शब्द उसकी जबान पर आए कहाँ से! फिर वह इन विचारों से उभरा फिर बदस्तूर चालू हो गया एक दो तीन कुछ पिछली यादें हरी हो उठीं—सूखी घास की नम टाल चरागाह के ऊपर चमकता हुआ चाँद झाड़ी से कभी-कभी पोखर में गिरती बूँदें एक दो तीन 'वाह-वाह! क्या कहने हैं वह प्यारे क्षण थे वे!

सहसा ही पीछे से उसे हँसी का ठहाका सुनाई पड़ा। उसने मुड़कर देखा झाड़ी के नीचे दारया लेटी हुई थी और उसके ऊपर झुकी हुई अक्सीनिया उससे कुछ कह रही थी। दारया ने अपने हाथ नचाए और फिर वे दोनों हँस पड़ीं।

पहले उस झाड़ी तक पहुँचूँगा और फिर अपना हँसिया तेज करूँगा—ग्रिगोरी ने सोचा।

एकाएक उसका हँसिया किसी कोमल-सी चीज से टकराया। ग्रिगोरी

ने झुककर देखा एक जंगली बत्तख का बच्चा घास में इधर-उधर भागता और चीखता नजर आया। साथ ही घोंसले के सूराख के पास एक दूसरा बच्चा हँसिए से कटा पड़ा मिला। ग्रिगोरी ने मरी हुई बत्तख को हथेली पर रखा। अभी कुछ दिन पहले ही तो शायद यह अण्डे से बाहर आया था। जगह में गरमी अब तक थी।

चौरस अधखुली चोंच पर खून की गुलाबी-सी बूँद थी। माला की गुरिया-सी आँखें जरा सिकुड़ गई थीं। नन्हे-नन्हे गरम पैर अब तक थर थरा रहे थे। ग्रिगोरी का मन सहसा ही गीला हो उठा। उसने अपनी हथेली पर रखे गेंद-से पंछी को दर्द से देखा।

तुम्हें ऐसा क्या मिल गया ग्रीशा ? दून्या अपनी चोटियाँ अपने सीने पर लहराती कटी हुई घासवाले दान के बीच से नाचती आई। ग्रिगोरी ने बच्चे को फेंक दिया। उसे हँसिये पर गुस्सा-सा आ गया।

खाना जल्दी-जल्दी खाया गया। खाने में सूअर की चर्बी कलचाकों का खास खाना और मखनिया दही। सारी चीजें घर से थैले में लाई गई थीं।

खाने के बाद औरतों ने घास को हेंगी से बराबर करना शुरू किया। कटी हुई घास धूप में सूखने लगी। उससे अजीब सी बास आने लगी।

घर चलने से कोई लाभ नहीं। पैन्तेली ने खाने के बाद कहा हम बैलों को यहीं चरने को छोड़ देंगे और कल ज्यों ही ओस सूख जाएगी घास काटकर बराबर कर देंगे।

दोनों समय मिलने लगे कि उन्होंने काम बन्द कर दिया। अन्तिम दोनों पातों की घास को हेंगी से बराबर कर अकसीनिया कुमार का दलिया पकाने के लिए गाड़ी के पास गई। वह दिन भर ग्रिगोरी की ओर नफ़रत भरी निगाह से ताकती हुई उसका यों मजाक बनाती रही थी जैसे कोई बड़ी चोट भूल न पाती हो और उस बड़े चमन का बदला लेती रही हो। इससे उदास और परेशान हो ग्रिगोरी बैलों को पानी पिलाने के लिए दोन की ओर हाँक ले चला। पिता उसे और अकसीनिया को सारे दिन

देखता रहा था। सो ग्रिगोरी की ओर अप्रिय-दृष्टि से देखते हुए बोला रात के खाने के बाद बलों की चिन्ता करना। देखना कि कहीं घास में न चल जाएँ। मेरी भेड़ की खाल ले लो।

दारया ने अपने बच्चे को गाड़ी के नीचे लिटाया और भाड़ी की लकड़ी काटने के लिए दून्या के साथ चल दी।

घटता हुआ चाँद चरागाह के ऊपर के विस्तृत काले ऊँचे आसमान पर चढ़ गया था। लपटों के चारों ओर पतिंगों का तूफान सा उमड़ चला। रात का खाना एक मोटे कपड़े पर लगा दिया गया। जुआर धुआँ देते बरतन में उबलती रही।

अपनी नीचे की कुरती से चम्मच को पोंछते हुए दारया ने ग्रिगोरी को आवाज़ दी आओ, खाना खा लो।

पिता वाली भेड़ की खाल कन्धों पर डाल ग्रिगोरी अँधेरे से आग के पास आया।

इतना दिमाग क्यों चढ़ा हुआ है?' दारया ने मुसकराकर पूछा।

पीठ में दर्द हो रहा है शायद पानी बरसेगा।' ग्रिगोरी ने जवाब दिया।

तुम बलों की रखवाली करना नहीं चाहते। दून्या हँसी और अपने भाई के पास बैठकर उसे बातों में लगाने की कोशिश करने लगी किन्तु वह असफल रही। पन्तली ने शोरवा पिया और अधपके जुआर दाँतों से चबाने लगा। अक्सीनिया बिना आँखें ऊपर उठाए खाती रही। दारया के परिहास पर केवल मुसकरा दी किन्तु उस मुसकान में कोई उत्साह नहीं था। उसके गाल मन की परेशानी से लाल हो उठे।

सबसे पहले ग्रिगोरी खाकर उठा और बलों के पास गया।

देखना बैल किसी दूसरे की घास न रौंदें। पिता ने चिल्लाकर कहा। इस बीच जुआर गले में अटक गई और वह बहुत देर तक बेचैनी से खाँसता रहा।

दून्या ने अपनी हँसी दबाने की चेष्टा की तो उसके गाल फूल गए।

आग मद्धिम पड़ गई थी। भाड़ी की लकड़ी के चारों ओर जलती हुई पत्तियों से शहद की सी भीनी भीनी महक आने लगी।

आधी रात के समय ग्रिगोरी चोरी-चोरी खम तक गया और कोई दस क़दम के फ़ासले पर रुक गया। पिता गाड़ी पर खर्राटे भर रहा था। अधबुझी आग की राख के बीच से सुनहरे मोर की सी आँखों वाले अंगारे झाँकते रहे।

चादर में लिपटी एक भूरी आकृति गाड़ी से उठी और धीरे ग्रिगोरी की ओर बढ़ी और दो या तीन क़दमों की दूरी पर रुक गई। वह अक्सीनिया थी। ग्रिगोरी का दिल तेज़ी से धड़कने लगा, नाड़ी की गति तेज हो गई। उसने शरीर पर की भेड़ की खाल के सिरे को पीछे झटका और कामना की आग से सुलगती नारी को अपने सीने से लगा लिया। अक्सीनिया घुटनों के बल बैठ गई। वह काँपती रही और उसके दाँत किटकिटाते रहे। ग्रिगोरी ने एकाएक उसे अपने कन्धे पर यों डाल लिया जैसे भेड़िया मरी हुई भेड़ को अपने कन्धे पर डालता है। इसके बाद कोट के घिसटते हुए सिरों के कारण लड़खड़ाता, हाँफता वह उसे ले भागा।

'ग्रीश्का ! ग्रीश्का ! तुम्हारे पापा

'चुप ! चुप !

बिलखती हुई अक्सीनिया ने भेड़ की ऊन के बीच से साँस लेने को सिर निकालते हुए लगभग चीखकर कहा, मुझे छोड़ दो, मैं अपने आप चलूँगी।

१०

जिस औरत के जीवन में प्रेम देर से आता है, उसका प्यार नीला या पास्त के फूल की तरह रतनारा नहीं होता। वह तो रास्ते के एक किनारे उगी हनबेन की झाड़ी की तरह तीखा और शोख होता है।

घास की कटाई के बाद अक्सीनिया बिलकुल बदल गई, मानो किसी ने उसके चेहरे पर कोई खास निशान बना दिया हो—मुहर मार दी हो। गाँव की दूसरी औरतें उसे देखते ही कुटिलता से मुसकराती और उसके निकल जाने पर सिर हिलातीं। कुमारी लड़कियाँ उससे ईर्ष्या करतीं। पर उसका दाम से लाल चेहरा भी हमेशा खुशी में खिला रहता। उसकी गर्दन अभिमान से सदा ही तनी रहती।

जल्दी ही ग्रिगोरी मेलखाव और अक्सीनिया के सम्बन्ध की बात चारों ओर फैल गई। पहले तो कानाफूसी होती रही। लोगों को पूरी तरह विश्वास नहीं हुआ। पर एक रात पिछले पहर गाँव के गडरिये ने उन दोनों को हवा चक्की के पास चाँदनी में राई के खेतों में सटे देख लिया। बस इसके बाद तो यह अफवाह ऐसे फैली जैसे ज्वार के किनारे से टकराने वाली लहर।

बात पन्तेली के कानों में भी पड़ी। एक रविवार को ऐसा हुआ कि वह मोखोव की दूकान पर गया। लोगों की भीड़ ऐसी थी कि वहाँ तिल रखने की जगह न थी। वह अन्दर घुसा तो लोग मुस्कराते हुए उसके लिए रास्ता करने लगे। वह सीधा कपड़े के काउण्टर पर जा पहुँचा। दूकान का मालिक सर्गेई प्लातोनोविच मोखोव स्वयं उसके पास आया। पूछा प्रोकोफ्येविच आजकल कहीं बाहर रहते हो क्या ?

काम बहुत है। काम की तमाम परेशानियाँ हैं।

'क्या ? तुम्हारे बेटों-जैसे लड़कों के होते हुए भी परेशानियाँ ?

'लड़के क्या करेंगे ? प्योत्र कैम्प के लिए चला गया। मुझे और ग्रीश्का को ही सारा काम करना पड़ता है।

मोखोव ने अपनी दाढ़ी के कड़े बालों के बीच अँगुलियाँ फेरीं और कनखी से भीड़ की ओर देखा।

यह तो है पर तुमने हम सबसे इस सबका जिक्र नहीं किया।

किस बात का जिक्र नहीं किया ?

'अरे अपने लड़के का ब्याह रचाने जा रहे हो और किसी को कानोंकान खबर तक नहीं !

किस लड़के का ?

ग्रिगोरी का 'उसकी शादी अभी कहाँ हुई !

'अभी तो उसका शादी-ब्याह का कोई इरादा नहीं।

किन्तु मैंने सुना है कि तुम स्तेपान अस्ताखोव की अक्सीनिया को बहू बनाकर ला रहे हो ?

तुम भी खूब मजाक करते हो प्लातोनोविच ? अरे उसका अपना मर्द है पन्तेली ने कहा।

'मजाक कसा ? मैंने तो लोगों स सुना है।

काउण्टर पर पडे कपडे को पन्तेली ने समेटा और तेजी स मुडकर लगडाता हुआ दरवाज की ओर लपका। बस की तरह सिर झुकाए और घसकर मुट्ठी बाँधे सीधा घर की ओर बढा। मस्ताखोव की झोपडी के सामन स निकलत समय सरपत की घनी बाड के बीच स झाँका। नितम्बों को हिलाती हुई मकसीनिया बनी-ठनी हाथ म खाली बाल्टी लिये झून्ह हिलाती घर मैं घुसती नजर आई। जवानी सदा म कहा ज्यादा निखरी लगी।

ए रुक! पैन्तेली न पुकारकर कहा और दरवाज पर ठिठक गया। मकसीनिया रुक गई। दोनों घर के अन्दर गये तो बडे सिर वाली एक चितकबरी बिल्ली पैन्तेली के पाँवों के पास आकर दुलराने लगी। उसने अपनी पीठ गोलाई और उसे पैन्तेली क जूतों स रगडने लगी। पैन्तेली ने ऐसी कसकर ठोकर लगाई कि बिल्ली झटके से बैंच पर जा गिरी।

अब वह मकसीनिया की आँखों में आँखें डालत हुए चीखा "मैं यह सब क्या सुन रहा हूँ? अभी तरे मर्द को आँखों की ओट हुए दस-बीस दिन भी नहीं गुजरे और तू दूसरे मर्दों पर डोरे डालने लगी? मैं ग्रीश्का का खून कर दूँगा और तर स्तोपान को लिखूँगा। जरा पढने दे बात उसक कान म! रडी कहीं की। तरी मरम्मत हुई नही कायदे से। आज के बाद मेर अहाते में पर न रखना समझी! कमसिन स इश्क लड़ाती है! स्तोपान आयेगा तो निपटेगा तुझसे

मकसीनिया आँखें सिकोड सब-कुछ सुनती रही। एकाएक अपने स्कर्ट क छोरों को बेशर्मी से उठाकर वह पन्तेली के सामने सीना तानकर खडी हो गई। क्रोध स होंठ फुलाती और दाँत किटकिटाती बोली तुम कौन हो मेरे ससुर ? बडे आए सीख देने वाले! जाओ और अपनी धमघूसर औरत को सीख दो! अपने आँगन का कूडा झाडो! झगडा शैतान कहीं का! निकल जा यहाँ से! मैं तेरी धौंस में नहीं आने वाली!

'ठहर तो बेवकूफ की बच्ची"!

क्या होगा ठहरकर? जिस मेरा भाग्य हो। खैर चाहते हो तो चल जाओ। "याद रखो अगर मैं चाहूँ तो तुम्हारे ग्रीशा को हड्डियों सहित चबा जाऊँ—उसकी हड्डियाँ निकालकर रख दूँ। इसकी ज़िम्मेदारी किसी और पर नहीं मुझ पर होगी। क्या हुआ अगर मुझे ग्रीशा से प्यार है तो? तुम मुझे मारोगे? मारो! तुम मेरे पति को लिखोगे? पति को ही नहीं अतामान को लिख दो। लेकिन ग्रीश्का मेरा है और मेरा रहेगा! वह मेरे पास है और वह मेरे पास रहेगा!"

पन्तेली के पैर परेशानी से काँपने लगे।

अक्सीनिया ने उसे अपने सीने से कसकर धक्का दिया तो पन्तेली आर्शिट में सीना फटने में कैसे सारस-सा लगा। उसने अपनी काली-काली आँखों की लपटों से उसे जला डाला और उसके ऊपर गन्दे-से-गन्दे और भद्दे-से-भद्दे अपशब्दों की बौछार की। बूढ़े की भौंहें काँपने लगीं। उसने कोने से अपनी छड़ी उठाई, अन्धों की तरह लड़खड़ाते हुए पीछे हटा। अपने कूल्हों से धक्का देकर दरवाज़ा खोला। अक्सीनिया ने क्रोध से हाँफते हुए, धक्के देकर उसे ड्योढ़ी से बाहर कर दिया और चीखकर बोली: "मैं उसे प्यार करूँगी। मैंने जितना सहा है अब उस सबकी कमी पूरी करूँगी। इसके बाद चाहे तुम मुझे जान से मार डालना—वह मेरा है। ग्रीशा मेरा है।"

होंठों-ही-होंठों में बड़बड़ाता हुआ पन्तेली अपने घर की ओर बढ़ा।

ग्रिगोरी उसे कमरे में ही मिल गया। मुँह से एक शब्द भी कहे बिना उसने अपनी छड़ी उठाई और ग्रिगोरी की पीठ पर दे मारी। ग्रिगोरी दोहराकर पिता की बाँह पर झूल गया।

"यह क्यों पापा?" उसने पूछा।

"बुरी करतूतों के लिए डाइन की औलाद!"

"कैसी करतूतें?"

"अपने पड़ोसी को धोखा न कर। अपने पिता का अपमान न कर। औरतों के पीछे मत जा कुत्ते कहीं के!" पन्तेली ने उसे कमरे में चारों ओर घसीटते हुए कहा। ग्रिगोरी ने उसके हाथ की छड़ी छीनने की कोशिश की।

'तुम मुझे मार नहीं सकते !' ग्रिगोरी ज़ोर से चिल्लाया। दाँतों को भींचकर उसने पतलून में दबी छोर ली और घुटनों पर रखकर टुकड़े-टुकड़े कर दी।

'मैं सबके सामने तुझे कोड़े लगाऊँगा—राक्षस कहीं का ! मैं तेरी शादी गाँव की किसी बेवकूफ लड़की से करूँगा। तुझे बधिया कर दूँगा।' पन्तेली ने दहाड़कर कहा और उसकी गर्दन पर कसी हुई मुट्ठी से घूँसा जमाया।

शोरगुल सुनकर बूढ़ी माँ भागी हुई आई, 'पन्तेली ! पन्तेली ! ज़रा सब्र करो ! ठहरो !'

किंतु बूढ़ा काबू से बाहर था। उसने अपनी पत्नी को झटककर अलग कर दिया, मेज़ को कपड़े की सिलाई की मशीन समेत पलट दिया और विजयी की मुद्रा में भागकर अहाते में पहुँचा। छायापार्श्व में ग्रिगोरी की कमीज़ फट गई थी। वह अभी कमीज़ उतार भी न पाया था कि अहाते से दरवाज़ा खुला और आँधी-तूफ़ान की तरह पिता फिर ड्योढ़ी पर नज़र आया।

'मैं करूँगा इसकी शादी ! डाइन की औलाद !' उसने ग्रिगोरी की पीठ पर घोड़े की तरह लात जमाई। 'मैं कल ही जाकर बात पक्की करूँगा। मैं यह देखने के लिए नहीं जिऊँगा कि मेरे बेटे के नाम पर लोग मेरे मुँह पर मेरी खिल्ली उड़ाएँ।'

'पहले मुझे कमीज़ पहन लेने दो फिर मेरी शादी करना।' ग्रिगोरी बोला।

'मैं करूँगा तेरी शादी ! गाँव की पगली से करूँगा तेरी शादी।' दरवाज़ा धड़ाक से बन्द हुआ और बूढ़ा सीढ़ियों से नीचे उतर गया।

११

मेलाखोव के गाँव के आगे के चरागाह में मोमजामे के पालोंवाली गाड़ियाँ यहाँ-से-वहाँ तक फैली हुई थीं। यहाँ आश्चर्यजनक गति से उसमें छतोंवाला छोटा-सा नगर बस गया था। नगर की सड़कें सीधी

थी। बीच म एक छोटा सा चौक था। चौक में सन्तरी पहरा देता था।

यहाँ लोग शिक्षण शिविर का सा नीरस जीवन बिताते। सुबह चौकसी पर तैनात कज्जाकों की टुकड़ियाँ घास चरते हुए घोड़ों को हाँक कर कम्प में ल जाती। फिर सफाई घोड़ों का खरहरा साज की सफाई और हाजिरी भराई असे कार्यों का दौर शुरू होता। कम्प का स्टाफ़ अधिकारी अपना कमान की सारी व्यवस्था देखता और जोर-जोर से चीखता। जवान कज्जाकों का ट्रेनिंग देने वाला सार्जेण्ट ज़ोर-ज़ोर स हुक्म देता। वे पहाड़ी पर हमले का नाटक करते। दुश्मन को चतुरता स घेर लेते। कटार चलान में युवक कज्जाक आपस म प्रतिस्पर्धा करते। पुराने लोग ट्रेनिंग से ज़्यादा-से-ज़्यादा जान चुराते।

इस तरह गरमी और वोद्का स वहाँ क लोगों क गल भरते रहे कि गमकती हवा बहने लगी। ससलिक कबाब की महक से वातावरण भरने लगा। चिमनी से धुली झोंपड़ियों की घुटन उमस और घुमा स्टेपी के मदान तक पहुँचने लगा।

कम्प समाप्त होने म एक सप्ताह रह गया कि मन्द्रई घर क बने कुरकुरे बिस्कुट जायकेदार मिठाइयाँ और गाँव के ढर-क-ढेर समाचार लिये दिय तोमोलीन की पत्नी अपने पति स मिलने आई।

वह तड़के ही वहाँ स रवाना भी हो गई और कज्जाकों के घर परिवार क लोगों के लिए उनकी सद्भावनाएँ और सन्देश भी अपने साथ ल गई—केवल स्तीपान अस्ताखोव न ही अपन परिवार के लिए कोई सन्देश नहीं भेजा। वह पिछली शाम बीमार पड़ गया था और ठीक होने के लिए उसने वोदका पी ली थी। इसके बाद नशे म ऐसा धुत हो गया था कि दुनिया उसे नजर ही न आई थी। दुनिया में ही तो तोमोलीन की पत्नी भी शामिल थी। वह परेड करने नहीं गया और उसके अनुरोध पर डॉक्टर के सहायक ने रक्त निकालने क लिए उसके मान पर एक दजन जौंकें लगा दीं। स्तीपान अपनी गाड़ी क पहिये क सहारे बनियान पहने बैठा रहा और मुँह खोल अपन फूले हुए सीन का खून चूसती जौंकों का देखता रहा। जौंकें खून पी-पीकर फूलती गई।

रेजीमेंट के डॉक्टर का अर्दली खड़ा सिगरेट पीता और अपन नौनों

तुम मुझे मार नहीं सकते ! ग्रिगोरी ज़ोर से चिल्लाया। दाँतों को भींचकर उसने पन्तेली से छड़ी छीन ली और घुटनों पर रखकर टुकड़े-टुकड़े कर दी।

मैं सबके सामने तुझे कोड़े लगाऊँगा—राक्षस कहीं का ! मैं तेरी शादी गाँव की किसी बेवकूफ़ लड़की से करूँगा। तुझे बधिया कर दूँगा। पेन्तली ने दहाड़कर कहा और उसकी गर्दन पर कसी हुई मुट्ठी से घूँसा जमाया।

शोरगुल सुनकर बूढ़ी माँ भागी हुई आई पन्तेली ! पन्तेली ! ज़रा सब्र करो ! ठहरो !

किन्तु बूढ़ा क़ाबू के बाहर था। उसने अपनी पत्नी को झटककर अलग कर दिया, मेज़ को कपड़े की सिलाई की मशीन समेत उलट दिया और विजयी की मुद्रा में भागकर अहाते में पहुँचा। हाथापाई में ग्रिगोरी की कमीज़ फट गई थी। वह अभी कमीज़ उतार भी न पाया था कि धड़ाक से दरवाज़ा खुला और आँधी-तूफ़ान की तरह पिता फिर बेटे पर नज़र आया।

मैं करूँगा इसकी शादी ! डायन की औलाद ! उसने ग्रिगोरी की पीठ पर घोड़े की तरह लात जमाई। मैं कल ही जाकर बात पक्की करूँगा। मैं यह देखने के लिए नहीं जिऊँगा कि मेरे बेटे के नाम पर लोग मेरे मुँह पर मेरी खिल्ली उड़ाएँ।

पहले मुझे कमीज़ पहन लेने दो फिर मेरी शादी करना। ग्रिगोरी बोला।

मैं करूँगा तेरी शादी ! गाँव की पगली से करूँगा तेरी शादी। दरवाज़ा धड़ाक से बन्द हुआ और बूढ़ा सीढ़ियों से नीचे उतर गया।

११

मेलेखोव के गाँव से आगे स्तेपी चरागाह में मोमजामे से पालोंवाली गाड़ियाँ यहाँ-से-वहाँ तक फैली हुई थीं। वहाँ आश्चर्यजनक गति से उसकी इनायत से छोटा-सा नगर बस गया था। नगर की सड़कें सीधी

थीं। बीच में एक छोटा सा चौक था। चौक में सन्तरी पहरा देता था।

यहाँ लोग शिक्षण शिविर का सा नीरस जीवन बिताते। सुबह चौकसी पर तैनात कज्जाकों की टुकड़ियाँ घास चरते हुए घोड़ों को हाँक कर कम्प में ले जातीं। फिर सफ़ाई घोड़ों का खरहरा साज की मरम्मत और हाज़िरी भराई जैसे कामों का दौर शुरू होता। कम्प का स्टाफ़ अधिकारी अपनी कमान की सारी व्यवस्था देखता और ज़ोर-ज़ोर से चीखता। जवान कज्जाकों को ट्रेनिंग देने वाला सारजेण्ट ज़ोर-ज़ोर से हुक्म देता। वे पहाड़ी पर हमले का नाटक करते। दुश्मन को चतुरता से घेर लेते। कटार चलाने में युवक कज्जाक आपस में प्रतिस्पर्धा करते। पुराने लोग ट्रेनिंग से ज़्यादा-से-ज़्यादा जान चुराते।

इस तरह गरमी और वोद्का से वहाँ के लोगों के गले भर्राते रहे कि गमकती हवा बहने लगी। सललिक कबाब की महक से वातावरण भरने लगा। सफ़ेदी से धुली झोंपड़ियों की घुटन उमस और धुआँ स्टेपी के मैदान तक पहुँचने लगा।

कम्प समाप्त होने में एक सप्ताह रह गया कि अद्रई घर के बने कुरकुरे बिस्कुट ज़ायकेदार मिठाइयाँ और गाँव के ढेर-के-ढेर समाचार लिये दिये तोमीलीन की पत्नी अपने पति से मिलने आई।

वह तड़के ही वहाँ से रवाना भी हो गई और कज्जाकों के घर परिवार के लोगों के लिए उनकी सदभावनाएँ और सन्देश भी अपने साथ ले गई—केवल स्तीपान अस्ताखोव न ही अपने परिवार के लिए कोई सन्देश नहीं भेजा। वह पिछली शाम बीमार पड़ गया था और ठीक होने के लिए उसने वोदका पी ली थी। इसके बाद नशे में ऐसा धुत हो गया था कि दुनिया उसे नज़र ही न आई थी। दुनिया में ही तो तोमीलीन की पत्नी भी शामिल थी। वह परेड करने नहीं गया और उसके अनुरोध पर डाक्टर के सहायक ने रक्त निकालने के लिए उसके सीने पर एक दर्जन जोंकें लगा दीं। स्तीपान अपनी गाड़ी के पहिये से सहारा दिये बनियान पहने बैठा रहा और मुँह खोले अपने फूले हुए सीने का ख़ून चूसती जोंकों को देखता रहा। जोंकें ख़ून पी-पीकर फूलती गईं।

रेजीमेंट के डाक्टर का मददगार बड़ा सिगरेट पीता और अपने दाँतों

की चौड़ी सभों के बीच स धुआँ उड़ाता रहा। बाबा स्तीपान कुछ तबीयत बेहतर मालूम होती है ?

जोंकें मज म खून चूस रही हैं—दिल को आराम मिल रहा है।

इसी बीच तोमोलीन आया और उसने आँख मारी 'स्तीपान मैं एक बात कहना चाहता हूँ।

कहा।' स्तीपान एक झटके से उठा और तोमोलीन को एक ओर ल गया।

'मेरी औरत मुझसे मिलने आई थी। आज सुबह ही वापस गई है।

ता ?

गाँव म तुम्हारा औरत क बड़े चर्चे हैं।

कस चर्चे ?

कोई अच्छे चर्चे नहीं हैं।

"आखिर बात क्या है ?

तुम्हारी पत्नी ग्रिगोरी मलखोव के साथ खुलकर रास रही है।

स्तीपान पीला पड गया। उसन झटके से जोंकें नोची और उन्हें परो स कुचलन लगा। तब एक कर उसने सब जोंकें कुचल डाला कमीज के बटन लगाय और फिर मानो एकाएक भयभीत होकर मारे बटन खोल डाल। उसके सफद हुए होंठ बराबर काँपते रहे। तोमोलीन न सोचा कि वह कुछ खा रहा है। धीरे धीरे स्तीपान के चहरे का रग लौट आया और होंठ स्थिर हो गए। उसन अपनी टोपी उतारी और उसको सफद मागी पर आज पोंछकर जोर स बाला तुमने मुझे बताया लिया उसक लिए धन्यवाद !'

"मैं तुम्हें सावधान करना चाहता था—तुम बुरा न मानना।

तोमोलीन ने हमदर्दी स पाजामे पर हाथ मारे और अपने घोड़े की ओर चला गया। कम्प की ओर स शोरगुल की आवाजें आइ। मालूम हुआ कि बटार की ट्रेनिंग खत्म हो गई। स्तीपान अपनी टोपी की स्याही को कड़ी निगाहों म एकटक देखता रहा। एक अधकुली दम तोड़ती जोंक उसके जूतों के पास रेंग आई।

१२

कज़ाकों के कैम्प में दस दिन और रह गए।

अक्सीनिया देर से जीवन में आई बहार के मज़े लेती प्यार में अन्धी रही। पिता की धमकियों की चिन्ता न कर ग्रिगोरी रात को उसके पास जा पहुँचता और भोर होने पर ही घर लौटता।

दो हफ्तों में ही उसकी सारी शक्ति चुक गई और वह अपनी ताकत से ज्यादा मशक्कत करनेवाले घोड़े की तरह बेदम हो गया। रात को बराबर जागते रहने के कारण उसके गालों की हड्डियाँ उभर आईं और चेहरा साँवला पड़ गया। आँखें गड्ढों में धँस गईं, फटी फटी सी लगने लगीं। अक्सीनिया मुँह उघाड़े ही इधर उधर जाती। उसकी आँखों के नीचे गहरे काले गड्ढे पड़ गए। उसके सूजे हुए प्यासे होंठों की मुसकान में बेचनी से भरी एक चुनौती लहरें लेने लगी।

उनका यह पागलपन से भरा प्रेम इस तरह डंके की चोट पर चला। उनके प्यार की यह आग इस तरह धधकी और सारी लाज शर्म उन्होंने इस तरह धोकर पी ली कि जिसकी निगाह उन पर पड़ती वह अपने आप लज्जित हो जाता। अब इन प्रेमियों की आत्मा तक उन्हें धिक्कारती। ग्रिगोरी के साथियों ने पहले तो अक्सीनिया के विषय में उससे बातें कीं पर अब वे भी होंठ सिये रहते और उसकी संगति से बचते। यद्यपि स्त्रियों को अक्सीनिया से बेहद ईर्ष्या थी फिर भी वे उसको धिक्कारतीं, स्तेपान की वापसी के दिन गिनतीं और अटकल लगातीं कि देखें इस मोहब्बत का अंजाम क्या होता है।

यदि ग्रिगोरी ने अपना प्यार दुनिया की निगाहों से बचाया होता, यदि अक्सीनिया ने ग्रिगोरी के साथ प्रेम का ब्यापार लुक छिपकर बढ़ाई होती और गाँव-समाज के आँखों को काटा न होता तो किसी को उसमें कोई भी खास बात दिखलाई न देती। उस हालत में गाँव में थोड़ी-बहुत चर्चा चलती और फिर मामला दब जाता। पर यहाँ तो बात ही और कुछ थी। दोनों खुल्लमखुल्ला साथ रहते थे और किसी बड़ी भावना से एक-दूसरे से बँधे हुए थे। उनके बीच क्षणिक लगाव-जैसा कुछ भी न था। इसीलिए तो गाँव के लोग इस सम्बन्ध को पाप समझते और

हैरान हो उठते थे। उनका खयाल था कि स्तीपान आयगा और एक हाथ में ही यह डार काट देगा।

अस्ताखोव के सोने के कमरे में पलंग के ऊपर सफेद-काली सूती रीलों से सजी एक डोरी बँधी हुई थी। रीलों पर रात में पक्खियाँ सोतीं और मकड़ियाँ उनके सहारे छत तक जाल तानतीं। एक रात अकसीनिया की नंगी ठंडी बाँहों पर लेटे ग्रिगोरी ने रीलों की ओर देखा। अकसीनिया के खाली हाथ की मेहनत से खुरदरी अंगुलियाँ ग्रिगोरी के बालों के लच्छों से खिलवाड़ करने लगीं। अंगुलियों से गरम दूध की महक आई। ग्रिगोरी ने करवट ली और अकसीनिया की बगल में अपनी नाक सांधी। औरत के पसीने की भीनी मीठी महक से उसके नथुने भर गए।

पलंग लकड़ी का था। उस पर वार्निश हुई थी और उसके पाये देवदारु की लकड़ी के बने थे। दरवाज़े के पास लोहे का भारी सन्दूक रखा हुआ था। उसमें अकसीनिया के कपड़े और दहेज का सामान था। कोने में रखी थी एक मेज़, जनरल स्कोबोलेव का एक रंगचित्र, दो कुर्सियाँ और उनके ऊपर गन्दे कागज़ से ढकी देव-मूर्तियाँ। बाजू की दीवार के सहारे लटके हुए थे चित्र जिन्हें मक्खियों ने गन्दा कर रखा था। इनमें से एक चित्र कज़्ज़ाकों के एक दल का था। उनके माथों पर बालों के छल्ले लटक रहे थे और सीने तने हुए थे। उनकी घड़ियों की चेनें चमचम कर रही थीं और उन्होंने तलवारें खींच रखी थीं। चित्र में अपने साथियों के साथ स्तीपान भी था। वहीं एक खूँटी पर स्तीपान की वर्दी टंगी थी।

सो इस समय चाँद खिड़की से झाँका और उसने सार्जेण्ट के कन्धे की दो सफ़ेद पट्टियों पर अपनी अंगुलियाँ रख दीं।

अकसीनिया ने आह भरी और ग्रिगोरी की भौंहों के बीच की जगह और नाक की नोंक चूमी।

'ग्रीशा, मेरे प्यारे
क्यों क्या है?
सिर्फ नौ दिन रह गए हैं
अभी बहुत समय पड़ा है।
'आहा! भला क्या करेंगे हम?

यह मैं क्या जानूँ ?'

अकसीनिया ने मुहँ से निकलती आह रोकी और ग्रिगोरी के रूखे बालों पर हाथ फेर फेरकर माँग निकालने लगी।

स्तीपान मुझे जान से मार डालेगा। उसके वाक्य में आधा सवाल था तो आधा विश्वास।

ग्रिगोरी चुप रहा। वह सोना चाहता था। बड़ी मुश्किल से उसने अपनी झपकती पलकें उठाईं तो अकसीनिया की आँखों के निकलकर काजल से उसकी आँखें चार हुईं।

मेरा मर्द आ जाएगा तो तुम मुझे छोड़ दोगे ? तुम्हें उससे डर लगता है ?

मुझे उसका क्या डर ? तुम हो उसकी औरत, डर तो तुम्हें होगा।

'तुम्हारे साथ रहती हूँ तो मुझे डर नहीं रहता लेकिन जब दिन में अकेली रहती हूँ और जब खयाल आता है तब डर जाती हूँ।

अँगड़ाई लेकर ग्रिगोरी बोला स्तीपान वापस आ जाएगा यह कोई ऐसी बात नहीं। चिन्ता की बात तो यह है कि पापा मेरी शादी की बात सोच रहे हैं।

वह मुसकराया और कुछ कहने को हुआ कि उसे लगा अकसीनिया का हाथ सिर के नीचे एकाएक ढीला पड़ा तकिये में धसा और पल भर बाद फिर कड़ा हो गया। रुँधे हुए गले से बोली, कोई लड़की है उनके दिमाग़ में ?

इस बारे में कुछ कहा नहीं है अभी तक। माँ कह रही थी कि वह कोरशूनोव की बेटी नताल्या की बात सोच रहे हैं।

'नताल्या—वह तो लड़की अच्छी है। बहुत खूबसूरत है। तुम उससे शादी कर लो। कल ही मैंने उसे गिरजे में देखा था। बड़े क़ायदे से कपड़े पहने हुए थी।

'उसकी खूबसूरती की मुझे ज़रा भी परवाह नहीं। मैं तो तुमसे शादी करना चाहता हूँ।

अकसीनिया ने ग्रिगोरी के सिर के नीचे से अपनी बाँह खींच ली और सूखी आँखों से खिड़की की ओर ताकने लगी। अहाता पाले से धुली पीली

हैरान हो उठते थे। उनका खयाल था कि स्तीपान आयगा और एक हाथ में ही यह डोर काट देगा।

अस्ताखोव के सोने के कमरे म पलग के ऊपर सफद-काली सूती रीलों से सजी एक डोरी बधी हुई थी। रीलों पर रात मे मक्खियाँ सोतीं और मकडियाँ उनक सहारे छत तक जाले तानतीं। एक रात अकसीनिया की नगी टगी बाँहों पर लेटे ग्रिगोरी ने रीलों की ओर देखा। अकसीनिया क काला हाथ की मेहनत स खुरदरी अगुलियाँ ग्रिगोरी के बालो क लच्छो से खिलवाड करने लगी। अँगुलियों से गरम दूध की महक आई। ग्रिगोरी न करवट ली और अकसीनिया की बगल म अपनी नाक साधी। औरत के पसीने की भीनी मीठी महक से उसके नथुने भर गए।

पलग लकडी का था। उस पर वार्निश हुई थी और उसके पाये देवदार की लकडी के बने थ। दरवाज क पास लोहे का भारी सन्दूक रखा हुआ था। उसम अकसीनिया के कपडे और दहेज का सामान था। कोने म रखी थी एक मेज जनरल स्कोबोलेव का एक हँसचित्र दो कुर्सियाँ और उनके ऊपर गन्दे कागज से ढकी देव-मूर्तियाँ। बाजू की दीवार के सहारे लटके हुए थ चित्र जिन्हें मक्खियों ने गन्दा कर रखा था। इनम से एक चित्र कज्जाकों क एक दल का था। उनके माथो पर बालों के छल्ले लटक रहे थ और सीने तने हुए थ। उनकी वर्दियों की चमचम कर रही थी और उन्होने तलवारें खींच रखी थीं। चित्र म अपन साथियों के साथ स्तीपान भी था। वहीं एक खूँटी पर स्तीपान की वर्दी टगी थी।

चाँद खिडकी स झाँका और उसन सार्जेन्ट क कन्धे की दो सफद पट्टियों पर अपनी अगुलियाँ रख दीं।

अकसीनिया ने आह भरी और ग्रिगोरी की भौंहों के बीच की जगह और नाक की नोंक चूमी।

'ग्रीशा मेरे प्यारे

'क्यों क्या है ?

'सिर्फ नौ दिन रह गए हैं

'अभी बहुत समय पड़ा है।

'ग्रीशा ! भला क्या करूँगी मैं ?

"यह मैं क्या जानूँ ?'

अकसीनिया ने मुँह से निकलती आह रोकी और ग्रिगोरी के रूखे बालों पर हाथ फेर-फेरकर माँग निकालने लगी।

'स्तीपान मुझे जान से मार डालेगा।' उसके वाक्य में आधा सवाल था तो आधा विश्वास।

ग्रिगोरी चुप रहा। वह सोना चाहता था। बड़ी मुश्किल से उसने अपनी झपकती पलकें उठाईं तो अकसीनिया की आँखों के निलछरे काजल से उसकी आँखें चार हुईं।

मेरा मर्द आ जाएगा तो तुम मुझे छोड़ दोगे ? तुम्हें उससे डर लगता है ?

मुझे उसका क्या डर ? तुम हो उसकी औरत डर तो तुम्हें होगा।'

'तुम्हारे साथ रहती हूँ तो मुझे डर नहीं रहता लेकिन जब दिन में अकेले रहती हूँ और जब खयाल आता है तब डर जाती हूँ।'

अँगड़ाई लेकर ग्रिगोरी बोला स्तीपान वापस आ जाएगा यह कोई ऐसी बात नहीं। चिन्ता की बात तो यह है कि पापा मेरी शादी की बात सोच रहे हैं।

वह मुसकराया और कुछ कहने को हुआ कि उसे लगा अकसीनिया का हाथ सिर के नीचे एकाएक ढीला पड़ा तकिये में धँसा और पल भर बाद फिर कड़ा हो गया। रुँधे हुए गले से बोली 'कोई लड़की है उनके दिमाग में ?

इस बार में कुछ कहा नहीं है अभी तक। माँ कह रही थी कि वह कोर्शुनोव की बेटी नताल्या की बात सोच रहे हैं।

'नताल्या—वह तो लड़की अच्छी है। बहुत खूबसूरत है। तुम उससे शादी कर लो। कल ही मैंने उसे गिरजे में देखा था। बड़े क़ायदे से कपड़े पहने हुए थी।

"उसकी खूबसूरती की मुझे जरा भी परवाह नहीं। मैं तो तुमसे शादी करना चाहता हूँ।

अकसीनिया ने ग्रिगोरी के सिर के नीचे से अपनी बाँह खींच ली और सूखी आँखों से खिड़की की ओर ताकने लगी। अहाता पाले से धुनी पोली

धुंध से भरा हुआ था। छप्पर की काली परछाई नीचे पड़ रही थी। झींगुर झाँय झाँय कर रहे थे। दोन के निचले हिस्से में तितलौवे भनभना रहे थे। उनकी आवाज़ खिड़की से सुनाई दे रही थी।

ग्रीशा!

सोचा कुछ?

अक्सीनिया ने ग्रिगोरी का खुरदरा हाथ अपने सीने और ठंडे बेजान गालों पर रखकर दबाया और चिल्ला उठी—बुरा हो तेरा! तूने मुझसे प्यार क्यों बढ़ाया? अब मैं क्या करूँगी ग्रीशा! मैं कहीं की नहीं रही। स्तीपान वापस आ रहा है। उसे क्या जवाब दूँगी मैं? कौन मदद करेगा मेरी?

ग्रिगोरी चुप रहा। अक्सीनिया ने उसकी सुघर नोकदार नाक, बन्द आँखें और मूक अधरों को दर्द से भरकर देखा और भावनाओं की बाढ़ ने सहसा ही उसके धीरज का बाँध तोड़ दिया। उसने ग्रिगोरी का चेहरा, उसकी गर्दन, उसके बाजू और उसके सीने के छल्लेदार बाल पागलों की तरह बार-बार चूमे। ग्रिगोरी को उसका सारा शरीर थरथराता लगा। सिसकते हुए वह बोला—

ग्रीशा, मेरे प्यार! मेरे प्राण! आओ हम यहाँ से भाग चलें। चलो, सब-कुछ छोड़कर चल दें! तुम बस मेरे साथ रहो फिर तो न मुझे अपना मर्द चाहिए, न ही और कुछ चाहिए। हम दूर चले जाएँगे—बहुत दूर! खानों की दुनिया में! मैं तुम्हें प्यार करूँगी, तुम पर जान दूँगी। मेरे एक चाचा हैं, वह परोमोनोव-खदानों में चौकीदार हैं। वह हमारी मदद करेंगे। ग्रीशा बोलो! कुछ तो बोलो।

ग्रिगोरी विचारों में डूबा लेटा रहा, फिर अकस्मात् ही उसने अपनी दहकती हुई परदेसी-सी आँखें खोलीं। उन आँखों में उस समय जितना उपहास झलका, उतनी ही फटकार—

अक्सीनिया, तुम बुद्धू हो, निरी बुद्धू! तुम बकती चली जाती हो, पर एक भी बात मतलब की नहीं करती। मैं अपना फार्म कैसे छोड़ सकता हूँ? अगले साल फौज की नौकरी करनी है मुझे—मैं इस इलाके से बाहर एक क़दम नहीं रखूँगा। यहाँ लम्बा चौड़ा स्तेपी मैदान है साँस

भी जा सकती है—और यहाँ? पारसाल गर्मियों में पापा के साथ मैं स्टेशन गया था, मेरी तो जान निकलते निकलते बची। इंजिन ने धुआँ भाप सिर पर उठा लिया। कोयले के धुएँ से हवा काली पड़ गई। न जाने लोग कैसे रह लेते हैं वहाँ, मेरी तो समझ में ही नहीं आता। शायद इसके आदी हो गए होंगे।

मिशारी ने पूछा और फिर बोला, "मैं अपना गाँव कभी नहीं छोड़ूँगा!"

खिड़की के बाहर की रात में स्याही और घुल गई। बादल ने चाँद ग्रस लिया। पाले से धुला पाला धुंध अहाते से गायब हो गई। साथ पंख लगाकर उड़ गए। कहना मुश्किल हो गया कि बाड़ के पार लकड़ियों का गट्ठा है या कोई पुरानी झाड़ी।

कमरे में भी अँधेरा बढ़ गया। स्तेपान की वर्दी की पट्टियाँ भी बुझ गईं और मिशोरी के लिए देखना कठिन हो गया कि अक्सीनिया का कंधा किस तरह थरथराया और फिर कैसे हाथों पर लेटा उसका सिर तकिये पर रह रहकर काँपा।

१३

तोमालीन की पत्नी जब से वापस गई तब से स्तेपान का चेहरा स्याह रहने लगा। उसकी नर्म आँखों पर खून भरा, माथे पर एक गहरा और कठोर बल पड़ा रहने लगा। अब वह अपने साथियों से कम ही बोलता। मामूली-सी बातों पर उनसे उलझ पड़ता, सार्जेंट-मेजर तक से दुश्मनी मान बैठा और प्योत्र मेलेखोव तो उसको फूटी आँखों न सुहाता। उनको उससे जोड़ने वाला स्नेह का सूत्र ढीला पड़ता जाता। वह क्रोध से भीतर-ही भीतर उबलता रहता। ऐसे में वह ढाल पर कान छोड़कर भागते हुए घोड़े की तरह हो गया और उसकी ममता बराबर कगार पर ही आती गई। नतीजा यह कि घर लौटने तक सभी उसके शत्रु हो गए।

उस पर कुछ ऐसी घटनाएँ और घटीं जिनसे आपसी सम्बन्ध और बिगड़े। वे गाँव लौटे तो पहले की तरह ही टोलियों में। गाड़ी में

प्योत्र और स्तीपान के घोड़े जुते। क्रिस्तोनिया अपने ही घोड़े पर सवार पीछे-पीछे चला। तोमोलीन ज्वरग्रस्त गाड़ी के अन्दर अपना ओवर कोट ओढ़े पड़ा रहा। फ़िओदोत बोदोव्स्कोव से सुस्ती के मारे घोड़े न हुके तो प्योत्र ने लगामें सम्हाल लीं। स्तीपान गाड़ी की बगल-बगल चला और अपने हाथ का चाबुक रास्ते में गोखरुओं पर सटकारने लगा। इस बीच पानी बरसने लगा तो काली मिट्टी कालतार की तरह गाड़ी के पहियों से चिपकने लगी। शरदकाल की तरह का नीला आस मान बादलों के कारण मटमैला हो उठा। रात भीगन लगी। कहीं किसी गाँव के पास-दूर की रोशनी नजर न आई। प्योत्र चाबुक के सहारे घोड़े को हल्के-हल्के हाँकता रहा। सहसा ही स्तीपान की चीख ने अँधेरा भेदा।

यह क्या कर रहे हो तुम ? अपने घोड़े को तो मारते नहीं और मेरे घोड़े पर चाबुक-पर चाबुक जमाते जा रहे हो !

आँख खोलकर देखो ! जा चलता नहीं मैं उस घोड़े पर चाबुक चलाता हूँ।

देखना मैं कहा तुम्हें न जोत दूँ घोड़े की जगह ! तुक महज इसी लायक होते हैं !

प्योत्र ने रासें रख दीं क्या चाहते हो तुम ?

अपनी हैसियत समझो

' मैं कहता हूँ कि जबान बन्द कर !

' क्या बरस रहे हो तुम उस पर ? क्रिस्तोनिया ने स्तीपान के पास अपना घोड़ा लाते हुए पूछा।

स्तीपान ने कोई जवाब नहीं दिया। फिर वे आध घंटे तक चुपचाप चलते रहे। पहियों के नीचे से कीचड़ उछल उछलकर ऊपर आती रही। मोमजामे के पाल पर बूँदें पटापट पड़ती रहीं। प्योत्र रासें ढीली छोड़ सिगरेट पीने लगा और मन ही मन सोचने लगा कि अब की बार झगड़ा हुआ तो स्तीपान को वह कौन-कौन-सा गालियाँ देगा।

रास्ते से हटो मैं हाँकने के नीचे बैठना चाहता हूँ स्तीपान ने प्योत्र को धक्का दिया और गाड़ी पर चढ़ने लगा।

अकस्मात् ही गाड़ी झटके से रुक गई। कीचड़ में फिसलकर घोड़े ज़मीन पर पैर मारने लगे। उनके खुरों से चिनगारियाँ निकलने लगीं और बम थरथराने लगे।

प्योत्र चीखकर गाड़ी से नीचे कूद पड़ा।

'क्या बात है?' स्तीपान ने चौंककर पूछा।

प्योत्र बोला, 'ज़रा रोशनी करो।'

सामने का घोड़ा नथुने फड़फड़ा रहा था और अपने आपसे लड़ रहा था। किसी ने एक माचिस जलाई। पल भर को नारंगी रोशनी हुई और फिर अँधेरा छा गया। प्योत्र ने काँपते हाथों से गिरे हुए घोड़े की रीढ़ की हड्डी टटोली और लगाम खींची।

घोड़ा लम्बी साँस छोड़कर एक ओर को लुढ़का। बम बीच से थरथराया। स्तीपान ने तीलियों पर तीलियाँ जलाई। घोड़ा उसका ही गिरा था। घोड़े की अगली एक टाँग गिलहरी के भिटे में घुटने तक धँस गई थी।

क्रिस्तोनिया ने साज खोला। आदेश दिया 'प्योत्र के घोड़े को फ़ौरन खोल दो!'

आख़िर में बड़ी मुश्किल से स्तीपान के घोड़े को उठाकर खड़ा किया गया। प्योत्र ने उसकी लगाम थामी और क्रिस्तोनिया कीचड़ में घुटनों के बल बैठकर उसकी बेबसी से लटकती हुई टाँग टटोलने लगा।

'शायद टूट गई है।' वह भुनभुनाया।

'लेकिन ज़रा देखो, चल सकता है कि नहीं?'

प्योत्र ने लगाम खींची। घोड़ा अपनी अगली बाईं टाँग ज़मीन पर रखे बिना ही एक डग कूदा और फिर हिनहिनाने लगा। अपना ओवर कोट ठीक करते हुए तोमोलीन ने पैर पटके 'टाँग टूट गई! एक घोड़ा गया!'

स्तीपान अब तक एक शब्द भी नहीं बोला मानो किसी ऐसी ही टिप्पणी की प्रतीक्षा में हो। क्रिस्तोनिया को एक तरफ़ धक्का देते हुए वह प्योत्र पर टूट पड़ा। उसने उसके सिर पर चोट की, किन्तु निशाना चूक गया और वार कन्धे पर पड़ा। दोनों हाथापाई करते हुए

कीचड़ में जा पड़े। स्तीपान प्योत्र के ऊपर सवार हो उसके सिर को घुटने से दबा घूँसे जमाने लगा। क्रिस्तोनिया ने खाँचकर उसे अलग किया और खूब गालियाँ दीं।

यह सब आखिर क्यों? खून थूकते हुए प्योत्र चिल्लाया।

देख कि तू हाँकता कहाँ है साँप कहीं के!

प्योत्र ने क्रिस्तोनिया की पकड़ से छूटने को जोर लगाया।

अच्छा तो तुम अब मुझसे लड़ना चाहते हो। एक हाथ से प्योत्र को गाड़ी से भिड़ाते हुए क्रिस्तोनिया चिल्लाया।

उन्होंने बोदोव्स्कोय के छोटे पर तगड़े घोड़े को प्योत्र के घोड़े के साथ जोत दिया। क्रिस्तोनिया ने स्तीपान को अपने घोड़े पर सवार होकर चलने को कहा और खुद प्योत्र के साथ गाड़ी में बैठ गया। आधी रात होते होते वे एक गाँव में पहुँचे और जो झोपड़ी सबसे पहले मिली उसी के दरवाजे पर रुक गए। क्रिस्तोनिया ने झोपड़ी के मालिक से रात भर वहाँ ठहरने की इजाजत माँगी।

इजाजत मिलने पर बोदोव्स्कोय घोड़ों को अन्दर ले गया। वह आँगन के बीच ठोकर खाकर एक सूअर की माँद में गिर पड़ा और गालियाँ बकने लगा। घोड़े बाड़ में लाये गए। तोमोलीन सर्दी के मारे दाँत किटकिटाते हुए झोपड़ी में चला गया। प्योत्र और क्रिस्तोनिया गाड़ी में ही रह गए।

भोर होते ही वे आगे बढ़ने को फिर तैयार हुए। स्तीपान झोंपड़ी से बाहर आया। उसके पीछे पीछे आई मचकती हुई एक कुबी कमरवाली बुढ़िया। क्रिस्तोनिया ने घोड़ों के साज कसते-कसते हमदर्दी से कहा

अरे दादी कैसा कूबड़ निकल आया है तुम्हारे! लेकिन गिरजे में प्रार्थना के समय झुकने में तुम्हें तकलीफ नहीं होती होगी। धरती भी तुम आसानी से ही छू लेती होगी

मगर मुझे झुकने में आसानी होनी है तो तुम्हें कुत्ते मटकाने में मुश्किल न होनी चाहिए भगवान् ने कुछ-न-कुछ अच्छा सबके लिए रखा है बुढ़िया मुसकराई। उसके सारे-के-सारे साबुत दाँतों को देखकर क्रिस्तोनिया अचरज में पड़ गया। बोला कैसे अच्छे दाँत हैं तुम्हारे!

थोड़े-से मुझे नहीं दे दोगी ? कहने को तो मैं जवान हूँ लेकिन दाँत कुल गायब हैं

बेटे अपने दाँत तुम्हें द दूगी तो फिर मेरे पास क्या रह जाएगा ?

हम तुम्ह बदले म एक घोड़ा दे देंगे दादी ! एक-न एक दिन तुम्हें मरना ही है और वहाँ, दूसरी दुनिया म कोइ तुम्हारे दाँत तो देखेगा नहीं। फिर यह भी है कि साधु-सन्यासी दाँतों क सौदागर होते भी नहीं !'

'चालू रखो क्रिस्तानिया ! तोमालीन ने गाड़ी पर सवार होते हुए कहा।

बुढ़िया स्तोपान क पीछे-पीछे घेड में आई। पूछा 'कौन-सा है ?'

काला वाला।" स्तोपान ने आह भरते हुए कहा।

बुढ़िया ने अपनी छड़ी जमीन पर रखी और असाधारण पुरुषोचित गति स घोड़े का चुटीली टाँग उठाई। उसने अपनी पतली टेढ़ी अँगुलियों स घोड़े क घुटन की हड्डी टटोली। घोड़े ने दद स अपन कान पीछे किए और पिछली टाँगों पर खड़ा हो गया।

"नहीं हड्डी नहीं टूटी है, कज्जाक ! तुम इस छोड दो मैं ठीक कर दूगी।'

स्तोपान ने अपना हाथ नचाया और गाडी के पास चला आया।

'घोड़े को छोड़ोगे या नहीं ? बुढ़िया न पलक झपकाते हुए पूछा।

छोड़ दूंगा। उसने उत्तर दिया।

वह करगा तुम्हारा घोड़ा ठीक—लौटोगे तो घोड़े के एक टाँग भी न मिलगी ! क्रिस्तानिया ने हँसते हुए कहा।

१४

दाशा मैं उसके लिए मरी जा रही हू मैं सूखती जा रही हू। मैं अपने स्कर्ट म परतें नहीं डाल सकती। जब वह मेरे घर के आग स निकलता है तो मेरे कलेजे में आग-सी जलने लगती है। जी करता है कि जमीन पर गिर पड़ू और उसके पैरों क निशानों को चूमू। मेरी मदद करो व लोग उसका विवाह करने जा रहे हैं मेरी मदद करो, दादी

जो खर्च पड़ेगा मैं उठाऊंगी मैं अपने बदन पर का आखिरी कपड़ा तक तुम्हें दे दूंगी। बस जैसे भी हो मेरी मदद कर दो।

अक्सीनिया की करुण-गाथा सुनकर बूढ़ी जादूगरनी द्रोज़्दिखा ने झुर्रियों से भरा चेहरा उठाया और उसकी ओर देखकर सिर हिलाया।

'लड़का किसका है?

'पैन्तेली मेलेखोव का।

वह तो तुर्क है है न?

हाँ।

बूढ़ी ने बिना दांतों का अपना मुंह चुलबुलाया और बोली 'बेटी कल बहुत लड़के मेरे पास आना। हम दोन के किनारे चलेंगे और तुम्हारी तड़पन को नदी के पानी में बहा देंगे। अपने साथ एक चुटकी नमक लेती आना।

पीले शाल से मुंह ढक अक्सीनिया बड़ी सावधानी से फाटक से बाहर निकली। रात के अंधियारे ने उसकी काली आकृति पर और पर्दा डाल दिया। हाँ उसकी सैंडिलों की आवाज़ ज़रूर होती रही। गांव में न जाने कहाँ से गाने की आवाज़ आई।

सुबह होते ही रात भर की जगी अक्सीनिया द्रोज़्दिखा की खिड़की पर जा पहुँची। आवाज़ दी दादी!

कौन है?

मैं हूँ अक्सीनिया। उठो!

फिर दोनों गलियों पर गलियां पार करती नदी के किनारे पहुँची। किसी की गाड़ी के बम पानी में डूबे मिले। पानी के ऊपर की रेत बर्फ सी ठंडी लगी। बर्फ़ीली धुन्ध दोन से उठकर आसमान तक छाई थी।

द्रोज़्दिखा ने अपने हड़ीले हाथ से अक्सीनिया का हाथ पकड़ा और उसे खींचती नदी की ओर ले चली। बोली 'नमक मुझे दो। उगते हुए सूरज की तरफ मुंह कर क्रॉस बनाओ।

पूरब की सुखद अरुणिमा की ओर एकटक देखते हुए अक्सीनिया ने क्रॉस बनाया।

चुल्लू में लेकर एक घूंट पानी पिया।

अक्सीनिया ने पानी पिया तो उसके ब्लाउज की आस्तीनें भीग गई

बुन्यिा काली मकड़ी की तरह लहरों के बीच टांग फैलाकर खड़ी हुई, फिर पालथी मारकर बैठी और फुस-फुस करती हुई बोली

'समुन्दर से आनेवाली बर्फीली धारा' इन्सान का तकलीफ़ दे रही हो ...न रात कलपती है ...न रात तड़पती है मोहब्बत का बुखार रहता है ...सके दिल में एक हैवान बसता है पवित्र क्रास की क़सम पावन निष्कलंक माँ मेरी की क़सम खुदा के बन्दे का नाम ग्रिगोरी है

य ...द अक्सीनिया के कानों में पड़े।

ड्रोज़दिखा ने थोड़ा-सा नमक अपने पाँवों के पास की गीली रेत पर छिड़का थोड़ा-सा पानी पर और बाकी अक्सीनिया के सीने में छिपा दिया।

'थोड़ा-सा पानी अपने कन्धे पर डालो जल्दी से!'

अक्सीनिया ने ऐसा ही किया। वह बुन्यिा के पिचके गालों की ओर गुस्से से देखने लगी।

'बस हो चुका?'

'हाँ, बस अब जाओ और सो जाओ।'

अक्सीनिया कोश मारे घर की ओर दौड़ी। गाएँ अहाते से निकली आ रही थीं। ...नींदी दार्या अपनी गायों को हाँककर गाँव के ढोरों के बीच ले जा रही थी। सो अक्सीनिया झपटती हुई बगल से गुज़री तो दार्या मुस्करा दी। पूछा 'रात को आराम से तो सोई पड़ोसिन?'

बहुत आराम से सोई।

'और इतने सबेरे-सबेर कहाँ गई थीं?'

'गाँव में एक जगह जाना था।'

प्रातःकाल की प्रार्थनाओं के लिए गिरजे के घंटे बजने लगे। गाँव की जोशीली मुँहों से जो स्वर फूटे वे अलग अलग होकर गूंज गए। गाँव के चरवाहे ने सड़क के किनारे अपना चाबुक सटकारा। गायों को जल्दी से हाँककर अक्सीनिया ने बाहर निकाला। फिर छानने के लिए दूध लेकर बरसाती में गई। एप्रन से पोंछकर उसने हाथ साफ किये और दूध को छननी में डाल दिया। इस बीच वह बराबर विचारों में

खोई रही।

सड़क की ओर से पहियों की खड़खड़ाहट और घोड़ों की हिनहिनाहट घर के अन्दर आई। अक्सीनिया ने बाल्टी रख दी और सामने की खिड़की से बाहर झाँककर देखने लगी। कटार की मूठ थामे स्तीपान फाटक से अन्दर घुसता दीखा। बाकी कज्जाक गाँव के चौक की ओर बढ़े। ऐप्रन को अंगुलियों में लपेटती अक्सीनिया बेंच पर बैठ गई। सीढ़ियों पर पैरों की आहट हुई, गलियारे में पैरों की आहट हुई और फिर आहट दरवाज़े तक आ गई।

स्तीपान दरवाज़े पर आ खड़ा हुआ—चेहरा उतरा हुआ, देखने में अजीब अजीब।

"हूँ..." वह बोला।

अक्सीनिया अपना मोटा ताज़ा बदन लिये उसके सीने से जा लगी।

"मुझे जी भर मारो।" वह धीमे स्वर में बोली और एक ओर को खड़ी हो गई।

"हूँ! तो आखिर हुआ क्या...?"

"छिपाऊँगी नहीं, मैंने पाप किया है। मुझे जी भर मारो, स्तीपान, मुझे जी भर मारो।"

वह अपना सिर घुटनों के बीच गड़ाकर बैठ गई और हाथों से पेट को बचाते हुए उसकी ओर देखने लगी, पर इस बीच उसका चेहरा डर से बुरी तरह उतर गया। आँखें काले गड्ढों के बीच में स्तीपान को अपलक ताकती रहीं। स्तीपान उसको बगली देकर निकल गया। उसकी मैली कमीज़ में से पसीने की गंध आई। वह टोपी पहने ही पहने पलंग पर लुढ़क गया। क्षणभर बाद उसने कन्धे झटके और कटार की पेटी एक ओर को छिपा दी। उसकी भूरी मूँछों के सिरे गिरे-से रहे। अक्सीनिया ने अपना सिर नहीं घुमाया, पर कनखियों से उसे देखा और रह-रहकर डर से काँपी। स्तीपान ने खाट की पट्टी पर अपने पाँव रखे तो जूतों से धार और मिट्टी झड़ने लगी। वह छत की ओर टकटकी बाँधे कटार की चमड़े की म्यान से खेलता रहा।

"नाश्ता तैयार है?" वह बोला।

'नहीं

कुछ खान को ले भाग्रो ।

स्तीपान ने थोड़ा सा दूध पिया तो उसकी मूँछें भीग गइ । उसने रोटी आहिस्ता आहिस्ता खाई । दहशत स भरी अकसीनिया भट्ठी के पास खड़ी अपने पति का देखती रही । वह खाना खाता रहा और उसके कान रह रहकर उठते गिरते रह।

स्तीपान मज स उठा और उसने अपने सीने पर क्रॉस बनाया । फिर जरा तेज आवाज म बोला भाग्रो, मेरी जान और जरा सुनाओ अपने इश्क के अफसाने !

अकसीनिया ने सिर झुकाए ही झुकाए मज साफ की ।

बतलाओ न कसे तुमन अपने आदमी की राह देखी कसे अपने आदमी की इज्जत बचाई ! बोलो न ! स्तीपान ने कहा और साथ ही ऐसे जोर का घूँसा अकसीनिया के सिर पर मारा कि वह लड़खड़ा गई और दरवाज़े के पास जा गिरी । चौखट स टकराई और वह कराह उठी ।

औरतें तो कमजोर और कोमल होती ही हैं पर स्तीपान तो ऐसा था कि उसका भरपूर घूँसा अगर किसी हट्टे कट्टे जवान के सिर पर भी पड़ जाता तो उसके भी पैर उखड़ जाते । पर शायद भय के कारण या शायद स्त्रियोचित स्वभाव क कारण अकसीनिया कुछ दर ही बेहोश रही । इसके बाद होश म आई क्षणभर लेटी साँस लेता रहा और फिर उठकर बैठ गई ।

इस बीच स्तीपान ने कमरे के बीच खड़े होकर सिगरेट जलाई तो अकसीनिया क खड़ होन का और उसका ध्यान ही नहीं गया। उसन तम्बाकू की थैली मेज पर पटकी और अकसीनिया न बाहर निकलकर भड़ से दरवाजा बन्द किया तो वह उसके पीछे दौड़ा ।

अपना खून से तर सिर लिय अकसीनिया अपने अहाते और मेलखाव परिवार के अहाते के बीच की बाड़ की ओर भागी । स्तीपान न उस बाड़ पर जा पकड़ा और अपना काला हाथ उसक सिर पर ऐस मारा जसे बाज का पंजा किसी पक्षी पर पड़े । स्तीपान की अंगुलियाँ उसके बालों म उलझ गई तो उसन बाल पकड़कर अकसीनिया को राख म अम्बार

पर झोंक दिया। भकसीनिया हर सुबह घर की राख यहीं उड़ेल जाती थी।

यदि अपने हाथ पीछे बांधकर पति अपनी पत्नी को जूतों से रौंदता है तो रौंदे हुआ क्या? एक हाथवाला अलकमई फाटक के पास से गुजरा तो उसने भीतर झांककर देखा पलक झपकाए और मुसकराते हुए दाढ़ी पर हाथ फेरा। बात समझ में न आई। उसने ब्याहता बीबी के साथ ऐसा व्यवहार करने के लिए स्तीपान को जरा भी दोष न दिया। उसका मन चाहा कि देखें स्तीपान मारते-मारते अपनी बीबी की जान निकाल लेता है या नहीं? किन्तु उसकी आत्मा ने गवाही नहीं दी। उसके मन ने कहा—आखिरकार तुम कोई औरत तो हो नहीं।

अगर कोई स्तीपान को इस समय दूर से देखता तो समझता कि वह बज्जाकी नाच कर रहा है। अपनी खिड़की से ग्रिगोरी ने स्तीपान को देखा तो पहले तो वह भी यही समझा। पर जब उसने दुबारा गौर से देखा तो घर से निकलकर भागा। प्योत्र उसके पीछे दौड़ा।

ग्रिगोरी ने बाड़ को पार की जैसे कोई पक्षी उड़ रहा हो। वह पूरी ताकत से स्तीपान पर पीछे से टूट पड़ा। स्तीपान चक्कर खा गया और पीछे घूमकर रीछ की तरह ग्रिगोरी की तरफ झपटा।

दोनों मेलखोव भाई जान छोड़कर लड़े। वे स्तीपान से ऐसे गुंथ गए जैसे गिद्ध किसी लाश पर टूटते हैं। स्तीपान के घूसों से ग्रिगोरी कितनी ही बार जमीन पर जा पड़ा। स्तीपान-जैसे गठीले व्यक्ति के साथ उसका कोई जोड़ न था। यों तो प्योत्र भी स्तीपान के घूंसों के सामने वैसे ही ढह गया जैसे सरपत के पात हवा के थपेड़ों के सामने झुक जाते हैं। पर वह फिर उठकर मजबूती से खड़ा हो गया।

स्तीपान सीढ़ियों की ओर भागा। उसकी एक आंख अंगारे की भांति तो दूसरी अपपके बेर की भांति लाल हो रही थी।

इसी समय संयोग से घोड़े का साज उधार लेने के लिए खिस्तोनिया वहां आया तो उसने बीच बचाव किया।

"खत्म करो झगड़ा!" उसने अपना हाथ नचाते हुए कहा। "अलग हो एक-दूसरे से, नहीं तो मैं अभी जाकर अतामान को खबर करता हूं।"

प्योत्र ने मुंह से खून थूका तो एक दांत हथेली पर आ गिरा। यद्यपि

हुए गन से बोला 'ग्रिगोरी आओ। फिर किसी दिन समझेंगे हम इसको।

देखना कि उलटे कहीं तुम मेरे हाथ न आ जाओ!' स्तीपान न सीढ़ियों पर से धमकी दी।

देखा जाएगा! देखा जाएगा!

देखा क्या जाएगा? मैं तुम्हारी अंतड़ियाँ निकालकर रख दूंगा!

समझ-बूझकर कह रहे हो या मजाक कर रहे हो?

स्तीपान सीढ़ियों स उतरकर जल्दी से नीचे आया। ग्रिगोरी उसका सामना करने को हाथ छुड़ाकर आगे बढ़ा किन्तु क्रिस्तोनिया न उसे फाटक की ओर धक्का देते हुए कहा चलो जरा हिम्मत करो आगे बढ़ने की फिर देखो कि मैं तुम्हारी कैसी हालत करता हूँ!

उस दिन स मेलखोव बन्धुओं और स्तीपान के बीच दुश्मनी की कड़ी गाँठ पड़ गई। यह गाँठ ग्रिगोरी ने खोली दो साल बाद—प्रशिया में स्तोलीपिन के शहर क पास।

१५

'प्योत्र स कहो कि वह घोड़ा और अपना घोड़ा जोत ले।" ग्रिगोरी बाहर निकलकर अहाते म आया तो उसने प्योत्र को खलिहान स लगे शेड स छोटी गाड़ी को बाहर निकालते देखा। बोला पापा कह रहे हैं कि तुम घोड़ी और अपना घोड़ा जोत लो।"

बिना उनके कहे भी मैं यह जानता हूँ। उनसे कहो कि अपना काम देखें। प्योत्र ने गाड़ी में बम फँसाते हुए कहा।

बैल की भाँति पसीने स तर-बतर होने पर भी पन्तली चर्च के वार्डन की तरह गम्भीर बना शोरबा पी रहा था। दून्या ग्रिगोरी की हर हरकत को कड़ी पैनी दृष्टि स देखती रही। इलीनिचना ने इतवार के दिन पहने जाने वाले नियुआ-पीले रंग का शाल ओढ़ ओढ़ होंठों के किनारों पर माँ की ममता झलकाते हुए, वृद्ध से कहा प्रोकाफ़िच अब बस करो नाद देखेगा तो समझेगा कि जाने कितने दिनों के भूखे हो तुम!

माने भी नहीं दोगी जाने कैसी औरत हो तुम!

इसी समय प्योत्र की गहुँआ रंग की लम्बी मूँछें दरवाज़े पर चमकीं। सवारी तैयार है, पधारो!

दून्या को हंसी आ गई और उसने आस्तीन से अपना मुँह ढक लिया। दार्या बावर्चीखाने से गुज़री और उसने होनेवाले दूल्हे पर एक निगाह डाली।

इलीचिना की चतुर विधवा भतीजी मोटी वसीलीसा को मध्यस्थ बनकर जाना था। सो अपना सिर घुमाते, नचाते और हँसते हुए वही सबसे पहले गाड़ी में बैठी। वह मुस्कराई तो उसके होठों के बीच से टूटे काले दाँत चमके।

वसीलीसा! दाँत मत निकालो! पैन्तेली ने उसे डाँटा, इस तरह तुम सब गुड़ गोबर कर दोगी। तुम्हारे दाँत ऐसे हैं जैसे कि सारी रात पहरा देते रहे हों और अब उनमें से एक भी सीधा खड़ा न रह सकता हो!

अरे तो कोई शादी मेरी थोड़े ही रचेगी!

ठीक है कि तुम्हारी शादी नहीं रचेगी, पर तुम अपने दाँत बन्द ही रखो। क्या दाँत हैं! रंग उनका ऐसा है कि जो देखे उसे जूड़ी आ जाय!

वसीलीसा को क्रोध आ गया, किन्तु इसी समय प्योत्र फाटक खोलकर बाहर निकला। चमड़े की चमकती लगाम साधे ग्रिगोरी उचक कर सईस की गद्दी पर आ बैठा। पन्तेली और इलीचिना पीछे की तरफ़ अगल-बगल में दो नवविवाहितों की तरह बैठ गए।

चाबुक जमाओ! हाँको! प्योत्र बोला।

ग्रिगोरी ने अपने होंठ दबाए और चाबुक सटकारा। घोड़े बिना छेड़े आगे बढ़ चले।

देखो, तुम पहिये पर आ पड़ोगे। दार्या ने चीखकर कहा, लेकिन गाड़ी तेज़ी से मुड़ गई और किनारे के टीलों को उछलकर पार करती हुई सड़क पर दौड़ने लगी।

एक बार को झुककर ग्रिगोरी ने प्योत्र के बाएँ घोड़े को चाबुक मारा। इस बीच पैन्तेली ने अपने हाथों से दाढ़ी इस तरह साध ली जैसे उसे डर हो कि यह तेज़ हवा कहीं उसे उड़ा न ले जाय!

घोड़ों को चाबुक लगा!' वह ग्रिगोरी के कंधे पर झुकते हुए मोटे स्वर में बोला। वलदार आस्तीन से इलीनिचिना ने आँसू पोंछे जो हवा के कारण उसकी आँखों में आ गए थे। वह बार-बार पलकें झपकते हुए ग्रिगोरी की नीली साटन की कमीज़ को देखने लगी। कमीज़ के सिरे हवा में उड़ रहे थे। सड़क पर चलते कज्जाक एक ओर को हट गए और उनकी ओर आश्चर्य से देखने लगे। अहातों से निकलकर कुत्ते घोड़ों के पीछे दौड़ने लगे और ज़ोर-ज़ोर से भूँकने लगे।

ग्रिगोरी ने न चाबुक को ढील दी और न घोड़ों को। दस मिनट के के अन्दर अन्दर गाँव पीछे छूट गया। थोड़ी ही देर में कोरशूनोव का लकड़ी के तख्तों की बाड़वाला बड़ा मकान आ गया। ग्रिगोरी ने रास खींची और एकाएक लकड़ी की कारीगरी वाले सुन्दर फाटक के सामने घोड़े जा रुके।

ग्रिगोरी घोड़ों के पास रह गया पर पन्तली लँगड़ाता हुआ सीढ़ियों की ओर बढ़ा। उसके पीछे-पीछे इलीनिचिना और वसीलीजा अपने स्कर्टों को हवा में सरसराती चलीं। बूढ़े की चाल में तेज़ी आ गई। उसे भय था कि कभी में बटोरा हुआ साहस कहीं खो न जाय। ऊँची ड्योढ़ी पर लड़खड़ाने से उसकी लंगड़ी टाँग में ठोकर लग गई। दर्द से बड़बड़ाते हुए वह उन साफ़-सुथरी सीढ़ियों पर पैर पटकने लगा।

वह और इलीनिचिना लगभग एक साथ ही बावर्चीखाने में घुसे। पन्तली को अपनी पत्नी की बग़ल में खड़ा होना अच्छा नहीं लगा क्योंकि वह उससे पूरे [redacted] इंच लम्बी थी। वह एक कदम आगे बढ़ गया और सिर से टोपी उतारकर उसने काली पड़ी देवमूर्ति के सम्मुख क्रॉस बनाया।

भगवान् आपको स्वस्थ रखे। वह बोला।

धन्यवाद! भारी भरकम मकान-मालिक ने तिपाई से उठते हुए कहा।

मिरोन ग्रिगोरीएविच! आपके यहाँ कुछ मेहमान आये हैं। पैन्तली फिर बोला।

मेहमानों का हमेशा स्वागत है यहाँ। मारिया मेहमानों को बैठने

के लिए स्टूल दो।

मिरोन की सपाट सीनेवाली प्रचंड पत्नी ने तीन साफ स्टूलों की धूल झाड़ी और मेहमानों की ओर खिसका दिए। एक स्टूल के सिर पर बैठते हुए पैन्तली ने पसीने से तर अपनी भौंहें रूमाल से पोंछीं।

हम लोग एक काम से आये हैं। उसने बिना किसी तरह की भूमिका बांध कहा। अपने स्कर्टों को समेटती हुई इलीनिचना और वैसीलीजा भी स्टूलों पर बैठ गई।

हुक्म कीजिए, क्या सेवा कर सकता हूं? मिरोन मुसकराया।

तभी ग्रिगोरी अन्दर आया। उसने चारों ओर दृष्टि डाली और कोरशूनोव पति-पत्नी का अभिवादन किया। मिरोन के चकत्तेदार मुंह पर लाली दौड़ गई। अब वह समझा इस भीड़भाड़ का कारण। अपनी पत्नी को आदेश देते हुए बोला: घोड़ों को अहाते में करवा दो और उनके आगे सूखी घास डलवा दो।

हमको एक छोटे-से मसले पर बातें करनी हैं। पन्तेली अपनी घुंघराली दाढ़ी ऐंठते हुए बोला और घबराहट में कानों की बालियाँ नोचने लगा: आपकी लड़की कुंआरी है और हमारा लड़का भी कुंआरा है। हम जानना चाहते हैं कि आप हमें अपनी लड़की दे सकते हैं या नहीं? क्या हमारी और आपकी रिश्तेदारी की कोई बात बन सकती है?

कौन कह सकता है? मिरोन ने अपनी गंजी खोपड़ी खुजलाते हुए कहा: मगर इस साल जाड़ों में उसकी शादी करने का हमारा कोई विचार नहीं। इधर हमारे पास काम का ज़ोर है और उधर लड़की भी कोई सयानी नहीं है। अभी कुल अठारह साल की है। ठीक है न मारिया?

ठीक है।

यहां तो उसकी शादी की उम्र है। वसीलीजा बोली: "लड़की हंसते-खेलते सयानी हो जाती है। यह स्टूल पर कभी इस तरफ को होता तो कभी उस तरफ को। बरसाती से जो लाए वह पूरा सोई

थ वह उसके चुभ रही थी। झाड़ू उसने अपनी जाकिट में छिपा ली थी। परम्परा के अनुसार जो मध्यस्थ लड़की की झाड़ू चुरा लेते थे उनका इन्कार कभी नहीं होता था।

हमारी लड़की के लिए तो लोग बसन्त में ही आये थे। हमारी लड़की बड़ी नहीं रहेगी। हम दयालु भगवान् को हृदय से धन्यवाद देते हैं लड़की काम-काज में निपुण है—काम चाहे घर का हो चाहे खेत का। कोरशूनोव की पत्नी ने उत्तर दिया।

अगर कोई भला आदमी बात लेकर आए तो आपके मुँह से 'ना' कैसे निकलेगा? पन्तेली औरतों के बीच कूदा।

'ना' कहने का सवाल नहीं है। गृहस्वामी ने अपना सिर खुजलाया हम उसका विवाह कभी भी कर सकते हैं।

पन्तेली घबरा गया। उसने सोचा कि कहीं 'ना' न हो जाय। बोला, खैर यह काम आपका है। जिसे गरज होती है वह जहाँ चाहता है वहाँ पूछताछ करता है। अगर आप अपनी बेटी के लिए किसी सौदागर या ऐसे ही किसी बड़े आदमी का बेटा चाहते हैं तो बात और है। हम माफ़ी चाहते हैं।

बातचीत टूटने पर आ गई। पन्तेली खीझ उठा और उसका चेहरा चुकन्दर की जड़ की तरह लाल हो गया। लड़की की माँ की हालत वह हो गई जो चील की पहुँच के अन्दर बैठी मुर्गी की होती है। किन्तु ठीक समय पर वसीलीसा बोल पड़ी। उसने घाव पर मरहम लगाया और अपनी मधुर मीठी बातों से दरार को भर दिया।

अब भाई मामला यह है कि जब कोई ऐसी बात सामने आए तो उसे तय ही होना चाहिए और उसमें भी बच्चों की खुशी का ख़याल सबसे पहले रखा जाना चाहिए। अगर नतालया की बात पूछें तो कहना पड़ेगा कि चिराग लेकर ढूँढ़ने पर भी ऐसी लड़की नहीं मिलेगी। काम के लिए तो उसके हाथ-पैर खुजलाते रहते हैं। बड़ी होशियार औरत साबित होगी और बहुत अच्छी बहू! जहाँ तक उसकी शक्ल सूरत का सवाल है वह तो आप अपनी आँखों से ही देख रहे हैं। फिर पन्तेली और इलीनिचना की ओर घूमते हुए बोली 'जहाँ तक लड़के का

मैं कोई बहुत सुखी नहीं रहा और मुझे उससे नफरत है। लेकिन इस पर भी मुझे उससे प्यार है। रात को ओवरकोट ओढ़कर और हाथ सिर के नीचे रखकर गाड़ी में लेटा सोचता रहा कि देखता हूँ कि घर लौटने पर अक्सीनिया मेरा स्वागत किस तरह करती है। उसे लगा कि उसके सीने में दिल की जगह काला भाग है। उसने बदला लेने की हजार युक्तियाँ सोचीं और उसके दाँत इस तरह भिच गए कि उनके बीच बालू आ गई हो। प्योत्र के झगड़े ने आग में घी का काम किया। पर वह घर पहुँचा थकान से चूर। इसीलिए अक्सीनिया उस दिन सस्ती छूट गई। पर स्तेपान की वापसी के बाद से झगड़े का एक अजीब-सा अन्देशा घर की हवा में चक्कर काटने लगा।

अक्सीनिया दबे पाँवों चलती और कानाफूसी में बातें करती पर ग्रिगारी ने प्यार की जो आग जलाई थी उसकी एक छोटी सी चिनगारी उसकी डर से सहमी आँखों में सदा लौ देती रहती।

स्तेपान अक्सीनिया को ध्यान से देखता तो उसे यह चीज दिखलाई तो नहीं देती पर उसका अनुभव अवश्य होता। वह रह रहकर कुढ़ता। रात में जब मक्खियों का दल छत की धन्नियों पर सो रहता और अक्सीनिया डर से काँपती हुई बिस्तर लगाती तो वह अपनी खुरदरी हथेली से उसका मुँह बन्द कर उसे जी भर पीटता। वह ग्रिगोरी से उसके सम्बन्धों की बात चलाता और शाम से गड़ा देनेवाली तफसीलें जानना चाहता। अक्सीनिया बड़े बिस्तर पर इधर उधर तड़पती और भेड़ की खाल की बास के कारण साँस भी कठिनाई से ही ले पाती। स्तेपान उसके कोमल शरीर को कष्ट देते-देते थक जाता तो उसके चेहरे पर यह देखने को हाथ फेरता कि वह रो रही है या नहीं। पर उसके गाल बिलकुल सूखे रहते। हाँ जबड़े जरूर हरकत करते मिलते—अँगुलियों के नीचे।

बतलाओगी कि नहीं ? उसने पूछा।

नहीं।

मैं जान से मार दूँगा।

मार डालो ! मार डालो ! तुम्हें ईसू की कसम मार डालो ! यह कोई जिन्दगी नहीं

स्तीपान उसकी पसीने से तर छातियों का कोमल खाल नोचता। अक्सीनिया काँपकर कराह उठती।

क्यों तकलीफ़ होती है? स्तीपान व्यंग्य से पूछता।

हाँ होती है।

और तुम क्या सोचती हो मुझे तुम्हारी प्रेम-कहानियाँ सुनकर दुःख नहीं हुआ?

फिर काफ़ी रात होने पर ही वह सोता। सोते में उसकी मुट्ठियाँ बँध जातीं। अक्सीनिया कुहनियों के बल उठकर अपने पति के सुन्दर मुख को देखती। नींद में बिलकुल बदला हुआ मिलता। फिर वह तकिये पर ढह पड़ता। वह मन-ही मन जाने क्या-क्या सोचने लगती।

अब ग्रिगोरी से उसकी मुलाकात कम ही होती। लेकिन एक दिन अकस्मात ही वह उसे दोन के किनारे मिल गया। वह बैलों का पानी पिलाने नदी किनारे ले गया था और अब ढाल से ऊपर आ रहा था। अक्सीनिया ढाल से नीचे जा रही थी—दोन की तरफ़। उसने ग्रिगोरी को देखा तो ऐसा लगा जैसे कि बाल्टियों की रस्सी उसके हाथों में बर्फ़ बनी जा रही है और खून उसकी कनपटियों में आ आकर उछल रहा है।

बाद में जब उसने इस मुलाकात की याद की तो उसे स्वयं ही विश्वास न हुआ। ग्रिगोरी ने उसे सिर्फ़ तब देखा जब वह उसकी बग़ल से गुज़री। बाल्टियों की लगातार आवाज़ सुनकर उसने सिर उठाया तो उसकी भौंहें काँपी और वह बेवकूफ़ की तरह मुसकरा दिया। अक्सीनिया दोन की हरी लहरों और पार के रेतीले टीले को देखती रही। उसकी आँखों से चमकते हुए आँसू उमड़ चले।

'अक्सीनिया!

अक्सीनिया कुछ क़दम आगे बढ़ी और सिर झुकाकर इस तरह खड़ी हो गई जैसे कि किसी ने सिर पर घूँसा मार दिया हो। ग्रिगोरी लगड़ा कर चलते बैल पर क्रोध से चाबुक सटकारते हुए बिना सिर घुमाए ही बोला राई काटने स्तीपान कब जाएगा?

"तुम्हारे ही समझो।"

'उसे विदा कर तुम हमारे सूरजमुखी वाले खेत में आना मैं बाट

म पहुँच जाऊँगा।

बाल्टियाँ बजाती अक्सीनिया दोन के किनारे आई। लहर के हरे सिरे पर पीली बल की चमक की तरह झाग साँप स चक्कर लगात रहे। सफेद समुद्री चिड़ियाँ हवा म चक्कर लगाती और नदी पर आकर पंख फड़फड़ाती रहीं। नदी की सतह पर छोटी मछलियाँ चाँदी की बरसात करती रहीं। उस पार रेतील टीले का सफेदी से आगे पुरान देवदारुओं की भूरी चोटियाँ सी दीखती रहीं। पानी भरने म अक्सीनिया की बाल्टी हाथ से छूटकर गिरी। स्कर्ट को ऊपर चढ़ाकर वह घुटनों तक पानी में घुस गई। पानी उसकी पिंडलियों क चारों ओर चक्कर काटकर उसे धीरे धीरे गुदगुदाने लगा। वह हँस पड़ी। स्तेपान की वापसी के बाद शान्ति और अनिश्चितता से आज वह पहली बार हँसी थी।

उसने मुड़कर ग्रिगोरी की ओर देखा। अभी भी चाबुक हिलाता वह आराम स ढाल पर चल रहा था। अक्सीनिया की आँख भर आई और वह धुँधली निगाहों से उसकी स्वस्थ टाँगों को निहारती रही। ग्रिगोरी का बड़ी मोहरी का पाजामा ऊनी मोजा म दबा हुआ था और उसकी लाल धारियाँ बड़ी सुहानी लग रही थी। कमीज पीठ पर से फट गई थी और सूराख म स उसका भरा हुआ शरीर नजर आ रहा था। अक्सीनिया ने देह क इस छोटे-स टुकड़े को निगाहों स बार-बार चूमा। कभी यही शरीर किस तरह उसका अपना और कितना प्यारा रहा था! उसकी मुसकानों से राज होंठ आँसुओं स नहा उठे।

बहँगी म साधने क लिए उसने बाल्टियाँ बालू पर रखी तो उसे ग्रिगोरी क जूतों के निशान दिखलाई पड़े। उसने चारों ओर देखा दूर घाट पर नहाते कुछ लड़कों क अलावा कहीं कोई और दीख न पड़ा। अक्सीनिया पालथी मारकर बैठ गई और अपनी हथेली से उसने ग्रिगोरी के पैरों क निशानों को ढक लिया। फिर उठकर खड़ी हुई बहँगी कन्धे पर लटकाई और अपने आप पर हँसती हुई तेजी स चल दी।

मखमली धुंध स ढका सूरज गाँव क ऊपर से गुजर रहा था। श्वेत बादलों के छोटे-छोटे टुकड़ों क झुण्ड म आगे शान्त शीतल नीली चरागाह थी। लोहे की तपती छतों धूल भरी सूनी सड़कों और फ़ार्मों क पीली

घासों वाले मैदानों में आग बरस रही थी।

अक्सीनिया घर की सीढ़ियों के पास पहुँची तो चौड़े छज्जेवाला तिनकों का टोप पहने स्तेपान घोड़ों को कटाई-मशीन में जोतता मिला। बोला, "घड़े में थोड़ा पानी डाल दे।"

अक्सीनिया ने घड़े में बाल्टी भर पानी डाला और लोहे के गरम सिरे से अपनी अंगुलियाँ जला लीं।

"थोड़ी बर्फ से लस लो" उसने अपने पति की पसीने से तर पीठ की ओर देखते हुए कहा।

"जाओ मलखोव-परिवार में थोड़ी-सी बर्फ ले आओ" पर नहीं रहने दो," स्तेपान ने जोर से कहा। यादें हरी हो उठीं।

अक्सीनिया खेत का फाटक बन्द करने चली। स्तेपान ने आँखें नीची कर चाबुक सम्हाला। पूछा "कहाँ चली?"

"फाटक बन्द करने।"

"रहने दे कुतिया कहीं की! मैंने कहा नहीं कि जाने की जरूरत नहीं।"

वह जल्दी-जल्दी लौटी और बहँगी लटकाने लगी, पर उसके हाथ बुरी तरह काँपने लगे। बहँगी नीचे गिर पड़ी।

स्तेपान ने मोमजामे का अपना कोट घास की सीट पर डाला और रास सम्हाली, "फाटक खोल दे!"

फाटक खोलते समय अक्सीनिया ने हिम्मत से पूछा, "कब तक लौटोगे?"

"शाम तक। मैंने अनीकुश्का के साथ कटाई करने का फैसला किया है। उनका खाना पहुँचा आना। लोहार के यहाँ काम खत्म कर वह खेतों की तरफ आयगा।"

मशीन के पहिये चरमराये और भूरी धूल पर अपने निशान बनाने लगे। अक्सीनिया झोंपड़ी में गई और क्षणभर माथे पर हाथ रखे खड़ी रही। फिर सिर से रूमाल बाँध नदी की तरफ भागी।

लेकिन यदि वह लौट पड़े तो क्या होगा? उसके मस्तिष्क में सहसा ही विचार कौंधा। वह ठिठकी जैसे आगे कोई गहरा गड्ढा आ गया हो। एक बार पीछे नजर दौड़ाई। दूसरे ही क्षण लगभग दौड़ती

म पहुँच जाऊँगा।

बाल्टियाँ बजाती अक्सीनिया दोन के किनारे आई। लहर के हरे सिरे पर पीली धूल की चमक की तरह झाग साँप स चक्कर लगात रहे। सफद समुद्री चिड़ियाँ हवा में चक्कर लगाती और नदी पर आकर पख फड़फड़ाती रहा। नदी की सतह पर छोटी मछलियाँ चाँदी की बर सात करती रहीं। उस पार रेतील टील की सफेदी से आगे पुराने दब दारुओं की भूरी चोटियाँ लौ देती रहीं। पानी भरने में अक्सीनिया की बाल्टी हाथ स छूटकर गिरी। स्कट को ऊपर चढ़ाकर वह घुटनों तक पानी मे घुस गई। पानी उसकी पिंडलियों क चारों ओर चक्कर काटकर उसे धीरे धीरे गुदगुदाने लगा। वह हँस पड़ी। स्तोपान की वापसी के बाद शान्ति और अनिश्चितता से आज वह पहली बार हसी थी।

उसने मुड़कर ग्रिगोरी की ओर देखा। अभी भी चाबुक हिलाता वह आराम स ढार पर चढ रहा था। अक्सीनिया की आँख भर आई और वह धुधली निगाहों से उसकी स्वस्थ टाँगों को निहारती रही। ग्रिगोरी का चौड़ी मोहरी का पाजामा ऊनी मोजों म दबा हुआ था और उसकी लाल धारियाँ बड़ी सुहानी लग रही थीं। कमीज पीठ पर स फट गई थी और सूराख म स उसका भरा हुआ शरीर नजर आ रहा था। अक्सीनिया न दह के इस छोटे-स टुकड़े को निगाहों स बार-बार चूमा। कभी यही शरीर किस तरह उसका अपना और कितना प्यारा रहा था! उसकी मुसकानों से उसके होंठ आँसुओं से नहा उठे।

बहँगी म लटकाने क लिए उसने बाल्टियाँ बालू पर रखीं तो उसे ग्रिगोरी क जूतों के निशान दिखलाई पड़े। उसन चारों ओर देखा दूर घाट पर नहाते हुए लड़कों क अलावा कहीं कोई और दिखाई न पड़ा। अक्सीनिया पालथी मारकर बैठ गई और अपनी हथेली स उसने ग्रिगोरी के पैरों क निशानों को ढक लिया। फिर उठकर खड़ी हुई बहँगी कन्धे पर लटकाई और अपने आप पर हँसती हुई तेजी स चल दी।

मखमली पथ स बना सूरज गाँव क ऊपर स गुजर रहा था। सफेद बादलों क छोटे-छोटे टुकड़ों क झुण्ड क आग शान्त शीतल नीली चरागाह थी। लोहे की तपती छतों धूल भरी सूनी सड़कों और फार्मों के पीली

घासों वाले मैदानों में आग बरस रही थी।

अक्सीनिया घर की सीढ़ियों के पास पहुँची तो चौड़े छज्जेवाला तिनकों का टोप पहने स्तीपान घोड़ों को कटाई-मशीन में जोतता मिला। बोला 'घड़े में थोड़ा पानी डाल दे।'

अक्सीनिया ने घड़े में बाल्टी भर पानी डाला और लोहे के गरम सिर से अपनी अंगुलियाँ जला लीं।

'थोड़ी बर्फ़ ले लेते' उसने अपने पति की पसीने से तर पीठ की ओर देखते हुए कहा।

'जाओ मलखोव-परिवार से थोड़ी-सी बर्फ़ न माँगो' पर नहीं रहने दो ' स्तीपान ने जोर से कहा। [illegible]

अक्सीनिया बाड़ का फाटक बन्द करने चली। स्तीपान ने आँखें नीची कर चाबुक सम्हाला। पूछा कहाँ चली?

'फाटक बन्द करने।

''रहने दे कुतिया कहीं की! मैंने कहा नहीं कि जाने की ज़रूरत नहीं।

वह जल्दी-जल्दी लौटी और बहँगा लटकाने लगी पर उसके हाथ बुरी तरह काँपने लगे। बहँगा नीचे गिर पड़ा।

स्तीपान ने मोमजामे का अपना कोट मशीन की सीट पर डाला और रास सम्हाली फाटक खोल दे!

फाटक खोलते समय अक्सीनिया ने हिम्मत से पूछा कब तक लौटोगे?

'शाम तक। मैंने अनीकुश्का के साथ कटाई करने का फ़ैसला किया है। उसका खाना पहुँचा आना। लोहार के यहाँ काम ख़त्म कर वह खेतों की तरफ़ आयेगा।

मशीन के पहिये घरघराये और भूरी धूल पर अपने निशान बनाने लगे। अक्सीनिया झोंपड़ी में गई और क्षणभर माथे पर हाथ रखे खड़ी रही। फिर सिर से रूमाल बाँध नदी की तरफ़ भागी।

लेकिन यदि वह लौट पड़े तो क्या होगा? उसके मस्तिष्क में सहसा ही विचार कौंधा। वह ठिठकी जैसे आगे कोई गहरा गड्ढा आ गया हो। एक बार पीछे नज़र दौड़ाई। दूसरे ही क्षण लगभग दौड़ती

म पहुँच जाऊँगा।

बाल्टियाँ बजाती अक्सीनिया दोन के किनारे आई। लहर के हरे सिरे पर पीली बल की चमक की तरह झाग सौंप से चक्कर लगाते रहे। सफेद समुद्री चिड़ियाँ हवा म चक्कर लगाती और नदी पर आकर पंख फड़फड़ाती रहीं। नदी की सतह पर छोटी मछलियाँ चाँदी की बरसात करती रहीं। उस पार रेतीले टीले की सफेदी स आगे पुराने देवदारुओं की भूरी चोटियाँ लौ देती रहीं। पानी भरने म अक्सीनिया की बाल्टी हाथ स छूटकर गिरी। स्कर्ट को ऊपर चढ़ाकर वह घुटनों तक पानी म घुस गई। पानी उसकी पिंडलियों के चारों ओर चक्कर काटकर उसे धीरे धीरे गुदगुदाने लगा। वह हँस पड़ी। स्तीपान की वापसी के बाद शान्ति और अनिश्चितता से आज वह पहली बार हँसी थी।

उसने मुड़कर ग्रिगोरी की ओर देखा। अभी भी चाबुक हिलाता वह आराम से ढाल पर चढ़ रहा था। अक्सीनिया की आँखें भर आईं और वह धुँधली निगाहों से उसकी स्वस्थ टाँगों को निहारती रही। ग्रिगोरी का बड़ी मोहरी का पाजामा ऊनी मोजों म दबा हुआ था और उसकी लाल धारियाँ बड़ी सुहानी लग रही थीं। कमीज पीठ पर से फट गई थी और सूराख म स उसका भरा हुआ शरीर नजर आ रहा था। अक्सीनिया न देह क इस छोटे-से टुकड़े को निगाहों स बार-बार चूमा। कभी यही शरीर किस तरह उसका अपना और कितना प्यारा रहा था! उसकी मुसकानों से सजे होंठ आँसुओं से नहा उठे।

बहँगी म साधन क लिए उसने बाल्टियाँ बालू पर रखीं तो उसे ग्रिगोरी के जूतों के निशान दिखलाई पड़े। उसने चारों ओर देखा। दूर घाट पर नहाते कुछ लड़कों के अलावा कहीं कोई और दिख न पड़ा। अक्सीनिया पालथी मारकर बैठ गई और अपनी हथेली से उसने ग्रिगोरी के पैरों क निशानों को ढक लिया। फिर उठकर खड़ी हुई, बहँगी कन्धे पर लटकाई और अपने आप पर हँसती हुई तेजी स चल दी।

मखमली धुंध स ढका सूरज गाँव क ऊपर से गुजर रहा था। ज्वेत बादलों क छोटे-छोटे टुकड़ों क झुण्ड क आगे शान्त नीतल नीली चरागाह थी। लोहे की तपती छतों धूप भरी सूनी सड़कों और फार्मों क पीली

खामों वाले बहातों में आग बरस रही थी।

अक्सीनिया घर की सीढ़ियों के पास पहुँची तो चोट छज्जेवाला तिनकों का टोप पहने स्तीपान घोड़ों को कटाई-मशीन में जोतता मिला। बोला, घड़े में थोड़ा पानी डाल दे।'

अक्सीनिया ने घड़े में बाल्टी भर पानी डाला और लोहे के गरम सिरे से अपनी अँगुलियाँ जला लीं।

'थोड़ी बर्फ़ ले लो' उसने अपने पति की पसीने से तर पीठ की ओर देखते हुए कहा।

आप्रा मलखोव-परिवार में थोड़ी-सी बर्फ़ ले आओ' पर नहीं रहने दो" स्तीपान ने ज़ोर से कहा। याद हरी हो उठी।

अक्सीनिया खेत का फाटक बन्द करने चली। स्तीपान ने आँखें नीची कर चाबुक सम्हाला। पूछा कहाँ चली?

"फाटक बन्द करने।

रहने दे कुतिया कहीं की! मैंने कहा नहीं कि आने की ज़रूरत नहीं।'

वह जल्दी-जल्दी लौटी और लहँगी झटकाने लगी पर उसके हाथ बुरी तरह काँपने लगे। लहँगा नीचे गिर पड़ा।

स्तीपान ने मोमजामे का अपना कोट आगे की सीट पर डाला और रास सम्हाली 'फाटक खोल दे!

फाटक खोलते समय अक्सीनिया ने हिम्मत से पूछा कब तक लौटोगे?

"शाम तक। मैंने अनीकुश्का के साथ कटाई करने का फ़ैसला किया है। उसको खाना पहुँचा आना। लोहार के यहाँ काम खतम कर वह खेतों की तरफ़ आयेगा।

मशीन के पहिये चरमराये और भूरी धूल पर अपने निशान बनाने लगे। अक्सीनिया झोंपड़े में गई और क्षणभर माथे पर हाथ रख खड़ी रही। फिर सिर से रूमाल बाँध नदी की तरफ़ भागी।

'लेकिन यदि वह लौट पड़े तो क्या होगा?' उसके मस्तिष्क में सहसा यह विचार कौंधा। वह ठिठकी जैसे आगे कोई गहरा गड्ढा आ गया हो। एक बार पीछे नज़र दौड़ाई। दूसरे ही क्षण लगभग दौड़ती

में पहुँच जाऊँगा।

बाल्टियाँ बजाती अक्सीनिया दोन के किनारे आई। लहर के हर सिरे पर पीली झल की चमक की तरह झाग सीपें से चक्कर लगाते रहे। सफेद समुद्री चिड़ियाँ हवा में चक्कर लगाती और नदी पर आकर पंख फड़फड़ाती रहीं। नदी की सतह पर छोटी मछलियाँ चाँदी की बर सात करती रहीं। उस पार रेतीले टीले की सफेदी से आगे पुराने देव दारुओं की भूरी चोटियाँ ली देती रहीं। पानी भरने में अक्सीनिया की बाल्टी हाथ से छूटकर गिरी। स्कर्ट को ऊपर चढ़ाकर वह घुटनों तक पानी में घुस गई। पानी उसकी पिंडलियों के चारों ओर चक्कर काटकर उसे धीरे धीरे गुदगुदाने लगा। वह हँस पड़ी। स्तीपान की वापसी के बाद शान्ति और अनिश्चितता से आज वह पहली बार हँसी थी।

उसने मुड़कर ग्रिगोरी की ओर देखा। अभी भी चाबुक हिलाता वह आराम से घास पर चढ़ रहा था। अक्सीनिया की आँखें भर आई और वह भूखी निगाहों से उसकी स्वस्थ टाँगों को निहारती रही। ग्रिगोरी का बड़ी मोहरी का पाजामा ऊनी मोजों में दबा हुआ था और उसकी लाल धारियाँ बड़ी सुहानी लग रही थीं। कमीज पीठ पर से फट गई थी और सूराख में से उसका भरा हुआ शरीर नजर आ रहा था। अक्सीनिया ने देह के इस छोटे-से टुकड़े को निगाहों से बार-बार चूमा। कभी यही शरीर किस तरह उसका अपना और कितना प्यारा रहा था! उसके मुसकानों से सजे होंठ आँसुओं से नहा उठे।

बहँगी में लादने के लिए उसने बाल्टियाँ बालू पर रखीं तो उसे ग्रिगोरी के जूतों के निशान दिखलाई पड़े। उसने चारों ओर देखा दूर घाट पर नहाते मुट्ठी भर लड़कों के अलावा कहीं कोई और दीख न पड़ा। अक्सीनिया पालथी मारकर बैठ गई और अपनी हथेली से उसने ग्रिगोरी के पैरों के निशानों को ढक लिया। फिर उठकर खड़ी हुई बहँगी कन्धे पर लटकाई और अपने आप पर हँसती हुई तेजी से चल दी।

मसमसी धुँध से ढका सूरज गाँव के ऊपर से गुजर रहा था। श्वेत बादलों के छोटे-छोटे टुकड़ों के झुण्ड के आगे शान्त शीतल नीली चरा गाह थी। लोहे की तपती छतों धूल भरी सूनी सड़कों और फार्मों के पीली

धामों वाले मकानों में आग बरस रही थी।

अक्सीनिया घर की सीढ़ियों के पास पहुँची तो चौड़े छज्जेवाला तिनकों का टोप पहने स्तीपान घोड़ों को कटाई-मशीन में जोतता मिला। बोला ' घड़े में थोड़ा पानी डाल दे।

अक्सीनिया ने घड़े में बाल्टी भर पानी डाला और लोहे के गरम सिरे से अपनी अँगुलियाँ जला लीं।

'थोड़ी बर्फ ले लेते' उसने अपने पति की पसीने से तर पीठ की ओर देखते हुए कहा।

'जाओ मेलखोव-परिवार से थोड़ी-सी बर्फ ले आओ' पर नहीं, 'रहने दो' स्तीपान ने जोर से कहा। आँखें हरी हो उठीं।

अक्सीनिया खेत का फाटक बन्द करने चली। स्तीपान ने आँखें नीची कर चाबुक सम्हाला। पूछा कहाँ चली?

फाटक बन्द करने।

रहने दे कुतिया कहीं की! मैंने कहा नहीं कि जाने की जरूरत नहीं।

वह जल्दी-जल्दी लौटी और बहँगी लटकाने लगी पर उसके हाथ बुरी तरह काँपने लगे। बहँगा नीचे गिर पड़ी।

स्तीपान ने मोमजामे का अपना कोट आगे की सीट पर डाला और रास सम्हाली 'फाटक खोल दे!

फाटक खोलते समय अक्सीनिया ने हिम्मत से पूछा कब तक लौटोगे?

शाम तक। मैंने अनीकुश्का के साथ कटाई करने का फ़ैसला किया है। उसको खाना पहुँचा आना। लोहार के यहाँ काम खतम कर वह खेतों की तरफ आयेगा।

मशीन के पहिये चरमराये और भूरी धूल पर अपने निशान बनाने लगे। अक्सीनिया झोंपड़ी में गई और क्षणभर माथे पर हाथ रखे खड़ी रही। फिर सिर से रूमाल बाँध नदी की तरफ भागी।

लेकिन यदि वह लौट पड़े तो क्या होगा? उसके मस्तिष्क में सहसा यह विचार कौंधा। वह ठिठकी जैसे आगे कोई गहरा गढ़ा आ गया हो। एक बार पीछे नजर दौड़ाई। दूसरे ही क्षण लगभग दौड़ती

म पहुँच जाऊँगा।

बाल्टियाँ बजाती अक्सीनिया दोन के किनारे आई। लहर के हरे सिरे पर पीली बेल की चमक की तरह झाग सौंप से चक्कर लगाते रहे। सफ़ेद समुद्री चिड़ियाँ हवा म चक्कर लगाती और नगी पर आकर पंख फड़फड़ाती रहा। नदी की सतह पर छोटी मछलियाँ चाँदी की बरसात करती रहीं। उस पार रेतील टीले की सफ़ेदी से आगे पुराने देवदारुओं की भूरी चोटियाँ लौ देती रहीं। पानी भरने म अक्सीनिया की बाल्टी हाथ से छूटकर गिरी। स्कर्ट को ऊपर चढ़ाकर वह घुटनों तक पानी म घुस गई। पानी उसकी पिंडलियों के चारों ओर चक्कर काटकर उसे धीरे धीरे गुदगुदाने लगा। वह हँस पड़ी। स्तीपान की वापसी के बाद शान्ति और अनिश्चितता स आज वह पहली बार हँसी थी।

उसने मुड़कर ग्रिगोरी की ओर देखा। अभी भी चाबुक हिलाता वह आराम स डाल पर बढ़ रहा था। अक्सीनिया की आँख भर आई और वह धुंधली निगाहों स उसकी स्वस्थ टाँगों को निहारती रही। ग्रिगोरी का बड़ी मोहरी का पाजामा ऊनी मोजों म दबा हुआ था और उसकी लाल धारियाँ बड़ी सुहानी लग रही थीं। कमीज़ पीठ पर से फट गई थी और सूराख म स उसका भरा हुआ शरीर नज़र आ रहा था। अक्सीनिया ने देह के इस छोटे-से टुकड़े को निगाहों स बार-बार चूमा। कभी यही शरीर किस तरह उसका अपना और कितना प्यारा रहा था। उसकी मुसकानों से सजे होंठ आँसुओं से नहा उठे।

बहँगी म साधन क लिए उसने बाल्टियाँ बालू पर रखीं तो उसे ग्रिगोरी क जूतों के निशान दिखलाई पड़े। उसन चारों ओर देखा दूर घाट पर नहाते कुछ लड़कों क अलावा कहीं कोई और दीख न पड़ा। अक्सीनिया पालथी मारकर बैठ गई और अपनी हथेली स उसने ग्रिगोरी के परों क निशानों को ढँक लिया। फिर उठकर खड़ी हुई बहँगी कन्धे पर लटकाई और अपन आप पर हँसती हुई तेज़ी स चल दी।

मसमसी धुंध स ढका सूरज गाँव के ऊपर स गुज़र रहा था। श्वेत बादलों क छोटे छोटे टुकड़ों क झुण्ड क आगे शान्त फ़ीरोज़ी नीली धरा गाड़ थी। लोहे की तपती छतों धूल भरी सूनी सड़कों और फ़ार्मों के पीली

"तुम्हें नहीं मालूम ? वह मुझे रोज मारता है। वह मेरा खून चूस रहा है और तुम भी क्या आदमी हो ! मुझे कुत्ते की तरह पटवाया और फिर किनारा कस लिया तुम सब कांपती अंगुलियों से उसने अपनी ब्लाउज के बटन लगाये और डर गई कि कहीं ग्रिगोरी बुरा न मान जाए। उसने उसकी ओर दृष्टि डाली पर उसकी निगाह दूसरी ओर थी।

'तो तुम इलजाम मेरे सिर रखना चाहती हो !' घास के तिनके को दांतों से चबाते हुए वह धीरे से बोला।

तो क्या ग़लती तुम्हारी नहीं है ?' वह क्रोध से चिल्लाई।

✓ जो कुतिया राजी नहीं होती कुत्ता उसको नहीं घेरता।

अक्सीनिया ने हाथों से अपना मुँह छिपा लिया। इस अपमान से उसके सीने पर जैसे घूँसा पड़ा।

ग्रिगोरी ने भौंहों पर बल डाल उसे तिरछी नज़र से देखा। उसकी अंगुलियों के बीच एक आँसू ढुलकता रहा। सूरज की एक टूटी धुंधली किरण उस झलमलाते बूँद पर चमकी और उसके निशान को खोल गई।

ग्रिगोरी ने उसकी आँखों में आँसू देखे तो वह बेचैन हो उठा।

क्या मेरी बात से तुम्हारे दिल को चोट पहुँची है ? अक्सीनिया चुप हो जाओ !'

अक्सीनिया ने अपने मुँह पर से हाथ हटा लिया।

मैं तुम्हारे सिर पड़ने यहाँ नहीं आई। डरो मत।

ग्रिगोरी का चेहरा पछतावे से लाल हो गया अक्सीनिया, मेरा यह मतलब नहीं था' मेरी बात अपने मन से निकाल दो। उसने एक लम्बी साँस ली।

उस समय वास्तव में उसने अपने आपसे यही कहा हाँ मैं ग्रिगोरी के साथ अपने आपको बाँधने नहीं आई। किन्तु जब वह दोन के किनारे दौड़ी आई थी तो उसके मन में धुंधला-सा विचार आया था मैं ग्रिगोरी से बातें करूँगी ! उसकी शादी नहीं होने दूँगी। अगर उसकी शादी हो जाएगी तो मैं किसके साथ रहूँगी ? इसी समय उसे स्तीपान का ध्यान हो आया था। उसने अपना सिर झटककर इस दुखदायी विचार को अपने मन से निकाल फेंका।

हुई सी नदी किनार चरागाह की ओर चल दी।

बाड़े शाक-तरकारी की क्यारियाँ सूरज की आँखों से आँखें मिलाता सूरजमुखी के फूलों का पीला सागर आलू के पौधों का पीले रंग की भाड़ मारता हरा रंग शामिल परिवार की औरतें—गुलाबी कमीजें पहने पीठ भुकाये आलुओं को कुदाली से खोदती हुई। मेलेखोव के बगीचे पर पहुँचकर अक्सीनिया ने पहले चारों ओर नजर दौड़ाई फिर सरपत का फाटक खोला और सूरजमुखी के तनों के हरे पसारे के बीच से आगे बढ़ी।

यहाँ उसने सुनहरा पराग मुँह पर मला और स्कर्ट को समेट वहीं धरती पर बैठ गई।

उसने आहट ली तो सन्नाटा सायँ-सायँ करता मिला। पास ही कहीं कोई मक्खी भनभनाने लगी। इस प्रकार लगभग आधा घंटे तक वह इसी तरह दुविधा में बैठी रही। मन रह रहकर कहता रहा—पता नहीं वह आयगा कि नहीं? फिर वह जाने के लिए उठी ही थी और उसने रूमाल सिर पर बाँधा ही था कि फाटक चरमराया।

अक्सीनिया!

इधर तो।

तो तुम आ गई! पत्तियों को छेड़ता ग्रिगोरी पास आया और उसकी बगल में बैठ गया। पूछने लगा 'तुम्हारे गाल पर यह क्या है?

अक्सीनिया ने सुनहला पराग अपनी आस्तीन से पोंछा। शायद सूरजमुखी के फूलों का पराग है यह?

हाँ तुम्हारी आँख के नीचे भी है।

उसकी आँखें मिलीं और ग्रिगोरी के मूक प्रश्न के उत्तर में वह फूट-फूटकर रो पड़ी।

'अब नहीं सहा जाता ग्रीश्का! मैं तो कहीं की नहीं रही।

क्या करता है वह?

उसने अपने ब्लाउज के बटन झटके से खोले। कुमारियों की भाँति उभरे हुए परणाभ उरोज चोटों के निशान से नील हो रहे थे

मैंने सोचा है कि अब हम खत्म ही करें

अक्सीनिया ने करवट बदली। वाक्य के पूरे होने की प्रतीक्षा में उसकी अंगुलियाँ चंचल हो उठीं और नथुने फूल गए। डर और बेचैनी से उसका मुँह सूखने लगा। उसे लगा कि ग्रिगारी कहेगा अब हम खत्म ही करें स्तीपान को। किन्तु ग्रिगोरी ने अपने सूखे होंठ चाटे और बोला हम खत्म ही करें यह मोहब्बत है न ?

अक्सीनिया खड़ी हो गई और झूमते हुए सूरजमुखी के फूलों का इठाती फाटक की तरफ बढ़ी।

अक्सीनिया ! ग्रिगोरी ने भर्राये गले से उसे आवाज दी। जवाब में फाटक चरमराया।

१७

राई कटकर खलिहानों में पहुँचा भी नहीं थी कि गेहूँ पक गया। बालों और डाल पर सूखी पत्तियाँ पीली पड़ गई और मुरझाकर गोल हो गई। डंठलें भी मुरझा गई।

गाँव का हर आदमी अच्छी फसल की डाग मारने लगा। बालें भरपूर थीं। दाने बड़े और भारी थे।

इलीनिचना से बातें करने के बाद पन्तेली ने निश्चय किया कि यदि कोरशुनोव-परिवार तैयार हो जाए तो भी शादी १५ अगस्त से पहले नहीं हो सकेगी। जवाब लेने के लिए वह अभी तक कोरशुनोव के पास गया नहीं था। पहले तो फसल काटने का सवाल सामने आया। फिर किसी छुट्टी के दिन की बात आड़े आई।

मेलखोव-परिवार ने शुक्रवार से कटाई शुरू की। पन्तेली ने गाड़ी ठीक की और नाचे का हिस्सा अनाज की लदाई के लिए कसा। प्योत्र और ग्रिगोरी खेतों पर कटाई करने के लिए चले। प्योत्र घोड़े पर सवार हुआ तो ग्रिगारी उसकी अगल-बगल पैदल चला। ग्रिगारी का मन जाने किन किन भावनाओं से भर उठा और जबड़े की हड्डी काँपने लगी। प्योत्र जानता था कि इसका मानी यह है कि ग्रिगारी क्रोधित है और लड़ने को तैयार है। किन्तु अपनी गेहुँआ मूछों में अन्दर-ही अन्दर

तो हमारा प्यार खत्म ? ग्रिगोरी ने पूछा और कोहनी का सहारा पेट के बल लेटते हुए फूल की पंखुड़ी थूक दी। इस समय वह यही पंखुड़ी चबा रहा था।

हमारा प्यार खत्म क्या मतलब ? क्या मतलब तुम्हारा ? उसकी आँखों में आँखें डालते हुए अक्सीनिया ने पूछा।

ग्रिगोरी ने अपनी आँखें उधर से हटा लीं।

थकान से चूर सूखी धरती से गर्द और धूप की गमक आती रही। हवा हरी पत्तियों के बीच सरसराती रही। एक उड़ते हुए बादल ने क्षणभर को सूरज को ढँक लिया। मैदान गाँव और अक्सीनिया के भाव विभोर चेहरे पर धुएँ सी छाया घिर आई।

ग्रिगोरी ने आह भरी और पीठ के बल लटककर गर्म मिट्टी में अपने कन्धे गड़ा लिए।

सुनो अक्सीनिया ! उसने धीरे धीरे कहना शुरू किया यह सब है बड़ी गन्दगी मैं बराबर सोचता रहा हूँ !

इसी बीच साग-तरकारी की क्यारियों की तरफ से एक गाड़ी की खटर-पटर और एक औरत की आवाज़ सुनाई पड़ी।

अक्सीनिया को आवाज़ बिलकुल पास लगी और वह ज़मीन पर पट पड़ रही। ग्रिगोरी ने सिर उठाया और फुसफुसाते हुए बोला रूमाल सिर पर से उतार लो। यह दूर से झलकेगा और वे लोग हमें देख लेंगे।

उसने रूमाल खोल लिया। सूरजमुखी के पौधों के बीच मँडराती फूलमती हवा अक्सीनिया की गर्दन के सुनहरे रोओं में छेड़छाड़ करने लगी। गाड़ी की आवाज़ धीरे धीरे दूर हो गई।

मैं यह बात बराबर सोचता रहा हूँ ग्रिगोरी ने पुनः कहना प्रारम्भ किया। फिर स्वर में और शक्ति भरकर बोला जो हो गया सो हो गया—उसे मिटाया नहीं जा सकता। किसी को दोष क्या दिया जाए ? आखिर किसी-न किसी तरह हम लोगों को ज़िन्दा तो रहना ही है

डंठल को तोड़ती हुई अक्सीनिया उत्सुकता से सुनती रही। उसने ग्रिगोरी की ओर मुँह किया तो उसकी गम्भीर और सूखी आँखें चमकती दर्शीं।

मैंने सोचा है कि अब हम खत्म ही करें

अक्सीनिया ने करवट बदली। वाक्य के पूरे होने की प्रतीक्षा में उसकी अँगुलियाँ चंचल हो उठीं और नथुने फूल गए। डर और वचनों उसका मुँह सूखने लगा। उसे लगा कि ग्रिगोरी कहेगा अब हम खत्म ही करें स्तेपान को। किन्तु ग्रिगोरी ने अपने सूखे होंठ चाटे और बोला हम खत्म ही करें यह मोहब्बत है न?

अक्सीनिया खड़ी हो गई और झूमते हुए सूरजमुखी के फूलों को हटाती फाटक की तरफ बढ़ी।

अक्सीनिया! ग्रिगोरी ने भरे गले उसे आवाज दी। जवाब में फाटक चरमराया।

१७

राई कटकर खलिहानों में पहुँची भी नहीं थी कि गेहूँ पक गया। डंठल और डाल पर सूखी पत्तियाँ पीली पड़ गईं और मुरझाकर गोल हो गईं। डंठलें भी मुरझा गईं।

गाँव का हर आदमी अच्छी फसल की डींग मारने लगा। बालें भरपूर थीं। दाने बड़े और भारी थे।

इलोविना से बातें करने के बाद पन्तेली ने निश्चय किया कि यदि कोर्शुनोव-परिवार तैयार हो जाए तो भी शादी अगस्त पहले नहीं हो सकेगी। जवाब लेने के लिए वह अभी तक कोर्शुनोव के पास गया नहीं था। पहले तो फसल काटने का सवाल सामने आया। फिर किसी छुट्टी के दिन की बात आड़े आई।

मेलेखोव-परिवार ने शुक्रवार से कटाई शुरू की। पन्तेली ने गाड़ी टीले की ओर नीचे का हिस्सा अनाज की लदाई के लिए कसा। प्योत्र और ग्रिगोरी खेतों पर कटाई करने के लिए चले। प्योत्र घोड़े पर सवार हुआ तो ग्रिगोरी उसके अगल-बगल पैदल चला। ग्रिगोरी का मन जाने किन किन भावनाओं से भर उठा और जबड़े की हड्डी काँपने लगा। प्योत्र जानता था कि इसके मानी यह है कि ग्रिगोरी क्रोधित है और सहने को तैयार है। किन्तु अपनी गेहुँआ मूँछों में अन्दर ही-अन्दर

मुसकराते हुए उसने उसे छेड़ा।

भगवान् कसम! उसने खुद मुझे बात बतलाई। वह बोला।

माना कि उसने खुद ही तुम्हें बतलाया सब-कुछ तो इससे अन्तर क्या पड़ता है? ग्रिगोरी ने अपनी मूँछों का एक बाल चबाते हुए कहा।

उसने कहा—मैं शहर से लौट रही थी तो मैंने तुम्हारे सूरजमुखी के खेत में आवाज़ें सुनी।

प्योत्र खत्म करो बकवास।

बोली हाँ आवाज़ सुनी और फिर मैंने बाड़ से झाँककर देखा

ग्रिगोरी की पलकें काँपी तुम यह बकवास बन्द कराओगे कि नहीं।

तुम भी अजीब हो! मुझे बात तो पूरी करने दो।

प्योत्र मैं तुम्हें आगाह कर रहा हूँ देखना कहीं हम दोनों में सिर फुटौवल न हो जाए। ग्रिगोरी ने धमकी दी।

प्योत्र ने अपना सिर उठाया और ग्रिगोरी की ओर देखने के लिए मुड़ा।

वह आगे बोली मैंने बाड़ से झाँका तो वहाँ दोनों प्रेमियों को एक-दूसरे की बाँहों में कसा देखा।

कौन दोनों? मैंने पूछा तो उसने जवाब दिया और कौन? अक्सीनिया और तुम्हारा भाई! मैं कहता हूँ कि

ग्रिगोरी ने कटाई की मशीन के पीछे पड़ा हँगा उठाया और अपने भाई पर दे मारा। रासें पटक प्योत्र अपनी सीट से कूदा और उछलकर घोड़ों के सामने आ खड़ा हुआ।

शैतान कहीं का! वह चिल्लाया पागल हो गया है! ज़रा देखो तो इसे!

भेड़िये की भाँति दाँत निकाल ग्रिगोरी ने हँगा भाई पर चलाया। प्योत्र घुटनों के बल झुक गया। हँगा उसके ऊपर से होता हुआ ज़मीन पर गिरा तो कोई दो इंच तक धँस गया।

प्योत्र ने थके हुए घोड़ों की लगाम पकड़ी और गालियाँ देते हुए बोला अबे सूअर! तूने तो आज मुझे मार ही डाला होता!

हाँ! चाहिये भी था कि मैं तुम्हें मार डालता।

तू गधा है ! तेरा दिमाग खराब हो गया है ! है तू अपने बाप का बेटा असली तुक !

ग्रिगोरी ने हँगा जमीन से निकाला और कटाई की मशीन के पीछे पीछे चला। प्योत्र ने इशारे से उसे अपने पास बुलाया।

इधर आ। ला हँगा मुझे दे !

उसने रासें बाएँ हाथ से साधीं और दाएँ से काँटों की तरफ से हँगा पकड़ा। फिर मूठ ग्रिगोरी की पीठ पर जमाई। ग्रिगोरी कूदकर अलग हट गया।

चोट जरा मज़े में की होती ग्रिगोरी पर आँखें जमाए ही-जमाए प्योत्र बोला। कुछ क्षण बाद दोनों ने सिगरेटें जलाई एक दूसरे की तरफ देखा और ठठाकर हँस पड़े।

क्रिस्तोनिया की पत्नी गाड़ी पर सवार दूसरी सड़क से घर जा रही थी। उसने ग्रिगोरी को हँगा फेंकते देख लिया था। वह राई के गट्ठर पर सावधानी से पैर साधकर खड़ी भी हुई किन्तु यह न देख पाई कि आखिर हुआ क्या क्योंकि उसके और दोनों भाइयों के बीच में आ गई थी मलेखोवों की कटाई मशीन और उनके घोड़े। सो गाँव की सड़क के पास पहुँचते ही उसने एक पड़ोसी से चिल्लाकर कहा क्लिमोवना दौड़कर जाओ और पन्तेली तुक से कह आओ कि तुम्हारे दोनों लड़के तारतार-टील के पास आपस में हँगे चला रहे हैं। पहले ग्रिगोरी ने प्योत्र की बगल में काँटों से वार किया और फिर प्योत्र ने खून बह चला गज़ब हो गया !

पर इस बीच दोनों भाई कटाई करने लगे। प्योत्र थके घोड़ों पर चिल्लाते-चिल्लाते थक गया और ग्रिगोरी धूल से नहाए पाँवों को जमा कर कटाई मशीन साफ़ करने लगा। घोड़े मक्खियों से परेशान होकर दुम हिलाने और अपने काम में सुस्ती दिखलाने लगे। चरागाह भर में कटाई जोरों से होने लगी। मशीनों के ब्लेड खड़खड़ाने लगे और चरागाह में जगह-जगह अनाज के अम्बार लगने लगे। हाँकनेवालों की नक़ल उतारती-सी गिलहरियाँ टूहों पर सीटी बजाने लगीं।

'दो चक्कर और फिर सिगरेट पियेंगे। मशीन की खड़खड़ को

भेदता प्योत्र का स्वर उभरा। ग्रिगोरी ने सिर हिलाया। वह अपने भिंचे होंठों को खोल नहीं पाया। उसने हुग को नोकों के पास से पकड़ रखा था ताकि भारी बघेजों को काटने म सुविधा हो। वह हाँफने लगा। सीना पसीने से भीगकर खुजली करने लगा। टोप के नीचे से पसीना चेहरे पर बह आया और आँखों म साबुन की तरह लगने लगा। ज़रा देर बाद घोड़ों को रोक उन्होंने कुछ पिया और धुआँ उड़ाया।

अरे! सड़क पर कोई घोड़ा दौड़ाता चला आ रहा है। प्योत्र ने हथेलियों से अपनी आँखों पर साया करते हुए कहा।

ग्रिगोरी ने देखा और आश्चय स उसकी भौंहें तन गइ।

'लगता है पापा हैं।

'पागल हो! घोड़ा कहाँ से मिलेगा उन्हें ? दोनों घोड़े तो हमारे पास हैं यहाँ।

वही हैं भगवान् जानता है कि पापा ही हैं।

अश्वारोही पास आता गया और अब वह भली भाँति दिखलाई देने लगा। हाँ पापा ही हैं। प्योत्र बोला।

'घर पर कुछ हो गया है। इस विचार से दोनों ही परेशान हो उठे।

पन्तेली ने सौ गज की दूरी स ही घोड़ों की रास खींची मैं तुम दोनों को खोदकर ज़मीन म गाड़ दूँगा शैतान के बच्चो! सिर के ऊपर चमड़े का चाबुक नचाते हुए वह चीखा।

क्या आफ़त आई प्योत्र के तो हाथ-पैर ही फूल गए। डर के मारे आधा मूँछें उसके मुँह म चली गइ।

मशीन को दूसरी तरफ़ चलो। हम चाबुक ही-चाबुक पड़ेंगे और जब तक बात समझ म आएगी तब तक बदन की खाल उड़ जाएगी। अपने और पिता के बीच मशीन रख ग्रिगोरी न कहा।

टप-टपाटप करता झाग फेंकता घोड़ा अनाज के अम्बार के पास आ पहुँचा। पन्तेली के पाँव घोड़े की बगलों स सटे रहे थे क्योंकि वह नंगी पीठ पर सवार था। उसन अपना चाबुक सटकारा शैतान के बच्चो! तुमने क्या तूफ़ान मचा रखा है यहाँ!

"सब तो रहे हो कटाई कर रहे हैं।" चाबुक की ओर देखते हुए हाथ फैलाकर प्योत्र बोला।

"किसने किसको हँगा चलाकर मारा? आपस में क्यों लड़ गए तुम लोग?"

पिता की तरफ पीठ कर ग्रिगोरी कुछ फुसफुसाया।

"कैसा हँगा? कौन लड़ रहा था?" बापू को ऊपर से नीचे देखते हुए प्योत्र बोला।

"अबे वह मुर्गी की बच्ची दौड़ती हुई आई मेरे पास—तुम्हारे लड़कों ने एक-दूसरे को हँगे से घायल कर लिया है।" बोलो, क्या जवाब है तुम्हारे पास?" पन्तेली ने उत्तेजना से सिर हिलाया। फिर रास छोड़ घोड़े से नीचे कूदते हुए बोला, "मैंने किसी का घोड़ा माँगा और भागा चला आ रहा हूँ। क्या कहना है तुम्हें?"

"तुमसे यह सब कहा किसने?"

"एक औरत ने।"

"बापा, झूठ कहा है उसने। उसे गाड़ी में नींद आ गई होगी और उसने कोई सपना देख लिया होगा।"

"इन औरतों से भगवान ही बचाये!" पन्तेली ने अपनी दाढ़ी को खींचते हुए आधी चिल्लाहट और आधी फुसफुसाहट की आवाज में कहा, "वह बिलमोव की रही! हे भगवान्, मैं उस चुड़ैल का कोड़े लगाऊँगा।" वह गुस्से से नाचने लगा।

ग्रिगोरी मन-ही-मन हँसते हुए जमीन की ओर ताकता रहा। प्योत्र ने पिता पर से निगाहें नहीं हटाईं। पिता पसीने से तर अपना माथा ठोंकता रहा।

पन्तेली जी भरकर उछला-कूदा और फिर शान्त हो गया। वह कटाई मशीन पर जा बैठा। कुछ देर कटाई की, फिर घोड़े पर सवार हुआ और गाँव को वापस हो लिया, पर अपना चाबुक वहीं भूल गया। प्योत्र ने उसे उठा लिया और ईश्वर को धन्यवाद देता हुआ अपने भाई से बोला, "चलो मुसीबत टली समझो। यह चाबुक नहीं है। भाई! इसने तो हमें बेजान कर दिया होता। गर्दन धड़ से अलग हो जाती हमारी।"

१८

ततारस्की गाँव में कोरशुनोव परिवार सबसे धनी परिवार माना जाता था। उस परिवार में चौदह जोड़ी बैल थे और थे घोड़े प्रोवाल्स्क फार्म की घोड़ियाँ पन्द्रह गायें न जाने कितने दूसरे जानवर और कई सौ भेड़ें। मकान सौदागर मोखोव के मकान की तरह ही शानदार था। मकान में छः बड़े कमरे थे। छत लोहे की थी। बाहर की कोठरियों के ऊपर नये खूबसूरत खपरों की छानियाँ थीं। बगीचा और चरागाह तीन एकड़ ज़मीन में समझिए। इससे ज़्यादा एक आदमी को और चाहिए भी क्या।

इसीलिए शादी की बातचीत के लिए पैन्तेली जब उस परिवार में गया तो बेमन से गया। सकोच मन में अलग से था।

कोरशुनोव को अपनी बेटी के लिए ग्रिगोरी से कहीं अधिक सम्पन्न वर मिल सकता था। पन्तेली यह बात जानता था और उसे डर था कि कहीं इन्कार न हो जाए। वह नहीं चाहता था कि रिश्ते के लिए कोरशुनोव के आगे झोली फैलाए, लेकिन इलीनिचना तो उसे ऐसे खाये जाती थी जैसे लोहे को जंग खाती है। और आखिरकार औरत ने बुड्ढे का मुँह ही लिया। और मन-ही-मन वह ग्रिगोरी इलीनिचना और सारी दुनिया को कोसता हुआ कोरशुनोव के पास गया था। पर अब सवाल सामने था कि आकर उनसे जवाब माँगा जाए। बस तो सबको इतवार का इन्तज़ार रहा।

इसी बीच कोरशुनोव की लोहे की रंगी हुई छत के नीचे एक गम्भीर कलह उठ खड़ी हुई थी। मेलेखोव-परिवार के लोगों के विदा होने के बाद नताल्या ने अपनी माँ से कह दिया, "मुझे ग्रिगोरी पसन्द है, मैं किसी दूसरे से शादी नहीं करूँगी।"

"इस बेवकूफ ने अपना दूल्हा स्वयं खोज लिया है," और खोजा है उस बेवकूफ़ को!" पिता ने जवाब दिया, "एक ही बात अच्छी है उसमें कि वह जिप्सी की तरह काला है। मेरी रानी बिटिया, इससे कहीं अच्छा लड़का मैं खोज दूँगा तेरे लिए।"

"पापा, मुझे किसी दूसरे से शादी नहीं करनी।" लड़की का चेहरा तमतमा उठा और वह रोने लगी, "अगर तुम यह नहीं चाहते तो

तुम मुझे किसी मठ म भेज दो।

उस गलियाँ झाँकने का बहुत शौक है। वह औरतों के पीछे भागता फिरता है और उन औरतों के पीछे भागता फिरता है जिनके पति काम से परदेश चले जाते हैं। उसके पिता ने आखिरी पासा फेंका।

कोई बात नहीं।

अगर तुम्हारे लिए कोई बात नहीं तो हम क्या करना है ठीक है।

नताल्या सबसे बड़ी लड़की थी और अपने पिता की बड़ी दुलारी थी। पिता ने विवाह के सम्बन्ध म उस पर कभी दबाव नहीं डाला था। उसकी शादी के कितने ही प्रस्ताव आए थे। कुछ लोग तो दूर के गाँवों के धनी सनातन कज्जाकों के यहाँ से बात लेकर आये थे। किन्तु नताल्या ने किसी को भी पसन्द नहीं किया था और उनकी सारी मेहनत बेकार चली गई थी।

मिरोन कज्जाकी चातुरी खेती से प्रेम और कठोर परिश्रम के प्रति लगाव के कारण ग्रिगोरी को मन-ही मन बहुत पसन्द करता था। उसने गाँव के युवकों म सबसे ज्यादा उसे अपनी ओर तब खींचा था जब घुड़दौड़ में उसे प्रथम पुरस्कार मिला था किन्तु किसी गरीब को अपनी बेटी देना उसे कुछ अपमानजनक लगता था। फिर किसी बदनाम को अपना दामाद बनाना उसे जरा और खलता था।

लड़का मेहनती है और सूरत शक्ल का भी अच्छा है। पत्नी रात म पति के बालों पर हाथ फेरती हुई बोली और अपनी नताल्या मन से उसकी हो गई है

मिरोन ने अपनी पत्नी के ठंडे सूखे हुए सीने की ओर पीठ कर ली और क्रोध से चीखकर कहा चली जाओ यहाँ से—ब्याह दो उसे जिस बेवकूफ से चाहो उससे! भगवान ने तुम्हारी बुद्धि हर ली है। सूरत शक्ल का अच्छा है! उसकी शक्ल कोई फसल है जिसकी कटाई करोगी तुम!

फसल और कटाई ही तो सब-कुछ नहीं होती दुनिया में!

क्या होगा अच्छी सूरत-शक्ल से! कुछ हैसियत भी तो जरूरी है। फिर यह मेरे लिए इज्जत से गिरी हुई बात भी है कि मैं अपनी

मटी तुर्की म द दूँ!

"वे लोग मेहनती हैं, अच्छा खाते पीते हैं।" उसकी पत्नी ने धीरे से कहा और उसको शान्त करने के लिए उसकी पीठ के पास खिसककर उसके हाथ सहलाने लगी।

"अरी बुढ़िया, तू परे हटेगी कि नहीं! मुझे जगह तो दे। और तू मुझे थपथपा क्यों रही है? क्या मैं बछड़े वाली गाय हूँ कोई? और नताल्या के मामले में जो तेरा जी चाहे सो कर... मन करे तो उसे सफरी पजामिया पहननेवाली किसी लड़की से ब्याह दे!"

"तुम्हें अपने बच्चों का कुछ तो खयाल होना चाहिए।" पत्नी ने उसके कानों में कहा। किन्तु मिरोन दीवार की ओर खिसक गया और खर्राटे भरने लगा जैसे कि नींद आ गई हो।

और एक में मेलेखोव-परिवार के लोग जवाब माँगने आये तो कोर्शूनोव उलझन में पड़ गया। वे लोग प्रातःकालिक प्रार्थनाओं के बाद आये। इलीनिचना के गाड़ी के पायदान पर पैर रखते ही लगा कि बग्घी उलट जाएगी किन्तु पन्तेली सीट से ऐसे नीचे कूद आया जैसे कि कोई जवान मुर्गा हो।

मिरोन ने खिड़की से झाँका और दुखी स्वर में बोला, "लो वे लोग आ गए। कौन शैतान आज इन्हें यहाँ ले आया?"

"अरे मैं तो अभी अभी बावर्चीखाने से निकली हूँ, अभी तो मैंने अपनी स्कर्ट तक नहीं बदली।" पत्नी बोली।

"कोई बात नहीं। तुम जैसी भी हो ठीक हो... कोई तुम्हें ब्याहने तो आया नहीं है। तुम्हें भला पूछता कौन!" बोला।

"तुम पैदाइशी गँवार हो! और अब तो बिलकुल सठिया गए हो!"

"ज़बान बन्द कर, औरत!"

"साफ कमीज तो पहन लो। तुम्हें शर्म नहीं आती!" पत्नी ने पति को डाँटा। दूसरी ओर मेहमानों ने अहाता पार किया।

"मेरी फिक्र मत करो... वे लोग मुझे इस कमीज में भी पहचान लेंगे। मैं बोरा ओढ़ लूँ तो भी मुझे वे मिरोन ही समझेंगे।"

भगवान आपका स्वस्थ रखे।' दरवाजे की सीढ़ी पर लड़खड़ाते हुए पन्तेला बोला और तुरन्त ही उसे अपनी आवाज की तेजी खली। सो यह मामला बराबर करने के लिए देवमूर्ति के सामने खड़े होकर उसने दो बार सीने पर क्रॉस बनाया।

दाब्रयदयेन[1]। वमन से उसकी ओर देखते हुए मिरोन ने उत्तर दिया।

'भगवान की कृपा से मौसम अच्छा है।'

और उस धन्यवाद कि मौसम अच्छा बराबर चल भी रहा है।

'लोगों का उससे खासा भला होगा।

हाँ सो तो होगा

अच्छा तो मिरोन ग्रिगोरीएविच हम लोग यह जानने आये हैं कि आप लोगों ने क्या तय किया यह शादी होगी कि नहीं ?'

कृपया अन्दर आइये बैठिये तो। मार्या ने झुककर और अपने प्लेटोंवाले लम्बे स्कर्ट के सिरे से जमीन झाड़ते हुए उनका स्वागत किया।

इलीनिचना बैठी तो उसका पायजामा का ड्रेस सरसराया। मिरोन ग्रिगोरीएविच ने नये मेजपोश पर कुहनियाँ टेकीं और चुप रहा। मेजपोश के कोनों पर पिछले जार और जारीना के चित्र थे। बीच में भी सफेद टोप लगाए रोबदार राजकुमारियाँ और जार निकोलस द्वितीय।

मिरोन ने शान्ति भंग की।

हाँ तो हमने अपनी लड़की आपके परिवार में देने का फ़ैसला कर लिया है। अगर दहेज का सौदा पट जाता है तो हमारी आपकी रिश्तेदारी पक्की।

इस बात पर इलीनिचना ने अपनी भड़कीली जाकिट की फूला हुई आस्तीन से सफ़ेद गेहूँ की एक बड़ी डबल रोटी निकाली और मेज पर रख दी। किसी अज्ञात कारण से पन्तेली की इच्छा क्रास का निशान बनाने की हुई किन्तु उसकी गठीली पंजों-जैसी अँगुलियाँ चिर अभ्यस्त होने पर भी आधी दूर तक उठने के बाद एकाएक दूसरे रूप में बदल गई।

---

१. गुड-डे—शुभ दिवस।

अपने स्वामी की इच्छा के विरुद्ध लम्बा काला अंगूठा अकस्मात् ही अंगुलियों के बीच जा खिसका और हाथ नीले ओवरकोट के खुले हिस्से के अन्दर से लाल डाट वाली एक बोतल निकाल लाया।

मिरोन के चित्तीदार मुँह की ओर देखकर उत्तेजना से पलकें झपकाते हुए, पन्तेली बोतल के चौड़े तल को अपनी चौड़ी खुर-जैसी हथेली से ठोंकने लगा और बोला "मित्रो अब हम प्रभु का ध्यान करेंगे, थोड़ी-सी वोदका पीयेंगे और अपने बच्चों और शादी की शर्तों के बारे में बातें करेंगे।"

घंटे भर में ही दोनों एक-दूसरे के इतने समीप हो गए कि पैन्तली की दाढ़ी के तारकोल-से काले छल्ले कोरशुनोव की दाढ़ी के लाल बालों में घुल मिल गए। पन्तेली विवाह की बातें तय करने लगा तो उसके मुँह से सिरके के खीरों की महक आने लगी। वह भारी आवाज में बोला "मेरे प्यारे सम्बन्धियो! मेरे सबसे प्यारे स्वजनो!" उसने बहुत ही तेज आवाज में कहा "आपकी मांगें इतनी बड़ी हैं कि मैं उन्हें पूरी नहीं कर सकता। जरा सोचिये तो कि आप किस तरह लूट रहे हैं मुझे—गैटर और गोलोश एक; फर का एक कोट दो, दो ऊनी ड्रेसें; तीन रेशम का एक रुमाल चार यानी मैं तो मिटकर रह जाऊँगा।"

पैन्तली ने अपनी बाँहें इस तरह फैलाईं कि उसकी ट्यूनिक की सीवन खुल गई। मिरोन सिर झुकाकर वोद्का और सिरके के खीरों के पानी से तर मेजपोश की तरफ देखने लगा। ऊपर पन्नों की सजावट के साथ लिखे शब्द पढ़ने लगा—"रूसी शाही परिवार।" नीचे की ओर निगाह गई। पढ़ा—"महाराजाधिराज सम्राट निकोलस बाकी शब्दों के ऊपर आलू का छिलका पड़ा हुआ था। वह चित्र को एकटक देखने लगा। सम्राट की शक्ल दिखलाई नहीं दे रही थी। उधर वोद्का की खाली बोतल रखी हुई थी। पलक झपकाते हुए मिरोन ने कीमती पोशाक की काट देखनी चाही किन्तु वह खारे के खीरों से ढकी हुई थी। चार लड़कियों से घिरी महारानी ने तिनकों का चौड़ा टोप लगा रखा था। वह उसे अपनी ओर देखती लगी। मिरोन को इतना अपमान अनुभव हुआ कि उसकी आँखों में आँसू आ गए। मन-ही मन

बोला आपको टाकरी स भाँकती बत्तख की तरह बहुत घमंड हो रहा है, पर वह दिन मान दीजिए जब आप अपनी लड़कियों की शादियाँ करेंगी। तब मैं ऐसे थूकू गा और आप फड़फड़ाएँगी।

पन्तेली की आवाज उसके कानों में भौंरों की गुंजार की भाँति पड़ी। उसने अश्रुपूरित धूमिल नेत्र ऊपर उठाए और उसकी बातें सुनने लगा।

आपकी बेटी के बदले और अब तो हम भी उस अपनी बेटी कह सकते हैं—यानी अपनी बेटी क बदले मोटर गोलोश फरका कोट वगैरह देने के लिए हम अपनी एक गाय बाजार म ल जाकर बच देनी पड़ेगी।'

और इसम आपका एतराज है ?' मिरोन न मेज पर मुट्ठी मारत हुए कहा।

यह बात नहीं कि मुझे इसमें एतराज है

मैं कहता हूँ कि क्या आपको एतराज है ?'

'जरा सुनिए तो '

मैं कहता हू कि अगर आपको एतराज है तो शवान से जाए आपका !

मिरोन ने पसीने से तर अपना हाथ नचाया तो मेज पर रखे गिलास नीचे जा पड़े।

यानी, उसी तरह की एक दूसरी गाय लाने क लिए आपकी बेटी का खटना पड़ेगा।

खटे मेरी बेटी लेकिन आपको क़ायदे का नजराना तो देना ही होगा नहीं तो यह शादी नहीं होगा।

आँगन की एक गाय बिक जाएगी !' पन्तेली ने सिर हिलाया।

'नजराना तो होना ही चाहिए। लड़की के पास कपड़ बक्सा-भर हैं। लेकिन अगर वह आपको पसन्द है तो आपको मेरी इज्जत तो करनी ही होगी। यही हम कज्जाकों की रीति है। इसी तरह पहले होता था और यही हम करेंगे। हम पुराने विचारों क लोग हैं।

मैं तो अपना ओर स आपकी इज्जत करूंगा ही।

''तो कीजिए इज्जत !

मैं करूँगा इज्जत।

और छोटों को मेहनत करने दीजिए। हम लोगों ने अपने को खटाया है और हम आज रहन-सहन में किसी से उन्नीस नहीं हैं। ये छोटे भी ऐसा ही करके दिखाएँ।

दोनों की दाढ़ियाँ आपस में बुन उठीं। वे एक-दूसरे को चूमने लगे। पैन्तेली एक सूखा टेढ़ा-मेढ़ा खीरा खाने लगा और उसकी आँखों से सुख दुख के मिले जुले आँसू बह चले।

औरतें एक-दूसरी से सटी अपनी आवाजों की चीख से एक दूसरे के कान फोड़ रही थीं। इलीनिचना का चेहरा चेरी के समान लाल हो रहा था। मारिया पाला-खाई जाड़े की नाशपाती की तरह वोद्का से हरी हो रही थी। बोली

दुनिया में कहीं और तुम्हें ऐसी लड़की मिलेगी नहीं। नताल्या अपना फर्ज समझेगी हुक्म मानेगी और कभी उलटकर आपको जवाब नहीं देगी।

सखी! अपने बाएँ हाथ पर गाल रखते और उसकी कोहनी को दाएँ हाथ की हथेली से साधते हुए इलीनिचना बीच में ही बोली "भगवान् ही जानता है कि कितनी बार यह बात मैंने उस सूअर के बच्चे ग्रिगोरी से कही है। पिछले इतवार की शाम को वह बाहर जाने को हुआ तो मैं बोली—'जंगली कहीं का! तू उसका पीछा कब छोड़ेगा? मैं इस बुढ़ापे में कब तक अपना मुँह काला करवाती रहूँगी? किसी दिन स्तेपान तुम्हारे इस तमाशे को ऐसी आग लगाएगा कि बस!

मीतका ने दरवाजे की संध से अन्दर झाँका और नीचे की तरफ नताल्या की दो छोटी बहनें आपस में कानाफूसी करने लगीं। नताल्या आगे के कमरे में बैठी ब्लाउज की तंग आस्तीन से आँसू पोंछती रही। वह अपने नये जीवन के प्रभात से भयभीत थी। आगे का सब-कुछ अनजाना था।

सामने के कमरे में वोद्का की तीसरी बोतल खत्म हो गई। तब यह हुआ कि दूल्हा और दुल्हिन पहली अगस्त को एक-दूसरे से मिलें।

१६

कोरशुनोव के यहाँ विवाह की तैयारियाँ होने लगीं तो घर शहद की मक्खियों के छत्ते की तरह आबाद हो गया। दुलहिन के लिए नीचे पहनने के कपड़े जल्दी ही सिला लिए गए। नताल्या रोज शाम को बैठती और अपने भावी पति के लिए परम्परा के अनुसार भेड़ की ऊन के दस्ताने और स्कार्फ बुनती। उसकी माँ सिलाई की मशीन पर भुकी अंधेरा होने तक दर्जिन की मदद करती रहती। मीत्का अपने पिता और नौकरों के साथ खेतों से लौटने के बाद न तो हाथ-मुँह धोता और न भारी जूते ही उतारता। वह सीधे नताल्या के पास चला आता। अपनी बहन को छेड़ने में उसे बहुत सुख मिलता।

'बुनाई चल रही है!' वह स्कार्फ की ओर देखकर सिर हिलाता।

तो क्या हुआ?

बुने जाओ बेवकूफ, बुने जाओ तुम्हारा एहसान मानने के बजाय वह तुम्हारे जबड़े तोड़कर रख देगा!

'आखिर क्यों?

"मैं ग्रिशा को जानता हूँ वह मेरा दोस्त है। वह ऐसा है कि काट खाए और यह भी न बतलाए कि काटा आखिर क्यों!"

'झूठ मत बोल। तुम भाखते हो कि मैं उसे नहीं जानती।

"लेकिन मैं तुमसे अधिक जानता हूँ। हम एक साथ स्कूल में पढ़े हैं। मीत्का एक लम्बी आह भरता अपने कटे-फटे हाथों को देखता और सिर भुका लेता।

नताल्या क्रोधित हो उठती उसके गले में आँसू फँसने लगते और वह दुखी होकर गर्दन नीची कर लेती।

लेकिन सबसे बुरी बात तो यह है कि उसे किसी से प्यार है। नताल्या! तुम बुद्धू हो! छोड़ दो उसे। मैं घोड़ा कसकर चला जाऊँगा और इन्कार कर आऊँगा।

ऐसे में ग्रीश्का ही मीत्का से उसकी जान छुड़ाता। वह छड़ी से जमीन टोंकता अपनी पीली दाढ़ी के बालों पर हाथ फेरता कमरे में आता और मीत्का को बगल में छड़ी कोंचते हुए कहता

तू क्या कर रहा है यहाँ ? ऐं !

बाबा में नताल्या से मिलने चला आया था। मीश्का क्षमा-याचना के स्वर में कहता।

मिलने ? मैं कहता हूँ कि निकल यहाँ से ! दफा हो ! बाबा अपनी छड़ी उठाता और काँपते हुए मुझे पैरों के सहारे मीश्का की ओर बढ़ता।

बाबा ग्रीश्का ने अट्ठहत्तर बसन्त देखे थे। उसने १८७७ की तुर्की लड़ाई में भाग लिया था। वह जनरल गुरको की सेवा में रहा था किन्तु जनरल ने किसी बात पर नाराज होकर उसे वापस रजिमेंट में भेज दिया था। उसे प्लेवना तथा रोमिन्स के अग्निकाण्ड के उपलक्ष्य में दो क्रॉस तथा सन्त जार्ज पदक मिला था। पर अब तो वह अपने जीवन के शेष वर्षों को अतीत की स्मृतियों में अपने लड़के के साथ रहकर व्यतीत कर रहा था। दिमाग उसका बड़ा साफ था। आदमी ऐसा ईमानदार था कि खजाने की कोठरी में चला जाए और एक कौड़ी न लगे। दरवाजे पर कोई आ खड़ा हो तो आवभगत का अन्त नहीं। इन्हीं सब कारणों से गाँव के सभी लोग उसका हृदय से आदर करते थे।

गर्मियों में वह घर के सामने की मिट्टी की मुँडेर पर सुबह से लेकर साँझ के झुटपुटे तक सिर झुकाए बैठा रहता और अपनी छड़ी को जमीन पर टेके रहता। ऐसे में धुंधली आकृतियाँ और मधुर विचार उसके दिमाग में आते रहते। विस्मृति की परछाइयों के बीच भी गुजरे हुए जमाने की बातें याद आती रहतीं। उसकी टोपी का सिरा टूटा रहता जिसके कारण उसकी बन्द आँखों पर गहरी छाया पड़ी रहती। छड़ी पर मुड़ी अंगुलियों में काला खून धीमे धीमे बहता रहता। हाथ की नसें सूखी रहतीं। हर साल उसका खून ठंडा पड़ता जाता। इसका शिकायत वह अपनी मुँहबोली पोती नताल्या से करता।

"मौज उड़ी है पर गरम नहीं है। एक जोड़ा नया सिला दे बेटी !

लेकिन आजकल तो गरमी के दिन हैं बाबा ! नताल्या हँसती और बाबा की बगल में बैठकर उसके पास कानों का गौर से देखती।

इससे क्या हुआ बेटी ! गरमी के दिन हैं पर मेरा खून तो गरमी

की गहरी परतों की तरह ठहा है।'

नताल्या बाबा के हाथ की नसों को ध्यान से देखती कि उसे अपने बचपन की एक घटना याद [redacted] आती। उन दिनों उनके अहाते में एक कुआँ खोदा जा रहा था। वह अभी बहुत छोटी थी और बाल्टी भर भरकर मिट्टी ले जाकर उससे बड़ी-बड़ी गुड़ियाँ और नुकीली सींगोंवाली गायें बनाती थी।

पर आज उसी मिट्टी के रंग की झुर्रियाँ बाबा के चेहरे पर देखकर वह डर उठती थी। उसे लगता जैसे चमकदार लाल खून के बजाय बाबा की नसों में गीली मिट्टी बह रही है।

बाबा! तुम्हें मरने से डर लगता है? नताल्या पूछती।

बूढ़ा अपनी गर्दन मोड़ता मानो अपनी वर्दी के कोट के तंग कालर को ढीला कर रहा हो। फिर भूरी गलमुच्छें हिलाता।

मैं मौत का इन्तजार कर रहा हूं। मौत मेरे लिए बहुत बड़ा मेहमान है। अब मेरा समय आ गया है—अपना जमाना देख चुका, अपने ज़ारों की भरसक सेवा कर चुका और वोद्का की नदियाँ ढाल चुका हूँ। वह मुसकराकर उत्तर देता तो सफ़ेद दाँत चमकने लगते और सूखी पलकें थरथराने लगतीं।

नताल्या अपने बाबा का हाथ थपथपाती और छड़ी से भूमि को खरोंचती झुकी कमरवाले बाबा को छोड़कर चल देती। बाबा के फौजी कोट के कॉलर की दोनों ओर की लाल पट्टियाँ उसी तरह लौ देती रहतीं।

बाबा ने जब नताल्या के विवाह की बात सुनी तो वह ऊपर से तो प्रसन्न हुआ किन्तु मन-ही मन असन्तुष्ट और कोपित हो गया। रोज भोजन के समय नताल्या उसे अच्छी-से अच्छी चीजें देती उसके कपड़े धोती, उसके मोज़े बुनती और पाजामों और कमीजों की मरम्मत कर देती। इसीलिए उसकी शादी की खबर सुनने के बाद कुद्ध दिनों तक बाबा उसकी ओर कठोर दृष्टि से देखता रहा।

ग्रिगोरोव-परिवार का कज्जाकों में बहुत सम्मान है। ग्रीशोका मर गया लेकिन जब तक जिया कज्जाकों की शान निभाता रहा। किन्तु

"तू क्या कर रहा है यहाँ ? एँ !"

"बाबा मैं नतास्या से मिलने चला आया था।" मीस्का क्षमा-याचना के स्वर में कहता।

"मिलने ? मैं कहता हूँ कि निकल यहाँ से। दफा हो।" बाबा अपनी छड़ी उठाता और काँपते हुए सूखे परों के सहारे मीस्का की ओर बढ़ता।

बाबा ग्रीश्का ने उन्हत्तर वसन्त देखे थे। उसने १८७७ की तुर्की लड़ाई में भाग लिया था। वह जनरल गुरको की सेवा में रहा था किन्तु जनरल ने किसी बात पर नाराज़ होकर उसे वापस रेजिमेंट में भेज दिया था। उसे प्लेवना तथा रोसिस्त्र के अग्निकांड के उपलक्ष्य में दो क्रॉस तथा सेंट जार्ज पदक मिला था। पर अब तो वह अपने जीवन के शेष वर्षों को अतीत की स्मृतियों में अपने लड़के के साथ रहकर व्यतीत कर रहा था। दिमाग उसका बड़ा साफ था। आदमी ऐसा ईमानदार था कि काजल की कोठरी में चला जाए और एक लीक न लगे। दरवाज़े पर कोई आ खड़ा हो तो आवभगत का अन्त नहीं। इन्हीं सब कारणों से गाँव के सभी लोग उसका हृदय से आदर करते थे।

गर्मियों में वह घर के सामने की मिट्टी की मुँडेर पर सुबह से लेकर साँझ के झुटपुटे तक सिर झुकाए बैठा रहता और अपनी छड़ी को ज़मीन पर टेके रहता। ऐसे में धुँधली आकृतियाँ और मधुर विचार उसके दिमाग में आते रहते। विस्मृति की परछाइयों के बीच भी गुज़रे हुए ज़माने की बातें याद आती रहतीं। उसकी टोपी का सिरा टूटा रहता जिसके कारण उसकी बन्द आँखों पर गहरी छाया पड़ी रहती। छड़ी पर मुड़ी अँगुलियों में काला खून धीमे धीमे बहता रहता। हाथ की नसें सूजी रहतीं। हर साल उसका खून ठंडा पड़ता जाता। इसकी शिकायत वह अपनी मुँहबोली पोती नतास्या से करता।

"मोज़े ऊनी हैं पर गरम नहीं हैं। एक जोड़ा नया बना दे, बेटी!"

"लेकिन आजकल तो गरमी के दिन हैं बाबा!" नतास्या हँसती और बाबा की बगल में बैठकर उसके पीले कानों को गौर से देखती।

"इससे क्या हुआ बेटी! गरमी के दिन हैं पर मेरा खून तो धरती

की गहरी परतों की तरह ठंडा है ।

नताल्या बाबा के हाथ की नसों को ध्यान से देखती कि उसे अपने बचपन की एक घटना याद हो आती । उन दिनों उनके अहाते में एक कुआँ खोदा जा रहा था । वह अभी बहुत छोटी थी और बाल्टा भर भरकर मिट्टी ले जाकर उससे बडी-बडी गुड़ियाँ और नुकीली सींगोंवाली गायें बनाती थी ।

पर आज उसी मिट्टी के रंग की झुर्रियाँ बाबा के चेहरे पर देखकर वह डर उठती थी । उसे लगता जैसे चमकदार लाल खून के बजाय बाबा की नसों में गीली मिट्टी बह रही है ।

'बाबा ! तुम्हें मरने में डर लगता है ?' नताल्या पूछती ।

बूढ़ा अपनी गर्दन मोड़ता मानो अपनी वर्दी के कोट के तंग कालर को ढीला कर रहा हो । फिर भूरी गलमुँछें हिलाता ।

'मैं मौत का इन्तज़ार कर रहा हूँ । मौत मेरे लिए बहुत बड़ा मेहमान है । अब मेरा समय आ गया है—अपना ज़माना देख चुका अपने ज़ारों की भरसक सेवा कर चुका और वोद्का की नदियाँ ढाल चुका हूँ।' वह मुसकराकर उत्तर देता तो सफ़ेद दाँत चमकने लगते और सूखी पलकें थरथराने लगतीं ।

नताल्या अपने बाबा का हाथ थपथपाती और छड़ी से भूमि को खरोंचते झुकी कमरवाले बाबा को छोड़कर चल देती । बाबा के फौजी कोट के कॉलर की दोनों ओर की लाल पट्टियाँ उसी तरह लौ देती रहतीं ।

बाबा ने जब नताल्या के विवाह की बात सुनी तो वह ऊपर से तो प्रसन्न हुआ किन्तु मन-ही मन असन्तुष्ट और क्रोधित हो गया । रोज़ भोजन के समय नताल्या उसे अच्छी से अच्छी चीज़ देती उसके कपड़े धोती उसके मोज़े बुनती और पाजामों और कमीज़ों की मरम्मत कर देती । इसीलिए उसकी शादी की खबर सुनने के बाद कुछ दिनों तक बाबा उसकी ओर कठोर दृष्टि से देखता रहा ।

मेलखोव-परिवार का कज्ज़ाकों में बहुत सम्मान है । प्रोकोफ़ी मर गया लेकिन जब तक जिया कज्ज़ाकों की आन निभाता रहा । किन्तु

उसके पोते कैसे हैं पता नहीं ? उसने मिरोन से पूछा।
'कोई खास गुर नहीं। मिरोन ने व्यंग्य से कहा।
वह लड़का ग्रिगोरी किसी की इज्जत नहीं करता। उसी दिन मैं गिरजे से लौट रहा था तो वह मुझे मिला लेकिन न दुआ न सलाम! इन दिनों बड़े-बूढ़ों को कौन पूछता है
लड़का अच्छा है।" नताल्या की माँ ने कहा।
अच्छा है फिर जब नताल्या उसे पसन्द करती है तो
शादी की बातचीत में उसने लगभग कोई रुचि नहीं ली बावर्चीखाने से बाहर निकला मेज के पास दो एक क्षण बैठा एक गिलास वोद्का पी और नशा चढ़ने लगा तो वहाँ से उठकर फिर बाहर चला गया। दो दिन तक वह चुपचाप प्रसन्न-मन नताल्या को देखता रहा। इसके बाद वह भी बाहर से मुलायम पड़ा।
'नताल्या ! उसने उसे पुकारा मेरी नन्ही पोती तो तू बहुत खुश है है न ?
बाबा ! मुझे खुद नहीं पता। नताल्या ने उत्तर दिया।
अच्छा अच्छा ! यीशु तेरा कल्याण करे ! भगवान तुझे
फिर उसने नताल्या को झिड़का अब मुझे कितने दिन जीना है ! तू मेरी मौत तक रुक नहीं सकती थी ? तेरे बिना मेरा जीना कठिन हो जाएगा।
मीश्का उनकी बातें सुन रहा था। बोला बाबा अभी तो तुम सौ वर्ष तक जिओगे। तो क्या नताल्या तब तक रुकी रहेगी ? तुम भी अजीब हो !
बूढ़ा क्रोध में लाल हो गया। उसने पाँवों के साथ-साथ धरती पर छड़ी भी पटकी।
निकल यहाँ से ! मैं कहता हूँ निकल यहाँ से ! कुतिया का बच्चा तुमसे हमारी बातें सुनने को किसने कहा था ?
मीश्का हँसते हुए अहाते में भाग जाता। बूढ़ा ग्रीश्का बहुत देर तक उसे कोसता हुआ बैठा रहता। उसके घुटने बहुत देर तक काँपते रहते।
नताल्या की दोनों छोटी बहनें उत्सुकता से शादी का इन्तज़ार

मरतीं। इनमें मरिन्का बारह बरस की थी तो ग्रिपा आठ बरस की।

कोरशुनोव के फ़ार्म पर काम करनेवाले मज़दूर भी बड़ी ख़ुशियाँ मनाते। वे सोचते कि मालिक के ख़र्च पर कई दिनों तक मौज उड़ायेंगे।

इनमें एक उक्राइनी सारस की तरह लम्बा था। उसका नाम हेतको था। नाम ज़रा बाहर का-सा लगता था। वह छः महीने में एक बार पीने का जश्न मनाता था। तनख़्वाह तो फूँक ही डालता था, यहाँ तक कि अपने कपड़े-लत्ते भी बेचकर पी डालता था। सो इधर उसका मन एक ज़माने से उमग रहा था, पर उसने अपने पीने का यह कार्यक्रम नताल्या की शादी तक टाल रखा था।

दूसरा दुबला-पतला कज़्ज़ाक मिखी था। वह कोरशुनोव-परिवार में हाल ही में आया था। एक अग्निकांड में चौपट होकर बेचारा मज़दूरी करने पर मजबूर हो गया था और हेत-बाबा की संगत में उसे पीने का चसका लग गया था। वह घोड़ों का बड़ा प्रेमी था। जब वह ढाले होता तो रो रोके अपना तिकोना चेहरा आँसुओं से तर कर लेता और मिरोन को सताता: मालिक, बनो विदा होता बाकी मुझे हिसाब दीजियेगा। फिर देखना घोड़ों की चाल! मैं आग के बीच से होकर न जाऊँगा बेटी की गाड़ी और उसका एक बाल भी न उखड़ पाएगा। एक ज़माने में तो मेरे अपने घोड़े थे

शादी सेंट पर्व[1] के अगले दिन होनी थी। जब तीन हफ़्ते रह गए तो एक दिन ग्रिगोरी अपनी भावी पत्नी से मिलने गया। वह बैठकख़ाने की लाल मेज़ के पास नताल्या की सहेलियों के साथ बैठा सूरजमुखी के बीज छीलता रहा और फिर चलने के लिए उठ खड़ा हुआ। नताल्या पहुँचाने आई। घोड़ा नई काठी से लैस ड्योढ़ी में खड़ा था। यहाँ पहुँचने पर नताल्या ने अपने सीने के पास छिपाया एक छोटा सा बंडल निकाला और मारे शर्म से लाल होते हुए, प्यार से उसकी ओर देखते हुए उसे ग्रिगोरी के हाथों में थमा दिया। इस पर उसका भावी पति जो मुसकराया तो उसके भेड़िये जैसे दाँतों की सफ़ेदी से लड़की

[1] बड़े दिन से पहले के चालीस दिन। इस काल में ईसाई इतवार को छोड़कर सब दिन उपवास करते हैं।

ताज्जुब में पड़ गई। वह बोला "यह क्या है ?"
"आपको मालूम हो जाएगा। मैंने आपके लिए तम्बाकू की थैली पर कढ़ाई की है।"

ग्रिगोरी चंचल हो उठा। उसने उसे अपनी ओर खींचा और उसे चूमना चाहा, किन्तु नताल्या ने उसके वक्ष पर हाथ रखकर बलपूर्वक उसे हटा दिया, स्वयं पीछे की ओर तन गई और भयभीत दृष्टि से घर की खिड़की की ओर देखने लगी।

"घर के लोग देख लेंगे।"

"देखने दो।"

"मुझे शर्म लगती है।"

"पहले पहल ऐसा ही होता है।" ग्रिगोरी ने कहा। ग्रिगोरी घोड़े पर सवार होने को हुआ। नताल्या लगाम थामे रही। त्यौरियाँ बदलते हुए ग्रिगोरी ने रकाब पर पैर रखा और काठी पर आराम से बैठकर घोड़ा हाते में लाया। लड़की ने फाटक खोला और उसे निहारती रही। वह काठी पर बायीं ओर को काल्मीक-ढंग से झुका और चाबुक नचाता उड़ चला।

"ग्यारह दिन और हैं।" नताल्या ने मन-ही-मन सोचा, लम्बी साँस ली और मुसकरा दी।

२

गेहूँ के पौधे धरती फोड़कर ऊपर आते हैं और बढ़ते हैं। कुछ हफ्तों में ही इतने घने हो जाते हैं कि उनके बीच कौआ बैठता है तो नजर नहीं आता। पौधे धरती से रस ग्रहण करते रहते हैं कि बालें उग आती हैं। फिर फूल आते हैं और बालें सुनहरी धूल से नहा उठती हैं। किसान अपने खेतों में आता है और फसल देखकर खुशी से फूला नहीं समाता। पर फिर छुट्टा जानवर खेतों में आते हैं और लहलहाते गेहूँ को रौंदकर चले जाते हैं। जहाँ-तहाँ अनाज का दम निकल जाता है। किसान कटुता से भर उठता है और निराश हो जाता है।

यही अवस्था अक्सीनिया की थी। उसकी भावनाओं में सुनहरे फल

भ्राए हों थ कि ग्रिगोरी ने कच्चों साल क अपने भारी जूतों से उन्हें रौंद दिया था। ग्रिगोरी ने उसकी भावनाओं को कलंकित कर दिया था उन्हें जलाकर राख कर दिया था और सब कुछ अन्तिम साँस लेकर रह गया था।

मेलखोव परिवार क सूरजमुखी की क्यारी स अक्सीनिया लौटी तो उसकी आत्मा फार्म के उस ग्रहाते की तरह खाली और वीरान हो उठी जिसम झाड़ झंखाड़ और जंगली घास उग आती है। वह रास्ते भर रूमाल चबाती रही और आँसू उसके गले म आ-आकर अटकने लगे। घर में घुसते ही वह जमीन पर गिर पड़ी। उसका कलेजा दुःख स फटने लगा और उसके दिमाग म सूनेपन की आँधियाँ सर्राटे भरने लगीं। किन्तु यह हालत बराबर रही नहीं। मन का भेदनेवाला आक्रोश उतार पर आया और थककर अन्ततम म सो गया।

जानवरों द्वारा रौंदा हुआ गेहूँ फिर उठकर खड़ा हो जाता है ओस और सूरज की किरणों के सहारे दब हुए डंठल फिर सिर उठाते हैं। पहले तो व भारी बोझ स दबे आदमी की तरह लगते हैं परन्तु फिर गर्दनें तानकर सीधे हाले हैं। एक बार फिर दिन हो उठता है। हवा की लहरें आ आकर गले मिलने लगती हैं।

अक्सीनिया ने रात को अपने पति को मोह स दुलराया तो उसे सहसा ही ग्रिगोरी का ध्यान हो आया और उसके अन्तर के गहरे प्यार म नफरत घुल उठी। औरत ने मन-ही-मन नये अपमान की योजना बनाई और नये सिरे स लज्जा ढोने के मनसूबे बाँधे। उसने ग्रिगोरी को नताल्या से—उस सुखी नताल्या से—छीनने का निश्चय किया जो न प्रेम का आनन्द जानती थी न दुःख स परिचित थी। वह रात भर अँधेरे म पलकें झपकाती अपनी योजना पर विचार करती रही। उसकी दायीं बाजू पर स्तीपान का खूबसूरत चेहरा सधा रहा। अक्सीनिया लेटी हुई बराबर सोचती रही किन्तु निश्चय वह केवल एक ही बात का दृढ़ता स कर सकी—मैं ग्रिगोरी को हरेक स छीन लूँगी मैं उसे प्यार म भर दूँगी वह पहले जस मेरा अपना था आगे भी मेरा अपना होगा। पर अन्ततम म कहीं कोई टीस उठी और यों बनी रही जस कि शहद की मक्खी

ताज्जुब में पड़ गई। यह बोला — यह क्या है ?

आपको मालूम हो जाएगा। मैंने आपके लिए तम्बाकू की थैली पर कढ़ाई की है।

ग्रिगोरी चपल हो उठा। उसने उसे अपनी ओर खींचा और उसे चूमना चाहा, किन्तु नताल्या ने उसके वक्ष पर हाथ रखकर बलपूर्वक उसे हटा दिया, स्वयं पीछे की ओर तन गई और भयभीत दृष्टि से घर की खिड़की की ओर देखने लगी।

घर के लोग देख लेंगे।

देखने दो।

मुझे शर्म लगती है।

पहले-पहल ऐसा ही होता है। ग्रिगोरी ने कहा। ग्रिगोरी घोड़े पर सवार होने को हुआ। नताल्या लगाम थामे रही। त्यौरियाँ बदलते हुए ग्रिगोरी ने रकाब पर पैर रखा और काठी पर आराम से बैठकर घोड़ा हाते में लाया। लड़की ने फाटक खोला और उसे निहारती रही। वह काठी पर बायीं ओर को कालमीक ढंग से झुका और चाबुक नचाता उड़ चला।

ग्यारह दिन और हैं। नताल्या ने मन-ही-मन सोचा, लम्बी साँस ली और मुसकरा दी।

२०

गेहूँ के पौधे धरती फोड़कर ऊपर आते हैं और बढ़ते हैं। कुछ हफ्तों में ही इतने घने हो जाते हैं कि उनके बीच कौवा उड़ता है तो नज़र नहीं आता। पौधे धरती से रस ग्रहण करते रहते हैं कि बालें लग आती हैं। फिर फूल आते हैं और बालें सुनहरी धूल से नहा उठती हैं। किसान अपने खेतों में आता है और फसल देखकर खुशी से फूला नहीं समाता। पर फिर छुट्टा जानवर खेतों में आते हैं और लहलहाते गेहूँ को रौंदकर चले जाते हैं। जहाँ-तहाँ अनाज का दम निकल जाता है। किसान कटुता से भर उठता है और निराश हो जाता है।

यही अवस्था अक्सीनिया की थी। उसकी भावनाओं में सुनहरे फूल

आए ही थे कि ग्रिगोरी ने कच्ची घास के अपने भारी जूतों से उन्हें रौंद दिया था। ग्रिगोरी ने उसकी भावनाओं को कलुषित कर दिया था उन्हें जलाकर राख कर दिया था और सब कुछ अन्तिम साँस लेकर रह गया था।

मेलेखोव-परिवार के सूरजमुखी की क्यारी से अक्सीनिया लौटी तो उसकी आत्मा फार्म के उस अहाते की तरह खाली और वीरान हो उठा जिसमें झाड़ झंखाड़ और जंगली घास उग आती है। वह रास्ते भर रूमाल चबाती रही और आँसू उसके गले में आ-आकर अटकने लगे। घर में घुसते ही वह जमीन पर गिर पड़ी। उसका कलेजा दुःख से फटने लगा और उसके दिमाग में सूनेपन की आँधियाँ सर्राटे भरने लगीं। किन्तु यह हालत बराबर रही नहीं। मन को भेदनेवाला आक्रोश उतार पर आया और थककर अन्तस्तम में सो गया।

जानवरों द्वारा रौंदा हुआ गेहूँ फिर उठकर खड़ा हो जाता है। ओस और सूरज की किरणों के सहारे दबे हुए डंठल फिर सिर उठाते हैं। पहले तो वे भारी बोझ से दबे आदमी की तरह लगते हैं परन्तु फिर गर्दनें तानकर सीधे होते हैं। एक बार फिर दिन हो उठता है। हवा की लहरें आ-आकर गले मिलने लगती हैं।

अक्सीनिया ने रात को अपने पति को चाह से दुलराया था। उसे सहसा ही ग्रिगोरी का ध्यान हो आया और उसके अन्तर के गहरे प्यार में नफरत घुल उठी। औरत ने मन-ही-मन नये अपमान की योजना बनाई और नये सिर से लज्जा त्याग के मनसूबे बाँधे। उसने ग्रिगोरी को नताल्या से—उस सुखी नताल्या से—छीनने का निश्चय किया था, न प्रेम का आनन्द जानती थी न दुःख से परिचित थी। वह रात भर अँधेरे में पलकें झपकाती अपनी योजना पर विचार करती रही। [illegible] स्तेपान का खूबसूरत चेहरा खड़ा रहा। अक्सीनिया जगी हुई बराबर सोचती रही किन्तु निश्चय यह बराबर एक ही बात का [illegible]—मैं ग्रिगोरी को हमेशा से छीन लूँगी। मैं उसे प्यार [illegible] हूँ [illegible] अब मेरा अपना था आगे भी मेरा अपना होगा। [illegible] में कहीं कोई टीस उठी और यों बनी रही जैसे कि [illegible]

का डक बना रहता है।

ग्नि म अकसीनिया अपनी गृहस्थी की उलझनों म फँसी रहती और उसे और बातों का खयाल ही न आ पाता। कभी-कभी ग्रिगोरी से उसका सामना होता। उसे देखते ही वह पीली पड़ जाती पर अपने बदन को साधे गर्व से आगे बढती सारी शर्म छोडकर उसकी काली वीरान आँखों मे आँखें डालती और जस कि उस चुनौती सी देता। परन्तु उसका शरीर ग्रिगोरी क लिए कितना कलपता यह केवल वही समझती।

हर मुलाकात क बाद ग्रिगोरी की प्यास उसके लिए बढ़ती जाती। वह अकारण ही क्रोधित हो उठता और दुन्या तथा अपनी माँ पर गुस्सा उतारता। अपनी कटार उठा पीछे के अहाते म चला जाता और वहाँ जमीन म गडी मोटी मोटी टहनियों पर तब तक वार-पर वार करता रहता जब तक कि पसीने स नहा न उठता। इस पर पैन्तेली बकना शुरू करता

नतान का बच्चा ! इतनी टहनियाँ काटकर फेंक दी कि दो बाडे बन जाएँ लकडी काटने का ऐसा ही शौक है तो जगल में चले जाओ हको बेटा फौजी भर्ती में जाओगे न तब लकडी काटने का मौका मिलेगा तुम्हे सारी मस्ती ढीली पड जाएगी !

२१

दो-दो घोड़ों की चार गाडियाँ यानी चार जोडियाँ वधू की विदा के लिए सजाई गइ और वे आकर मेलेखोव क अहाते म खडी हुई ता उत्सव समारोहों के कपडो म सजे गाँव क लोगों न उन्हे घेर लिया। प्योत्र के ठाठ सबस निराले थे। उसने काला फ्रॉक-कोट तथा नीली धारियों की पतलून पहन रखी थी। उसकी बायी भुजा पर दो सफद रूमाल बध हुए थे और उसकी गेहुँआ मूँछों क नीचे होंठों पर हमेशा की-सी मुसकान खिल रही थी।

ग्रिगोरी शर्माओ मत ! उसने अपने भाई से कहा जवान मुर्गे की तरह अकडकर चलो मुँह बनाये न रहो !

पतली सरपत की तरह पतली-दुबली लचकदार दारया ने रसभरी

के रंग का ऊनी स्कर्ट पहन रखा था। उसने पेंसिल से काली की गई अपनी भौंहें सिकोड़ीं और प्योत्र को कोहनी मारी।

पापा से कहो चलने का वक्त हो गया। वे लोग हमारे इन्तजार में होंगे।

सब लोग अपनी अपनी जगह बैठ जाओ।' पिता से फुसफुस करने के बाद प्योत्र ने कहा 'मेरी गाड़ी में बैठेगा दूल्हा और कोई अन्य पाँच लोग। लोग कूद-कूदकर गाड़ियों में जा बैठे। विजय-गर्व से लाल इलीचिका ने फाटक खोला। चारों गाड़ियाँ एक-दूसरी के पीछे सड़क पर आई।

प्योत्र ग्रिगोरी की बगल में बैठा। उनके सामने बैठी दार्या ने बसन्ती रूमाल हिलाया। एक गाना छिड़ा तो घुरियों और बमों की आवाज उसमें बाधा डालने लगी। कज्जाक-टोपियों की लाल पट्टियों ने नीली-काली पोशाकों और फ्रॉक-कोटों ने बाँहों में बंधे सफ़ेद रूमालों ने औरतों के रंग बिरंगे इन्द्रधनुषी रूमालों ने और उनके पीछे उड़ते धूल के रेशमी बादलों ने हर गाड़ी के चारों ओर के वातावरण में रंग घोल दिया।

ग्रिगोरी के दूसरे चचेरे भाई अनीकेई ने दुल्हे की जोड़ी हाँकी। घोड़ों की दुमों पर झुका हुआ वह ऐसा लगता कि अब गिरा तब गिरा। उसने बातों में कम पसान से तर घोड़ों को तेज़ी से दौड़ाया और सीटी बजाई। उसका चाबुक चला सड़ाक सड़ाक

सफ़ाचट मूँछों वाले बाज जैसे अनीकेई ने ग्रिगोरी की ओर देखकर आँख मारी जनाने चेहरे से मुसकराने की कोशिश का सीटी बजाई और चाबुक सटकारा।

हाँको ज़रा! प्योत्र चीखा।

ग्रिगोरी का मामा ईल्या आकोगीन दूसरी जोड़ी को ग्रिगोरी की जोड़ी से आगे निकालने की चेष्टा करते हुए चिल्लाया निकलने दो आगे!

ग्रिगोरी ने अपने मामा की पीठ-पीछे बैठी हुई दूल्या को देखते ही समझा कि वह खुशी से खिली हुई है।

नहीं तुम न बन्ना।

उछलकर खड़े होते और कर्णभेदी सीटी बजाते हुए अनीकेई

चिल्लाया। उसने घोड़ों पर क्रोध म चाबुक चलाया तो घोड़ और तेज हो गए।

'तुम गिर पड़ोग।' दारया ने अपनी बाँहों स उसके पेटेंट जूतों वाले पैरों को कसकर पकड़ा। 'बढ़ो!' उनकी बगल म मामा ईल्या चिल्लाया। किन्तु उसकी आवाज बग्घिया क पहियों की घरर-मरर म खो गई।

स्त्री-पुरुषों स खचाखच भरी बाको दो जोड़ियाँ अगल-बगल मे चली। घोड़ों की पीठों पर लाल नीली और गुलाबी झूलें पड़ी हुई थीं। उनकी अयालों और माथे क बालों म रिबन और कागज क फूल बधे हुए थे। ऊँची-नीची सड़क पर जोड़ियाँ दौड़ रही थीं घोड़ों के मुह स साबुन के-स झाग निकल रहे थे और उनकी गीली पीठों पर फंदने नाच रहे थे और हवा म झूम रहे थे।

कोरशुनोव के फाटक पर बारात देखन क लिए बच्चों की भीड़ जमा थी। उन्होंने सड़क पर धूल उड़ती देखी तो शोरगुल करत ग्रहात में आ जमे।

बारात आ रही है! यह देखो आ गई बारात। उन्होंने हेत बाबा को घर लिया। हेत-बाबा अभी अभी आया था। चिल्लाया—

तुम लोगों ने यहाँ यह भीड़ क्या लगा रखी है? भाग जाओ यहाँ स! शोरगुल स आसमान सिर पर उठा लिया है तुम सबन! मुझे खुद अपनी आवाज समझ म नहीं आती। बच्चे हेत बाबा का मजाक उड़ाते उसके आस-पास उछलत कूदत रहे। हेत-बाबा ने अपना सिर इस तरह झुका लिया जैस किसी गहरे कुएँ म निगाह दौड़ा रहा हो। फिर उसन नफरत स बच्चों की ओर देखते हुए अपनी घड-सी तोंद खुजलानी शुरू कर दी।

खड़खड़ाती हुई जोड़ियाँ फाटक पर आ पहुँची। प्योत्र ग्रिगोरी को साथ ल सीढ़ियों पर चढ़ा। दूसरे पीछे हो लिए।

बरसाती और बावर्चीखाने के बीच का दरवाजा कसकर बन्द कर दिया गया था। प्योत्र ने खटखटाया।

प्रभु यीशु हम पर दया करो भगवन्! उसने गाते हुए कहा।

ऐसा ही हो! द्वार के दूसरी ओर स आवाज आई।

प्योत्र ने तीन बार अपने शब्द दोहराये और तीन ही बार द्वार खट खटाया। हर बार उसे एक ही जवाब मिला।

क्या हम लोग अन्दर आ सकते हैं?" उसने पुनः पूछा।

ठीक से ! आपका स्वागत है!"

द्वार खुल गया। माँ-बाप की ओर से नताल्या की धर्ममाता ने प्योत्र का बड़े ही मधुर ढंग से अभिवादन किया। रसभेरी की पत्तियों-से उसके होठों पर मुसकान दौड़ गई। दूल्हे के साथी, यह लीजिये। यह है हमारी शुभ-कामना कि आप स्वस्थ रहें। उसने प्योत्र को तीखे ताजा 'क्वास' का गिलास दिया। प्योत्र ने अपनी गलमूँछें ठीक कीं, गिलास खाली किया और सधे हुए ढंग से हंसते हुए बोला

तो आपने इस तरह मेरा स्वागत किया है। ठहरिये, मेरी भी बारी आएगी और तब आपको इस गिलास का बदला चुकाना ही पड़ेगा।

इधर नताल्या की धर्ममाता और वर के बड़े भाई के बीच हंसी मजाक चलता रहा और उधर समझौते के अनुसार वर-पक्ष के लोगों के लिए तीन-तीन गिलास वोद्का लायी गई।

विवाह की पोशाक में सजी नताल्या अपनी दोनों बहनों के साथ मेज के पास बैठी रही। मरित्का फैले हुए हाथ पर एक पिन-सी नचाती रही तो ग्रिपा, निगाहों में चुनौती घोल एक चम्मच-सा चलाती रही। प्योत्र को पसीना आ रहा था और वोद्का का कुछ कुछ नशा भी हो चला था। वह झुका और उसने अपने गिलास में पचास कोपेक डाले। लेकिन मरित्का ने नाचती हुई पिन से मेज खटखटाई और बोली

'कम है! इतने में हम अपनी बहन आपको नहीं देंगे।

प्योत्र ने एक बार फिर चाँदी के कुछ सिक्के उस गिलास में डाले।

"नहीं, हम अपनी बहन को नहीं जाने देंगे। नीचे दृष्टि गड़ाकर बैठी नताल्या को कुहनियाकर बहनों ने गुस्से से कहा।

यह क्या बात है? हमने तो पूरी से भी ज्यादा कीमत अदा कर दी। प्योत्र ने अपना बचाव किया।

झगड़ा खत्म करो, लड़कियो!' आन्द्रेइ दे मिरोन मुसकराता हुआ मेज की ओर बढ़ा। उसके मक्खन से चिकनाए बालों से पसीने और गोबर

चिल्लाया। उसने घोडों पर क्रोध म चाबुक चलाया तो घोड और तेज हो गय।

'तुम गिर पडोग।' दारया ने अपनी बाँहो स उसके पेटेंट जूता वाले पैरों को कसकर पकडा। बढ़ा। उनकी बगल म मामा ईस्या चिल्लाया। किन्तु उसकी आवाज बग्घियों क पहियो की चरर-मरर म खो गई।

स्त्री-पुरुषों स खचाखच भरी बाकी दो जोडियाँ अगल-बगल म चला। घोडों की पीठों पर लाल नीली और गुलाबी झूलें पडी हुई थी। उनकी अयालो और माथे क बालो म रिबन और कागज क फूल बधे हुए थे। ऊँची-नीची सडक पर जोडियाँ दौड रही थी घोडो के मुँह स साबुन के-स भाग निकल रहे थे और उनकी गीली पीठो पर फंदने नाच रह थे और हवा म झूम रहे थ।

कोरशुनोव के फाटक पर बारात देखने क लिए बच्चा की भीड़ जमा थी। उन्होने सडक पर धूल उडती देखी तो शोरगुल करते अहाते में आ जमे।

बारात आ रही है! यह देखो आ गई बारात। उन्होन हेत बाबा को घेर लिया। हेत-बाबा अभी अभी आया था। चिल्लाया—

तुम लोगों ने यहाँ यह भीड क्यों लगा रखी है? भाग जाओ यहाँ स! शोरगुल स आसमान सिर पर उठा लिया है तुम सबन! मुझे खुद अपनी आवाज समझ म नहीं आती। बच्चे हेत-बाबा का मजाक उडाते उसके आस-पास उछलते-कूदते रहे। हेत-बाबा ने अपना सिर इस तरह झुका लिया जैस किसी गहरे कुएँ मे निगाह दौडा रहा हो। फिर उसने नफरत स बच्चों की ओर देखते हुए अपनी घड सी तोंद खुजलानी शुरू कर दी।

खडखडाती हुई जोडियाँ फाटक पर आ पहुँची। प्यात्र ग्रिगोरी को साथ ले सीढियों पर चढा। दूसरे पीछे हो लिए।

बरसाती और बावर्चीखाने के बीच का दरवाजा कसकर बन्द कर लिया गया था। प्योत्र न खटखटाया।

प्रभु यीशु हम पर दया करो भगवन्! उसने गाते हुए कहा।

ऐसा ही हो! द्वार के दूसरी ओर स आवाज आई।

प्योत्र ने तीन बार अपने शब्द दोहराये और तीन ही बार द्वार खटखटाया। हर बार उसे एक ही जवाब मिला।

'क्या हम लोग अन्दर आ सकते हैं?' उसने पुनः पूछा।

'शौक से! आपका स्वागत है।'

द्वार खुल गया। माँ-बाप की ओर से, नतास्या की धर्ममाता ने प्योत्र का बड़े ही मधुर ढंग से अभिवादन किया। रेसबरी की पत्तियों-सी उसके होठों पर मुसकान दौड़ गई। 'दूल्हे के साथी यह लीजिये। यह है हमारी शुभ कामना कि आप स्वस्थ रहें।' उसने प्योत्र को तीखे ताजा 'क्वास' का गिलास दिया। प्योत्र ने अपनी गलमूँछें ठीक कीं, गिलास खाली किया और सधे हुए ढंग से हँसते हुए बोला

"तो आपने इस तरह मेरा स्वागत किया है। ठहरिये मेरी भी बारी आएगी और तब आपको इस गिलास का बदला चुकाना ही पड़ेगा।"

इधर नतास्या की धर्ममाता और वर के बड़े भाई के बीच हँसी मजाक चलता रहा और उधर समझौते के अनुसार वर-पक्ष के लोगों के लिए तीन-तीन गिलास वोद्का लायी गई।

विवाह की पोशाक में ही सजी नतास्या अपनी दोनों बहनों के साथ मेज के पास बैठी रही। मरिश्का फैले हुए हाथ पर एक बेलन-सा नचाती रही तो ग्रिपा निगाहों में चुनौती भरे एक बम्बख-सा बनाती रही। प्योत्र को पसीना आ रहा था और वोद्का का [illegible] हो चला था। वह झुका और उसने अपने गिलास में [illegible]। लेकिन मरिश्का ने नाचती हुई [illegible] और [illegible]

[illegible] हैं! इतने में हम अपनी बहन आपको नहीं देंगे।"

प्योत्र ने एक बार फिर [illegible]।

"नहीं हम अपनी बहन को नहीं जाने देंगे।" [illegible] बैठी नतास्या को कुहनियाकर बहनों ने [illegible] कहा।

'यह क्या बात है? हमने तो पूरा [illegible] दी। प्योत्र ने अपना बचाव किया।

'झगड़ा खत्म करो नहीं क्या!" [illegible] मेज की ओर बढ़ा। [illegible]

की मिली जुली बास आई। उसे अपनी ओर आता देख वधू-पक्ष के लोग उठकर खड़े हो गए और उन्होंने नवागन्तुकों के लिए बैठने की जगह कर दी।

प्याज रूमाल का एक सिरा ग्रिगोरी के हाथ में थमा एक बेंच पर कूदा और ग्रिगोरी को दुलहिन के पास ले चला। वह देव-मूर्तियों के नीचे बैठी हुई थी। नताल्या ने काँपते गीले हाथ से रूमाल का दूसरा सिरा पकड़ लिया। ग्रिगोरी उसकी बगल में जा बैठा।

मेज के चारों ओर दाँतों का चबर चबर होने लगी। प्रतिपिया ने उबली हुई मुर्गी के टुकड़े किये और हाथ सिर के बालों से पोंछ लिये। अनीकोई ने मुर्गी का सीन वाला हिस्सा खाना शुरू किया तो पीली चर्बी ठोढ़ी से बहती हुई उसके कॉलर तक आने लगी।

ग्रिगोरी ने ऊबकर पहले अपने और नताल्या के रूमाल में बँधे हुए चम्मचों की ओर देखा और फिर एक कटोरे में उबलती सेमइयों की ओर। उसे बड़े जोरों की भूख लगी थी और उसके पेट में चूहे कूदने लग थे।

दार्या खाने में जुट पड़ी। उसकी बगल में बैठा ईल्या आजोगीन भेड़ के गोश्त के एक टुकड़े में अपने बड़े-बड़े दाँत गड़ाने और दार्या के व्यवहार पर नाखुश होकर उसे डाँटने लगा।

मेहमानों ने बड़ी देर तक खाया और खूब डटकर खाया। मर्दों के पसीने की राल की-सी बास औरतों के पसीने की मीठी गन्ध में घुल गई। बड़े-बड़े सन्दूकों से निकाल गए सूटों फाक-कोटों और शालों से कपूर की गोलियों और जाने किस किस चीज़ की महक आती रही। कुल मिलाकर यह महक ऐसी भारी और अजीब लगी जैसे कि किसी बुढ़िया के एक जमाने के शहद के बरतन से उठ रही हो।

ग्रिगोरी ने नताल्या की ओर कनखियों से देखा। उसे यह पहली बार लगा कि नताल्या का ऊपरी होंठ फूला हुआ है और निचला होंठ पर टोपी के छज्जे की तरह लटका हुआ है। उसने देखा कि उसके दाएँ गाल पर हड्डी के नीचे एक भूरा तिल है और तिल पर दो सुनहरे बाल हैं। यह देखकर पता नहीं क्यों उसे क्रोध हो आया। उसे अक्सीनिया की सुराहीदार गर्दन और घुंघराले घने बालों का ध्यान हो आया। उस समय

उस लगा जैसे किसी ने उसकी पीठ पर एक मुट्ठी कांटेदार घास झोंक दी हो। वह परेशान हो उठा और दूसरों को बहुत ही बुरे मन से निहारने लगा। वे मजा ले-लेकर चीजें खा रहे थे मुंह चला रहे थे और अपने होंठ बजा रहे थे।

लोग खाना खत्म कर मेज पर से उठे तो किसी ने गेहूं की रोटी की खटास से भरी गंध और फलों के रस से बसी सांस छोड़ते हुए ग्रिगोरी के जूते में मुट्ठी भर अन्न डाल दिया ताकि उसे नज़र न लगे और बुख़ार के ये दाने उसके पांवों में चुभते रहे। कमीज का कड़ा कॉलर गर्दन में गड़ता रहा और शादी की रस्मों में उलझा वह अपने को जी भरकर कोसता रहा।

२२

बारात वापस लौटी तो मेलेखोव-परिवार के बड़े-बूढ़ों ने स्वागत किया। पैन्तेली की रुपहले तारोंवाली काली दाढ़ी चमकी और उसने अपने हाथ में देवमूर्ति साधी। बगल में पत्नी खड़ी रही। उसके पतले होंठ जमकर पत्थर बने रहे।

ग्रिगोरी और नताल्या हॉप-लताओं की पत्तियों और गेहूं के दानों की बौछारों के बीच आशीर्वाद पाने के लिए आगे बढ़े। पैन्तेली ने उन्हें असीसा तो उसकी पलक से एक आंसू टपक पड़ा। उसे अपने-आप पर खीझ आई और लगा कि कोई देख लेगा तो उसका खासा मजाक बनेगा।

दूल्हा और दुलहिन घर में प्रविष्ट हुए। वोद्का, सवारी और धूप से लाल चेहरा लिये दार्या भागी भागी सीढ़ियों पर आई और दून्या पर बरस पड़ी "प्योत्र कहां है?

मैंने नहीं देखा।'

उसे पादरी के पास जाना था और यहां उसका पता ही नहीं है। बुरा हो उसका!"

प्योत्र गाड़ी में मिला। उसने मात्रा से अधिक वोद्का चढ़ा ली थी और इस समय वह वहां पड़ा कराह रहा था। दार्या चील की तरह उस

पर टूट पड़ी किसने कहा था कि इतनी चढ़ा रा तू ! उठ और जाकर जल्दी से पादरी को बुलाकर ला !

भाग जा यहाँ स ! मैं तुझे नहीं जानता। हुक्म तू किस पर चला रही है ? प्योत्र ने उत्तर दिया।

नशो म धयु भर दारया ने अपनी दो अगुलियाँ उसके मुँह म डाली और उसे उल्टी कराई कि नशा उतरे। फिर उसने कुएँ का एक घड़ा ठंडा पानी उसके ऊपर डाला उसका बदन कम्बल स पोंछा और उस पादरी के पास ले गई।

एक घंटे के अन्दर ही हाथ म मोमबत्ती साथ ग्रिगोरी गिरजे में नताल्या की बगल म खड़ा नजर आया। उसकी निगाह रह रहकर अपने चारों ओर खड़े लोगो की दीवार पर पड़ने लगी। रह रहकर चार शब्द उसके दिमाग म नाचने लगे—तुम तो गये प्यारे ! पीछे स प्योत्र खांसा। दून्या भीड म एक ओर खड़ी उसे दिखलाई दी। उसने सोचा कि मैं सबको पहचानता हूँ। उसने बेसुरा कोरस सुना और सुने कोलाहल म डूबते पादरी के स्वर। उसका मन विरोधी भावनाओं स भर उठा। उसने फादर विसरियोन के पीछे-पीछे चलकर पाठ मंच की परिक्रमा की। प्योत्र ने उसका फ्रॉक कोट पीछे स खींचा तो वह रुककर मोमबत्ती की लौ की नन्ही-नन्ही जीभों को देखने और निद्राभरे आलस्य पर विजय पाने की चेष्टा करने लगा।

उसने फादर विसरियोन का स्वर सुना अगूठियाँ बदल लो !

दोनों ने आज्ञा का पालन किया अब और देर लगगी क्या ? प्योत्र न उसकी ओर देखा तो ग्रिगोरी ने उससे इशारों में पूछा। मुसकान बिखेरते हुए प्योत्र के होठ हिले अब देर नहीं लगगी। फिर ग्रिगोरी न अपनी पत्नी क मम पीने होंठ चूमे। गिरजा बुझनी मोमबत्तियों क धुए की गन्ध से भर उठा। लोग दरवाजे की ओर बढ़ने लग।

नताल्या का लम्बा खुरदरा हाथ पकड़े ग्रिगोरी निकलकर बरसाती म आया तो पीछे से किसी ने उसके टोप पर हाथ मारा। पूरब की उष्ण वायु का झोंका आया और चिरायते की झाड़ी की गन्ध उसकी नाक म भर गई। मदान की ओर से सन्ध्या की शीतलता की लहर आई। दोन

न पार बिजली चमकी वर्षा की आशंका हुई। गिरजे की सफ़ेद बहार दीवारी के पार से आराम करते घोड़ों की मधुर घंटियों की आवाज भीड़ के कोलाहल को चीरती अन्दर आई और जस आमन्त्रण सा देने लगी।

२३

दुलहा-दुलहिन चच भी चले गये किन्तु कोरशुनोव-परिवार के लोग मेलखोव के यहाँ नहीं आये। पन्तली यह देखने के लिए कितनी ही बार फाटक पर गया कि वे आ रहे हैं कि नहीं किन्तु कँटीली झाड़िया से भरी भूरी सड़क हर बार सूनी ही मिली। उसने दोन की ओर देखा तो जंगल मुनहला पीले रंग में गोते लगाता लगा। पके हुए नरकुल दोन के किनारों की दलदलों पर झुके-से लग। धुँधलके ने शरद के प्रारम्भिक दिनों की उदासी की चादर बिछा दी—गाँव पर नदी पर खड़िया की पहाड़ियों पर बढ़ती धुन्ध म डूबे जंगल पर और मैदान पर। चौराहे के मोड़ पर किनारे बना क्रास आसमान की पृष्ठभूमि म भसका।

ऐन में पहियों की धीमी खड़खड़ाहट और कुत्तों की भौं भौं की ध्वनि पन्तली के कानों म पड़ी। चौक से होकर दो गाड़ियाँ सड़क पर आई। पहली बग्घी म अपनी पत्नी के साथ मिरोन था। उसके सामने बैठा था बाबा ग्रीश्का—नई वर्दी पहने तथा पुरस्कार म प्राप्त सत जाज का क्रॉस एव पदक लगाये। हौंक मीलता रहा था। वह गद्दी पर बहुत ही ढील ढाल ढंग स बैठा था। मुँह स झाग फेंकते घोड़ों को चाबुक दिखाने का कष्ट उसे गवारा नहीं था।

पैन्तेली ने फाटक खोल दिया और दोनों गाड़ियाँ अहाते में आ गई। इलीनिचना बरसाती स बाहर आई। उसकी पोशाक का सिरा जमीन पर घिसट रहा था। आदर स कमर तक झुककर बोली आपने बड़ी कृपा की। आइये हमारी कुटिया को पवित्र कीजिए।

एक तरफ़ को सिर झुकाकर पन्तली न अपने हाथ फैलाकर मेहमानों का स्वागत किया पधारिये आप सादर निमन्त्रित हैं।

घोड़ों को खोलने के लिए कहकर वह नवागन्तुकों के पास गया। मिरान ने हाथ से गरोवारी की धूल झाड़ी। बूढ़ा ग्रीश्का गाड़ी की सेज

रफ्तार के बाद की परेशानी के कारण पीछे रह गया।

आइये कृपया अन्दर आइये।' इलीनिचना ने साग्रह कहा।

धन्यवाद अभी आते हैं।

'हम लोग कब से आपकी राह देख रहे हैं मैं अभी ब्रुश लाती हूँ कपड़े साफ करने के लिए। इन दिनों तो इतनी धूल और गर्द होती है कि साँस लेना मुश्किल हो जाता है

हाँ सचमुच हवा बड़ी सूखी है इसी से तो गर्द और धूल है लेकिन आप परेशान न हों मैं पैन्तेली की पत्नी के सामने आदर से झुककर बूढ़ा ग्रीश्का खलिहान की ओर बढ़ा और ओसाई की रंगी हुई मशीन के पीछे जा छिपा।

उस बूढ़े को आराम से अकेले रहने दो न पन्तेली ने अपनी पत्नी को सीढ़ियों पर टोका 'वह कुछ करना चाहता है और तुम तुम्हारा दिमाग कहीं चरने चला गया है क्यों ?

मैं भला कहाँ से जानूँ इलीनिचना ने लज्जा से लाल हो कहा।

'यह तो तुम्हें समझ लेना चाहिये। खैर कोई बात नहीं मेहमानों को मेज के किनारे ले चलकर बठाओ! इस तरह ग्रिगोरी की ससुराल के लोग बड़े कमरे में लाये गए। यहाँ बैठे लोग वोद्का पीकर आधे बेहोश मिले। जल्दी ही वर-वधू गिरजे से लौट आए। उनके प्रवेश करते ही पैन्तेली ने गिलासों में वोद्का भरी। उसकी आँखों में स्नेहाश्रु आ गए।

तो मिरोन ग्रेगोरीएविच! आइये जाम उठाएँ अपने बच्चों के लिए। भगवान् करे कि इनका जीवन हमारे जीवन की भाँति ही सुख से भरे। ये सदा प्रसन्न और स्वस्थ रहें।

उन्होंने बाबा ग्रीश्का के लिए एक बड़े गिलास में वोद्का ढाली। इसमें से आधी तो वह गटक गया और आधी उसकी वर्दी में बड़े कॉलर पर ढुलक गई। गिलासों से गिलास टकराये। लोग जमकर पीने लगे। बाजार-सा लग गया। कोरशुनोव का दूर का एक रिश्तेदार कोश्रोवेईदीन मेज के सिरे पर बैठा। उसने अपना गिलास उठाया और चिल्लाया 'यह कड़वी है वोदका तो कड़वी है!

वोद्का तो कड़वी है! मेज पर बैठे हुए अतिथियों ने उसका

साथ दिया।

"आह, कड़वी है!" एकाएक भर बावर्चीखाने से आवाज आई।

इस पर ग्रिगोरी न त्योरी चढ़ाकर अपनी पत्नी के फीके होंठ चूम और कमरे में चारों ओर निगाह दौड़ाई। सबके चेहरों पर लाली दौड़ गई। आँखों और मुसकानों ने शराब और नशे की दुहाई दी। मुँह चलने लगे। कसीदे के कामवाले मेजपोश पर लारें टपकने लगीं। लोगों के शोरगुल से छत दहलने लगा।

कोलावेईदीन ने बिखरे बिखरे-से दाँतोंवाला अपना मुँह खोला और गिलास उठाकर बोला, "वोदका कड़वी है।"

"कड़वी है!" एक बार फिर सब चीख उठे।

ग्रिगोरी ने कोलावईदीन की ओर घृणा से भरकर देखा, तो "कड़वी है!" चिल्लाते समय उसकी लाल जीभ झलकी।

"अरे तुम दोनों एक-दूसरे को चूमो!" प्योत्र वोद्का से भीगी अपनी मूँछें ऐंठते हुए बोला।

बावर्चीखाने में नशे में चूर दार्या ने गाना शुरू किया, बाकी स्त्रियों ने उसका साथ दिया और गाना बड़े कमरे में भी आ पहुँचा। स्वर एक-दूसरे में मिल गए, किन्तु क्रिस्तोनिया का स्वर इस तरह पंचम में पहुँचा कि खिड़कियों के काँच झनझनाने लगे।

गीत समाप्त हो गया। खाना फिर शुरू हुआ।

"दोस्तो, यह गिलास इस खुशी और मजे की शाम के लिए"

"यह भेड़ का गोश्त चखो जरा।"

"अपना हाथ दूर रखो, मेरा मर्द देख रहा है।"

"कड़वी है! कड़वी है!"

"नहीं, मुझे भेड़ का गोश्त नहीं चाहिए। मैं यह मछली चखूँगी। वाह, इसमें बड़ा रस है।"

"पीओ प्यारे! आओ, दूसरा गिलास हो जाय"

"आह, इससे तुम्हारे दिल को ठंडक पहुँचती है"

बावर्चीखाने में एड़ियाँ जो खटाखट बजीं तो जमीन कराहने और हिलने लगी। एड़ियाँ खटखटा उठीं और एक गिलास नीचे गिरकर चूर

चूर हो गया। टूटने की आवाज़ कोलाहल में विलीन हो गई। ग्रिगोरी ने सिर ऊँचा कर बावर्चीख़ाने पर निगाह डाली। औरतें चीख़ों और सीटियों की धुन पर नाचती मिलीं। भारी से भारी चूल्हे हिलते दीख। साधारण चूल्हा एक नज़र न आया क्योंकि सबने पाँच-पाँच छ छ स्कर्ट पहन रखे थे। औरतों ने रूमाल लहराये कुहनियाँ नचाई।

अकार्डियोन[1] के तेज़ स्वर हवा म गूँजे। बजाने वाले ने कज्ज़ाक-नृत्य की लय निकाली। किसी ने चीख़कर कहा घेरा बनाओ घेरा!

थोड़ा रास्ता दो! पसीने स तर औरतों को एक ओर हटाते हुए प्योत्र बोला।

ग्रिगोरी ने उठकर नताल्या को आँख मारी।

'प्योत्र कज्ज़ाक' नाच नाचेगा। दखना उस।"

किसके साथ?

देखती नही हो? तुम्हारी माँ के साथ।

बाएँ हाथ मे रुमाल लेकर मारया लुकीनीचना ने अपने हाथ कमर पर रखे। प्योत्र ख़ूबसूरती मे क़दम निकालते हुए उसके पास गया और एक चक्कर काटकर अपनी जगह पर वापस आ गया। लुकीनीचना ने अपना स्कर्ट यों उठाया जसे कि पानी से भरा कोई गड्ढा पार करने जा रही हो। उसने पर के अंगूठे से बाजे की धुन का साथ दिया और पजे मर्दों की भाँति पटके। लोग मगन होकर झूमने और वाह-वाह करने लगे।

वादक ने कुछ धीमे स्वर निकाल तो प्योत्र उठ खड़ा हुआ। आरम्भ में वह ज़मीन पर बठा और इसी स्थिति में घूम घूमकर नाचन और बूटा स लैस परों पर हथनियो पर हथेलियाँ मारने लगा। उसकी मूँछ का सिरा उसके मँह मे जाने लगा। उसने बड़ी तज गति स क़दम निकाले तो आगे के बालों की लट माथ पर आ रही पर उसके परो का साथ न दे सकी।

दरवाज़ पर भीड़ जमा हो गई तो ग्रिगोरी को सामने कुछ भी नज़र न आया। उस तो केवल अतिथियों की आँखें और जूतों की एड़ियों की

---

[1] हारमोनियम की क़िस्म का बाजा।

खट-खट जलते हुए चीड़ के तख्तों की कड़कड़ाहट की भाँति सुनाई दी।

फिर मिरोन ग्रीगोरियेविच लुकीनिचना के साथ उसने गम्भीरता से सधे हुए कदम निकाले। पन्तेली उनका नाच देखने के लिए एक स्टूल पर खड़ा हो गया। इस बीच उसकी लँगड़ी टाँग डगमगाती और जीभ चटखारे लेती रही। टाँगों की बजाय नृत्य कर रहे थे उसके होंठ और कानों के बुन्दे।

फिर तो नाच में कुशल नर्तकों ने भी हिस्सा लिया और नाच से पूरी तरह अनजान लोगों ने भी। किन्तु लोग बराबर शोर करते रहे।

चालू रहो"

अरे तुम छोटे-छोटे कदम रखो।

इसके कदम हल्के पड़ते हैं लेकिन सारी चूतड़ मटका गड़बड़ा देते हैं।

अरे नाचे जाओ।

हमारी तरफ की जीत हो रही है।

चालू हो जाओ।

थक गए हो? नाचोगे नहीं तो तुम्हें बोतल खींचकर मारूँगा।

दादी ग्रीश्का पर वोद्का पूरी तरह सवार हो गई। उसने अपनी बगलवाले आदमी की हड्डी पीठ कसी और उसके कान में मच्छर की भाँति भनभनाया।

आपने किस सन् से नौकरी करना शुरू किया?

उसका पड़ोसी वृद्ध था और एक पुराने शाहबलूत के पेड़ की भाँति दोहरा था। बोला, १८३९ में बेटे।

क्या? ग्रीश्का ने अपने कान उस ओर को किये।

कहा न तुमसे १८३९ में।

आपका क्या नाम है और कौनसे रेजीमेंट में रहे आप?

नाम मक्सिम बोगा तिरयाव है और मैं बाक्लानोव के रेजीमेंट में कारपोरल रहा [redacted]।

क्या आप मेलेखोव-परिवार के हैं?

क्या?

मैंने पूछा कि क्या आप मेलेखोव-परिवार से ?

चूर हो गया। टूटने की आवाज कोलाहल म विलीन हो गई। ग्रिगोरी ने सिर ऊँचा कर बावर्चीखाने पर निगाह डाली। औरतें चीखीं और सीटियां की धुन पर नाचती मिली। भारी-म भारी कूल्हे हिलते दीखे। साधारण कूल्हा एक नजर न आया, क्योंकि सबने पाँच-पाँच छ छ स्कट पहन रखे थे। औरतों ने रूमाल लहराये कुहनियाँ नचाईं।

अकारन्डियोन[1] के तेज स्वर हवा म गूँजे। बजाने वाले ने कज्जाक-नृत्य की लय निकाली। किसी ने चीखकर कहा घेरा बनाओ घेरा!

थोडा रास्ता दो! पसीने से तर औरतों को एक ओर हटाते हुए प्योत्र बोला।

ग्रिगोरी ने उठकर नताल्या को आँख मारी।

"प्योत्र कज्जाक' नाच नाचेगा। देखना उस।

'किसके साथ?

देखती नहीं हो? तुम्हारी माँ के साथ।

बाएँ हाथ म रूमाल लेकर भारया लुकीनीचना ने अपने हाथ कमर पर रखे। प्योत्र खूबसूरती से कदम निकालते हुए उसके पास गया और एक चक्कर काटकर अपनी जगह पर वापस आ गया। लुकीनीचना ने अपना स्कट यो उठाया जसे कि पानी से भरा कोई गड्ढा पार करने जा रही हो। उसने पर के अगूठे से बाजे की धुन का साथ दिया और पजे मर्दों की भाँति पटके। लोग मगन होकर झूमने और वाह-वाह करने लगे।

वादक ने कुछ धीमे स्वर निकाले तो प्योत्र उठ खड़ा हुआ। आरम्भ म वह जमीन पर बठा और इसी स्थिति म घम घूमकर नाचने और कूदा ले लस परों पर हथेलिया पर हथेलियाँ मारने लगा। उसकी मूँछ का सिरा उसके मुँह मे जाने लगा। उसने बड़ी तेज गति स कदम निकाल तो माथे के बालों की लट माथे पर आ रही, पर उसके परों का साथ न दे सकी।

दरवाजे पर भीड़ जमा हो गई तो ग्रिगोरी को सामने कुछ भी नजर न आया। उसे तो केवल अतिथियों की चोलें और जूतों की एड़ियों की

---

१ हारमोनियम की किस्म का बाजा।

खट-खट जलते हुए चीड़ के तख्तों की कड़कड़ाहट की भाँति सुनाई दी।

फिर मिरोन नाचा इलीचिना के साथ उसने गम्भीरता से सधे हुए क़दम निकाले। पन्तेली उनका नाच देखने के लिए एक स्टूल पर खड़ा हो गया। इस बीच उसकी लँगड़ी टाँग डगमगाती और जीभ चटखारे लेती रही। टाँगों की बजाय नृत्य कर रहे थे उसके होंठ और कानों के बुन्दे।

फिर तो नाच में बूढ़े नर्तकों ने भी हिस्सा लिया और नाच से पूरी तरह अनजान लोगों ने भी। किन्तु लोग बराबर शोर करते रहे।

चालू रहो

अरे तुम छोटे-छोटे कदम रखो।

इसके कदम हलके पड़ते हैं लेकिन भारीपूतड़ मज़ा गड़बड़ा देते हैं।

अरे नाचे जाओ।

हमारी तरफ की जीत हो रही है।

'चालू हो जाओ।

थक गए हो? नाचोगे नहीं तो तुम्हें बोतल मारकर मारूंगा।

बाबा ग्रीश्का पर वोद्का पूरी तरह सवार हो गई। उसने अपनी बगलवाले आदमी की हड्डी पीठ थमी और उसके कान में मच्छर की भाँति भनभनाया।

आपने किस सन् में नौकरी करना शुरू किया?

उसका पड़ोसी वृद्ध था और एक पुराने शाहबलूत के पेड़ की भाँति दोहरा था। बोला, १८३६ में बेटे!

कब? ग्रीश्का ने अपने कान उस ओर को किये।

कहा न तुमसे १८३६ में।

आपका क्या नाम है और कौनसी रेजीमेंट में रहे आप?

नाम मक्सिम बोगा तिरयोव है और मैं आतमानोव के रेजीमेंट में कारपोरल रहा हूँ।

क्या आप मेलेखोव-परिवार के हैं?

क्या?

'मैंने पूछा कि क्या आप मेलेखोव-परिवार से ?

हाँ मैं ग्रिगोरी का नाना हूँ।

'आपने याकसानोव के रेजीमेंट का नाम लिया न ?

बूढ़े ने धुँधलाई आँखों से ग्रीश्का की ओर देखा और सिर हिला दिया। वह अपने बिना दाँतों के जबड़ों से रोटी का टुकड़ा चबाने की कोशिश करता रहा पर व्यर्थ।

तब तो आप कार्केशिया-युद्ध म अवश्य गये होंगे ?

'मैं याक्सानोव की ही मातहती में था। मैंने उन्हें कार्केशिया की विजय में सहायता दी थी। हमारी रेजीमेंट में कुछ लाजवाब कज़्ज़ाक थे। वे रक्षक-दल के सनिकों की तरह लम्बे थे यद्यपि उनकी तरह तनकर न चलते थे। उनके हाथ लम्बे और कन्धे चौड़े थे। वे आज के कज़्ज़ाकों की तरह न थे। बेटा ! ऐसे लोग थे हमारे पास। हमारे जनरल मर चुके हैं। वह बड़े भले आदमी थे। उन्होंने मुझे एक चिलमी दी थी एक कालीन कुरान पर

और मैं गया था तुर्की की लड़ाई म। जी हाँ म वहाँ गया था। ग्रीश्का ने पदकों से खड़खड़ाते हुए दबे सीने को फुलाकर कहा।

तड़के हमने एक गाँव लिया और दोपहर होते-होते बिगुलवाले ने खतरे की खबर दी। ग्रीश्का की बात पर कान दिए बिना ही बूढ़ा कहता रहा।

हम लोग रोमीरज़ के पास लड़ रहे थे और हमारी बारहवीं दोन कज़्ज़ाक रेजीमेंट उलझी हुई थी जानिसारों से। ग्रीश्का ने बतलाया।

बिगुलवाले ने खतरे की खबर दी तो म

हाँ ! ग्रीश्का गुस्से में हाथ नचाते हुए कहता रहा तुर्की जानिसार अपने ज़ार की खिदमत करते हैं और सिर पर सफ़ेद टोप बाँधते हैं। जी हाँ सिर पर सफ़ेद टोप बाँधते हैं

बिगुलवाले ने खतरे की खबर दी और मैंने अपने साथी से कहा तिमोफ़ेई हमको पीछे हटना पड़ेगा लेकिन इससे पहले हम वह कालीन दीवार से उतार लेंगे।

मुझे दो जाज पदक मिले आग क अन्दर बहादुरी दिखलाने के कारण। मैंने एक तुर्की मेजर को जिन्दा पकड़ लिया। बाबा ग्रीश्का

रोने और मानेरडोगी की रीढ़ पर मुट्ठी जमान गया।

किन्तु बूढ़ने मुर्गी के टुकड़े को वरक मुरब्बे में डुबोया और बजाय नज़र स गन्द मेजपोश को घूरते हुए बुदबुदाया और ज़रा सुनो बेटा उस शैतान ने मुझसे क्या पाप करा लिया! बूढ़े की निगाहें मेजपोश की लाहे की लकीरों पर ऐसे जम गई, जैसे कि उनके प्राग बोद्का और शराब से तर मेजपोश न होकर काकेशियन पहाड़ों की बर्फ़ से चमचमाती परतें हों। मैं कभी दूसरे की चीज़ न लेता लेकिन मुझे जो कालीन दीखा तो मैंने सोचा इसकी ज़ीन अच्छी बनेगी।

मैंने वे हिस्स खुद देखे हैं। मैं समुद्रपार के देशों में भी गया हूँ। ग्रीशका ने अपने पड़ोसी की आँखों में आँखें डालीं, किन्तु आँखें के गहरे गड्ढे भौंहों और दाढ़ी के घने बालों से ढँके हुए थे। इसलिए उसने चालाकी से काम लिया। उसने अपनी कथा के चरमोत्कर्ष पर पड़ोसी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहा। उसने कहानी का बीच का हिस्सा छोड़ दिया—बिना किसी भूमिका के।

और कप्तान ने आज्ञा दी 'दूँ प बनाकर घोड़ों को क़दम चाल से ले चलो आगे बढ़ो।

किन्तु बाक्लानाव रेजीमेंट के बूढ़े बज्जान ने तुरही की आवाज़ पर चौंकनेवाले फ़ौजी घोड़े की तरह अपना सिर पीछे की ओर झटका और हाथ मेज पर रखते हुए धीमी आवाज़ में बोला बाक्लानोव के जवानो भाले तैयार रखो कटारें खींच लो। उसका स्वर एकाएक तेज़ हुआ। उसकी धुँधली आँखें चमकने और आग बरसाने लगीं। बाक्लानाव के फ़ौजियो! वह अपने दन्तविहीन पोले जबड़े खोलकर दहाड़ा हमला बोलो! आगे बढ़ो!'

और उसने ग्रीशका की ओर यौवन-उल्लास से भरी चातुरीपूर्ण दृष्टि से देखा। दाढ़ी पर आँसू बहते रहे।

ग्रीशका भी उत्तेजित हो उठा उसने हुक्म यह आज्ञा दी और अपनी तलवार नचाई। हम घोड़े दौड़ाते आगे बढ़े और कोनिसार इस तरह घुस गए। उसने अपनी काँपती हुई उँगली से मेजपोश पर एक चतुर्भुज बनाया, 'उन्होंने हम पर बन्दूकें चलाई।

हमने तीन बार उन पर हमला बोला और हर बार उन्होंने हमें पीछे हटाया। जब भी हम उनकी तरफ बढ़ते किसी-न किसी जगल से उनकी घुड़सवार टुकड़ी निकल आती। हमारे ट्रूप-कमांडर ने हुकुम दिया और हम लौटकर उन पर जा चढ़े। उनको हमने रौंद डाला। उन्हें भगा दिया हमने। कज़्ज़ाकों के सामने दुनिया की कौन सी घुड़सवार फौज ठहर सकती है! वे जगलों में भाग गये। मैंने ठीक अपने सामने घोड़े पर सवार उनका अफसर जाते देखा। अफसर देखने-सुनने में अच्छा था। उसकी गलमूँछें काली थीं। उसने घूमकर मेरी तरफ देखा और पिस्तौल तानी। उसने गोली दागी लेकिन वार खाली गया मैं बच गया। मैंने अपने घोड़े को एड़ लगाई और जाकर उसे पकड़ लिया। मैं तो उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालता पर मुझे इससे भी अच्छी बात सूझी। आखिर वह भी इन्सान था। मैंने अपना दायाँ हाथ उसकी कमर में डाल जो झटका दिया तो वह नीचे खिंचा चला आया। उसने मेरी बाँह में दाँत लगा दिए फिर भी मैंने उसे खींच ही तो लिया

ग्रीश्का ने विजय भरे ढंग से मुसकराते हुए अपने पड़ोसी की ओर देखा पर इस बीच बूढ़े का बड़ा तिकोना सिर उसके सीने पर ढुलक गया और वह आराम से खर्राटे भरने लगा।

भाग २

१

सेर्गेई प्लातोनोविच मोखोव को अपने खानदान के पुराने इतिहास की खासी जानकारी थी।

पीतर प्रथम के शासनकाल में बिस्कुटों और बारूद से भरा एक शाही बजरा दोन की लहरों पर लहराता आज़ोव जा रहा था कि दोन के ऊपरी किनारे पर बसे चीगोनाकी नाम के एक छोटे-से गाँव के कज्ज़ाक लुटेरे रात में बजरे पर टूट पड़े। उन्होंने सोते हुए पहरेदारों को मार डाला, बिस्कुट और बारूद लूट ली और बजरे को डुबो दिया।

सम्राट ज़ार ने वोरोनेज़ नगर से सैनिक भेजे। सैनिकों ने चीगोनाकी कस्बे में आग लगा दी, अपराधी कज्ज़ाकों को तलवार के घाट उतार दिया और उनमें से चालीस को फाँसी की, पानी पर बहती टिकटी पर लटका दिया। टिकटी बाक़ी गाँवों को चेतावनी देने के लिए दोन के बहाव के सहारे बहा दी गई।

जिन स्थानों पर पहले चीगोनाकी झोंपड़ियों की भट्ठियाँ धुआँ उगलती थीं वहीं कोई दसेक बरस बाद कज्ज़ाक और पिछली बरबादी से बचे लोग फिर आकर आबाद होने लगे। एक बार फिर बस्ती बस गई और उसके चारों ओर सुरक्षा की दीवार खड़ी हो गई। इसी समय ज़ार ने मोखोव नामक एक रूसी किसान को वहाँ अपना जासूस बनाकर भेजा। वह चाकू की मूठों, तम्बाकू, चकमक पत्थरों तथा कज्ज़ाकों के रोज़मर्रा के काम की चीज़ों का व्यापार करता। वह चोरी का माल खरीदता और

बचता । वर्ष में एक या दो बार वह वोरोनेज़ जाता । कहता तो यह कि मैं माल भरने जा रहा हूँ पर जाता वास्तव में वह ज़िले की अवस्था से अधिकारियों को परिचित कराने और यह बताने कि फ़िलहाल तो लोग शान्त हैं और कज़्ज़ाक भाई नया तूफ़ान खड़ा करने की बात नहीं सोच रहे ।

इसी रूसी किसान निकिता मोखोव से मोखोव का व्यापारी वंश चला । होते होते इस परिवार ने कज़्ज़ाक-क्षेत्र में अपनी जड़ें गहरी जमा लीं । समय समय पर वोरोनेज़ के गवर्नरों ने इस परिवार के पूर्वजों को प्रमाण पत्र दिये । प्रमाण पत्रों को परिवार के लोगों ने बड़े आदर से सम्हालकर सुरक्षित रखा । वे तो आज तक सुरक्षित मिलते पर हुआ यह कि सर्गेई मोखोव के बाबा के जीवनकाल में एक बार भयानक आग लगी और उसमें वे प्रमाण पत्र भी जलकर राख हो गए । मोखोव ने ताशबाज़ी में पड़कर अपना भविष्य पहले तो बिगाड़ लिया था पर वह कुछ सम्हल रहा था कि आग ने सभी कुछ चौपट कर दिया । उसका पिता लकवे से पीड़ित था । एक दिन वह भी मृत्यु की गोद में जा पड़ा । उसके बाद मोखोव ने नये सिरे से अपना भविष्य सँवारा । प्रारम्भ उसने सूअर के बालों और चिड़ियों के परों की ख़रीद से किया । पहले पाँच वर्ष उसने इस ज़िले के कज़्ज़ाकों को ठगते और एक एक कोपेक के लिए उनकी ख़ुशामद करते हुए बड़े दुख से काटे । फिर एक दिन एकाएक वह बिसाती सर्गेई से सेर्गेई प्लातोनोविच बन गया । उसने कपड़े की एक छोटी-सी दुकान खोल ली और एक अद्ध विक्षिप्त पादरी की लड़की से विवाह कर लिया । विवाह में उसे ढेर सारा दहेज मिला और उसने बजाज का काम कर लिया । सर्गेई प्लातोनोविच की दुकान बड़े अच्छे समय पर खुली । इन दिनों अधिकारियों के आदेश पर दोन के ऊपर और रेतीले बाए किनारों से कज़्ज़ाक आ आकर दाएँ किनारे के गाँवों में बस रहे थे । और इधर तीस मील के दायरे में मोखोव की दुकान के अलावा कोई ऐसी दूसरी दुकान न थी । लोग भी आख़िर दूर क्यों जाते जबकि पास ही आवश्यक वस्तुओं से भरी सेर्गेई मोखोव की दुकान मिल जाती । सेर्गेई ने अपने व्यापार को पूरे आकार के प्रकारदिखोन बाज़ की भाँति

खूब कमाया और सीधे-सादे ग्राम्य जीवन की जरूरत की हर चीज रखी। वह खेतीबाड़ी के यंत्र भी बेचने लगा। चतुर और बुद्धिमान सर्गेई ने व्यापार से खूब पैसा कमाया और तीन साल के अन्दर ही अन्दर उसने अनाज को ऊपर उठाने का यंत्र भी लगा लिया। फिर अपनी पहली पत्नी की मृत्यु के दो वर्ष बाद उसने भाप से चलनेवाली आटे की चक्की भी बनवानी शुरू कर दी।

उसने तातारस्की और आस-पास के सारे गाँवों को अपनी काली मुट्ठी में जकड़ लिया। कोई ऐसा घर न बचा जो सर्गेई मोखोव का कर्जदार न हो। नारंगी पट्टी की एक हरी पर्ची पर लिखा होता—बोआई का यह मशीन अमुक को कर्ज पर दी गई। दूसरी पर्ची पर लिखा मिलता—शादी का यह जोड़ा अमुक की बेटी की शादी के समय उधार दिया गया। बस तो इसी तरह मोखोव बढ़ा। नौ आदमी मिल में सात दुकान में और चार घर में नौकर थे। सब मिलाकर बीस व्यक्तियों की रोटियाँ मोखोव की मर्जी पर निर्भर थीं। पहली पत्नी से उसके दो बच्चे थे बेटी लीज़ा और बेटा व्लादीमीर। बेटा बेटी से दो साल छोटा था पालसा और कंठमाला का रोगी। उसकी दूसरी पत्नी अन्ना अभी निस्सन्तान थी। उसने चौंतीस वर्ष की उम्र तक शादी न की थी। फल यह हुआ कि उसके मातृ-स्नेह का रुका हुआ समस्त प्रवाह तथा चिड़चिड़ापन बच्चों पर बरस उठा। उसके अधीर स्वभाव का बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ा। पिता ने उनकी ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। वह उनकी इतनी ही खोज खबर रखता जितनी कि अपने कोचवान या बावर्ची की। उसका सारा समय कार-व्यापार में ही जाता। नतीजा यह हुआ कि बच्चे अनुशासनहीन हो गए। उसकी बुद्धिहीन पत्नी ने बालकों के मस्तिष्क में पनपनेवाले रहस्यों में झाँकने का यत्न भी नहीं किया। उस घर के काम-काज से ही फुरसत न मिलती। भाई-बहन बिलकुल भिन्न स्वभाव के निकले। चरित्र भी दोनों का इतना अलग जैसे कि एक का दूसरे से कोई सम्बन्ध ही न हो। व्लादीमीर चिड़चिड़ा आलसी निगाहों में चालाक और बड़ों की तरह गम्भीर। लीज़ा नौकरानी और बावर्चिन के साथ रहती। बावर्चिन बदचलन थी और हजारों घाट का पानी पी चुकी

थी। सो लीज़ा ने ज़िन्दगी का यह घिनौना पहलू ज़रा जल्दी ही देख लिया। इन औरतों ने उसमें अवांछित कौतूहल जगा दिया। वह अपने मन की हो रही और साज के सहारे पनपती किशोरावस्था में ही ऐसी शोख और मनचली हो गई जैसे कि सच्चे प्यार का जंगली फूल हो।

साल-पर-साल धीरे-धीरे गुजरते गए। सयाने बूढ़े हुए। बच्चे बड़े हुए।

एक दिन शाम को सेर्गेई प्लातोनोविच ने अपनी बेटी पर नज़र डाली तो चौंक उठा। बेटी लीज़ा ने अभी अभी हाईस्कूल छोड़ा था। देखने में दुबली पतली और सुन्दर थी। पिता के हाथ का चाय का प्याला काँप गया। मन-ही मन बोला लड़की अपनी माँ का अवतार है बिलकुल। बिलकुल उसी की तरह! ज़ोर से कह उठा लीज़ा ज़रा अपना सिर एक तरफ को तो मोड़! इसके पहले उसकी दृष्टि इस सत्य की ओर कभी न गई थी।

दुबला बीमार सा पीला व्लादीमीर मोखोव इस समय पाँचवीं कक्षा में था। वह अहाते से गुज़र रहा था। गर्मी की छुट्टियों में उसकी बहन भी घर आई थी और वह भी। सो सदा की भाँति ही मिल को देखने और गर्द-धूल से नहाये लोगों से हँसी-मज़ाक करने वह मिल में जा पहुँचा था। बरदाक़ ग्राहकों की फुसफुसाहट कानों में पड़ रही थी—

आगे मालिक यही लड़का बनेगा" वह गर्व से फूल रहा था। गाड़ियों और गोबर के ढेरों के बीच से होकर सावधानी से अपना मार्ग बनाता व्लादीमीर फाटक पर पहुँचा। उसे ध्यान आया कि मैंने अभी बिजली का प्लांट नहीं देखा। वह वापस हो लिया।

तेल के लाल टंक के पास मशीन के कमरे के द्वार पर तौल करने वाला मज़दूर तिमोफ़ोई तथा उसका सहायक दाविद नंगे पाँवों से गीली मिट्टी गूँथ रहे थे। उन्होंने अपने अपने पाजामे उलटकर घुटनों तक चढ़ा रखे थे।

अहा! मालिक! तिमोफ़ोई ने हँसते हुए उसका अभिवादन किया। ज़्द्रास्तविचे[1]! क्या हो रहा है?

---

१ नमस्ते

'गारा तयार कर रहे हैं। ' दाविद ने बड़ी मुश्किल से पाँवों को सनी गोबर की तरह बू करती मिट्टी से खींचते हुए मुसकराकर कहा 'आपके पिताजी रूबल बहुत गिनते हैं। इस काम के लिए औरतें नहीं रख सकते। मक्खीचूस हैं।'

ब्लादीमीर का चेहरा तमतमा उठा। सदा मुसकराने वाले दाविद उसके नफरत से भरे स्वर और उसके घिनौने दाँतों के प्रति वह मन ही-मन असन्तोष से भर उठा—'मक्खीचूस से क्या मतलब तुम्हारा ?'

'वह बहुत नीच हैं।' दाविद ने मुसकराते हुए कहा 'अगर रूबल मिलें तो वह अपना खाना तक छोड़ दें।'

अनुमोदन में सभी लोग हँस दिए। ब्लादीमीर को अपमान और भी तीखा लगा। उसने दाविद की ओर क्रोध से देखा।

'तो तुम अपने काम से खुश नहीं हो ?'

'इस दलदल में आइए और आप भी गारा तयार कीजिये तब आपको खुद मालूम हो जाएगा। कौन ऐसा बेवकूफ होगा जो खुश होगा ? आपके पिता अगर यह काम करें तो उनका कुछ भला ही हो। थोड़ी-सी चर्बी शायद घट जाए।' दाविद ने उत्तर दिया। उसने गारे के घेरे में जोर-जोर से पैर पटके और मुसकरा दिया।

ब्लादीमीर ने मन-ही-मन मुहतोड़ जवाब देने की सोची। 'ठीक है।' वह धीमे स्वर में बोला 'पापा से कह दूँगा कि तुम अपने काम से खुश नहीं हो।'

कनखियों से उसने उसकी ओर देखा और अपने वाक्य से उसके मुख पर आए भाव को देखकर चौंक उठा। दाविद की मुसकान में दुःख था। वह मुसकराते रहने का प्रयत्न कर रहा था। दूसरों के भी मुख मलिन हो उठे। क्षणभर वे तीनों चुपचाप मिट्टी रौंदते रहे। कीचड़ से सने पाँवों से दृष्टि हटाकर दाविद ने मनौती भरे स्वर में कहा 'मैं तो हँसी कर रहा था, वोलोद्या !'

'तुम्हारी बात मैं पापा से कह दूँगा।' अपने पिता और अपने अपमान के कारण उमड़े हुए अश्रुओं को सहेज ब्लादीमीर वहाँ से चल दिया।

वालोदया! व्लादीमीर सर्गेयविच! उसमें जाते ही कातर हो दाविद ने उसे पुकारा और अपने मिट्टी के छोटा से सने पाँवों के ऊपर पाजामा उलटते हुए घेरे से बाहर निकला।

व्लादीमीर ठिठका। दाविद हाँफते हुए दौड़कर उसके पास आया।

अपने पिताजी से न कहना। मैं बेवकूफ हूँ। मुझे माफ कर देना। कसम भगवान् की मैंने बिना सोचे विचारे यों ही कह दिया था—तुम्हें चिढ़ाने के लिए।

अच्छा मैं नहीं कहूँगा। माथे पर बल डालकर व्लादीमीर बोला और फाटक की तरफ़ चल दिया।

पर यह सब कहने का तुम्हारा मतलब क्या था? न कीचड़ में इंट फेंको न छींटा पड़े।

सूअर कहीं का! व्लादीमीर ने क्रोधित हो सोचा 'उलटकर जवाब देता है! पापा से कहूँ या नहीं? उसने मुड़कर पीछे जो देखा तो दाविद के चहरे पर फिर वही मुसकान पाई। उसने निश्चय कर लिया कि मैं कहूँगा।

व्लादीमीर मकान की सीढ़ियों पर चढ़ा। बरसाती और बरामदे में जंगली अंगूर की लता की घनी पत्तियाँ सरसराती रहीं और रंग हुए नीले बारजों से झूलती रहीं। उसने पिता के निजी कमरे का दरवाज़ा जा खटखटाया। सेर्गेइ प्लातोनोविच कमरे की ठंडी कोच पर बैठा 'रूस्स्कोये बगात्स्त्वो यानी 'रूसी वैभव' पत्रिका के पूरे अंक के पन्ने पलट रहा था। उसके पाँवों के पास कागज़ फाड़ने का हड्डी का एक पीला चाकू पड़ा हुआ था।

पिता बोला 'कहो क्या बात है?

व्लादीमीर ने अपने कंधे ज़रा झुकाये और कमीज़ की क्रीज़ ठीक की।

मिल से जब मैं लौट रहा था व्लादीमीर ने वैसे ही कहना प्रारम्भ किया किन्तु तभी उसे दाविद की मुसकान याद हो आई। टसर की वास्कट में लिपटे अपने पिता के स्थूलकाय पेट की ओर देखते हुए दृढ़ता से उसने कहा

मज़दूर दावित कह रहा था
सेर्गेइ प्लातोनोविच ने अपने बेटे की पूरी कहानी ध्यान से सुनी और बोला, 'मैं उसे निकाल दूंगा। तुम जाओ।' फिर कराहते हुए कागज़ काटने का चाकू उठाने को झुका।

शाम को बुद्धिवादी वर्ग के लोग सेर्गेइ मोखोव के घर जमा होते। इनमें एक होता मास्को तकनीकी स्कूल का विद्यार्थी बोयारिस्किन, एक अहंकार और तपेदिक का शिकार अध्यापक बालान्दा और एक उसी के मकान में रहनेवाली अध्यापिका मार्फा। मार्फा का पेटीकोट हमेशा नज़र आता रहता और उम्र का उस पर कोई असर नज़र न आता। इनके अलावा होता मनको अविवाहित पोस्टमास्टर। उसके बदन से मुहर के चपड़े और सस्ते इत्रों की महक हमेशा आती रहती। कभी कभी घोड़े पर सवार हो लेफ्टिनेंट नवयुवक येव्गेनी लिस्तनित्स्की अपने पिता की जमींदारी से वहाँ आ जाता। ये लोग बरामदे में बैठकर चाय पीते, ध्येय का वादविवाद करते और जब बातचीतों में कुछ दम न रहता तब कोई-न-कोई उठकर मेज़बान के बेशक़ीमती जड़ाऊ ग्रामोफोन पर रेकार्ड रख देता।

बड़े पर्व-समारोहों के अवसर पर कभी-कभी सेर्गेइ प्लातोनोविच ढेंस जग जीत लेता। वह अतिथियों को आमंत्रित करता और कीमती शराबों, मछली के काले अंडों तथा भाड़े के मांस के कबाबों से उन्हें छका देता। यों वह कंजूसी से रहता। बस एक ही चीज़ ऐसी थी जिसमें वह अपने ऊपर काबू नहीं रख पाता था और वह थी पुस्तकों की खरीद। उसे अध्ययन का चाव था और उसका मस्तिष्क ऐसा था जिसमें सब पढ़ा लिखा पहुँचकर बराबर हो जाता था।

उसका साझीदार भूरे बालों और नुकीली दाढ़ीवाला येमेल्यान कॉन्स्तैंतिनोविच भूल से ही मोखोव के यहाँ आता। उसने कभी एक मन्यासिनी से शादी की थी। पंद्रह वर्ष के विवाहित जीवनकाल में उसके आठ बच्चे हुए थे और वह प्राय घर पर ही रहता था। उसने फ़ौजी रेजीमेंट के क्लर्क की हैसियत से अपनी ज़िन्दगी शुरू की थी और दफ्तर की चापलूसी और खुशामद से भरी बूबूदार ज़िन्दगी पर तब चली गई थी। यह घर के अन्दर रहता तो बच्चे परों व पंखों से बल पलते

और आपस में फुसफुसाकर बातें करते। हर दिन सुबह हाथ-मुँह धोकर वे ताबूत-जसी लम्बी चौडी दीवार घडी के नीचे लाइन बनाकर खडे हो जाते और माँ उनके पीछे खडी होती। ज्यों ही सोने के कमरे स खाँसी की आवाज आती व हमारे पिता' और ऐसी ही दूसरी प्राथनाएँ करने लगत।

इन प्रार्थनाओं क खत्म होते होते यमेल्यान अपने पहनकर बाहर आता और अपनी छोटी छोटी आँखें सिकोडते हुए माँसल हाथ या आग करता जसे कि खुद किसी गिरजे का पादरी हो। इस पर एक-एक कर बच्चे आग बढते और हाथ चूमते। फिर वह अपनी पत्नी का गाल चूमता और तुतलाते हुए पूछता पोल्या चाय तैयार है ?

हाँ तैयार है येमेल्यान कोन्स्तंतिनोविच !

तो एकाध प्याला तेज चाय पिलाओ जरा !

वह दूकान का हिसाब किताब लिखता और अपने क्लर्कों वाले खूब सूरत अक्षरों म लिखे नाम जमा से पन्ने क-पन्ने भर देता।

बिना जरूरत क कमानी वाला चश्मा नाक पर चढाता और स्टाक एक्सचेंज समाचार पढता। अपने मातहतों के साथ मीठा व्यवहार करता।

ईवान पेत्रोविच जरा आपको तोरीदा की छींट तो दिखला दीजिये कष्ट कीजिये

उसकी पत्नी उसे यमेल्यान कोन्स्तंतिनोविच कहती बच्चे उसे पापा कहते और दूकान पर काम करने वाले सरकार'

खर सा गाँव क दो पादरियो की सगेई प्लातोनोविच स बिलकुल नही पटती। उनके नाम थ फादर बिसारियन और फ़ादर पानक्राती। उनका उमसे बहुत दिनों का झगडा चला आ रहा था। बस उन दोनों की आपस में भी कोई खास नही पटती थी। फादर पानक्राती लडाका तथा षडयन्त्रकारी था। वह अपने पडोसियों के लिए मुसीबतें पदा करने म बडा चतुर था। फादर बिसारियन स्वभाव से मिलनसार था। वह अपने घर की मालकिन उकइनो महिला के साथ रहता और एकान्त पसन्द करता था। फादर पानक्राती के लिए उसके हृदय में रत्ती भर भी

स्थान नहीं था क्योंकि पानकातो म बड़ा अहकार था। उसकी बातों में फरेब होता था।

अध्यापक वालान्दा के अतिरिक्त सबके ही घर के मकान थे। मोखोव का नीला पुता हुआ मकान चौक में था। सामने चौक के बीचो-बीच उसकी दूकान थी। दरवाजों म शीशे जड थे और साइनबोर्डों के रग उड चुके थे। दूकान से लग लम्बे पेड के नीचे तहखाना था। इससे सी गज आगे थी गिरजे के हाते की इंट की चहारदीवारी। गिरजा खुद अपनी मेह रावदार छत के कारण पके हरे प्याज-सा लगता था। गिरजे के पीछे थी स्कूल की सफेदी से पुती दीवारें और दो सुन्दर मकान। एक था नीले पेंट से रगी बाड़ीवाला फादर पानकातो का घर दूसरा था फादर विसा रियन का भूरा-सा मकान। इसका बाग्जा चौड़ा था। भूरा रग इसलिए कराया गया था कि मकान सबसे अलग चमके। उसके बाद था एक दो मजिला मकान फिर डाकखाना फिर खपरैलों की छानियों और लोहे की छतोंवाले कज्जाकों के मकान और सबसे अन्त में मिल का इलवाँ हिस्सा। मिल की छत व जग-लग टीन के पुर्जे दूर से ही नज़र आते।

गाँव में रहनेवाले अपनी खिड़कियों की दोहरी चटखनियाँ अन्दर से चढ़ाए सारी दुनिया से कटे रहते। कहीं आने-जाने की बात अलग है नहीं तो शाम होते ही लोग दरवाजे अन्दर से बन्द कर लेते और जजीरें खोलकर कुत्तों को हातों में छोड़ देते। फिर शान्ति भग करती सिर्फ चौकीदार की भारी आवाज।

२

एक दिन अगस्त के अन्तिम सप्ताह में मीत्का कोर्शूनोव की लीजा मास्सोवा नदी के किनारे अकस्मात ही मिल गई। वह पार से नाव खेकर इधर आया था और अपनी नाव को बाँध ही रहा था कि एक रगी-च्गी नाव उस पार को चीरकर आती दिखाई दी। इस हल्की नाव को विद्यार्थी बोयारिस्किन खे रहा था। उसके सफाचट सिर पर पसीना चमक रहा था और उसके माथे की नसें तनी हुई थीं।

पहले तो नाव में बैठी लीजा को मीत्का पहचान नहीं सका क्योंकि

से चलो मीश्का अकेले तुम कुछ न कर पाओगे

'नहीं तुम्हारी कोई ज़रूरत नहीं।' मिखई ने लम्बी साँस भरी।

सारी तैयारी पूरी करने के बाद वह पिछवाड़े के कमरे में गया। वहाँ बाबा ग्रीश्का नाक पर ताँबे की कमानियों का चश्मा चढ़ाए खिड़की के पास बैठा 'बाइबिल' पढ़ता मिला।

चौखट पर झुककर मीश्का बोला बाबा!

बूढ़े ने आँखें ऊपर कीं क्यों?

'पहला मुर्गा बाँग दे कि तुम मुझे जगा देना।

'इतने तड़के कहाँ जाओगे?

मछली पकड़ने।

मछलियों का शिकार बाबा की कमज़ोरी थी किन्तु उसने मीश्का का और ढंग से विरोध करने का निश्चय किया।

'तुम्हारे पापा कह रहे थे कि पटसन की कुटाई कल होनी है। ख़राब करने को समय नहीं है।

मीश्का दरवाज़े से हटा और उसने पैंतरा बदला ठीक कोई बात नहीं। मैं तो तुम्हारे लिए मछलियाँ लाने की सोच रहा था पर जब पटसन कुटनी है तो मैं नहीं जाऊँगा।

सुन तो जाता कहाँ है? बूढ़ा चौंका और उसने अपना चश्मा उतारा। मैं तुम्हारे पापा से कह दूँगा। तुम चले जाना। बस बुध है। मेरा एक टुकड़ा मछली से काम चल जाएगा। तो मैं तुम्हें जगा दूँगा जाओ न अब दाँत क्या निकाल रहे हो?

आधी रात होने पर एक हाथ से अपने धारीदार पाजामे को ऊपर उठाए और दूसरे से छड़ी पकड़े बूढ़ा काँपती हुई उजली परछाईं की भाँति सीढ़ियों से नीचे उतरा हाता पारकर खलिहान में जा पहुँचा और मीश्का को जगाने लगा। मीश्का कम्बल पर सो रहा था। ग्रीश्का ने उसको छड़ी चुभोयी किन्तु मीश्का नहीं जगा। उसने फिर छड़ी चुभोई और धीरे से बोला मीश्का मीश्का ओ मीश्का!

किन्तु मीश्का जगा नहीं। उसने केवल लम्बी साँस ली और अपनी टाँगें सिकोड़ लीं। ग्रीश्का अधीर हो उठा और छड़ी को उसने पेट में

चुभोने लगा। मीत्का ने जागकर अकस्मात ही छड़ी का सिरा पकड़ लिया।

बिलकुल पाले दबकर सोता है ! बुड़ा भुनभुनाया।

चुप भी रहो बाबा बेकार बड़बड़ाओ नहीं। निंदासे स्वर में अपने जूते टटोलते हुए मीत्का बोला। वह हाते से चुपचाप निकलकर चौक की ओर बढ़ा। चौकीदार दूकान की सीढ़ियों पर सोता मिला। उसने अपने कॉलर की भेड़ की खाल नाक तक खींच रखी थी। मीत्का मोखाव के मकान पर पहुँचा मछली पकड़न की बंसी एक जगह रखी और कुत्तों के डर से बरसाती में गया। यहाँ उसने लोहे की ठंडी कुंडी बजाई। दरवाजा बिलकुल लगा था। उसने बरामदे के जंगले को उछलकर पार किया और वह खिड़की के बाहरी पल्ले के पास जा पहुँचा। खिड़की आधी बन्द थी। अंधेरे से भरी दरार से लीज़ा के नींद में डूबे बदन की गरमाहट की गमक आई और साथ ही अजीब ढंग की भीनी भीनी इत्र की सुगंध।

एलिजावेता सर्गेयेवना !

मीत्का को लगा कि मैंने बहुत जोर से आवाज दी है। वह प्रतीक्षा करने लगा पर कोई आहट न हुई। उसने सोचा—यह कोई दूसरी खिड़की तो नहीं है ! कहीं मोखाव यहाँ सो रहा हो तो वह गोली से उड़ा देगा।

एलिजावेता सर्गेयेवना मछली पकड़ने चल रही हो ?

यदि वह गलत खिड़की पर होता तो इसमें शक नहीं कि इस समय कोई दूसरी ही मछली पकड़ी जाती।

उठ रही हो कि नहीं ? उसने क्रोध में कहा और दरार में से अन्दर झाँका।

कौन है ? हल्के धीमे स्वर ने अंधकार भेदा।

मैं हूँ कोर्शुनोव। मछली पकड़ने चल रही हो ?

ओह ! बस अभी आई।

अन्दर से हिलने-डुलने की आवाज आई। उसको निंदासी बातों में पुरौना महकता लगा। मीत्का ने देखा कोई सफेद चीज कमरे में इधर उधर सरसरा रही है। खाने के कमरे की गंध उसके नथुनों में भरी।

ल चलो मीत्का' अकेले तुम कुछ न कर पाओगे

'नहीं तुम्हारी कोई जरूरत नहीं। मिखई ने लम्बी साँस भरी।

सारी तयारी पूरी करने के बाद वह पिछवाड़े के कमरे म गया। वहाँ बाबा ग्रीश्का नाक पर ताँबे की कमानियों का चश्मा चढाए खिड़की के पास बैठा 'बाइबिल' पढ़ता मिला।

चौखट पर झुककर मीत्का बोला बाबा !

बूढे ने आँखें ऊपर की क्यो ?

'पहला मुर्गा बाँग दे कि तुम मुझे जगा देना।

'इतने तड़के कहाँ जाओगे ?

मछली पकड़ने।

मछलियों का शिकार बाबा की कमजोरी थी किन्तु उसने मीत्का का और ढग से विरोध करने का निश्चय किया।

'तुम्हारे पापा कह रहे थे कि पटसन की कुटाई कल होनी है। खराब करने को समय नहीं है।

मीत्का दरवाज स हटा और उसने पतरा बदला ठीक कोई बात नहीं। मैं तो तुम्हारे लिए मछलियाँ लाने की सोच रहा था पर जब पटसन कुटनी है तो मैं नहीं जाऊँगा।

सुन तो जाता कहाँ है ? बूढा चौंका और उसने अपना चश्मा उतारा। मैं तुम्हारे पापा से कह दूगा। तुम चले जाना। बस बुध है। मरा एक टुकड़ा मछली से काम चल जाएगा। तो मैं तुम्ह जगा दूँगा जाओ न अब दाँत क्या निकाल रहे हो ?

आधी रात होने पर एक हाथ से अपन धारीदार पाजामे का ऊपर उठाए और दूसरे से छड़ी पकड़े बूढा काँपती हुई उजली परछाइ की भाँति सीढ़ियों से नीचे उतरा हाता पारकर खलिहान में जा पहुँचा और मीत्का को जगाने लगा। मीत्का कम्बल पर सो रहा था। ग्रीश्का ने उसको छड़ी छुआयी किन्तु मीत्का नहीं जगा। उसन फिर छड़ी छुआई और धीरे से बोला मीत्का मीत्का ओ मीत्का !

किन्तु मीत्का जगा नहीं। उसने केवल लम्बी साँस ली और अपनी टाँगें सिकोड़ ली। ग्रीश्का अधीर हो उठा और छड़ी को उसके पेट म

चुभोने लगा। मीत्का ने जागकर अकस्मात ही खर्रों का सिरा पकड़ लिया।

बिलकुल घोड़े बेचकर सोता है! बूढ़ा भुनभुनाया।

चुप भी रहो बाबा बेकार बड़बड़ाओ नहीं। निद्रालु स्वर में अपने जूते टटोलते हुए मीत्का बोला। वह हाते से चुपचाप निकलकर चौक की ओर बढ़ा। चौकीदार दूकान की सीढ़ियों पर सोता मिला। उसने अपने कालर की मेड़ को खाल नाक तक खींच रखी थी। मीत्का मोखोव के मकान पर पहुँचा मछली पकड़ने की बंसी एक जगह रखी और कुत्तों के डर से बरसाती में गया। वहाँ उसने लोहे की ठंडी कुंडी बजाई। दरवाजा बिलकुल लगा था। उसने बरामदे के जंगले को उछलकर पार किया और वह खिड़की के बाहरी पल्ले के पास जा पहुँचा। खिड़की आधी बन्द थी। अँधेरे से भरी दरार से लीजा के नींद में डूबे बदन की गरमाहट की गमक आई और साथ ही अजीब ढंग की भीनी भीनी इत्र की सुगन्ध।

एलिजावेता सर्गेयेवना!

मीत्का को लगा कि मैंने बहुत जोर से आवाज दी है। वह प्रतीक्षा करने लगा पर कोई आहट न हुई। उसने सोचा—यह कोई दूसरी खिड़की तो नहीं है! कहीं मोखोव यहाँ सो रहा हो तो वह गोली से उड़ा देगा।

'एलिजावेता सर्गेयेवना मछली पकड़ने चल रही हो?

यदि वह गलत खिड़की पर होता तो इसमें शक नहीं कि इस समय कोई दूसरी ही मछली पकड़ी जाती।

उठ रही हो कि नहीं? उसने क्रोध में कहा और दरार में से अन्दर झाँका।

कौन है? हल्के धीमे स्वर ने अन्धकार भेदा।

मैं हूँ कोर्शुनोव। मछली पकड़ने चल रही हो?

ओह! बस अभी आई।

अन्दर से हिलने-डुलने की आवाज आई। उसकी निद्रालु वाणी में पुनीता महकता लगा। मीत्का ने देखा कोई सफ़ेद चीज कमरे में इधर उधर सरसरा रही है। सोने के कमरे की गन्ध उसके नथुनों में भरी।

उसने मन ही मन सोचा— इस ठंड में मछली मारने से तो कहीं अच्छा होता कि इसके साथ आराम से सो जाता। थोड़ी ही देर में चेहरे पर सफेद रूमाल बाँधे लीज़ा मुसकराती हुई खिड़की पर आई।

'इधर ही से आ रही हूं। अपना हाथ दो।' उसका हाथ पकड़ कर एलिज़ावेता ने उसकी आँखों में आँखें डालीं।

'मुझे बहुत देर तो नहीं लगी न?'

'कोई बात नहीं, हम लोग वक्त से पहुँच जाएँगे।'

वे दोनों दोन के किनारे की ओर बढ़े। लीज़ा ने नींद से सूजी अपनी आँखें गुलाबी हथेली से मलीं। रात में नदी में पानी बढ़ आया था और शाम को जो नाव किनारे के पास बँधी छोड़ दी गई थी वह कुछ दूर पर लहरों के ऊपर लहरा रही थी।

लीज़ा ने दूरी का अन्दाज़ा लगाया, आह भरी और बोली, 'मुझे जूते उतारने पड़ेंगे।'

'मैं गोद में उठा लूंगा तुम्हें।' मीश्का ने सुझाव दिया।

'नहीं, मैं जूते उतारे लेती हूं।'

'तुम्हें गोद में ले लेना ज़्यादा आसान होगा।'

'नहीं, नहीं, इसकी ज़रूरत नहीं।' लीज़ा ने परेशानी से कहा।

आगे तक किये बिना मीश्का ने उसकी टाँगों को अपने बाएँ हाथ से आसानी से साध लिया और पानी में घुस गया। लीज़ा ने अनिच्छा से उसकी मज़बूत गर्दन कसकर पकड़ ली और चुपचाप मुसकराती रही। आगे मीश्का गाँव की औरतों के कपड़े धोने के पाट से ठोकर खाकर लड़खड़ा गया और इस तरह एक चुम्बन बन उठा। लीज़ा ने गहरी साँस ली और अपने होंठ उसके सख्त होंठों पर जमा दिए। इस तरह वह नाव से दो कदम दूर ठिठक रहा। ठंडा पानी उसके जूतों के पास चक्कर लगाने लगा तो उसके पाँव ठंडक अनुभव करने लगे।

उसने नाव खोलकर ढकेली, कूदकर उसमें जा चढ़ा और खड़े खड़े नाव चलाने लगा। पानी पिछले हिस्से के नीचे कलकल करने और आँसू बहाने लगा। नौका धीमे धीमे नदी पार करने लगी। पेंदे में पड़ी बंसियाँ रह रहकर उछलने और आवाज़ करने लगीं। 'तुम मुझे ले कहाँ जा रहे

हो ?' सीजा ने पीछे की ओर एक निगाह डालते हुए पूछा ।

'उस पार।'

ज़रा देर बाद नाव का नीचे का हिस्सा कगार से टकराया । बिना पूछे ही उसने लड़की को गोद में उठाया और हाथ से झाड़ियाँ भी मार बढ़ा । एलिजावेता ने मीश्का का दाँत से काटा उसका चेहरा नोचा एकाध बार हल्की चीखें मारीं और फिर जब उसकी अपनी सारी ताक़त खत्म हो गयी तब वह रो पड़ी पर आँखों में आँसू नहीं आये ।

जब वे लौटे तब लगभग नौ का समय था । आसमान में गुलाबी पीली धूप छा रही थी । लहरों का झकझोरती हवा के झकोरे नदी पर नाच रहे थे । नाव लहरों पर लहराई तो ठंडा फेन लीजा के चेहरे भौंहों और बालों पर आ उछला । उसने अपने भयभीत नेत्र बन्द कर लिये और नदी में आ गिरे फूल की बेचैनी से ऐंठने लगी । मीश्का नाव खेता रहा पर उसने उससे आँखें नहीं मिलाई । एक टोप और एक ओवरकोट अधनी उसके पाँवों के पास पड़ी रही । उनके मुँह मौन से खुले रहे ।

मीश्का के चेहरे पर जितनी अपराध की-सी भावना की छाप रही, उतनी ही सन्ताप की और उतनी ही चिन्ता की ।

'मैं तुम्हें रुमिनोव के घाट पर ले चलूँगा । वहाँ से तुम्हारा घर पास पड़ेगा ।' नाव को मोड़ते हुए मीश्का ने कहा ।

'ठीक है ।' लीजा ने धीरे से जवाब दिया ।

किनारे के धूल से नहाए सरपत के झाड़ हवा की गर्मी से हाँफ रहे थे और हवा को बसते हुए चिरायते की बू में भर रहे थे । सूरजमुखी के फूलों की भारी गहर टोपियों पर गौरय्यों ने कहीं-कहीं चोंचें मार दी थीं । वे झुक गए थे और उनके बीज जहाँ-तहाँ बिखरे पड़े थे । नई उगी हरी घास से भरे चरागाह मरकती हो रहे थे । घोड़ों के बछेड़े दुलत्ती झाड़ रहे थे । गर्म दक्खिनी हवा उनके गले में बंधी घंटियों की गूँज से भरी हँसी अपने साथ उड़ाए फिर रही थी।

ऐसे में लीजा नाव से उतरने लगी तो मीश्का ने एक मछली उसकी ओर बढ़ाई और बोला 'यह रहा तुम्हारे हिस्से का शिकार ।'

उसने आश्चर्य में अपनी भौंहें उठाई किन्तु मछली ले ली— 'अच्छा,

तो मैं चली।

नथुनों में फँसी एक पतली टहनी में झूलती हुई मछली को साधे वह उदास मन से मुड़ी। उसकी सारी हँसी-खुशी हवा हो गई थी हाथन की झाड़ियों में घुट गई थी।

लीज़ा !

अपने माथे पर गुस्सा और ताज्जुब के पड़े बल साधे वह मुड़ी। पास आई तो मीत्का अपनी परेशानी पर आप खीझ उठा।

हमसे लापरवाही हो गई तुम्हारे स्कर्ट में पीछे एक दाग पड़ गया है दाग़ है छोटा-सा

लीज़ा के तन-बदन में आग लग गयी। क्षणभर चुप रहने के बाद मीत्का फिर बोला पीछे के रास्ते से जाओ।

चाहे जिधर से होकर जाऊँ चौक के बीच से तो गुज़रना ही पड़ेगा मैं तो अपना काला स्कर्ट पहनकर आना चाहती थी। उसने दुखभरे स्वर में कहा और दर्द और नफ़रत से भरी निगाहों से मीत्का की ओर देखा।

तो ठहरो मैं इस पत्ती से थोड़ा हरा कर दूँ। मीत्का ने सहज भाव से कहा था किन्तु उसे आश्चर्य हुआ इस बीच लीज़ा की आँखें छलछला आई थीं।

५

गर्मी के मन्द पवन की सरसराहट की तरह सारे गाँव में खबर फैल गई सेर्गेई प्लातोनोविच की बेटी के साथ मीत्का कोरशूनोव सारी रात ग़ायब रहा है। औरतें सुबह अपने ढोर पहुँचाने जातीं तो कुओं की जगत के पास खड़ी होतीं और नदी के किनारे घाट पर कपड़े धोतीं तो बस यही चर्चा करतीं।

तुम्हें तो पता ही है कि लड़की की माँ तो है नहीं।

उसके बाप को काम से साँस नहीं मिलती और सौतेली माँ को उसकी खोज-ख़बर की ज़रूरत ही क्या !

"चौकीदार कह रहा था कि उसने आधी रात को एक आदमी को

आख़िर वाला खिड़की खटखटाते हुए देखा। पहले तो उसने सोचा कि कोई सेंध लगा रहा है। बेचारा दौड़ा दौड़ा आया तो देखा कि सामने खड़ा है मीरका।'

भगवान ही जाने कि आजकल की लड़कियाँ क्या करने पर उतारू हैं!'

'मीरका ने मेरे निकिता से कहा है कि वह उससे शादी कर लेगा।

पहले आकर मुँह तो धोय नहीं !

सुना है कि मीरका ने जबरदस्ती की थी।

किसी ने कहा और तुमने यकीन कर लिया '

अफ़वाह के पंख लगे। वह इस सड़क से उस सड़क और उस सड़क से इस सड़क पहुँची। होते होते लड़की के नाम पर इस तरह कालिख पुत गई जैसे काला कोलतार साफ़-सफ़ेद फाटक पर पुत जाता है।

होते होते बात माक्षोव के भी कानों तक पहुँची। वह तो जल उठा। दो दिन तक न वह दूकान पर नजर आया और न मिल में। इस बीच नीचे रहने वाले नौकरों का भी निगाहों से बचा वह सिर्फ़ खाने के समय पड़ा।

तीसरे दिन उसने अपनी ड्राग्की (खुला गाड़ी) में चितकबरा भूरा स्टैलियन जुतवाया और ज़िला-केन्द्र गया। रास्ते में जो भी परजाम मिला उसका कटते-कटते अभिवादन किया। ड्राग्की के पीछे थी सुनहरी वार्निश से चमचमाती हुई गाड़ी जिसमें दो काले घोड़े जुते थे। येमेल्यान नाम का कोचवान हमेशा पाइप चूसता रहता था और यह पाइप उसकी सफ़ेद पकती दाढ़ी के साथ हमेशा-हमेशा को जुड़ गया था। सो उसने रेशमी रासें खींचीं और घोड़े बढ़ चले। कोचवान के पीछे एन्तिकावेता बैठी थी। वह एकदम पीली पड़ी हुई थी। उसके घुटनों पर एक हल्का-सा सूटकेस रखा हुआ था और उसकी मुसकान में उदासी थी। दरवाज़े पर दस्ताना हिलाकर उसने अपने भाई व्लादीमीर तथा अपनी सौतेली माँ का अभिवादन किया।

अकस्मात ही दूकान से पन्तेली लंगड़ाता हुआ निकला। उसने सवारी देखी तो वह ठिठका और हाते के जमादार निकिता से पूछ बैठा—

छोटी मालकिन कहाँ जा रही हैं ?

मास्को स्कूल में पढ़ने ।

अगले दिन एक ऐसी घटना हुई जो नदी के किनारे कुओं के पास ढोरों की चराई के समय एक अरसे तक चर्चा का प्रमुख विषय बनी रही। दिन ढलने से थोड़ा पहले (चरवाहे पशुओं को चराकर मैदान से लौटे कि) मीस्का सेर्गेइ प्लातानोविच से मिलने उसके घर गया। शाम को वह इसलिए गया कि लोग नहीं मिलें। और वह केवल मेल-मुलाकात के लिए नहीं गया बल्कि वह गया मोखाव की पुत्री लीजा से अपनी शादी की बात पक्की करने ।

वह लीजा से शायद ही मिला था। आखिरी मुलाकात के समय उनके बीच की बातचीत कुछ यों चली थी—

लीजा तुम मुझसे शादी करोगी ?

बेवकूफ हो तुम !

मैं तुम्हारी चिन्ता करूँगा तुम्हें प्यार करूँगा। हमारे यहाँ काम करने को नौकर हैं। तुम खिड़की पर बैठना और अपनी किताबें पढ़ना।

तुम्हारी अक्ल खराब है !

मीस्का को बुरा लगा। उसने आगे और कुछ नहीं कहा। उस दिन शाम को वह जल्दी ही घर लौट आया और सुबह होते-न-होते अपने पिता को आश्चर्य में डालते हुए उसने घोषणा की पापा मेरी शादी कर दो।

बेअकली की बातें नहीं करते। मिरोन ने उत्तर दिया।

सच पापा मैं हँसी नहीं कर रहा।

ऐसी जल्दी क्या है ? उस पगली मार्फा के पीछे दीवाने हो गए हो क्या ?

'मध्यस्थों को सेर्गेइ प्लातोनोविच के पास भेज दो।

मिरोन ग्रिगोरीयेविच ने मोचीगीरी के अपने औजारों को एक ओर रखा और मरम्मत के लिए आये साज को एक ओर। हँसी का ठहाका लगाते हुए बोला आज कुछ ज्यादा ढाल आए हो बेटा !

किन्तु मी ... दिन में आग थी। वह अपनी बात पर अड़ा रहा।

मरे गये, सेर्गेई प्लातोनोविच की एक लाख रूबल से कहीं ज्यादा की हैसियत है। वह तो है व्यापारी और तू क्या है? निकल जा यहाँ से नहीं तो मैं इस पट्टे से तेरी चमड़ी उधेड़ डालूँगा।

हमारे पास बैलों की बारह जोड़ियाँ है और इतनी सारी जमीन है। फिर वह देहाती मुजिक है और हम कज्जाक हैं।

हटा हो यहाँ से! मिरोन ने सख्ती से कहा।

मीत्का को अपने से सहानुभूति रखने वाला केवल एक मनुष्य मिला। वह था उसका बाबा। बूढ़े ने मीत्का के पक्ष में मिरोन को लाना चाहा।

'मिरोन!' बूढ़ा ग्रीश्का बोला 'तुम राजी क्यों नहीं हो जाते? जब लड़के ने ठान ही ली है तो

"बाबा तुम बच्चे हो। भगवान कसम निरे बच्चे हो! मीत्का तो बेवकूफ है, लेकिन तुम"

'बकवास बन्द करो!' ग्रीश्का ने जमीन पर छड़ी पटकते हुए कहा 'क्या हम उसकी हैसियत के लायक नहीं? वह तो घमण्ड से सिर तानकर चलेगा कि उसकी लड़की का सम्बन्ध एक कज्जाक से हो रहा है। वह तो हमारा अहसान मानेगा और खुशी-खुशी मानेगा। इधर के गाँव गबड़ के इलाकों में कौन नहीं जानता हमको? हम खेतिहर मजदूर नहीं जमींदार हैं। मिरोन जाओ उसके पास और कहो कि वह अपनी मिल हमको दहेज में दे दे।

मिरोन फिर आगबबूला हो उठा और उठकर अहाते में चला गया। इसलिए मीत्का ने सायंकाल तक प्रतीक्षा करने के बाद फिर खुद मोखोव के पास जाने का निश्चय किया। वह जानता था कि मेरे पिता का हठ एल्म-वृक्ष की भाँति दृढ़ है—उसे झुकाया तो जा सकता है किन्तु तोड़ा नहीं जा सकता। उससे माथापच्ची करना व्यर्थ है।

मोखोव के सामने वाले दरवाजे तक तो वह सीटी बजाता गया पर फिर उसकी हिम्मत जवाब देने लगी। वह पहले तो हिचका परन्तु फिर हाता पार कर बगल के द्वार पर गया। सीढ़ियों पर उसने कलफदार फ्राक ऐप्रनवाली नौकरानी से पूछा मालिक घर पर हैं?

चाय पी रहे हैं ठहरो।

मीस्का बठकर इन्तज़ार करने लगा। उसने एक सिगरेट जलाई फंकी और बचे हुए टुकड़े को जमीन पर पटक पैरों से कुचल दिया। जल्दी ही अपनी वास्कट के ऊपर से रोटी का पूरा भाड़ता मोखोव बाहर आया। मीस्का को देखते ही उसके माथे पर बल पड़ गए किन्तु बोला अन्दर आओ।

मीस्का मोखोव के ठंडे निजी कमरे म घुसा। कमरे से किताबों और तम्बाकू की महक-सी आ रही थी। मीस्का ने अनुभव किया कि जो हिम्मत सँजोए मैं यहाँ तक आया था वह तो ड्योढ़ी पर ही खत्म हो गई है। मोखोव अपनी मेज के पास गया और एड़िया के बल घूमा कहो! अपनी अँगुलियों से वह पीठ पीछे के मेज के किनारे को खरोंचने लगा।

मैं यह जानने क लिए आया हूं कि मोखोव की कटार से पनी आंखों म आँखें डालते ही मीस्का भय से काँप गया क्या आप एलिजाबेता की शादी मुझस कर सकेंगे? दुख गुस्से और डर के कारण उसके चेहरे पर पसीने की बूँदें इस तरह झलक आई जैसे अकाल के ज़माने म ओस की बूँदें झलकती हैं।

मोखोव की बायीं भौं काँपी और ऊपर का होंठ मसूढ़ों से भी ऊपर उठ आया। उसने अपनी गर्दन आगे निकाली और पूरा शरीर आगे की ओर भुकाया।

क्या? क्या कहा? बदमाश कहीं का! निकल यहाँ से! मैं तुझे घसीटकर अतामान क पास ले जाऊँगा सूअर का बच्चा!

मोखोव क चिल्लाने की आवाज़ सुन मीस्का की हिम्मत जाग उठी।

इसे अपमान न समझिए। मैं तो सिर्फ अपनी गलती सुधारना चाहता था।

क्रोध स लाल आँखें नचाकर मोखोव ने लोहे की भारी राखदानी मीस्का क पाँवों म फेंक मारी। वह उछलकर उसके ही घुटने पर आ लगी। उसने पत्थर बनकर वह दद सहा और सीम से दाँत पीसते हुए

चीखकर बोला, जैसी तुम्हारी इच्छा सर्गेई प्लातोनोविच जैसी तुम्हारी इच्छा। लेकिन मेरा मतलब तो यह था कि अब कौन शादी करेगा उसके साथ? मैंने सोचा था कि मैं उसे इस बदनामी से बचा लूं। लेकिन अब किसी का काटा रोटी कुत्ता भी तो नहीं छूता।

भीगे हुए रुमाल से होंठ दबाए मोखाव मीत्का के पीछे-पीछे चला। उसने सदर-दरवाज़े का रास्ता बन्द कर दिया तो मीत्का हाते की ओर दौड़ा। यहाँ मालिक को यमेल्यान नामक कोचवान को केवल इंगित करना पड़ा। मीत्का फाटक की कड़ी चटखनी से जूझ ही रहा था कि खलिहान के कोने से ज़ंजीर मुक्त चार कुत्ते उभरे और किसी अजनबी को देखते ही हाता पारकर उस पर टूट पड़े। सर्गेई प्लातोनोविच ये कुत्ते नीज़नी नोवगोरद के मेले से लाया था। एक साल में ही घुंघराले काले बालों वाले पिल्ले पूरे कद के हो गए थे। पहले उन्होंने हाते से गुज़रनेवाली औरतों के स्कर्ट खींचे फिर उन्हें घसीटकर ज़मीन पर घसीटा और पैरों में दाँत गड़ाए। फिर उन्होंने फादर पानक्रातो के बछड़े और अन्तोपोविच के दो सूअर मार डाले तो मालिक ने उन्हें ज़ंजीर से जकड़कर रखना शुरू किया। अब वे केवल रात को छोड़े जाते। दिन में छोड़े जाते केवल एक बार—बसन्त में—जोड़ा रखने के लिए। सो मीत्का को पीछे मुड़कर देखने का भी समय नहीं मिला कि सबसे आगेवाला कुत्ता उसके कन्धों पर चढ़ गया और उसने उसकी जाकिट में दाँत गड़ा दिए। चारों ने मिलकर उसके कपड़े चीर-चीर कर दिए और कई स्थानों पर काट खाया। मीत्का ने अपनी टाँगों को बचाने का प्रयत्न करते हुए उन्हें हाथों से धकेला। उसने देखा कि पाइप से चिनगारियाँ बरसाते हुए यमेल्यान ने रसोई में घुसकर अन्दर से किवाड़ बन्द कर लिए।

सर्गेई प्लातोनोविच ड्रेन पाइप से पीठ सटाए सीढ़ियों पर मुट्ठियाँ भींचे खड़ा रहा। मीत्का ने जैसे-तैसे दरवाज़ा खोला और खून से लथपथ अपनी टाँगों से चिपटे कुत्तों को बाहर खींच लाया। एक की तो गर्दन पकड़कर उसने मरोड़ दी और दूसरे को उधर से निकलते हुए कज्ज़ाकों ने बड़ी कठिनाई से मारकर भगाया।

३

मेलेखोव परिवार में नताल्या कायदे से खप गई। वैसे तो उसका पिता धनी था और उसके यहाँ नौकर चाकर भी थे किन्तु उसने अपने बच्चों को काम करना सिखलाया था। परिश्रमी नताल्या ने अपने पति के माता पिता के हृदय जीत लिये। इलीनिचना अपने बड़े लड़के की पत्नी दार्या को मन-ही-मन नापसन्द करती थी इसलिए उसने नताल्या को पहले दिन से ही अपनाया।

सो जा जाकर सो जा बहू! इतनी सुबह-सुबह क्यों उठ गई? बावर्चीखाने में इधर उधर करते हुए वह स्नेह से कहती जा जाकर सो जा फिक्र मत कर सारा काम हो जाएगा। और नताल्या फिर सोने के कमरे में लौट आराम करने लगती।

यों पैन्तेली घरेलू कामों में बहुत कठोर था किन्तु वह भी अपनी पत्नी से कहता सुनो जी नताल्या को मत जगाओ। वह यस ही बहुत मेहनत करती है। आज उसे ग्रीश्का के साथ खेत जातने जाना है। उसकी जगह दार्या को हाँको न। वह बड़ी ही काहिल है बुरी है। चहरा पोतती है भौंहें रगती है कुतिया कहीं की!

इस घर में उसका पहला साल है थोड़ा आराम कर ले नताल्या। बुढ़िया आह भरती और अपनी मशक्कत से भरी जवानी की याद करती।

ग्रिगोरी धीरे धीरे नई जिन्दगी का आदी हो चला। पर दो-तीन सप्ताह में उसे बहुत दुख और भय का अनुभव हुआ। उसे लगा कि अक्सीनिया की मोहब्बत का जख्म अभी भरा नहीं एक काँटा है जो कहीं रह गया है और रह रहकर टीसता है

शादी के बारे में उसने जिस भावना को यों ही झटक दिया था उसकी जड़ें काफी गहरी थीं। उसने सोचा था कि वह भूल जाएगा पर घाव बराबर रिसता रहा। शादी के पहले भी तो साथ-साथ जोताई करते समय प्योत्र ने उससे पूछा था ग्रीश्का अब अक्सीनिया का क्या होगा?

क्यों क्या होगा उसका?

उसे छोड़ दोगे? दिल नहीं दुखेगा तुम्हारा?

मैं छोड़ दूँगा तो उसे कोई दूसरा मिल जाएगा। ग्रिगोरी मुसकरा दिया था।

खैर तुम जानो तुम्हारा काम जाने। पर शादी के बाद नताल्या की जिन्दगी बरबाद न करना। प्योत्र ने अपनी मूछ का सिरा चबाते हुए कहा।

एक-न एक दिन प्यार पुराना पड़ता है एक-न-एक दिन बदन की गरमी उतार पर आती है। ग्रिगोरी ने हलके ढंग से जवाब दिया।

किन्तु हुआ ऐसा नहीं। वह यौवन के कामुक प्रेम की अग्नि में दहकता। और वही आग उतनी ही तेजी से अपनी पत्नी में जगाना चाहता पर पत्नी में उसे मिलती केवल उदासीनता और व्याकुल आत्मसमर्पण। शारीरिक आनन्दों से नताल्या सकुचाती। यह सकोच और झिझकचाहट उसे अपनी आलसी और अजान-सी माँ से मिली थी। पर ऐसे अवसरों पर ग्रिगोरी को अक्सीनिया की तेजी और खून के उबाल की याद आती तो वह आह भरता और कहता नताल्या तुम्हारे पिता ने तुम्हें बर्फ से गढ़ा होगा तुम्हारा आधा बदन हमेशा बर्फ बना रहता है।

और जब उसकी भेंट अक्सीनिया से होती तो अक्सीनिया की आँखें गहरा उठतीं और उनमें डान नदी के नाले के कीचड़ की तरह चिपक जातीं। वह मुसकराती

हलो ग्रीश्का नई बीवी से कैसी निभ रही है?

मजे में! ग्रिगोरी उत्तर में सिर हिलाता और अक्सीनिया की मोह भरी चितवन से जल्दी-से जल्दी बचकर निकलना चाहता।

प्रत्यक्षत स्तेपान ने अपनी पत्नी से समझौता कर लिया। अब वह उसे कम ही मारता। एक दिन शाम को वह घर में अनाज भाप रहा था कि बोला अक्सीनिया आओ दोनों मिलकर कोई गाना गाएँ।

झगड़े के बाद ऐसे आग्रह का यह पहला अवसर था।

वहीं धूमी-मिट्टी मिले गृह के अम्बार से पीठ सटाकर दोनों बैठ गए। स्तेपान ने एक फ़ौजी गीत आरम्भ किया तो अपने गले का पूरा जोर लगा अक्सीनिया ने उसका साथ दिया।

दोनों ने खूब गाया। ऐसे ही वे अपने विवाहित जीवन के आरम्भिक वर्षों में गाते थे। इस समय साँझ के रंग-बिरंगे बादलों के साये में वे खेतों से घर लौटते। स्तीपान गाड़ी के बोझ के ऊपर खड़ा तान छेड़ता। गीत पुराना, लम्बा और उतना ही उदासी से भरा और वीरान होता जितनी कि स्तेपी मैदान के आर-पार जाने वाली वह सड़क। अकसीनिया अपने पति के उभरे हुए सीने से सिर टिकाकर स्वर मिलाती। घोड़े थरथराती हुई गाड़ी खींचते। गाड़ी के बम नीचे-ऊपर होते। दूर गाँव के बूढ़े गीत सुनते।

'बड़ी अच्छी आवाज़ पाई है स्तीपान की इस बीवी ने सचमुच बहुत अच्छा गाती है।'

'और स्तीपान की आवाज़ के भी क्या कहने हैं! ऐसी साफ़ है जैसे घंटी'

और फिर दोनों अपनी झोपड़ियों के पास की कच्ची मुंडेर के पास बैठकर डूबते सूरज को देखते तो सड़क-पार के लोग उस गीत विशेष की चर्चा करते कि वह कहाँ का है और किन लोगों के कंठों में बसता है।

सो इस समय ग्रिगोरी के कानों में उसी आस्ताखोव-दम्पति की आवाज़ें पहुँचीं। उसने अनाज ओसाते हुए बग़ल के खलिहान में अकसीनिया को देखा तो वह उसे पहले की भाँति ही प्रसन्न और खुश लगी। पहले की तरह ही अपने प्रति विश्वास भी उसमें दीखा। हो सकता है कि यह बात सत्य न हो, पर ग्रिगोरी को ऐसा लगा।

स्तीपान की मेलख़ोव-परिवार से बोलचाल न थी। वह घर में काम करते हुए जब-तब अपने हाथ हिलाता और अकसीनिया से छेड़छाड़ करता। जवाब में अकसीनिया मुसकरा देती और उसकी काली आँखें चमक उठतीं। उसका हरा स्कर्ट ग्रिगोरी की आँखों के सामने बराबर रहता। कोई अज्ञात शक्ति उसकी गर्दन को बार-बार घुमाती रहती और उसका सिर अपने आप ही स्तीपान के आँगन के हाते की ओर घूम जाता। पेन्तेली के साथ काम करती हुई नताल्या उसकी निगाह रह-रहकर पकड़ती रही और उसकी अपनी निगाह में ईर्ष्या घुलती रही। उसने घेर के चक्कर के चारों ओर घोड़ों को हाँकते हुए अपने भाई ग्रीशा को भी

नहीं देखा। भाई उसे देख हाठों ही होठों में मुसकराता और मह बनाता रहा।

धरती पत्थर के रोलरों के बोझ के नीचे दबी कराहती रही। ग्रिगोरी के कान झनझनाते रहे। ऐसे में उसने अपने खयालों को पकड़ने की चेष्टा की पर वह जान भी न पाया कि वे उसकी चेतना के बाहर हो गए। पास-दूर के घरों से आसाई के साथ-साथ तरह-तरह की आवाजें आती रहीं—घोड़े हाँकनेवालों की चीखें, चाबुकों की सड़सड़ाहट और ओसाई के ड्रमों की गड़गड़ाहट। गाँव में फ़सल कट चुकी थी और अब वह सितम्बर की उष्णता से प्राण सोच रहा था। दोन के किनारे वह यों फैला हुआ था जैसे किसी साँप ने सड़क के किनारे कुंडली मार ली हो। सरपत की बाड़ेवाले हर फार्म और हर कज्जाक परिवार में जिन्दगी चल रही थी—रात-रात अपने ढंग से दूसरों से अलग-थलग। बूढ़े पोन्तेई को सर्दी लग गई थी और उसके दाँतों में दर्द था। लज्जा से गर्दन तक हुआ सोबोव अकेले में रोता, दाँत पीसता, अपनी दाढ़ी नोचता। स्तीपान के मन में ग्रिगोरी के प्रति घृणा बढ़ती जाती और वह नींद में रजाई में अपनी लोहे जैसी अंगुलियाँ गड़ाता। नताल्या दौड़कर खेत में जाती, कहीं पर गिर पड़ती और अपने टूटे हुए सुख पर आँसू बहाती। क्रिस्तोनिया की आत्मा रह रहकर कचोटती क्योंकि घर का बछड़ा मेले में बिक गया था और रकम शराब में उड़ गई थी। ग्रिगोरी की प्यास बढ़ती जाती और उसके मन का दर्द रह रहकर करवटें बदलता। अब अक्सीनिया अपने पति से दुलराती तो उसके प्रति अपने मन की घृणा का समाप्त न पाती और आँसुओं की बाढ़ आ जाती। दाविद को मिल से जवाब मिल गया था। वह रातों रात नेव के साथ गाड़ीवानों के दल में बैठा रहता। नेव की आँखें क्रोध से जलने लगतीं।

ऐलान-सा करता

'पुराने जमाने में तो बड़े दिन तक मैदान में भेड़ें चराई जाती थीं।

कामचोरों का जमाना था वह

काई कीच में साँसा'

मतामान की गर्दन भेड़िये की सी होती जा रही है—ऐसी मोटी

हो गई है कि मुड़ती नहीं है

सूअर की तरह खाता है

क्यों बाबा जाड़ा भगा रहे हो ? कौन सी भेड़ की खाल ओढ़ रखी है ?

'अब तो जिप्सी को अपना कोट बेच देना चाहिए'

तुमने उस जिप्सी की कहानी सुनी है जिसने सारी रात स्तेपी म काट दी और जिसके पास अपने को ढकने को मछली पकड़ने म जाल के सिवा और कुछ न रहा। और जब ठंडक अन्तड़ियों म घुसने लगी तो उसकी नींद टूटी और जाल के एक फन्दे म अंगुली डालकर वह अपनी माँ से बोला माँ हवा का ठंडा झोंका यहाँ से आता है मैं ता समझा कि यों भी गलना है

डर है कि बर्फ जल्दी ही ऐसी हो जाएगी कि लोग फिसल फिसलकर गिरेंगे

अच्छा हो कि बैलों के खुरों म नालें जड़वा दो

मैं उस तरफ के बेंत काटता रहा हूँ बड़े अच्छे बेंत हैं।

'पतलून के आगे के बटन बन्द करो यदि कहीं पाला मार गया तो बीबी घर से बाहर निकाल देगी'

आवदेविच यह क्या सुनाई पड़ रहा है कि तुम कोई मामूली बैल खरीद रहे हो !

मैंने तो तय किया कि नहीं लूंगा। अब बात उस औरत पराणा पर है। कहने लगी— न लो मैं विधवा हूं जितने प्राणी घर म हों उतनी चहल-पहल रहती है। मैंने जवाब दिया— हो सकता है कि बैल घर म रहे तो तुम्हारे एकाध बाल-बच्चा और हो जाए।

लोगों ने ठहाके लगाये।

दाविद तुम रुको ! जल्दी ही इनकी गर्दनें धड़ स अलग हो जाएगी। एक क्रान्ति इनके लिए काफी नहीं हुई। एक बार फिर स १९ ५ आने दो हम अपना सारा हिसाब किताब कर लेंगे। हाँ हम अपना सारा हिसाब किताब कर लेंगे। वह अपनी ठूंठीली अंगुली स धमकाता और कन्धों पर पड़ा कोट ठीक करता।

इस तरह गाँव के दिन-पर दिन और रात-पर रातें बीतती जातीं। सप्ताहों-पर-सप्ताह गुजरते जाते। महीनों-पर-महीने रंगन निकल जाते। हवा पहाड़ों पर हहराकर बुरे मौसम की चेतावनी देती और फिर शरद् म मरकती-नीलम स चमाचम करती। दोन अपनी गति स बहती रहती— सागर का ध्यान उस सपने म भी न आता।

४

अक्तूबर क अन्त म एक दिन इतवार को फ्रदोत बोदोव्स्कोव गाडी पर सवार होकर बाम म जिन क गाँव में गया। वह अपने साथ मोटी बतखों के चार जोड लेता गया और उसने उन्हें बाजार में बच दिया। उसने अपनी पत्नी के लिए थोडी-सी सूती छींट खरीदी और घर को लौटने के लिए गाडी हाँकने ही वाला था कि एक अपरिचित व्यक्ति उसके पास आया। व्यक्ति उस इलाके का नहीं था।

दोब्रयदन।[1] अपने काले टोप क छज्जे पर अंगुलियाँ रख अभि वादन कर वह फदोत स बोला।

दाब्रयदन[1] फ्रदोत न प्रश्नसूचक दृष्टि स देखा।

आप कहाँ के हैं ?

'इधर क ही एक गाँव का हूँ।

किस गाँव के हैं ?

तातारस्की का।

अपरिचित व्यक्ति न जब स चाँदी का अपना सिगरेट केस निकाला और फ्रदोत को एक सिगरेट दी। पूछा क्या आपका गाँव बडा है ?

धन्यवाद। सिगरेट नहीं पिऊँगा। अभी अभी पी है हमारा गाँव ? हाँ हमारा गाँव काफी बडा है। कोई तीन सौ घर हैं।

गिरजा है वहाँ ?

जी हाँ है।

कोई लोहार भी है ?

---

[1] गुड आफ्टर नून

की सप्लाई !

फदोत में सहसा ही गरमी आ गई। उसने कनखियों से स्त्री की ओर देखा। हमारे अधिकारी बहुत बुरे हैं मैं अब नौकरी करने गया तो मैंने अपने बल बचकर तो एक घोड़ा खरीदा और यह उन्होंने नापास कर दिया।

नापास कर दिया ? स्तॉकमैन ने बनावटी अचरज से कहा।

सीधे सीधे ना-पास कर दिया। बोले कि टाँगें ठीक नहीं। मैंने उन्हें बहुत समझाया हर तरह समझाया। मैंने कहा—यह बड़ा ही कीमती स्टलियन है। बस कदम जरा अपने ढंग से रखता है। लेकिन नहीं उन्हें पास नहीं करना था। और घोड़ा उन्होंने पास नहीं किया। मैं तो बरबाद हो गया समझिए।

बातचीत काफी मजे में चलने लगी। फदोत गाड़ी से नीचे कूद गया और गाँव के जीवन के बारे में खुलकर बातें करने लगा। उसने अतामान को भी भरकर कोसा कि उसने चरागाह का बँटवारा सही नहीं किया। उसने पोलैंड के शासन की प्रशंसा की। वहाँ उसके रजीमेंट ने पड़ाव डाला था। स्तॉकमन बराबर सिगरेट पीता और मुसकराता रहा किन्तु इस बीच उसके माथे के बलों में काफी हल्के हल्के हरकत हुई जैसे वे मन के लिए हुए विचारों के हाँक हँक रहे हों।

वे शाम से पहले ही गाँव पहुँच गए। फदोत की राय से स्तॉकमन विधवा लुकरका के पास गया और उसके दो कमरे किराए पर ले लिए।

कौन आया है तुम्हारे साथ ? फदोत पड़ोसिन के मकान के आगे से गुजरा तो पड़ोसिन ने पूछा।

एक एजेंट है।

एंजिन है ?

तुम सब अक्ल की जड़ हो और कुछ नहीं। मैंने कहा कि वह एक एजेंट है। मशीनें बेचता है। कोई देखने सुनने में मजे का हो तो वह मशीन मुफ्त दे देता है पर मारुषा काकी तुम्हारे जैसों से तो वह रकम पहले लेता है और मशीन बाद में देता है।

—

१ मुझे बेवकूफ समझकर तो घोड़ा

भी भड़क जाए।

"काल्मीक और तातार सबसे पहले आते हैं स्तेपी में, इसलिए उनका मज़ाक़ ज़रा सम्हलकर बनाया जाये!" फ़ेदोत ने बात ज़रा जमाकर कहा।

इधर मिस्त्री श्तोकमन ऐंचा-ताना आँखों और गज़ भर की ज़बान वाला लुकेश्का के यहाँ आकर रहा था रात के बीतते-न-बीतते उसे लेकर गाँव की औरतों की ज़बान कतरनी की तरह चलने लगी।

"पड़ोसिन, नई ख़बर सुनी तुमने?"

"क्या हुआ?"

"वह काल्मीक फ़ेदोत एक विदेशी को ले आया है गाँव में।"

"सचमुच?"

"भगवान देख रहा है... वह विदेशी काला टोप लगाता है और उसका नाम है श्तोकन या श्तोकस या ऐसा ही कुछ"

"पुलिस का आदमी तो नहीं है?"

"नहीं, आबकारी महकमे का आदमी है।"

"यह सब झूठ है... लोग कहते हैं कि वह पादरी पान्कातोव की तरह किताबें बेचता है"

"पाश्का, मेरे बच्चे, दौड़कर जा लुकेश्का के यहाँ और उससे धीरे से पूछ आ कि कौन है वह आदमी?"

"दौड़कर जा बेटा, दौड़कर जा"

अगले दिन श्तोकमन गाँव के अतामान से मिलने गया। पुराने मानित्स्कोव को अतामान हुए यह तीसरा साल था। उसने नवागन्तुक के काग़ज़ पत्तर को बार-बार उलट पुलटकर देखा और अपने क्लर्क को दे दिया। उसने भी उसे बार-बार उलट-पुलटकर देखा। उन्होंने आपस में इशारे मिलाए और कभी के सार्जेंट-मेजर इस समय के अतामान ने हाथ हिलाकर अधिकृत स्वर में कहा, "आप रह सकते हैं।"

नवागन्तुक ने झुककर विदा ली और कमरे से बाहर आ गया। फिर एक सप्ताह तक उसने लुकेश्का के घर से बाहर कहीं क़दम ही नहीं रखा। बस अन्दर से कुल्हाड़ी की खटाखट सुनाई देती रही। वह बाहर के

दावर्चीखाने में अपनी बकवाप तयार करने में लगा रहा। स्त्रियों को उसके प्रति कौतूहल नहीं रहा। बस केवल बच्चे ही चहारदीवारी से उचक उचककर उस नवागन्तुक को दिन भर देखते रहे।

५

'पवित्र कुमारी के प्रार्थना दिवस' से तीन दिन पहले ग्रिगोरी अपनी पत्नी के साथ मैदान में जमीन जोतने के लिए गया। पैन्तली अस्वस्थ था। उनको विदा करने के लिए आँगन में खड़ा हुआ तो अपनी छड़ी पर बोझ डालकर झुका और दर्द से कराह उठा। बोला 'दूसरी तरफ की दोनों पट्टियाँ पहले जोत लेना।'

'ठीक है और सरपत के किनारे वाली पट्टी भी जोती जाएगी न?' ग्रिगोरी ने भर्राई आवाज में कहा। उसे मछली पकड़ते समय सर्दी लग गई थी और उसने गले में रूमाल बाँध रखा था।

'उस पट्टी को त्योहार के बाद जोत लेना। इतना ही कुछ कम नहीं है। कोई पन्द्रह एकड़ है। खाने-पीने का काफी हो जाएगा। ज्यादा लालच न करो।'

'प्योत्र आयेगा हाथ बटाने?'

'वह दार्या के साथ मिल खा रहा है। लोगों की भीड़ लगने के पहले फसल मिल ठीक हो जानी चाहिए।'

इलीनिचना ने ताजे बन्द नताल्या की जाकेट की जेब में डालते हुए कहा 'बैल की हँकाई के लिए चाहो तो दून्या को साथ ले लो।'

'दो आदमी काफी हैं।'

'तो ठीक है बेटी—प्रभु यीशु तुम्हारी सहायता करें।'

अपनी पतली कमर को भीगे कपड़ों के गट्ठर के बोझ से झुकाए कपड़े धोने के लिए दून्या दोन की ओर चल दी। पास से निकली तो उसने नताल्या को पुकारकर कहा 'लाल जंगल में सोनी का साग बहुत है। थोड़ा-सा लेती आना।'

'अच्छा अब तू सो जा बातूनी कहीं की!' दून्या की ओर छड़ी उठाते हुए पन्तेली बोला।

तीन जोड़ी बैल उलट हुए हल को हाते से बाहर निकाल लाए। लोग रवाना हुए। राह में ग्रिगोरी को खाँसी आती रही और रह रहकर गर्दन में बँधा अपना रूमाल ठीक करता रहा। उसकी बगल में बैठी रही नताल्या। उसकी पीठ पर पड़ा खाने की चीज़ों का थैला जब-तब हरकत करता रहा।

मैदान एक अस्वाभाविक शान्ति से जकड़ा हुआ था। बंजर ज़मीन से आगे ढलवाँ पहाड़ी की दूसरी तरफ़ ज़मीन हलों से जोती जा रही थी। ड्राइवर सीटी बजा रहे थे किन्तु इधर चौड़ी सड़क के किनारे सिर्फ़ चिरायता के नीले भूरे छोटे पौधे थे। जिनपतिया घास जहाँ-तहाँ से भेड़ों ने काट-छाँट दी थी। ऊपर काँच की तरह चमकता हुआ नीला आकाश था। आकाश में मकड़ी के रंग बिरंगे जाल के उड़ते हुए ताने-बाने थे।

खेत जोतने वालों को राह पर छोड़ प्योत्र और दार्या ने मिल जाने की तैयारी की। प्योत्र ने गेहूँ पछोरा। दार्या उसे बोरों में भर कर गाड़ी तक लाई। पन्तली ने घोड़ों पर साज कसा।

"अभी देर लगेगी?"

"नहीं आ रहा हूँ।" प्योत्र ने जवाब दिया। मिल में आकर उन्होंने देखा कि हाते में गाड़ियों की भीड़ लग रही है और तराजुओं के चारों ओर लोग जमा हैं। प्योत्र ने रास दार्या को थमाई और गाड़ी से नीचे कूद पड़ा।

"मेरी बारी देर में आयेगी?" उसने नेब नामक तौल करनेवाले से पूछा।

"तुम उधर जाओ।"

"अभी किसका काम चल रहा है?"

"नम्बर अड़तीस का है।"

प्योत्र अपने बोरे कन्धे पर लिए मुड़ा ही था कि उसने पीछे किसी को गालियाँ देते सुना—एक मोटी भद्दी आवाज़ जैसे कुत्ते की तरह भूँकी।

"पहले तो पाड़ा बनकर सोता रहता है फिर अपनी बारी से पहले ही अपना काम चाहता है। निकल यहाँ से ओखोल[1] कहीं का। नहीं तो एक दूँगा अभी कसकर।"

---

१ उक्रेनियों का एक नाम—घृणा और अपमान से भरा।

प्योत्र ने घोड़े की नाल याकोव का स्वर पहचाना और पूरी बात सुनने के लिए रुका। तौल के कमरे से चीख़ की एक आवाज़ आई। फिर आया घूँसे का धमाका। घूँसा तानकर मारा गया था। एक दाढ़ी वाला बूढ़ा उक्रइनी लड़खड़ाता हुआ दरवाज़े से बाहर आया।

मुझे मारा क्यों? अपने गाल पर हाथ रखे हुए वह चिल्लाया।

मैं तेरी गर्दन ऐंठकर रख दूँगा।

निकीफ़ोर की दुहाई है! उक्रइनी चिल्लाया।

'घोड़े की नाल' याकोव शरीर से भारी भरकम, शानदार तोपची था। उसको यह उपनाम इसलिए मिला था कि एक घोड़े ने एक बार उसके गाल पर लात मार दी थी और उसकी लात का निशान उसके गाल पर बन गया था। सो वह अपनी बाँहें चढ़ाता तौल के कमरे से दौड़कर बाहर आया। गुलाबी क़मीज़ पहने एक लम्बे उक्रइनी ने पीछे से बड़े ज़ोर से उस पर चोट की। किन्तु याकोव लड़खड़ाया नहीं।

भाइयो! ये लोग कज़्ज़ाकों पर वार कर रहे हैं। वह चीख़ा।

उस समय जो भी कज़्ज़ाक और उक्रइनी मिल में थे वे सभी बड़ी संख्या में भागे चले आये। मिल के ख़ास फाटक के पास भिड़न्त शुरू हो गया। एक-दूसरे से गुथनेवालों के दबाव से फाटक चरमरा उठा। प्योत्र ने अपना बोरा पटक दिया और हम हंगाम की ओर बढ़ा। गाड़ी पर खड़ी दार्या ने देखा कि दूसरों को एक ओर ढकेलता वह भीड़ के अन्दर घुसता चला जा रहा है। वह यह देख कराह उठी कि वह मिल की दीवार से टकराकर गिर गया और लोगों के पाँवों-तले आ गया।

मीत्का कोर्शुनोव मशीनरूम से निकलकर भागता हुआ आया। लोहे का एक डंडा उसके हाथ में नाच रहा था। जिस उक्रइनी ने याकोव पर पीछे से वार किया था वह भीड़ से बाहर निकला। उसकी एक फटी गुलाबी बाँह पीछे इस तरह फरफराती रही जैसे किसी पक्षी का टूटा हुआ पंख हो। वह अकर्यों-बकर्यों तख़्तों से सबसे पास की गाड़ी के पास गया और उसमें से एक डंडा यों निकाल लाया जैसे कि वह दियासलाई की कोई सींक हो। सारा हाता भारी भर्राई आवाज़ों से भर उठा। चरमराहट—घूँसों पर घूँसे—वार पर वार—आहें—कराहें! तीनों शामिल-बन्धु भागते हुए

वहाँ भा पहुँचे। जमीन पर पड़ा खाली लगाम में एक हाथ वाले अलक्सई की टाँग फँस गई और वह दरवाज़ पर भहरा पड़ा। वह उछलकर खड़ा हुआ और अपनी हाथविहीन आस्तीन का अपने सीने में मटाए गाड़ी के घुरे को लाँघ गया। उसके भाई मार्टिन का पाजामा मोजों से बाहर निकल आया। वह उसे मोजों में डालने को झुका किन्तु मिम का हाहल्ला अपनी सभी सीमाएं पार कर गया। मार्टिन तनकर सीधा हुआ और अपने भाइयों के पीछे भागा।

दारया गाड़ी पर खड़ी हाँफती और अपने हाथ मलती सारा दृश्य देखती रही। उसके चारों ओर की औरतें हा-हा खाने लगीं। घोड़ों ने परेशानी से अपने कान खड़े कर लिए और वन गाड़ियों से सट गए। होंठों को चबाता पीला पड़ा मोखाव बगल से निकला। उसकी वास्कट से ढँका हुआ उभरा पेट गेंद की तरह फूलता पिचकता गया। दारया ने देखा कि फटी कमीज वाले उकड़नी ने मीरका को डंडे से नीचे गिराया कि भुजाविहीन अलक्सई की लोह मुष्टिका पड़ते ही वह भी लड़खड़ा गया। मालिक बोरद्नाव ने माखोव की टाँग पर लोहे का डंडा जमाया। मोखाव ने हाथ फैला दिए और बकड़े की तरह रेंगता हुआ तौल के धड़ में पहुँचा कि लोगों के पैरों के नीचे आ पड़ा। दारया हँसते-हँसते लोट पोट हो गयी। उसकी भौंहों की रंगाई की काली पपड़ी हँसी से फट गई। किन्तु प्योम पर नज़र पड़ते ही उसकी मुद्रा एकदम बदल गई। वह जल्द तक भीड़ चीरता निकला और एक गाड़ी के नीचे पड़कर खून थूकने लगा। दारया चीखती हुई उसके पास भागी। गाँव से निहाइयाँ ले-लेकर कज्ज़ाक देखते-देखते आ गए। उनमें से एक तो लोहे का धुरा ले आया। तौल के गड्ढे के दरवाज़े पर एक नौजवान उकड़नी पड़ा नज़र आया। उसका सिर फूट गया था और खून की नदी-सी बह चली थी। खून से चिमटे बाल उसके चेहरे पर आ गए थे। लगा कि वह इस आनन्दमय जीवन से विदा ले रहा है।

भेड़ों की तरह घेरा बाँधकर उकड़नी धीरे धीरे दूसरे दाड़ की तरफ़ बढ़े। यों तो यहाँ इस समय ऐसा खूनखराबा होता कि क्या कहिए! किन्तु सहसा ही एक बूढ़े उकड़नी को एक तरकीब सूझ गई। उसने झटककर

प्योत्र ने 'घोड़े की नाल' याकोव का स्वर पहचाना और पूरी बात सुनने के लिए रुका। तोम के कमरे से चीख की एक आवाज़ आई। फिर आया घूंसे का धमाका। घूंसा खाकर भाग गया था। एक दाढ़ी वाला बूढ़ा उक्रइनी भड़भड़ाता हुआ दरवाज़े के बाहर आया।

मुझे मारा क्या? अपने गाल पर हाथ रखे हुए वह चिल्लाया।

मैं तेरी गर्दन ऐंठकर रख दूंगा।

मिकोलोर की दुहाई है! उक्रइनी चिल्लाया।

घोड़े की नाल' याकोव शरीर से भारी भरकम जानदार तोपची था। उसको यह उपनाम इसलिए मिला था कि एक घोड़े ने एक बार उसके गाल पर लात मार दी थी और उसकी लात का निशान उसके गाल पर बन गया था। सो वह अपनी बाँहें चढ़ाता तोम के कमरे से दौड़कर बाहर आया। गुलाबी कमीज़ पहने एक लम्बे उक्रइनी ने पीछे से बड़ी ज़ोर से उस पर चोट की। किन्तु याकोव लड़खड़ाया नहीं।

भाइयो! ये लोग कज़्ज़ाकों पर वार कर रहे हैं। वह चीखा।

उस समय जो भी कज़्ज़ाक और उक्रइनी मिल में थे वे सभी बड़ी संख्या में भाग चले आये। मिल के खास फाटक के पास भिड़न्त शुरू हो गया। एक दूसरे से गुंथनेवालों के दबाव से फाटक चरमरा उठा। प्योत्र ने अपना बोरा पटक दिया और इस हंगामे की ओर बढ़ा। गाड़ी पर खड़ी दार्या ने देखा कि दूसरों को एक ओर ढकेलता वह भीड़ के अन्दर घँसता चला जा रहा है। वह यह देखकर रो उठी कि वह मिल की दीवार से टकराकर गिर गया और लोगों के पाँवों-तले आ गया।

मीश्का कोशेवोय मशीनरूम से निकलकर भागता हुआ आया। लोहे का एक डंडा उसके हाथ में नाच रहा था। जिस उक्रइनी ने याकोव पर पीछे से वार किया था वह भीड़ से बाहर निकला। उसकी एक फटी गुलाबी बाँह पीछे इस तरह फरफराती रही जैसे किसी पक्षी का टूटा हुआ पंख हो। वह अकड़ा-बेकैसा सजा से सबसे पास की गाड़ी के पास गया और उसमें से एक डंडा यों निकाल लाया जैसे कि वह दियासलाई का कोई सींक हो। सारा हाता भारी भर्राई आवाज़ों से भर उठा। चरमराहट—घूंसों पर घूंसे—वार पर वार—आहें—कराहें! तीनों शामिल-बन्धु भागते हुए

वहाँ भा पहुँचे। जमीन पर पडी खाली लगाम म एक हाथ यानि भलवसई की टाँग फस गई और वह दरवाजे पर भहरा पडा। वह उछलकर खडा हुआ और अपनी हाथविहीन आस्तीन का अपने सीने से सटाए गाडी के धुर का लाँघ गया। उसके भाई मार्टिन का पाजामा मोजो से बाहर निकल आया। वह उसे मोजो म डालने को झुका किन्तु मिल का होहल्ला अपनी सभी सीमाए पार कर गया। मार्टिन तनकर सीधा हुआ और अपने भाग्या के पीछे भागा।

दारया गाडी पर खडी हाँफती और अपने हाथ मलती सारा दृश्य देखती रही। उसके चारों ओर की औरतें हा हा खाने लगी। घोडों ने घरघराते स अपने कान खडे कर लिए और वल गाडियो म सट गए। होंठों को चबाता पीला पडा मोखाव बगल से निकला। उसकी वास्कट से ढका हुआ उसका पेट गेंद की तरह फूलता पिचकता दीखा। दारया ने देखा कि फटी कमीज वाले उकड्नी ने मीस्का को डडे से नीचे गिराया कि भुजाविहीन भलवसई की चोट मुष्टिका पडते ही वह भी लडखडा गया। मीस्का कोर्शूनोव न मोखोव की टाँग पर लोहे का डडा जमाया। मोखोव ने हाथ फला दिए और केकडे की तरह रेंगता हुआ तौल के दाड म पहुँचा कि लोगो के पैरों के नीचे आ पडा। दारया हसते-हसते लोट पोट हो गयी। उसकी भौंहों की रगाई की काली पपडी हसी म फट गई। किन्तु प्योत्र पर नजर पडते ही उसकी मुद्रा एकदम बदल गई। वह जस-तस भीड चीरता निकला और एक गाडी के नीचे पडकर खून थूकने लगा। दारया चीखती हुई उसके पास भागी। गाँव स निहाल्यो ले-लेकर कज्जाक देखते-देखते आ गए उनम से एक तो लोहे का धुरा ले आया। तौल के दाड के दरवाजे पर एक नौजवान उकड्नी पडा नजर आया। उसका सिर फूट गया था और खून की नली-सी बह चली थी। खून से विदग्ध दाग उसके चहरे पर आ गए थे। लगा कि वह इस आनन्दमय जीवन से विदा ले रहा है।

भेडों की तरह धरा बाँधकर उक्रइनी पार [illegible]
यह। यों तो यहाँ इस समय ऐसा [illegible]
सहसा ही एक बूढ़े उकड्नी को [illegible]

भट्टी से एक जलती लकड़ी निकाली और उस सफ़र पिसे हुए अनाज के ढेर की ओर दौड़ा। एक हज़ार पूड[1] से भी अधिक आटा था वहाँ।

"मैं आग लगा दूँगा।" चटखती सुलगती फूस की छान की तरफ बढ़ाते हुए वह चीखा।

कज़्ज़ाक भय से काँप गए और रुक गए। पुरवा के तेज़ झोंके आ रहे थे। ढेर से उठता धुआँ उक्रइनियों के दल की ओर जा रहा था। ऐसे में अगर उस सूखे छप्पर में एक चिनगारी भी पहुँच जाती तो सारा गाँव जलकर राख हो जाता।

कज़्ज़ाक भुनभुन करने लगे। उनमें से कुछ मिल की ओर लौटने लगे। वह उक्रइनी उस जलती लकड़ी को अपने सिर के ऊपर घुमाता दहकती चिनगारियाँ बरसाता चिल्लाया "जला दूँगा, जलाकर राख दूँगा, नहीं तो हाते के बाहर निकल जाओ!"

घोड़े की नाल याकोव, झगड़े की जड़, सबसे पहले हाता छोड़कर भागा। दूसरे कज़्ज़ाकों ने उसके पीछे कतार बाँध दी। उक्रइनियों ने अपने घोड़े जोते, जल्दी-जल्दी अपने बोरे गाड़ियों पर लादे और पागलों की तरह घोड़ों को मारते, चमड़े की रासें नचाते हाते से बाहर निकले और गाँव से दूर चले गये।

हाते के बीच खड़े हो अपनी आँखें फड़काते और गाल फुलाते हुए भुजाविहीन अलेक्सेई चिल्लाया, "कज़्ज़ाको! घोड़ों पर सवार हो जाओ!"

"दुश्मनों का पीछा करो!" आवाज़ का उत्तर मिला।

मीश्का कोरशुनोव हाते से बाहर निकलने को सम्हला ही कि मिल के चारों ओर खड़े कज़्ज़ाकों की भीड़ में कुछ गड़बड़ी शुरू हो गई। ठीक उसी समय काला टोप लगाए एक अपरिचित आदमी जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाता उनके पास आया। आगन्तुक ने अपना हाथ उठाया और चीख कर कहा "रुको!"

---

१ एक पूड—लगभग अठारह सेर

कौन हो तुम ? याकोव ने चीखते हुए पूछा ।

तुम कहाँ से फट पड़े ? दूसरे ने सवाल किया ।

'रुको देहातियो !

उल्लू का पट्ठा ! तू किसे बता रहा है देहाती ?

जाहिल मुजिक है । दो तो इसको एक कान भर की याकोव !

"मूसर कहीं का !

"ठीक है निकाल लो इसकी आँखें !

आगन्तुक मुसकराया । डर उसे छू भी नहीं गया । उसने अपना टोप उतारा और बड़े सहज भाव से अपनी भौंहें पोंछीं । उसकी मुसकराहट मात्र से लोगों का गुस्सा ठंडा पड़ने लगा ।

बात क्या है ? उसने तीन के पार के किनारे पड़े खून की ओर अपने टोप से इशारा करते हुए पूछा ।

हम खोखोलों को मार भगा रहे थे । भुजाविहीन अलक्सेई ने शान्ति से उत्तर दिया ।

लेकिन क्यों ?

वे पानी के मामले में बेईमानी करना चाहते थे । एक कदम आगे बढ़ते हुए और हाथ के एक झटके से नाक से बहते हुए खून का धब्बा पोंछते हुए याकोव ने कहा ।

"हमने थोड़ा मरम्मत कर दी उनकी अब कुछ दिन व याद रखेंगे हमें "

खैरियत यही है कि हमने उनका पीछा नहीं किया

' हम डर गए कि वह कहीं आग न लगा दें

"वह तो आग जरूर लगा देता

'ये खोखोल बड़े ही बददिमाग होते हैं एकान्त्र योजरोव ने कहा ।

आगन्तुक ने याजरोव की दिशा में अपना टोप हिलाया और पूछा और आप कौन हैं ?

याजरोव ने घृणा से थूका और ऐंठते हुए धूप को देखते हुए उत्तर दिया मैं कज्जाक हूँ और तुम तुम जिप्सी हो क्या ?

मैं और आप दोनों ही रूसी हैं।

'झूठ बोलता हो! अफोका ने विचारपूर्वक कहा।

रूसियों से ही कज्जाक पैदा हुए हैं। यह आप जानते हैं? नवागन्तुक ने कहा।

और मैं कहता हूँ कि कज्जाक कज्जाकों से पैदा हुए हैं।

बहुत दिन हुए कि नवागन्तुक ने समझाया जमींदारों के यहाँ से उनके मूदास भाग आये और दोन के किनारे आ बसे। बाद में उन्हीं को कज्जाक के नाम से पुकारा जाने लगा।

अपना रास्ता नापो क्यों! अलक्सेई ने अपना क्रोध पीते हुए कहा।

सूअर हमको किसान बतलाता है! यह है कौन?

नया आया है ऐंचो-मानो लुकेश्का के यहाँ रहता है। दूसरे ने कहा।

किन्तु उस्तानियों से बदला लेने का क्षण बीत चुका था। आपस में लड़ाई के ऊपर उबलते कज्जाक अपने अपने घर चल गए।

उस रात गाँव से कोई आठ वस्ट दूर अपनी मोटी भेड़ की खाल ओढ़े हुए ग्रिगोरी ने नताल्या से कहा बात जो भी हो पर तुम अजीब औरत हो! तुम उस चाँद की तरह हो जो किसी को न तो गरमी ही पहुँचाता है और न ठंडक ही देता है। नताल्या नाराज मत होना लेकिन मैं तुम्हें प्यार नहीं करता। इस बारे में मैं कुछ नहीं कहना चाहता था लेकिन मुझे कहना पड़ रहा है। साफ बात है कि ऐसे हमारी गाड़ी चलेगी नहीं। मुझे तुम्हारे ऊपर रहम आता है। इधर हम एक-दूसरे के कुछ पास आने लगे लेकिन सच पूछो तो तुम्हारे लिए मेरे दिल में कोई मोहब्बत पैदा नहीं हुई। मेरा दिल वीरान है—रात के इस वीराने की तरह।

नताल्या ने पहुँच के बाहर रहनेवाले सितारों से भरे आसमान को देखा अपने ऊपर उड़ते हुए छायावाले अधफलालिल बादलों की ओर देखा और चुप हो रही। नीलम धुले नाले एकान्त में कहीं दूर पर देर से लौटे सारसों ने एक-दूसरे को यों आवाज दी जैसे कि चाँदी की घंटियाँ बज रही हों। सूखी घास से उदासी से भरी बेजान बास आई। पहाड़ी

पर किसी किसान के अलाव की आग ने लौ दी ।

ग्रिगोरी तड़के ही उठ पड़ा । उसकी भेड़ की खाल पर बर्फ की तीन इंच मोटी परत जम गई थी । अभी अभी गिरी क्वारी बर्फ के नीलम से मैदान मढ़ा हुआ था । जहाँ ग्रिगोरी लेटा था वहाँ किसी खरगोश के परों के निशान चमक रहे थे । लगा कि खरगोश बर्फ में रास्ता भटक गया था ।

६

उक्रइनियों के गाँव निचले याबलोनोव्स्की से शुरू होकर पिचहत्तर वर्स्ट की दूरी तक यानी मिलेरोवो तक फैले हुए थे । वर्षों से अगर कोई कज्जाक मिलेरोवो की सड़क पर जाते समय खोखोलों के सामने पड़ जाता तो वह स्वयं सड़क से हट जाता अन्यथा उसे सड़क से हटा दिया जाता । इसलिए कज्जाक जब भी रेलवे स्टेशन जाते पूरा दल बनाकर जाते । तब खोखोलों से मैदान में सामना होने या गाली-गलौज का डर न रहता ।

ऐ, खाखोल ! हम रास्ता दे ! मूसर कहीं का ! चाहते हो कि कज्जाकों की जमीन पर रहो-महो और हम निकलने का भी रास्ता न दो !

जिन उक्रइनियों को दोन पर बसे पारामोनोवो के एलीवेटर तक अपना अनाज लाना पड़ता था उनकी ओर भी कोई अंगुली उठा न सकता था। बवाल झगड़े हो जाते क्योंकि वे खोखोल थे और इसीलिए कज्जाकों को उनसे लड़ना पड़ता था ।

सैकड़ों वर्ष पूर्व किसी व्यक्ति ने बड़ी सावधानी से कज्जाक धरती में राष्ट्रीय फूट का बीज बो दिया था और वह बीज आज इस तरह फूल फल रहा था । जब भी कोई उक्रइन या रूसी यहाँ आता खून खराबा होता और जमीन पर खून की नदी बह चलती ।

मिल के झगड़े के कोई दो हफ्ते बाद जिला-पुलिस अधिकारी और एक इन्सपेक्टर गाँव में आये । सबसे पहले पूछताछ स्तोकमन से हुई । प्रतिष्ठित कज्जाक घराने का युवक इन्सपेक्टर उससे बोला यहाँ आने से

पहले तुम कहाँ रहते थे ?

रोस्तोव में।

१६०७ में तुम्हें जेल किसलिए हुई थी ?

गड़बड़ी में हिस्सा लेने के कारण।

हूं ! तब तुम कहाँ काम करते थे ?

रेलवे वर्कशाप में।

किस पद पर ?

मिस्त्री की हैसियत से।

"तुम यहूदी तो नहीं हो ? या यहूदी हो और नाम बदल लिया है ?

नहीं मेरी समझ में

मुझे तुम्हारी समझ से कुछ नहीं लेना देना ! तुम्हें देश निकाले की सजा दी गई थी ?

जी हाँ दी गई थी।

अधिकारी ने अपना हाथ उठाया और होंठ चबाए।

मैं तुम्हें राय देता हूँ कि तुम यह जिला खाली कर दो। और धीमे स्वर में बोला मैं तुम्हें यहाँ से निकालकर ही मानूँगा।

क्यों ?

मिल पर जब झगड़ा हुआ था तो तुमने कज्जाकों से क्या कहा था ?

जी !

ठीक है जा सकते हो।

अधिकारी जब भी आते वे मोखोव के मकान को अपना हेड-क्वाटर बना लेते। सो स्तॉकमन बाहर निकलकर मोखोव के बरामदे में आ गया। उसने कन्धे झटके और रंगे हुए दोहरे दरवाजों पर पलटकर एक नजर डाली।

७

और धीरे सर्दियाँ आ गईं। थोड़े दिन बाद बर्फ पिघलने लगी और पशु फिर से चरागाहों में जाने लगे। हफ्ते भर तक धरती की सर्दी हरता

दक्षिणी पवन बहता रहा। चरागाह में इधर उधर हरियाली छाने लगी। सन माइकल दिवस' तक तो बर्फ पिघला इसके बाद फिर पाला पड़ा और बर्फ बरसने लगी। दोन के पास के बगीचों में बाड़ों की बर्फ पर खरगोशों के पैरों के निशान नजर आने लगे। सड़कें सूनी हो गई।

अब कण्डे की आग का धुआं आसमान से नीचे ही लटकता रहता। काले कौवे सड़क के किनारे के राख के ढेरों के चारों ओर मंडराते रहते।

एक में गाँव के लोगों की एक सभा यह तय करने के लिए हुई कि घास भाड़ियों का कौन-कौन भाग कब कहाँ से काटेगा। सभा के निर्धारित समय से बन्त पहले ही भेड़ों की खालें तथा ओवरकोट पहने हुए कज्जाक ग्राम प्रशासन भवन की सीढ़ियों पर आ जमा हुए, पर उन्हें ऐसी ठंड थी विवश हो उन्हें भवन में अन्दर जाना पड़ा। मेज के पास प्रशासक तथा उसका क्लर्क और बगल में गाँव के आदरणीय बड़े-बूढ़ों ने स्थान ग्रहण किया। उनसे छोटे कज्जाकों का एक अलग दल बन गया। इसमें ऐसे दाढ़ी वाले लोग भी रहे और बिना दाढ़ियों वाले लोग भी। वे अपने कोटों के कॉलरों के अन्दर मुँह छिपाए आपस में धीमे धीमे कुछ फुसफुस करने लगे। क्लर्क अपने घसीट अक्षरों से कागज के बाद कागज भरता गया। प्रशासक सिर उचकाकर कुछ देखता रहा। ठिठुरन से भरे कमरे में लोग आपस में बातें तो करते रहे पर बहुत रोक थाम के साथ-साथ धीरे धीरे।

भूसा घास तो इस साल

"ठीक है। चरागाह की घास तो अच्छी है, लेकिन मैदान में तो हर तरफ तिनपतिया हुई है।

बुजुर्गों जंगल की कटाई का क्या हाल है? शान्त रहो भाई

'हाँ मैंने कहा कि एक बच्चा और हो गया तो उसके लिए मुँह बाना आप खाना होगा मुझे।

शान्त रहिये कृपया शान्त रहिये

सभा की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। अपनी दाढ़ी सहलाते हुए प्रशासक ने परिवारों के नाम ले-लेकर उनको बाँट में आए जंगल के भाग निशान शुरू किये

आप बृहस्पतिवार का जगल भी कटाई नहीं रख सकते। इवानतो मोलीन प्रधामान से भी तेज स्वर म बोला। उसने अपने निचले लाल कान रगडे और तोपखाने की टोपी स मढा अपना सिर टढा किया।

क्यो नहीं रख सकते ?

अब तोपची अपने कान रगड रगडकर खत्म कर देगा क्या ? किसी ने जोर से कहा ठीक है हम बछडों क कान लगा देंगे इसके इन कानो की जगह !

बृहस्पतिवार को आधा गाँव तो सूखी घास लाने चला जाएगा। यह भी क्या बात रही

यह काम इतवार क दिन किया जा सकता है।

बुजुर्गो !

हो गया !

ईश्वर उसका भला करे !

बात का मजाक बनने लगा। हर ओर स आवाजें आने लगी।

वृद्ध मातवेई काशुलीन जीर्ण मच पर झुका और उसन अपनी राख के रग की चिकनी छडी म ठोमोमीन की ओर इशारा किया।

घास इन्तजार करेगी है न ! यह बात तो सब लोग मिलकर तय करेंगे। तुम बेवकूफ़ हो बिलकुल समझे न !

तुम्हारे पास तो दिमाग़ ही नहीं है खर भुजाविहीन अलेक्सेई बोला। इस बूढ़ काशुलीन से जमीन की एक टुकडी को लेकर उसका छ. साल से झगडा चल रहा था। अब भी हर बसन्त म वह उस बूढ़ को मारता था हालाँकि जमीन वह बित्ता भर थी।

खामोश सूअर कहीं का !

अफसोस है कि तुम बहुत दूर बैठे हो मुझसे नहीं तो तुम्हारी नाक तोड़कर रख देता !" अलेक्सेई ने धमकी दी।

?

मजूर वाले आयरे।

आस्था !

'अगर इनका दिमाग यों ठिकाने न आए तो इन्हें थूनर से कसकर इनके दिमाग ठंडे कर दो !'

अतामान ने मेज पर जोर का घूसा मारा "अगर एक मिनट तक यहाँ शान्ति न हुई तो मैं चौकीदार को अन्दर बुला लूंगा।" शान्ति होने पर वह फिर बोला "अगस्त की कटाई बृहस्पतिवार की तड़के शुरू होगी।

'क्या कहते हैं !' 'भगवान खैर करे !' व्यग्रपूर्ण आवाजें सुनाई पड़ीं।

"हाँ, एक बात और। जिला अतामान ने मुझे सूचना दी है " अतामान ने अपना स्वर ऊँचा किया "अगले इतवार को जवान लोग जिला अतामान के दफ्तर में शपथ लेने जायेंगे। उन्हें दोपहर के बाद वहाँ पहुँच जाना है।

पन्तेली प्रोकोफ़ियेविच अपनी लंगड़ी टाँग का भारम की तरह साधे दरवाजे के नज़दीक पास की खिड़की के सहारे खड़ा था। उनकी बगल में खिड़की के शीशे पर बग्‍ल मिरोन ग्रिगोरियेविच अपनी चोंचें मटकाता हुआ होंठों-ही-होंठों मुसकरा रहा था। उनकी बगल में लड़ कज़ाक लड़के एक-दूसरे को आँख मारकर मुसकराते। उनके दल के बीच अपने गंजे सिर पर अतामान रजामन्द का टोपी लगाए अवदेयेविच मलीनीन खड़ा था। उसका चेहरा उम्र से इतवाला पद भी गोल-मटोल उपा धुन्धों के मद की तरह लाल नज़र आ रहा था।

अवदेयेविच अतामान की लाइफ़-गार्ड सेना में नौकरी कर चुका था और 'जारीलार' का नाम लेकर ख़ैर लेता था। वह गाँव के उन इने-गिने लोगों में से था जिन्हें कि अतामान की रेजीमेंट में पहले-पहल भरती किया गया था। नौकरी के ज़माने में उसके साथ कोई ऐसी अजीब घटना घटी थी कि जब से लौटा था तभी से दरबार की अपनी सवारियों और पास्नबाग की अपनी बहादुरियों की अजब-गजब भरी कहानियाँ सुनाता रहता था। पहले तो लोग उसकी बात पर विश्वास करते और अचम्भे से मुँह फैलाए सारी दास्तान को सुनते रहते थे, किन्तु बाद में उन्हें पता चल गया कि अवदेयेविच झूठा है और उससे बड़ा झूठा गाँव में कभी पैदा

नहीं हुआ। बस अब तो वे उस पर दिल खोलकर हँसते थे। किन्तु उस साज कहाँ! वह उसी तरह बकता रहता था। जब उम्र बढ़ने लगी तो वह अपने झूठ के पकड़ जाने पर गरम होने लगा और अपनी सहायता के लिए मुट्ठियों का प्रयोग करने लगा। अगर श्रोतागण सिर्फ हँसते रहते और कुछ नहीं कहते तो वह अपनी दास्तान बढ़ाता चला जाता और बड़ा रस लेता।

जहाँ तक उसकी खेतीबाड़ी की बात है वह बड़ा ही व्यावहारिक और मेहनती कज्जाक था। हर काम अक्ल से और कभी-कभी चालाकी से करता था। लेकिन जब सरकारी नौकरी की बात चलती तो लोग हाथ फैलाकर बैठ जाते और हँसते-हँसते लोट-पोट होने लगते।

सो इस समय अवदेविच कमरे के बीच खड़ा अपनी एड़ियों पर नाचता रहा। कज्जाकों की भीड़ पर नजर डालकर उसने भारी विचार भरे स्वर में कहा: जहाँ तक नौकरी की बात है अब कज्जाकों की पहले-जैसी बातें नहीं रहीं। कज्जाक ठिगने हो गए और किसी मज की दवा नहीं रह गए। लेकिन" वह तिरस्कार से मुसकराया "मैंने एक बार कज्जाकों की ठठरियाँ देखी थीं। आह! कज्जाक तो उन दिनों थे।

'अवदेविच, वे ठठरियाँ कहाँ से खोद लाए थे तुम?' चिकने चुपड़ अनीकुश्का ने अपने पड़ोसी को कुहनियाकर कहा।

अवदेविच पवित्र-भव इतना पास है अब तो झूठ बोलने से बाज आओ। पैन्तेली ने अपनी नाक चबाकर कहा। उसे अवदेविच की गप्प हाँकने की आदत पसन्द न थी।

मेरे भाई झूठ बोलने की मुझे आदत ही नहीं। अवदेविच ने कठोरता से उत्तर दिया और अनीकुश्का की ओर आश्चर्य से देखा। उस इस तरह कपकपी छूट रही थी जैसे कि उसे पूछी जा रही हो। मैंने वे ठठरियाँ अपने साले का मकान बनाते समय देखी थीं। हम नींव खोद रहे थे कि हम एक कब्र मिली। लगता है कि यहीं दोन के निचले किनारे पर गिरजे की बगल में कब्रगाह थी कभी!

अच्छा तो कैसी थीं वे ठठरियाँ? जाने की तैयारी करते हुए

पन्तेला ने पूछा।

बाँहें इतनी लम्बी थीं ' उसने अपने दोनों हाथ फलाये और सिर इतना बड़ा था जितना कि कड़ाहा।

अच्छा हो कि लड़कों को तुम सण्ट पीटसबग की वह घटना सुनाओ जब तुमने एक डाकू पकड़ा था।' खिड़की के पास से उठते हुए मिरोन बोला।

उसमें सुनाने की कोई बात ही नहीं। अवदेविच अकस्मात ही विनम्र हो उठा।

अवदेविच सुनाओ वही कहानी सुनाओ।

तो भाई बात यह हुई अवदेविच ने अपना गला साफ़ किया और अपनी पतलून की जेब से तम्बाकू की थली निकाली। एक चुटकी तम्बाकू हथेली पर रख प्रसन्न नेत्रों से अपने श्रोताओं की ओर देखा और बोला जेल से एक चोर भाग निकला। पुलिसवालों ने उसे हर जगह तलाशा लेकिन क्या खयाल है तुम्हारा उनके हाथ आया वह? नहीं आया। वे भला क्या खाकर पकड़ पाते उसे! अफ़सर हार मानकर बैठ गए।

तो एक रात को रक्षक दल के अधिकारी ने मुझे बुलाया 'शाहीमहल में जाओ। आलीजाह बहादुर तुमसे कुछ बातें करना चाहते हैं। मैं अन्दर चला गया और एटेंशन खड़ा रहा, लेकिन उन्होंने मेरे कन्धे थपथपाये और बोले सुनो ईवान अवदेविच हमारी हुकूमत का सबसे बड़ा बदमाश भाग गया है। तुम्हें सिर के बल खड़ा होना पड़े तो भी कुछ नहीं तुम उसे खोज निकालो, और जब तक यह काम पूरा न कर लो मुझे अपना मुँह न दिखलाओ!' 'जो हुकुम सरकार का!' मैं बोला। फिर मैंने ज़ार की घुड़साल से तीन घोड़े छाँटे और उन्हें लेकर चल दिया। उसने सिगरेट जलाई अपने श्रोताओं के झुके हुए चेहरों पर एक निगाह डाली और धुएँ का बादल उड़ाते हुए बोला गाड़ी पर चढ़े चढ़े सारा दिन बीत गया सारी रात बीत गई तीसरे दिन मुझे वह बदमाश मास्को के पास मिला। मैंने उसे अपनी गाड़ी में लादा और घसीटकर पीटसबग ले आया। मैं पहुँचा आधी रात को। कीचड़ मिट्टी से लथपथ

सीधा आलीजाह बहादुर के महल म पहुँचा । क्या काउन्ट क्या प्रिंस सबने मुझे रोका लकिन मैं बढता ही गया । तो मैंने फाटक पर थाप दी आलीजाह क्या मैं आ सकता हू ? कौन ? 'मैं हू! मैं बोला ईवान अवदेविच सेनोलीन । कमरे म हलचल मच गई । मैंने द्वार बहादुर की आवाज सुनी 'मारिया पयोदोवना मारिया पयोदोवना जल्दी उठो और समोवार तयार करो इवान अवदेविच आ गए हैं ।

भीड क पीछे से कज़ाकों की हसी के ठहाके गूंज । कलक खोए पशुओं के बार म एक हुक्म पढते-पढते बीच म रुक गया और अतामान बत्तख की तरह अपनी गदन आग बढाकर हँसी स लोट पोट होती भीड की ओर क्रोध से देखने लगा ।

अवदेविच के चेहरे पर बादल छा गए । वह हसते हुए लोगो की ओर खोयी खोयी नजर से देखने लगा ।

सुनो तो ! वह बोला ।

हा ! हा ! हा !

ओह ! यह तो हसाते-हसाते मार डालगा आज ।

समोवार तयार करो अवदेविच आ गए हैं !

लोग फिर हस-हँसकर उसटे हान लग ।

भीड छँटने लगी । प्रशासन-गृह क बाहर स्तीपान अस्ताखोव और हवाचक्की का मालिक लम्बा चौडा लम्बी-पतली टागो वाला कज़ाक बदन म गर्मी लाने के लिए बफ पर आपस म कुश्ती लडते दीख ।

बाकी कज़ाक वहीं जमा होकर सलाहें देने लग—

द मारो उठाकर इसको !

कर दो जरा इसका दिमाग ठिकान !

बड होशियार बनते हो वहाँ से मत पकडो ! बूढा काधुलिन गौरैया की तरह फुदकते हुए चीखा और जोश म अपनी नीली पडी नाक की नोक पर अटकी चमकती हुई ओस की बूँद की ओर उसका ध्यान ही नही गया ।

८

सभा से लौटते ही पन्तेली अपने कमरे में गया। इधर कुछ दिनों से इलीनिचना का स्वास्थ्य खराब चल रहा था। उसके सूखे चेहरे पर थकान और दर्द झलक रहा था। वह फर्श के एक मोटे गद्दे पर तकिये के सहारे लेटी हुई थी। पन्तेली के पैरों की आहट सुनकर उसने अपना सिर घुमाया तो उसके नेत्र पति की दाढ़ी पर ठहर गए और उसके नथुने फूल गए। किन्तु धूप के बदले उसे केवल पाले तथा भेड़ की खाल की बास आई। आज कोई गम्भीर बात हो गई लगती है, उसने सोचा और सन्तोष से बुनाई की अपनी सलाइयाँ एक ओर रख दीं।

'तो लकड़ा-कटाई का क्या रहा?'

'बृहस्पतिवार को शुरू होगी।' पन्तेली ने अपनी दाढ़ी सहलाते हुए कहा, 'बृहस्पतिवार की सुबह...' खाट के पास में रखे बड़े सन्दूक पर बैठते हुए वह बोला, 'क्या तबीयत कुछ अच्छी है?'

'वैसी ही है। एक-एक जोड़ में दर्द है।'

'मैंने कहा था पानी में न जाना। तुम जानती थीं कि शरद में पानी में जाओगी तो क्या होगा—बेवकूफ हो निरी!' पन्तेली ने क्रोध में जमीन पर अपने बेंत से घेरे बनाते हुए कहा, 'और सारी औरतें हैं घर में, कोई भी पटसन भिगो देती... भाड़ में जाए तुम्हारी पटसन!'

'पटसन को बरबाद तो कर नहीं सकती थी मैं... घर में कोई औरत नहीं, [illegible] की बीवी उसके साथ हल जोतने गई थी, प्योत्र और दार्या भी वहीं गये थे।'

'नताल्या का क्या हाल है?' पन्तेली ने बिस्तर पर झुकते हुए एकाएक पूछा।

इलीनिचना के जवाब में परेशानी झलकी—

"मेरी समझ में नहीं आता कि किया क्या जाए। अभी उस दिन फिर रो रही थी। मैं हाते में पहुँची तो खलिहान का दरवाजा चौपट खुला पड़ा मिला। मैं अन्दर गई तो बुखार रखने की जगह नताल्या को खड़ा देखा। मैंने उससे पूछा, क्या बात है? बोली कि सिर में दर्द है। सच्ची बात का पता मुझे नहीं चल पाता।"

हो सकता है कि उसके पैर भारी हों

मेरी समझ से यह बात नहीं है। या तो किसी ने उस पर बुरी निगाह डाली है या फिर औरत के कारण

वह फिर उस औरत के साथ तो नहीं पड़ गया ?

राम राम यह क्या ! क्या कह रहे हो तुम ? भय से कातर हो इलीनिचा चिल्लाई स्तीपान जो है ? तुम उसे निरा बुद्धू समझते हो क्या ! नहीं मैंने ऐसा कुछ नहीं सुना।

पैन्तेली अपनी पत्नी के पास थोड़ी देर और बैठा फिर बाहर चला गया। ग्रिगोरी अपने कमरे में बैठा मछली के शिकार की कटियों को पैना करते मिला। नताल्या उन पर सूअर की चर्बी लगाती और एक एक कटिया को सावधानी से लपेटकर अलग अलग रखती रही। बगल से गुजरते जाते समय पैन्तेली ने उस प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा। उसके पीले गालों पर शरद् ऋतु की पत्तियों की-सी लाली दौड़ गई। वह इस एक महीने में बहुत दुबली हो गई थी। साथ ही आँखों में नया दु ख डूबता उतराता नजर आया। बूढ़ा दरवाजे पर ठिठका। यह औरत लौंडिया को मार डाल रहा है ! बेंच पर झुकी नताल्या को देखते ही उसके मन में विचार उठा।

किनार रख इन कटियों को ! शैतान उठा ले तुझे ! सहसा ही क्रोध से तमककर बूढ़ा चीख उठा। ग्रिगोरी ने आश्चर्य से अपने पिता की ओर देखा।

पापा बस दो कटियाँ और तेज करनी हैं।

मैं कहता हूँ कि किनार रख दे इसे। लकड़ी की कटाई की तयारी कर। हलज बिलकुल बेकार पड़ी हैं और तू बैठा कटिया पर धार रख रहा है ! पन्तेली ने कुछ शान्त होते हुए कहा और जाते-जाते दरवाजे पर कुछ रुका। उसने कुछ और कहना चाहा लेकिन वह कहा नहीं और चला गया। बाहर आकर उसने अपना रहा-सहा क्रोध प्योत्र पर उतारा। ग्रिगोरी ने कोट खूँटी से खींचा कि हाते से पिता की आवाज उसके कानों में पड़ी—

आलसी की गाँठ ! तूने जानवरों को पानी नहीं पिलाया अभी तक ? और बाड़ के पास की टाल को कौन खेदता रहा है ? मैंने कहा था न कि

कोई छुएगा नहीं उसको ? अच्छी-से अच्छी सूखी घास कारों को अभी खिला दोगे तो वसन्त में उन्हें क्या खिलाओगे—मेरा सिर ?

बृहस्पतिवार को भोर में दो घंटे पहले इलोचिना उठ बठी और दारया को आवाज देने लगी। उठ बठ ! आग जलाने का समय हो गया !

दारया समीज पहने स्टोव की ओर दौड़ी। दियासलाई से आग जलाई।

तयार हो जाओ चलने के लिए ! प्योत्र ने सिगरेट जलाते हुए खाँसा और अपनी पत्नी को कोहनियाया।

मैं कहती हूं कि लोग नतात्या को क्यों नहीं जगाते ? क्या मैं अपने को बीच से फाड़ कर ल ? दारया ने अब भी औंघाती-सी में कहा।

जाओ और तुम स्वयं उसे जगा दो। प्योत्र ने उसे सलाह दी। किन्तु सलाह बेकार थी क्योंकि नतात्या पहले ही जाग गई थी और झटपट ब्लाउज पहन आग के लिए ईंधन लाने को चल दी थी। उसे देख जठानी ने हुक्म चलाया 'थोड़ी-सी बल्लियाँ लगी भीतर उधर से !

दारया दून्या से कह दो कि जाकर थोड़ा पानी ले आए—सुनती हो ? इलोचिना ने बावर्चीखाने में कठिनाई से इधर-से-उधर जाते हुए भर्राये हुए गले में कहा।

बावर्चीखाने से घोड़ों के सानों और मानव-शरीरों की महक आती रही थी। दारया फल्टबूट पहने इधर-से-उधर व्यस्त घूम रही थी। उसकी गुलाबी समीज में उसकी छोटी छोटी छातियाँ रह रहकर हिल रही थी। मैवाहिक जीवन के कारण उसके बदन में कहीं किसी तरह का ढीलापन न आया था। सरपत की डंडी की तरह लम्बी पतली और कामल दारया देखने में बिलकुल लड़की मालूम होती थी। वह तेजी से अपने कन्धे झुलाते हुए चलती और अपने पति की चाय चिल्लाहट पर मुस्कराती। मुस्कराती तो उसके दाँतों की उजली पाँत खिल उठती।

'तुम्हें रातों रात कुछ बल्लियाँ ले आनी चाहिए थीं भट्ठी में भूल गई होती अब तक। माँ ने डाँटा।

मैं भूल गई थी अब क्या करूँ ? दारया ने जवाब दिया।

खाना तयार होने से पहले ही तड़का हो गया। खीर में फूंक मार मारकर पन्तेली जल्दी-जल्दी नाश्ता करने लगा। ग्रिगोरी किसी चिन्ता में डूबा धीरे धीरे खाता रहा। प्योत्र दून्या को चिढ़ाने में रस लेने लगा था। उसके दाँतों में दर्द था और उसने मुँह बाँध रखा था।

सड़क पर लोग अपनी अपनी स्लेज गाड़ियाँ भगाये चले जा रहे थे। भोर के आकाश के नीचे लोग बैलों की स्लेजों को दोन की तरफ ले जा रहे थे। ऐसे में ग्रिगोरी और प्योत्र अपनी स्लेजों को जोतने के लिए बाहर आये। जाते समय ग्रिगोरी ने पत्नी से भेंट में मिला मुलायम रूमाल अपनी गर्दन में बाँध लिया। उसके सिर के ऊपर से काँव-काँव करता एक कौआ गुजरा। उसकी ओर देख प्योत्र बोला—ठंड से बचने दक्षिण जा रहा है।

एक छोटे-से गुलाबी बादल के पीछे चाँद का टुकड़ा यों चमका जैसे कि कोई भोली कम-उम्र लड़की हलके हलके मुसकरा रही हो। चिमनियों से धुआँ उठा और पकड़ में न आनेवाले सुनहरे ढलते चाँद की ओर बढ़ा।

मेलेखोव के मकान के सामने का दोन का हिस्सा पूरी तरह जमा न था। किनारे की बर्फ कड़ी थी। काली चट्टान की तरफ बर्फ की दरार चौड़ी थी और धमकी-सी देती थी।

पन्तेली लड़कों से पीछे आने को कहकर बूढ़े बैलों को लेकर पहले ही चल दिया। नदी के पास के ढाल पर प्योत्र और ग्रिगोरी को अनीकुश्का नजर आया। उसकी नाटी बीमार पत्नी ने रासें थाम रखी थीं और वह खुद बैलों की बगल में चल रहा था। प्योत्र ने उसे आवाज दी—क्या, पड़ोसी, तुम्हारी पत्नी तो तुम्हारे साथ नहीं जा रही न?

अनीकुश्का मुसकराया और उन दो भाइयों से बातचीत करने को मुड़ा।

नहीं, वह मेरे साथ जायगी। बदन में जरा गर्मी बनी रहेगी। उसने उत्तर दिया।

ऐसी दुबली-पतली तो है, उससे भला क्या गर्मी मिलेगी!

'बात सच है और देखो कितनी जई खिलाता हूँ मैं इसे लेकिन यह है कि मोटी होकर ही नहीं देती।

'हम लोग एक ही टुकड़ी में लकड़ा काटेंगे क्या?' पिगारी ने स्लेज से कूदकर नीचे आते हुए कहा।

मगर तुम सिगरेट पिलाओगे तो मैं तुम्हारे साथ हो रहूँगा।

तुम हमेशा से ठग रहे हो अनीकुश्का!

दुनिया की सबसे प्यारी चीज़ें या तो माँगी जाती हैं या चुराई जाती हैं अनीकुश्का ने अपने जनाने चेहरे पर मुसकान लाते हुए कहा।

तीनों साथ-साथ चल दिए। जंगल में पाले और कवारा चाँदी की गोट टँकी हुई थी। अनीकुश्का अपने सिर के ऊपर की डालों पर चाबुक सटकारता आगे चल रहा था। इससे नुकीली बर्फ़ के फूल रह रहकर उसकी पत्नी के ऊपर बरस रहे थे।

अरे शैतान की औलाद! अपना यह खिलवाड़ बन्द कर! पत्नी ने बर्फ़ झाड़ते हुए चिल्लाकर कहा।

इसको बर्फ़ में लोट दे दे एक! प्योत्र ने राय दी और बैलों की रफ़्तार तेज करने के लिए चाबुक घुमाया।

सड़क के मोड़ पर उन्हें गाँव की तरफ़ बन से जाता स्तीपान अस्ताखोव मिला। उसके चमड़े के जूते बर्फ़ पर चरमरा रहे थे और उसके घुँघराले बाल सफ़ेद अंगूरों के गुच्छे की तरह उसकी फ़र की टोपी के बाहर लटक रहे थे।

अरे स्तीपान सड़क भूल गए? उसे देखते ही अनीकुश्का चिल्लाया।

नाश हो सड़क भूलने वाले का! हम तो घूम रहे थे कि एक कटे पेड़ से स्लेज टकराई और ठीक बीच से दो हो गई। इसलिए मुझे वापस जाना पड़ रहा है। स्तीपान ने कोसा। प्योत्र के पास से निकलते ही एकाएक उसकी भयानक आँखें सिकुड़ गई।

'स्लेज पीछे छोड़ आए हो?' अनीकुश्का ने पीछे मुड़कर पूछा।

स्तीपान ने अपना हाथ हिलाया चाबुक सटकारी और प्रिगारी को मार क्रूर दृष्टि से देखा। उन तीनों के कुछ दूर आगे बढ़ने पर सड़क के

जोर जोर से पढ सकता था। उसने किताब के चिकटहे पृष्ठों पर तिरस्कारपूर्ण दृष्टि डाली।

इसमें इतनी चिकनाहट है कि इसकी सवइयाँ बनाई जा सकती हैं।' उसने परेशानी से कहा।

क्रिस्तोनिया ठहाका मारकर हँसा। दाविद खुलकर मुसकराया। किन्तु स्तॉकमन थोड़ी देर चुप रहा और हँसी मजाक खतम होने पर बोला 'मीशा पढ़ो इसे। दिलचस्प किताब है यह। इसमें कज्जाकों के बारे में ही सब-कुछ लिखा है।

मेज पर सिर झुकाकर कोशेवोई ने बड़ी कठिनाई से पढा दोन के कज्जाकों का संक्षिप्त इतिहास। फिर उत्सुकता भरे ढंग से उसने चारों ओर देखा।

पढ़ो। कोतल्यारोव बोला।

तीन दिन तक शाम को बड़ी मेहनत कर उन्होंने अतीत के उन्मुक्त जीवन के विषय में और पुगाचोव स्तेन्का राज़ीन और कोंद्राती बुलावीन के विषय में जाना समझा। अन्त में वे आधुनिक काल पर आये। अज्ञात लेखक ने कज्जाकों की दयनीय अवस्था पर लानत बरसाई थी। अधिकारियों वर्तमान प्रणाली और जार की सरकार का मजाक बनाया था और तानाशाही के किराये के टट्टू बननेवाले कज्जाक सम्प्रदाय को बहुत बुरा भला कहा था। नतीजा यह कि सुनते सुनते लोग जोश में आते और आपस में झगड़ने लगे। ऐसे में दरवाजे पर बैठा स्तॉकमन मुसकराता और आराम से पाइप पीता।

ठीक बात है। बिलकुल सही लिखा है। क्रिस्तोनिया कह उठता।

कज्जाक ऐसी फूहड़ जिन्दगी बसर करने लगे इसमें भला हमारा क्या कसूर ? कोशेवोई हैरानी से हाथ फैलाता।

लम्बे दुबले पतले इंजीनियर कोतल्यारोव की हड्डी हड्डी में कज्जाकी परम्परा भिदी हुई थी। इसलिए वह उत्तेजित हो उठता और कज्जाकों का पक्ष लेता तो उसकी उभरी हुई आँखें जलने लगतीं।

क्रिस्तोनिया तुम तो देहाती किसान हो—मुजिक! तुममें तो कज्जाक खून ऐसा है जैसे बाल्टी में एक बूँद। तुम्हारी माँ का विवाह वोरोनेज

के एक मुज़िक से हुआ था।

तुम बेवकूफ हो बबवूफ! क्रिस्तोनिया गरम होकर जवाब देता।

'मामान हो व मुज़िक!'

क्या मुज़िक मा तुम्हारी तरह ही आदमी नहीं होते?

मुज़िक के बदन में होती है चर्बी और घनी दाढ़ियों का पूरा और बस!

भाई मेरे जब मैं पीतर्सबुर्ग में काम करने गया तो मैंने कितनी ही बातें सुना। क्रिस्तोनिया वाला तो उसके स्वर में रूखिगी लहजा उजागर हो उठा एक बार ऐसा हुआ कि राजमहल के अन्दर और बाहर हमारा पहरा था। हम घोड़ों पर सवार होकर दीवारों के चारों ओर चक्कर लगाते—दो इधर दो उधर। जब हम एक-दूसरे से मिलते तो पूछते सब अमन है वहां कोई गड़बड़ी तो नहीं है? और फिर हम आगे बढ़ जाते। हम लोगों का रुकना और बातें करना मना था। हम लोगों का सूरत-शक्ल देखकर रखा जाता था। जब हम दरवाजे पर तैनात किया जाता तो देखने-सुनने में एक-से लोग छांट जाते। यही वजह है कि एक बार नाई को मेरी दाढ़ी रंगनी पड़ी। पहरे पर मेरा ड्यूटी एक एम बरदार ने मेरे थी जिसकी दाढ़ी का रंग दुश्मन घोड़े का-सा था। उन्होंने रेजीमेंट-की रेजीमेंट खोज डाली लेकिन उसकी सूरत-शक्ल का-सा दूसरा नहीं मिला। इसलिए कमांडर ने मुझे ही नाई के पास भेजा कि जाकर मैं अपनी दाढ़ी रंगवा लूं। मां दाढ़ी रंगवाने के बाद शीशे में मैंने जो अपनी शक्ल देखी तो मेरा दिल टूट गया जैसे किसी ने जमते चूल्हे पर रख दिया मुझे!

लेकिन क्रिस्तोनिया इस सबमें इस सवाल का क्या सम्बन्ध? कालल्याराव बीच में टपका।

'हम उन लोगों के बारे में बताता। तुम्हारा दादा की सन्तान जाए भाड़ में! उससे हम क्या लेना-देना!'

हाँ तो मैं अभी कह रहा था कि एक बार मुझे बाहर पहरा देना पड़ा। हम लोग घोड़े पर सवार थे मैं और मेरा साथी कि कुछ विद्यार्थी कोने से दौड़े आए। मोटे इतने थे कि जितनी मक्खियाँ। हम

देखते ही वे चिल्लाये वाह ! और देखते देखते उन्होंने हम चारो ओर से घेर लिया। बोले कज्जाको ! तुम किसलिए घुड़सवारी कर रहे हो ? मैं बोला हम पहरा दे रहे हैं रास्ता छोड़ दो ! और मैंने तलवार पर हाथ रखा। एक बोला कज्जाक मुझ पर शक मत करो। मैं खुद कामेन्स्काया जिले का हूँ और मैं विद्यालयविश्व या विश्वविद्यालय या उसे जो चाहो तुम कहो उसमे पढ़ता हूँ। हम आगे बढ़े कि उनमे से एक ने दस रूबल का नोट निकाला और बोला मेरे स्वर्गवासी पिता के स्वास्थ्य के लिए पी लेना। और अपनी जेब से उसने एक चित्र निकाला देखो यह मेरे पिता हैं तसवीर यादगार के लिए रख लो। हाँ तो हमने चित्र ले लिया हम मना नहीं कर सके। फिर वे चल गये। इसी समय कुछ आदमियो को साथ लिये एक अधिकारी पीछे के दरवाजे से दौड़ता आया। क्या हुआ ? वह बोला। मैंने उसे बतलाया कि कुछ विद्यार्थी आये थे और हमसे बातें करते रहे थे। आज्ञा के अनुसार हम उन्हें तलवार के घाट उतारने को बढ़े कि वे चल दिए तो हम आगे बढ़ दिए। ड्यूटी खतम कर जब हम लौटे तो हमने कारपोरल को दस रूबल के नोट की कमाई की बात बताई तसवीर दिखाई और कहा कि हम इस बूढ़े के स्वास्थ्य के लिए पीना चाहते हैं। शाम को कारपोरल वोद्का खरीद लाया। दो दिन मौज में बीते। तब हमे मालूम हुआ कि उस दागले विद्यार्थी ने हमें जर्मनी के सबसे बड़े विद्रोही का चित्र दे दिया था। मैंने उसे अपने बिस्तर के ऊपर लटका दिया। बूढ़े की दाढ़ी भूरी थी। अच्छा भला आदमी लगता था। पर ट्रूप-कमाडर ने एक दिन उसे देख लिया। बोला यह तसवीर तुम कहाँ से लाये ? कमीने कहीं के ! मैंने उसको बतला दिया। वह गरजने लगा जानते हो यह कौन है ? यह उनका अतामान कार्ल .... मैं उसका नाम भूल गया। क्या था भला ?

कार्ल मॉक्स ? स्तॉकमन ने मुसकराते हुए पूछा।

'हाँ-हाँ ! कार्ल माक्स ! प्रिन्शोनिया ने प्रसन्न होते हुए कहा भले आदमी ने हमें मुसीबत में डाल दिया। जार का बेटा अलेक्सेयई और उसको पढ़ानेवाले गारद के कमरे में अक्सर आते थे। यो भी देख

सेत तो जान पर आ बनती। सोचा ता क्या होता तब ?

और तुम मुजिका के गुण गाते नहीं थकते। कभी बग्माणी की उन्होंने तुम्हारे साथ। कान्त्याराव टुपका।

लेकिन हमने ता दसों स्वर्लों की पी डाली थी हमने उस दाढ़ी वाले भ्रान के नाम पर पी था पर हम पी तो गए हा थ।

वह है भी इस लायक कि उसके स्वास्थ्य के लिए पी जाए। अपने सिगरेट-होल्डर में सुलगते हुए स्तोकमन मुसकराया।

बता कौन-सी भलाई की उसने? कोत्ल्याराव ने सवाल किया।

फिर किसी दिन बतलाऊंगा आज तो देर हो रही है। स्तोक मन ने अपनी अंगुलियों से सिगरेट-होल्डर साधा और दूसरे सिरे को दूसरे हाथ से ठोककर बची सिगरेट का टुकड़ा निकालकर बाहर फेंक दिया।

काफी लम्बी छानबीन और दन्त-मरल के बाद दस कज्जाकों का दल स्तोकमन की बक्शाप में हर दिन आने-जाने लगा। उस दल की जान था स्तोकमन और उसके सामने था एक उद्देश्य और उसे केवल वह समझता था। वह अपनी सीधी-सादी मान्यताओं और विचार धाराओं से इन लोगों के दिमाग़ों को या कुरेदता जैसे कोई कीड़ा लकड़ी को काटता है। वह उन लोगों के मनों में वर्तमान प्रणाली के प्रति विरोध एवं घृणा कूट-कूट कर धीरे-धीरे भरता। आरम्भ में उसे अविश्वास-रूपी ठोस इस्पात से लोहा लेना पड़ा पर वह घबराया नहीं। वह अविश्वास भी तो खत्म हो सकता था।

१०

दोन के बाएँ किनारे के रेतीले ढालू टीले पर ऊपरी दोन का एक सबसे प्राचीन जिला व्योशेन्स्काया पड़ता था। पहले इसका नाम चिगोनाकी था पर प्योत्र प्रथम के राज्यकाल में यह नष्ट कर दिया गया था और इसका नाम व्योशेन्स्काया रख दिया गया था। वारोनेज से आज़ोव जाने वाले जलमार्ग का यह प्रमुख एवं महत्वपूर्ण स्थान था।

व्योशेन्स्काया के ठीक सामने दोन तातार-कमान की तरह मुड़ती है

और एकदम दाएं हाथ को जाकर बाजकी के छोटे-से गाँव में पास फिर ढलान से सीधी हो जाती है। यह अपना हरा-नीला पानी पश्चिमी किनारे की खड़िया की सफेद पहाड़ियों की तलहटी में से जाता है और दायीं ओर के घने गाँवों तथा बायीं ओर के यहाँ-वहाँ बसे जिलों को पार करती अजोव के नीले सागर में जा मिलती है।

उस्त-खोपेरस्काया में इसमें मिलती है महायक नदी खोपर और उस्त मेदवेदित्स्काया में मेदवेदित्सा। इसके बाद यह जल से भरपूर लहराती चली जाती है।

व्येशेन्स्काया पीली बालू के टीलों पर बसा है। गाँव सूना-सूना-सा लगता है। बाग-बगीचियों नाम को भी नहीं हैं। चौक में एक पुराना गिरजा है। जाने कितने वर्षों पहले बना था! भूरा पड़ गया है।

चौक से नदी के समानान्तर [illegible] सड़कें चली गई हैं। जिस स्थान पर दोन बाजकी की ओर मोड़ लेती है वहाँ किनारों के झुरमुट के बीच एक झील बनती है। यह झील इतनी चौड़ी है जितनी कि गरमी के दिनों में दोन रहती है। व्येशेन्स्काया के दूर के सिरे से एक ढाल उस झील तक आता है। यहाँ जरा छोटे चौक में सुनहरे तेज काँटोंवाले पौधों के बीच एक दूसरा गिरजा है। उसकी छत और गुम्बदों का रंग हरा है जैसे कि झील के पार के किनारों की हरियाली से होड़ लगी हो।

दिसम्बर में एक रविवार को जिले के सारे गाँवों के लगभग पन्द्रह सौ नवयुवक कज्जाकों की भीड़ पुराने गिरजे के बाहर के चौक में जमा हुई। प्रार्थना समाप्त हुई। बहादुर दिखलाई देने वाले लम्बी सैनिक सेवा के फौजी तमगों से सजे प्रौढ़ कज्जाक सीनियर सार्जेंट ने हुक्म दिया और नवयुवक तुरन्त ही दो लम्बी पंक्तियों में विभक्त होकर अटेंशन खड़े हो गए। वक्त का लिबास डाटे नये फौजी अफसर का बरान-कोट पहने अतामान अन्दर आया। उसकी एड़ियाँ झनझना रही थीं और उसके पास फौजी सिपाही था।

पास खड़े ग्रिगोरी मेलेखोव के नाना में मीत्का कोर्शुनोव की आवाज आई "बूट बुरी तरह काट रहे हैं"

"मेल जाओ अतामान बना दिए जाओगे

'हम जल्दी ही अन्दर चलेंगे न ?'

जैसे कि इसी बात के समर्थन में एक या दो कदम पीछे हटकर सीनियर सार्जेंट ने अपनी एड़ियाँ उचकाई और ऊँचे स्वर में बोला
राइट टर्न 'फ़ॉरवर्ड मार्च'!

पंक्तियाँ चौड़े फाटक से गुजरीं तो पैरों की आवाज़ से गुम्बद बजने लगा।

ग्रिगोरी ने पादरी द्वारा पढ़ी गई राजभक्ति की शपथ की ओर बिलकुल ध्यान नहीं दिया। मीत्का कोरशुनोव के नये जूते काट रहे थे और दर्द से उसका चेहरा बिगड़ा जा रहा था। ग्रिगोरी की ऊँची उठी हुई बाँह सुन्न पड़ गई। उसके दिमाग में घुल-मिले विचारों की लड़ी-की-लड़ी चक्कर काटने लगी। जब उसने अनजाने अपने ओठों के स्पर्श में गीली क्रास की ईसा की रजत-मूर्ति का चुम्बन लिया तो उसे अक्सीनिया और अपनी पत्नी का ध्यान हो आया। उसकी आँखों के आगे बिजली की तरह कौंध गया एक दृश्य—जंगल' पेड़ों के भूरे तने उजली धूप से मढ़ी डालियाँ अक्सीनिया की आँसुओं से भरी कजरारी आँखें और आँखों पर एक रूमाल।

पूजा के बाद मार्च कराकर उनको फिर चौक में लाकर पंक्तियों में बाँट दिया। नाक छिनककर और लोगों की नज़र बचाते हुए अँगुलियाँ अपने ओवरकोट के अस्तर से पोंछते हुए सार्जेंट ने कहा

अब आप साधारण जवान नहीं बल्कि कज़्ज़ाक बन गए हैं। आपने शपथ ली है। आपको समझना चाहिए कि इसका क्या अर्थ है और आपके कर्तव्य क्या हैं। आप कज़्ज़ाक बनने की स्थिति तक आ गए हैं। अब आपको अपने सम्मान की रक्षा करनी है अपने माता-पिता की आज्ञाओं का पालन करना है और ऐसे ही दूसरे कर्तव्य निभाने हैं। कभी आप लड़के थे। उस समय आपने तरह-तरह के खेल खेले। लेकिन अब आपको भविष्य की अपनी सेवा के विषय में सोचना है। एक साल के अन्दर ही अन्दर आपको सेना में बुला लिया जाएगा

अब सार्जेंट ने फिर से नाक साफ़ की हाथ झटका और खरगोश के फर के अपने दस्तानों को सम्हालते हुए भाषण समाप्त किया

और अब आपके माता पिता को आपकी फौजी नौकरी के लिए जरूरी साज-सामान की चिन्ता करनी चाहिए। आपको एक फौजी घोड़ा चाहिए और ऐसी ही दूसरी चीजें और अब आप घर जाएँ भगवान् आपकी सहायता करे!

ग्रिगोरी और मीत्का ने अपने गाँव के सारे साथियों को साथ लिया और वे गाँव की ओर बढ चले।

वे लोग दोन के किनारे-किनारे चलने लगे। मकानों से उठनेवाला धुआँ तातास्की गाँव पर लहराता रहा। मीत्का लँगड़ा-लँगड़ाकर दूसरों के पीछे आता रहा। उसने एक लकड़ी का सहारा लेना शुरू कर दिया था। लकड़ी उसने एक बाड़ से तोड़ ली थी।

जूते उतार लो एक साथी ने सलाह दी।

जूते उतार दूँगा तो पैर ठंड से ठिठुर जाएगा मीत्का ने सकुचते हुए जवाब दिया।

'मौजा तो रहेगा पैरों में!'

इस पर मीत्का बर्फ पर बैठ गया और बूट उतारने लगा। इसके बाद अपने मौजे से लैस पैरों पर काफी जोर डाल-डालकर वह आगे बढ़ा। मोटी बुनाई के मौजे के निशान बर्फ पर बनने लगे।

किस सड़क से चलेंगे हम लोग? भारी भरकम बड़े सिर वाले अनिकुई बेन्याक ने पूछा।

दोन के किनारे के रास्ते से ग्रिगोरी ने सबकी ओर से कहा।

फिर एक-दूसरे से बात करते हँसते-हँसाते वे आगे-ही आगे बढ़ते गये। तातास्की और ग्रोमकोवस्की के बीच दोन पार करते एक भेड़िये पर सबसे पहले निगाह मीत्का की पड़ी। बोला

लड़को वह देखो भेड़िया"

कज्ज़ाक-नवयुवकों ने चीखना चिल्लाना शुरू किया तो भेड़िया दौड़ा। फिर एक किनारे होकर खड़ा हो गया—उस पार के किनारे के पास ही।

'पकड़ लो इसे!'

'जी हाँ!'

मीत्का भेड़िया तुम्हें देख रहा है कि तुम किस तरह चलते हो !
कैसी मोटी गर्दन है उसकी !

'लो वह चल भी दिया !'

भूरी शक्ल कुछ देर तक यों खड़ी रही जैसे कि ग्रेनाइट पत्थर की बनी हो। फिर भेड़िये ने तेज़ी से एक उछाल मारी और किनारे के सरपतों में ग़ायब हो गया।

उनके गाँव पहुँचते-पहुँचते दोनों समय मिल गए। ग्रिगोरी ने बर्फ़ पार कर अपने घर का रास्ता पकड़ा। हाते में एक खाली स्लेज खड़ी देखी, बाड़ के पास कटी हुई झाड़ियों का ढेर देखा और गौरयों की चहचहाहट सुनी। मानस-गन्ध मिली। कोयले का करखा चमका और अस्तबलों की खास क़िस्म की बू नाक में आई।

वह सीढ़ियों पर पहुँचा और खिड़की से झाँका। लटकते हुए लैम्प में कमरे में धुंधला प्रकाश फैल रहा था। खिड़की की ओर पीठ किए प्योत्र प्रकाश में खड़ा था। दरवाज़े पर रखी झाड़ू से अपने जूतों की बर्फ़ झाड़ ग्रिगोरी भाप से भरे बावर्चीखाने में घुसा।

हाँ तो मैं लौट आया।

बड़ी जल्दी आये। बर्फ़ से ठिठुर गए होगे ? प्योत्र ने चिन्ता से भरे स्वर में कहा।

पन्तली झुका सिर हाथों से थामे घुटनों पर कुहनियाँ टेके बैठा था। दारया चर्खे पर सूत कात रही थी। नताल्या ग्रिगोरी की ओर पीठ किये मेज़ के पास खड़ी थी और उसके आने पर घूमी नहीं। बावर्चीखाने पर सरसरी-सी नज़र डालकर ग्रिगोरी ने प्योत्र पर अपनी आँखें स्थिर कर दीं। अपने भाई के उत्तेजित और परेशान चेहरे को देखते ही उसकी समझ में आ गया कि कहीं कुछ दाल में काला है।

समय ले ली ? प्योत्र ने पूछा।

हाँ।

ग्रिगोरी ने अपने कपड़े धीरे-धीरे उतारे और उन समस्त सम्भावनाओं पर विचार कर गया जिनके कारण उसके घर में आने पर लोग इतने अजीब-अजीब-से रहे। दूनीचिका सास के कमरे में

निकली। उसके चेहरे से नाराजगी टपक रही थी।

इस सबकी जड़ में नताल्या है! बेंच पर अपने पिता की बगल में बैठते हुए ग्रिगोरी ने सोचा।

'इसको खाना ला दो।' माँ ने ग्रिगोरी की ओर इशारा करके दार्या से कहा। कताई के बीच में छोड़ दार्या स्टोव के पास गयी। बावर्चीखाने में पूरी तरह सन्नाटा था। केवल मक्खी और उसके हाल में पैदा हुए बच्चों की साँसों की आवाज सुनाई पड़ रही थी।

ग्रिगोरी ने शोरबे की चुस्की ली और नताल्या की ओर देखा पर उसका चेहरा नजर नहीं आया। वह उसकी ओर बाजू कर बैठी थी और उसका सिर बुनाई की सलाइयों पर झुका हुआ था। पन्तेली को सबसे पहले यह चुप्पी खली और वह झूठ-मूठ ही खाँसते हुए बोला नताल्या अपने मायके जाने को कह रही है।

ग्रिगोरी ने रोटी के कुछ टुकड़ों को तोड़कर गेंद बनाई और कुछ नहीं कहा।

पर बात क्या है? पिता ने पूछा। उसका निचला होंठ काँप रहा था। यह उसके क्रोध के भड़कने का पहला लक्षण था।

मैं क्या जानूँ? ग्रिगोरी ने उठकर आँख बचाते हुए कहा।

'लेकिन मैं जानता हूँ।' उसके पिता ने तेज होते हुए कहा।

अरे चिल्लाओ तो नहीं! इलीनिचना बीच में बोली।

हाँ चिल्लाने की क्या जरूरत है? प्योत्र खिड़की से उठा और कमरे के बीच में आकर बोला भई यह तो उस पर है। अगर यहाँ रहना चाहती है तो रहे और नहीं चाहती तो ईश्वर उस पर दया करे!

मैं यह बतलाने नहीं आ रहा कि गलती नताल्या की है या नहीं। बस तो पति का छोड़ देना बेइज्जती की बात है और पाप है पर मैं इसे इल्जाम नहीं देता। यह उसका कसूर नहीं है बल्कि कसूर इस सूअर के बच्चे का है! पन्तेली ने स्टोव के पास बैठकर तरफ ग्रिगोरी की तरफ अंगुली दिखाई।

मैंने किसका क्या कर दिया? ग्रिगोरी ने पूछा।

तू नहीं जानता बदमाश कहीं का ! तुझे नहीं मालूम ?

नहीं मैं नहीं जानता ।

पन्तेली बेंच में उछल पड़ा तो बेंच उलट गई और सीधी ग्रिगोरी की ओर गिर गई । नताल्या के हाथ से मोजे नीचे गिर गए और सलाइयाँ झनझनाकर दूर जा गिरी । उस आवाज के कारण बिल्ली का बच्चा स्टोव के पास से उछलकर सामने आया और ऊन के गोले से खेलने लगा ।

बूढ़े ने धीमे धीमे विचारपूर्वक कहना आरम्भ किया मुझे तुमसे यह कहना है कि अगर तुम नताल्या के साथ नहीं रहना चाहते तो यहाँ से निकल जाओ और चले जाओ जहाँ तुम्हारा भाग समाय वहाँ । बस मुझे यही तुमसे कहना है । चले जाओ जहाँ तुम्हारा सींग समाए वहाँ । उसने शान्त स्वर में दोहराया और बेंच सीधी की ।

दुन्या बिस्तरे पर बैठा सहमी नजरों से इधर-उधर देखती रही ।

जो कुछ मैं कह रहा हूँ पापा गुस्से में नहीं कह रहा । ग्रिगोरी का स्वर खोखला हो उठा यह शादी मैंने अपनी मर्जी से नहीं की यह शादी पक्की की तुमने । जहाँ तक नताल्या का सवाल है मैं उसे नहीं रोकता । अगर वह अपने बाप के यहाँ जाना चाहती है तो जाए ।

तू खुद क्यों नहीं चला जाता यहाँ से ?

मैं चला जाऊँगा ।

जा जा जहन्नुम में जा !

जा रहा हूँ, जा रहा हूँ चीखो नहीं । ग्रिगोरी ने खाट पर पड़े अपने छोटे फरकोट को लेने के लिए हाथ बढ़ाया । उसके नथुने फूल रहे थे । वह भी पिता की तरह ही क्रोध से उबल रहा था । वही तुर्क और बरबादों का मिला-जुला खून उसकी नसों में भी बह रहा था । उस समय उन दोनों की नस्लें एक-दूसरे में ऐसी मिल रही थीं कि बस !

कहाँ जा रहा है तू ? ग्रिगोरी की बाँह पकड़ इलीचिना चीखी । किन्तु उसे यत्नपूर्वक पकड़ा ... उसने उससे फेर की अपनी टोपी छीन ली ।

जाने दो इसे । पाजी सुअर कहीं का ! जाने दो भाड़ में भाड़

निकली। उसके चेहरे से नाराजगी टपक रही थी।

इस सबकी जड़ में नताल्या है। मेज पर अपने पिता की बगल में बैठते हुए ग्रिगोरी ने सोचा।

इसको खाना खा दो। माँ ने ग्रिगोरी की ओर इशारा कर दारया से कहा। कताई की बीच में छोड़ दारया स्टोव के पास गयी। बावर्चीखाने में पूरी तरह सन्नाटा था। केवल बकरी और उसके हाल में पैदा हुए बच्चों की साँसों की आवाज सुनाई पड़ रही थी।

ग्रिगोरी ने शोरबे की चुस्की ली और नताल्या की ओर देखा पर उसका चेहरा नजर नहीं आया। वह उसकी ओर बाजू कर बैठी थी और उसका सिर बुनाई की सलाइयों पर झुका हुआ था। पन्तेली को सबसे पहले यह चुप्पी खली और वह झूठ-मूठ ही खाँसते हुए बोला नताल्या अपने मके जाने को कह रही है।

ग्रिगोरी ने रोटी के कुछ टुकड़ों को जोड़कर गेंद बनाई और कुछ नहीं कहा।

'पर बात क्या है? पिता ने पूछा। उसका निचला होंठ काँप रहा था। यह उसके क्रोध के भड़कने का पहला लक्षण था।

मैं क्या जानूं? ग्रिगोरी ने उठकर क्रॉस बनाते हुए कहा।

लेकिन मैं जानता हूँ। उसके पिता ने तेज होते हुए कहा।

अरे चिल्लाओ तो नहीं। इलीनिचना बीच में बोली।

हाँ चिल्लाने की क्या जरूरत है? प्योत्र खिड़की से उठा और कमरे के बीच में आकर बोला भई यह तो उस पर है। अगर यहाँ रहना चाहती है तो रहे और नहीं चाहती तो ईश्वर उस पर दया करे।

मैं यह बतलाने नहीं जा रहा कि गलती नताल्या की है या नहीं। बस तो पति को छोड़ देना बेइज्जती की बात है और पाप है पर मैं इसे इल्जाम नहीं देता। यह उसका कसूर नहीं है बल्कि कसूर इस सूअर के बच्चे का है। पन्तेली ने स्टोव के पास बैठकर खाँसते ग्रिगोरी की तरफ अंगुली दिखाई।

मैंने किसका क्या कर दिया? ग्रिगोरी ने पूछा।

तू नहीं जानता बदमाश कहीं का ! तुझे नहीं मालूम ?

'नहीं मैं नहीं जानता।

पतली बेंच से उछल पड़ा तो बेंच उलट गई और सीधी ग्रिगोरी की ओर गिर गई। नताल्या के हाथ से मोजे नीचे गिर गए और सलाइयाँ झनझनाकर दूर जा गिरीं। उस आवाज के कारण बिल्ली का बच्चा स्टोव के पास से उछलकर सामने आया और ऊन के गोले से खेलने लगा।

बूढ़े ने धीमे-धीमे विचारपूर्वक कहना प्रारम्भ किया मुझे तुमसे यह कहना है कि अगर तुम नताल्या के साथ नहीं रहना चाहते तो यहाँ से निकल जाओ और चल जाओ जहाँ तुम्हारा साग समाय वहाँ। बस मुझे यही तुमसे कहना है। चले जाओ जहाँ तुम्हारा साग समाए वहाँ। उसने शान्त स्वर में दोहराया और बेंच सीधी की।

दूया बिस्तरे पर बैठी सहमी नजरों से इधर उधर देखती रही।

जो कुछ मैं कह रहा हूँ पापा गुस्से में नहीं कह रहा। ग्रिगोरी का स्वर खोखला हो उठा यह शादी मैंने अपनी मर्जी से नहीं की यह शादी पक्की की तुमने। जहाँ तक नताल्या का सवाल है मैं उसे नहीं रोकता। अगर वह अपने बाप के यहाँ जाना चाहती है तो जाए।

'तू खुद क्यों नहीं चला जाता यहाँ से ?

मैं चला जाऊँगा।

जा जा जहन्नुम में जा।

जा रहा हूँ जा रहा हूँ चीखो मत। ग्रिगोरी ने स्टोव पर पड़े अपने छोटे कपड़े को लेने के लिए हाथ बढ़ाया। उसके नथुने फूल रहे थे। वह भी पिता की तरह ही क्रोध से उबल रहा था। वही तुर्क और कज़ाकों का मिला-जुला खून उसकी नसों में भी बह रहा था। उस समय उन दोनों की शक्लें एक-दूसरे से ऐसी मिल रही थीं कि बस !

'कहाँ जा रहा है तू ? ग्रिगोरी की बाँह पकड़ कर खींचते हुए बोली। किन्तु उसे धनपूर्वक धकेल कर उसने इलियनीच का अपनी टोपी छीन ली।

'जाने दो इसे। चाहो शूकर बनी ना ! जाने दो माँ ने सोचा

हमें ! जा निकल जा यहाँ से ! जा निकल !' दरवाज़े को सपाट खोलते हुए बूढ़ा दहाड़ा।

ग्रिगोरी भागता हुआ सीढ़ियों पर आया। आखिरी आवाज़ उसके कानों में नताल्या के रोने की आई।

रात हो गई थी। गाँव में चारों ओर पाला-ही-पाला था। काले आसमान से कटीली बर्फ गिर रही थी। दोन की बर्फ तोपों के दगने जैसे ढंग से चटख रही थी। ऐसे में ग्रिगोरी हाँफता हुआ दरवाज़े से बाहर निकल गया। गाँव के दूसरे छोर पर कुत्ते एक साथ भूँकते रहे और पाले की धुंधली धुन्ध के बीच दूर के चिराग टिमटिमाते रहे।

बिना कुछ सोच-समझे वह सड़क पर बढ़ता गया। अस्ताखोव के घर की खिड़कियाँ अँधेरे में हीरों की भाँति जगमगा रही थीं।

ग्रीश्का !' नताल्या की दुखी पुकार उसे पीछे से सुनायी दी।

नरक में जा तू !' ग्रिगोरी ने दाँत भींचे और अपने कदम तेज़ कर दिये।

'लौट आओ ग्रीश्का लौट आओ !'

वह शराबियों की तरह लड़खड़ाते हुए पहली गली में मुड़ा और उसे नताल्या की चीख आखिरी बार सुनाई दी ग्रीश्का मेरे प्यारे ग्रीश्का !'

उसने तेज़ी से चौक पार किया और चौराहे पर रुककर सोचने लगा कि रात आखिर कहाँ बिताई जाए। उसने मीश्का कोशेवोई के यहाँ जाने का निश्चय किया। मीश्का अपनी माँ और बहन के साथ पहाड़ी के दामन और के छपरैल घर में रहता था। ग्रिगोरी ने उनके हाते में प्रवेश कर छोटी खिड़की पर थाप दी।

'कौन है ?'

मीश्का है ?'

हाँ है। लेकिन तुम कौन हो ?'

'मैं हूँ ग्रिगोरी मेलखोव।'

मीश्का को अभी-अभी नींद आई थी। क्षण भर में ही वह जाग उठा और उसने आकर दरवाज़ा खोला।

"मीश्का, तुम?"

"हाँ, मैं।"

"रात में ऐसा क्या काम आ पड़ा?"

"अन्दर चलो, पीछे बतलाऊँगा।"

ड्योढ़ी में ग्रिगोरी ने मीश्का का हाथ पकड़कर धीमे से कहा, "मैं तुम्हारे यहाँ रात काटना चाहता हूँ। घरवालों से मेरा झगड़ा हो गया है। मेरे लिए जगह हो जाएगी तुम्हारे यहाँ? कहीं भी पड़ रहूँगा।"

"कहीं भी सो रहना, मगर मामला क्या है?"

"फिर बतलाऊँगा। यहाँ दरवाज़ा कहाँ है? मुझे नज़र नहीं आ रहा।"

एक बेंच पर ग्रिगोरी का बिस्तर लगा दिया गया। विचारों में डूबे-डूबे उसने अपने सिर के चारों ओर भेड़ की खाल लपेट ली ताकि मीश्का की माँ की फुसफुसाहट कम सुनाई दे। वह विस्मय में सोचने लगा—"घर पर क्या हो रहा होगा भला? नतात्या अपने मैके चली जायगी या नहीं? जो भी हो, ज़िन्दगी ने एक नया मोड़ ले लिया है। अब मैं जाऊँ कहाँ?" जल्दी ही उसे जवाब भी मिल गया, "मैं कल अक्सीनिया को बुलाऊँगा और उसके साथ क्यूबान चला जाऊँगा, यहाँ से दूर, बहुत दूर..."

अनजाने, अनचाहे नाचते हुए स्तेपी-आँगन, गाँव, ज़िले उसकी आँखों के आगे से गुज़रने लगे। और नाचती हुई पहाड़ियों के पार लम्बी दूरी, सड़क के उस पार की नीलम के आसमानों की दुनिया। यह दुनिया उसे अपने पास बुला रही थी। यह था अक्सीनिया के प्यार का परीदेश। इस परीदेश में बहार के बाद बहार आ रही थी—अपने मन के पूरे विद्रोह के साथ। इससे उसका जादू और बढ़ गया था।

भविष्य की चिन्ता में उसकी नींद उड़ गई। फिर सचमुच सो जाने से पहले वह बराबर सोचता रहा कि आखिर उसे परेशानी क्या है? ऊँघती सी अवस्था में उसके विचार अपनी गति से दौड़ते से चलते रहे, चलते रहे कि उसे सहसा ही धक्का-सा लगा, जैसे कि धार के साथ बहती हुई नाव किसी रेतीले किनारे से जा टकराई हो। यह

जूझ पड़ा उस रोड़े से। सोचने लगा कि ऐसा क्या है जो मेरे आड़े आता है।

सुबह उठते ही उसे सेना की नौकरी की याद आई। यह था उसके रास्ते का रोड़ा। अक्सीनिया को लेकर वह जा कैसे सकता था? बसन्त में शिक्षण शिविर लगना था और शरद में जाना था सेना की नौकरी पर।

थोड़ा सा नाश्ता करने के बाद उसने मीशा को गलियारे में बुलाया।

'मीशा, सुनो, तुम जरा अस्ताखोव के यहाँ चले जाओ। चले जाओगे?' उसने पूछा, 'अक्सीनिया से कहना कि आज शाम को जब अँधेरा हो जाए तो वह मुझसे मिलने पवन चक्की पर आ जाए।'

'लेकिन स्तीपान की बात सोची है तुमने?' मीशा गड़बड़ाया।

'उसे कोई काम बतला देना। कहना कि मैं इस काम से आया हूँ।'

'अच्छा, चला जाऊँगा।'

'अक्सीनिया से कहना कि जरूर आए।'

शाम को ग्रिगोरी पवन चक्की के पास जा बैठा। उसने एक सिगरेट जला ली और उसे अपनी कमीज में बन्द कर लिया। पवन चक्की से आगे मकई की डंठलों पर हवा मंडरा रही थी। एक जगह मोमजामे का एक टुकड़ा फड़फड़ा रहा था। वह ऐसा लगा जैसे कि कोई बड़ी चिड़िया उड़ने में असमर्थ हो और फड़फड़ा रही हो। अक्सीनिया नहीं आई। पश्चिम में सोने का सूरज डूब गया और पूरब से ताजी हवा बहने लगी। सरपतों में भटकते कौओं को अँधेरे ने ढक लिया। पवन चक्की के ऊपर के नीला धारियों वाले आकाश में घोर अँधेरा छा गया। गाँव से काम के खात्मे के अन्तिम संकेत मिले। किन्तु अक्सीनिया नहीं आई।

एक-एक कर उसने तीन सिगरेटें पी डालीं। अन्तिम सिगरेट का बचा टुकड़ा कुचला, बर्फ में गड़ा दिया और चिन्ता और खीझ से भरकर चारों ओर देखने लगा। कहीं कुछ दिखलाई नहीं दिया। वह उठा, गाया हुआ और मीशा की खिड़कियों से झिलमिल करते प्रकाश की ओर बढ़ा। वह हाते में पहुँचने वाला था कि अचानक ही अक्सीनिया से टकरा गया।

माफ है कि वह भागी चली आ रही था। वह हाँफ रही थी और उसके नाज ठंड पहर म सर्दी की हवा की या शायद मदान की ताजा घास की वास आ रही थी।

मैं इन्तजार करते-करते थक गया। फिर मैंने सोचा कि शायद तुम नहीं आओगी।

'स्टापान से पीछा छुड़ाने में इतना देर लग गई।

'शानान हो तुम तुम्हारी इन्तजार म मैं तो जमकर बर्फ हो गया हूँ।

मैं गरम हूँ मैं तुम्हारे बदन म गर्मी भर दूँगी। उसने ऊनी झब्बर वाला अपना कोट उतारा और उससे ग्रिगोरी को चारों ओर म ढँक लिया जैसे लताएँ किसी शाहबलूत के पेड को चारो ओर से ढक लें।

"क्यों बुलाया है तुमने मुझे? वह बोली।

'ठहरो अपना बाँह अलग हटाओ' कहीं किसी ने देख लिया तो?"

'तुम अपने घरवाला म लड़ तो नहीं पड़े?

मैं उनसे अलग हो गया हूँ। रात मैंने भाग में यहीं बिताई। अब मैं दर-दर भटकने वाला कुत्ता हूँ।

अब क्या करोगे तुम?

अक्सीनिया ने अपने हाथों को पकड़ टीली कर दी और कँपते हुए अपना कोट खोलकर ओढ़ लिया।

'चलो उस बाड़ पर चलें ग्रीशा—हमारा यहाँ सड़क के बीचोंबीच खड़ा होना अच्छा नहीं।

वे सड़क से दूर आये और बर्फ हटाकर ग्रिगोरी मरपन की पहार दावारी के सहारे झुककर खड़ा हुआ।

तुम्हें मालूम है कि नताल्या मान मर गई या नहीं? उसने पूछा।

मुझे नहीं मालूम। जहाँ तक मेरा ख्याल है वह बचा जाएगी। यहाँ मेरा बस रहेगी?

ठंड से अकड़ हुआ अक्सीनिया का हाथ छिपाते अपने कोट की

आस्तीन तक ले गया और उसकी पतली कलाई को सहलाते हुए पूछने लगा और हम लोगों का अब क्या होगा ?

मैं क्या जानूँ प्यारे ! जो भी तुम ठीक समझो बताओ।

'तुम स्तीपान को छोड़ सकती हो ?

बिना मुँह से उफ किये छोड़ सकती हूँ। तुम चाहो तो आज ही शाम को छोड़ दूँ।

ठीक है तो हम कोई-न-कोई काम मिल ही जाएगा और कहीं न-कहीं हम जैसे-तैसे रह ही लेंगे।

ग्रीश्का तुम्हारे साथ सब-कुछ सह सकती हूँ मैं। तुम पास रहो फिर तो कोई मुझे बल घोड़ों की तरह ही क्या न लात दे तो भी कोई बात नहीं।

दोनों एक-दूसरे से सटे खड़े रहे एक-दूसरे को अपने तन का ताप देते रहे। ग्रिगोरी हिलना नहीं चाहता था। वह हवा की ओर मुँह किये खड़ा था। उसके नथुने फड़क रहे थे और आँखें बन्द थीं। उसकी बगल में मुँह छिपाये अक्सीनिया चिर-परिचित पसीने की उत्तेजक गन्ध से अपनी साँसें सींच रही थी। उसके बेहया प्यासे होठों के कम्पन पर आनन्द की एक मुसकान थिरक रही थी।

कल मैं मोखोव से जाकर मिलूँगा। वह चाहे तो मुझे किसी काम पर लगा सकता है। ग्रिगोरी ने अक्सीनिया की कलाई एक दूसरी जगह से भींचते हुए कहा। पिछली जगह उसकी अँगुलियों के कारण पसीने से नरम हो गई थी। अक्सीनिया ने कुछ बोली न उसने अपना सिर ऊपर उठाया। उसके चेहरे की मुसकान बन्द हवा की तरह हवा हो गई। चिन्ता और भय उसकी फैली हुई आँखों में यों समाने लगे जैसे कि वह कोई सहमा हुआ पशु हो। इससे कहूँ या न कहूँ ? अपने गर्भ का ध्यान आते ही उसने सोचा। फिर उसने वह टालने का निश्चय किया। किन्तु तुरन्त ही डर से सहमकर उस भयानक विचार को ही उसने दिमाग से बाहर निकाल दिया। उसकी नारी प्रकृति ने उसे चेतावनी दी ग्रिगोरी को बतलाने का यह सही वक्त नहीं। हो सकता है कि बतला देने पर वह तुमसे सदा-सदा के लिए अलग हो जाए।

क्या तू पक्की तरह जानती है कि तेरे कलेजे के नीचे उछलने वाला बच्चा ग्रिगोरी का ही है? तू कह सकती है कि यह स्तेपान का नहीं है? इसलिए इस बात को टाल दे। उसने अपनी आत्मा को धोखा दे दिया और ग्रिगोरी से इस विषय में कुछ नहीं कहा।

कंपकंपी क्यों छूट रही है? ठंड लग रही है? ग्रिगोरी ने अपना कोट उसके चारों ओर लपेटते हुए कहा।

थोड़ा-थोड़ा। अच्छा अब मैं जाऊँगी ग्रीशा! स्तेपान को अब घर पर पहुँचा ही समझो और मैं उसे वहाँ न मिली तो…

कहाँ गया है वह?

मनोखई के यहाँ ताश खेलने।

वे एक-दूसरे से विदा हुए। अक्सीनिया की हाथों की नस में चूर कर देने वाली गंध ग्रिगोरी के हाथ पर आई। वह गंध थी जाड़े की हवा की या शायद बसन्त की पहली वर्षा में भीगी सूखी घास की।

अक्सीनिया एक सकरी गली में लगभग भागती हुई-सी मुड़ी। एक कुएँ के पास जहाँ जानवरों ने शरद की कीचड़ को मथ दिया था, उसका पाँव बर्फ के एक ढोंके पर फिसल गया और वह लड़खड़ा गई। साथ ही उसके पेट में ऐसा दर्द उठा कि उसने बाड़ का सहारा ले लिया। थोड़ी देर बाद दर्द बन्द हो गया लेकिन उसके पेट के अन्दर का जीवित प्राणी बार-बार गुस्से में उछल उछल पड़ता रहा।

११

ग्रिगोरी अगले दिन सुबह मोखोव से मिलने गया। मोखोव अभी दूकान से लौटा था और स्नान के कमरे में अत्योपकिन के साथ बैठा आतामानी मदिरा के रंग की तेज चाय पी रहा था। ग्रिगोरी ने बड़े कमरे में अपनी टोपी रखी और अन्दर पहुँचा।

सर्गेई प्लातोनोविच! मुझे आप से कुछ बातें करना है।

ओह, पन्तेली प्रोकोफिच के बेटे हो तुम क्या? कहो क्या बात है?

मैं यह पूछने आया हूँ कि क्या आप मुझे कोई नौकरी दे

सकता है ?

इसी समय दरवाजा चरमराया और खाकी वर्दी पहने एक युवक लेफ्टिनेंट अन्दर प्रविष्ट हुआ। ग्रिगोरी ने पहचाना कि यह व्यक्ति लिस्त निस्की है और इसे ही तो पिछली गर्मियों में मीत्का कोरशूनोव ने घुड़दौड़ में हराया था। मोखाव ने अधिकारी की ओर कुर्सी बढ़ाई और ग्रिगोरी की ओर मुड़कर कहा क्या तुम्हारा बाप अब ऐसा दुनियादार हो गया कि अपने बेटे को किसी दूसरे की नौकरी करवाएगा ?' उसने पूछा।

अब मैं पापा के साथ नहीं रहता।

अलग हो गए ?

जी हाँ।

खैर मैं तो तुम्हें अभी खुशी से रख लेता। मुझे मालूम है कि तुम्हारा परिवार बहुत मेहनती है। लेकिन फिलहाल मेरे यहाँ तुम्हारे लायक कोई काम नहीं है।

क्या बात है ? लिस्तनित्स्की ने अपनी कुर्सी मेज के पास खींचते हुए पूछा।

यह लड़का काम की तलाश में है।

तुम घोड़ों की देखभाल कर सकते हो ? जोड़ी हाँक सकते हो ? अधिकारी ने अपनी चाय हिलाते हुए पूछा।

कर सकता हूँ। मैंने अपने घर के छः घोड़ों की देखभाल की है।

मुझे कोचवान की जरूरत है। क्या लोगे तुम ?

कुछ ज्यादा नहीं चाहता।

तब फिर हमारे इलाके पर आकर कल पिताजी से मिल लो। घर मालूम है ? यागोद्नोए में है यहाँ से कोई आठ वेर्स्ट दूर।

जी हाँ मैं जानता हूँ।

बस तो कल सुबह आ जाना बात हो जाएगी।

ग्रिगोरी दरवाजे तक गया। हत्था घुमाते ही वह हिचकिचाया और बोला श्रीमान्, मैं आपसे अलग में एक बात कहना चाहता हूँ।

लिस्तनित्स्की ग्रिगोरी के पीछे-पीछे अँधियारे गलियारे में आया।

कमरे के दरवाजे में वेनिसी काँच से छनकर हलका-हलका गुलाबी प्रकाश वहाँ आता रहा।

क्या नया बात है ? अधिकारी ने पूछा।

'मैं अकेला नहीं हूँ ग्रिगोरी का चेहरा लाल हो उठा मेरे साथ एक औरत भी है शायद उसके लिए भी आप कोई काम निकाल सकेंगे ?

तुम्हारी बीवी है ? लिस्तनित्स्की ने मुसकराकर भौंह ऊपर उठाते हुए पूछा।

किसी और की बीवी है।

ओह यह बात है ! खैर हम उसे नौकरों का खाना बनाने पर रख लेंगे। लेकिन उसका आदमी कहाँ है ?

यहीं गाँव म।

यानी तुमने दूसरे की औरत उड़ा ली है ?

वह अपनी मर्जी से मेरे पास आई है।

'मोहब्बत के मामले हैं। खैर बस बाबा अब तुम जा सकते हो।

अगले दिन लगभग आठ बजे सुबह ग्रिगोरी यागोदनोए पहुँच गया। घर के चारों ओर ईंटों की एक दीवार थी। दीवार पर पलस्तर था। बाहरी कमरे हाते भर में जहाँ-तहाँ बने हुए थे। एक हिस्सा टाइल की छतों का था। उस पर रंग-बिरंगे टाइलों में १९१० लिखा हुआ था। नौकरों के कमरे थे। एक नहाने का कमरा था। अस्तबल थे। एक मुर्गीपालन विभाग था। पशुओं के लिए एक शेड था। लम्बा खलिहान था और एक गाड़ीघर था।

यह बड़ा और पुराना मकान एक बगीचे में था। उसके पीछे चिनारों की भूरी दीवार थी और परागान्नी बेंत थे। उनकी चोटियों पर जहाँ-तहाँ कौवों के घोंसले झूम रहे थे।

ग्रिगोरी ने हाते में पैर रखा कि जोमिया के शिकारी कुत्तों ने उसका स्वागत किया। सबसे पहले एक बूढ़ी मोंगड़ी कुतिया ने उसे आकर सूंघा और गर्दन झुकाए उसके पीछे-पीछे चल दी। नौकरों के

क्वार्टरों में एक कम-उम्र दाग-दगील चेहरे वाली नौकरानी से ग्रिगोरी का सहसा मिला। दहलीज पर तम्बाकू के धुएँ के बीच एक बूढ़ा सिर झुकाए बैठा दीखा। नौकरानी ग्रिगोरी को मकान के अन्दर ले गई। गलियारे से कुत्तों और बिना कमाए चमड़े की बू आई। एक मेज पर दुनाली बन्दूक का खोल तथा शिकार खेलने का झालरदार हरा रेशमी थैला पड़ा नजर आया।

आप छोटे मालिक से मिलिये। नौकरानी ने बगल के दरवाज़े से चिल्लाकर कहा।

ग्रिगोरी ने कीचड़ से सने अपने जूतों की ओर चिन्ता से देखा और अन्दर कदम रखा। खिड़की के पास पलंग पर लिस्तनित्स्की लेटा हुआ था। अधिकारी ने एक सिगरेट ग्रोन की अपनी सफेद कमीज के कॉलर के बटन लगाये और बोला तुम ठीक वक्त से आये। रुको पिताजी अभी एक मिनट में आ जाते हैं।

ग्रिगोरी दरवाज़े के सहारे खड़ा हो गया। इसी समय पीछे के कमरों से किसी के आने की आहट मिली और एक भारी आवाज कानों में पड़ी।

येवोनी! सो रहे हो क्या?

आइये न। लिस्तनित्स्की ने उत्तर दिया।

काले कानेशियाई फुस्ट-बूट पहने एक बूढ़ा कमरे में आया। ग्रिगोरी ने उसे कनखी से देखा। उसकी सुन्दर नुकीली नाक और मूछों के ऐंठे हुए सफेद सिरों से वह तुरन्त ही प्रभावित हो उठा। बूढ़े लिस्तनित्स्की का कद लम्बा कन्धे चौड़े और बदन दुबला-पतला। लबादे के नीचे उसने ऊँट के बालों का एक लम्बा यूनिफ़ॉर्म-कोट पहन रखा था।

पापा! यह रहा कोचवान जिसके बारे में मैंने आपसे कहा था! लड़का इज्जतदार घर का है।

किसका लड़का है?

मेलखोव का।

किस मेलखोव का?

पन्तेली मेलखोव का"

प्रावोफ़ी स मेरी जान-पहचान थी। सेना म वह मेरे साथ रह चुका है। मैं पन्तेली का भी जानता हू। लँगड़े हैं वह है न ?

जी हुज़ूर ! ग्रिगोरी न कहा। उसे मन-ही-मन रूसी-तुर्की-युद्ध के वीर सेनानी जनरल लिस्तनित्स्की की कहानियाँ याद आ गईं। य उसे उसके पापा न सुनाई थीं।

'तुम्हे नौकरी की क्या जरूरत आ पड़ी ? वृद्ध ने प्रश्न किया।

मैं अब पिता के पास नहीं रहता हुज़ूर !

'कैसे कज़ज़ाक हो तुम कि नौकरी कराग ? अलग करते समय तुम्हार पिता न तुम्हें कुछ नहीं दिया ?

'नहीं हुज़ूर !

'यह दूसरी बात है। तुम अपनी पत्नी के लिए भी काम चाहते हो ?

छोटे मालिक का पलग ज़ोर स चरमराया। ग्रिगोरी न उधर देखा। अधिकारी ने आँख मारी।

जी हाँ हुज़ूर।

मैं कोई हुज़ूर-वुज़ूर नहीं। तुम्हारे इन सारे हुज़ूरों म मुझे कोई पसन्द नहीं। तुम्ह आठ रूबल महीना मिलेगा यानी तुम दोनो को ! तुम्हारी बीवी नौकरा और काम करने वाले लोगों क लिए खाना पकाएगी क्या ठीक है न ?

'जी ठीक है।

कल सुबह से आ जाना। तुम्हारा कमरा वही होगा जो पिछले कोचवान का था।

कल शिकार कैसा रहा ? लिस्तनित्स्की ने पैर कालीन पर रखते हुए पिता स पूछा।

हमने एक लोमड़ी ग्रमयाची के नाल म देखी और जगल तक उसका पीछा किया। पर वह लोमड़ी बूढ़ी थी औ हमारे कुत्तो को उसने खूब दौड़ाया।

कज़बेक का पैर क्या अब भी लगड़ा है ?

'पर म मोच आ गई मालूम होता है अच्छा अकीनी पत्नी करो

नाश्ता ठंडा हो रहा है।

बूढ़ा ग्रिगोरी की ओर मुड़ा और बोला, "अच्छा जाओ अब, कल आठ बजे आ जाना।"

ग्रिगोरी बाहर आया। खलिहान की दूसरी ओर बर्फ से खाली जमीन पर शिकारी कुत्ते धूप खा रहे थे। ग्रिगोरी को देख बूढ़ी कुतिया फिर पास आकर उसे सूंघने लगी। फिर उसी तरह सिर झुकाये झुकाये कुछ दूर तक पीछे-पीछे आई और लौट गई।

१२

उस दिन सुबह अक्सीनिया ने खाना जल्दी ही बना डाला। उसने आग बुझाई, तश्तरियाँ धोईं और खिड़की के बाहर हाते में नजर दौड़ाई। मेलखोव के हाते से सटी अपनी चहारदीवारी के पास रखे लकड़ी के गट्ठर के सहारे स्तीपान खड़ा दीखा। अधजली सिगरेट उसके होठों के सिरे पर सधी हुई थी। शेड का बायाँ हिस्सा गिर पड़ा था और वह देख रहा था कि इसकी मरम्मत कहाँ-कहाँ से होनी चाहिए।

अक्सीनिया सोकर उठी तो उसके दोनों गालों पर गुलाब खिले हुए थे और आँखों में थी जवानी की चमक। स्तीपान की दृष्टि से यह परिवर्तन छिपा न रहा। नाश्ता करते समय वह पूछ ही जा बैठा, "क्यों, आज क्या बात है?"

"क्या बात है?" अक्सीनिया ने बात दोहरा दी और उसका चेहरा तमतमा उठा।

"तुम्हारा मुंह तो ऐसा चमक रहा है जैसे कि तुमने तेल की मालिश की है।"

"आग की गर्मी का असर है, और कुछ नहीं।" अक्सीनिया ने कहा और मुड़कर चुपके से खिड़की के बाहर की ओर देखा कि मीशा कोशेवोई की बहन तो नहीं आ रही?

लेकिन जब लड़की आई तब दोपहर कभी की ढल चुकी थी। इन्तजार से ऊबकर अक्सीनिया ने उससे पूछा, "माशूत्का, तुम्हें मुझसे कुछ काम है?"

'जरा बाहर आओ। लड़की ने उत्तर दिया।

सफेदी से पुते स्टोव के ऊपर रखे हुए शीशे के टुकड़े के सामने खड़ा हो स्तेपान अपने बाल सवारने लगा। अक्सीनिया ने बेचनी से उसकी ओर देखा। पूछा तुम बाहर तो नही जा रहे ?

उसने तुरन्त ही कोई उत्तर नहीं दिया। पहले पाजामे की जेब में कंघा रखा ताश की गड्डी उठाई अंगीठी की जाली पर से सिगरेट पाइप लिया और तब बोला मैं थोड़ी देर के लिए अनीकुश्का के घर जा रहा हूँ।

'तुम घर पर रहते ही कब हो ? रोज ही तो रात रातभर ताश के पत्ते पीटते हो !

ठीक है यह बात तुमने पहले भी कहा है

तुम पोटम खेलने फिर जा रहे हो क्या ?

'छोड़ो भी अक्सीनिया ! देखो वह लड़की तुम्हारी इन्तजार में खड़ी है।

अक्सीनिया बाहर आई। दागो से भरे गुलाबी चेहरेवाली माशूत्का ने मुसकराते हुए उसका स्वागत किया।

ग्रीश्का वापिस आ गया है।

'तो फिर ?

उसने कहलाया है कि अंधेरा होते ही तुम हमारे घर आ जाना।

लड़की का हाथ पकड़कर वह उसे बाहरी दरवाजे की तरफ ले गई।

धीरे-धीरे बोलो ! उसने और कोई बात कही तुमसे ?

उसने कहा है कि अपना सामान बाँधकर साथ लेती आना।

उत्साह से जलती कॉपती और डगमगाती हुई अक्सीनिया मुड़ी और उसने बावर्चीखाने पर एक नजर डाली।

हे मेरे भगवान् कैसे क्या करू इतनी जल्दी ? अच्छा उसे उससे कहना कि जितनी जल्दी हो सकेगी मैं आ जाऊगी" लेकिन वह मुझे मिलेगा कहाँ ?

'तुम हमारे घर आओगी।

अरे नही।

ठीक है तो मैं उससे कह दूँगी वह बाहर तुम्हारा इन्तज़ार करेगा।

जब अक्सीनिया अन्दर पहुँची तो स्तीपान कोट पहन रहा था। क्या कह रही थी? उसने सिगरेट के दो कशों के बीच धुआँ छोड़ते हुए पूछा।

कौन?

अरे वही कोशेवोई की लड़की

ओह! वह मुझसे अपने लिए एक स्कर्ट कटवाना चाहती थी। सिगरेट की राख झाड़ते हुए स्तीपान दरवाज़े की ओर गया और बाहर निकलते हुए वह बोला मेरा इन्तज़ार मत करना।

अक्सीनिया दौड़कर पाले से मढ़ी खिड़की के पास गई और बच के सामने घुटनों के बल बैठ गई। दरवाज़े पर पड़ी बर्फ स्तीपान के पाँवों के नीचे चरमरायी। हवा से उसकी सिगरेट की एक चिनगारी उड़कर खिड़की पर आ पड़ी। बर्फ पिघलने से खिड़की के काँच में बने गोले से अक्सीनिया ने उसकी फर की टोपी तथा उसके भरे हुए गालों को एक नज़र देखा।

उसने काँपते हाथों से एक बड़े बक्स में से अपने दहेज का सारा सामान निकाला और जैकेटें स्कर्ट तथा रूमाल एक शाल में लपेटे। चारों ओर निगाह दौड़ाने और हाँफते हुए वह अन्तिम बार बावर्चीखाने में गई और बत्ती बुझाकर सीढ़ियों की ओर दौड़ी। इस बीच मेलेखोव परिवार का कोई व्यक्ति जानवरों का हिसाब ठीक-ठाक करने के लिए बाहर निकला। अक्सीनिया ने पैरों की आहट के एकदम खत्म हो जाने तक राह देखी फिर उसने दरवाज़े में जंजीर चढ़ाई और दोन की ओर भागी। उसके बालों की कुछ लटें रूमाल से बाहर निकल आईं और उसके गालों पर लहराने लगीं। वह अपनी गठरी को कसकर पकड़े छोटी-छोटी गलियों से होती हुई कोशेवोई के घर की ओर बढ़ी तो उसकी ताक़त जवाब दे चली और पैर मन-मन भर के हो उठे मानो सीसे के हों। ग्रिगोरी फाटक पर उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसने पुलिन्दा ले लिया और चुपचाप आगे-आगे मैदान की ओर बढ़ चला।

खलिहान म बाद मक्सीनिया न चाल धीमी की और ग्रिगारी की बाँह पकडकर बोली जरा ठहरो ।

क्या क्या है ? आज रात चाँद देर से निकलेगा इसलिए हम जल्दी-जल्दी निकल चलना चाहिए ।

रुको ग्रीश्का ! पीडा से दुहरी हो वह ठिठक गई ।

बात क्या है ? ग्रिगारी उसकी ओर मुडा ।

मेर पेट म कुछ हो गया है । मैं बहुत बोझ लादकर लाई हूँ । उसन अपन सूख होठ चाटे और हाथों से पसलियाँ थाम ली । इस प्रकार क्षण भर खडी रही भुकी पीडा म तडपी और फिर बालो को रूमाल के नीचे कर चल पडी ।

तुमन मुझस यह तो पूछा ही नहीं कि मैं तुम्हें ल कहाँ जा रहा हूँ । हो सकता है कि पास की चट्टान पर से जाकर तुम्हें धकेल दूँ । अपकार म ग्रिगारी न मुसकराकर कहा ।

अब मेरे लिए कोई अन्तर नहीं पडता । लौट तो मैं सकती नहीं । उसके स्वर म उदासी स भरी एक मुसकान घुल गई ।

उस दिन सदा की ही भाँति स्तीपान आधी रात बीते घर लौटा । वह पहल अस्तबल म गया इधर-उधर छितरी घास उठाकर नाँद म डाली घोडे की रस्सी हटाकर एक ओर रखी और फिर घर म घुसा । कहीं इधर-उधर नाच नाचन गई होगी । जंजीर खोलते समय उसन सोचा । बावर्चीखाने म घुसकर उसने किवाड कसकर बन्द किय और दियासलाई जलाई । उस दिन उसे जीत की खुशी थी इसलिए वह नशा भी था और निराशा भी । उसन लम्प जलाया तो बावर्चीखान की गडबडी देख चौंक उठा । कारण उसकी समझ म नहीं आया । कुछ अचरज करता वह सोन के कमरे में गया । कामा-सा खाला बकस जम्हाई लेता मिला । जमीन पर एक पुरानी जाकेट पडी दिखी । यह जाकेट अक्सीनिया हडबडी म भूल गई थी । स्तीपान न अपन ऊपर की भडकीली बास भटके से उतारी और लम्प लाने के लिए बावर्चीखान की ओर झपटा । उसन सोने के कमरे म चारा ओर आँखें फाड-फाडकर देखा । लम्प

में बात उसकी समझ में आ गई। उसने लैम्प पटका, दीवार पर टँगी कटार झटके से खींची और उसकी मूठ को अँगुलियों में इतना जकड़ा कि उसकी अँगुलियों की नसें फूल गईं। अब कटार की नोक से उसने अकसीनिया की नीली-पीली जकेट उठाई और उसे ऊपर उछाला। वह नीचे गिरी तो एक हाथ में उसने उसके दो टुकड़े कर दिए।

वह दर्द और क्रोध से भेड़िये की तरह जंगली हो उठा। आपे में न रहा और जकेट के टुकड़ों को बार-बार ऊपर उछालता तार-तार करता रहा। कटार का तेज लोहा हवा में सीटियाँ बजाता रहा।

फिर कटार उसने एक कोने में फेंक दी, बावर्चीखाने में गया और मेज के सहारे बैठ गया। उसका सिर झुक गया। वह काँपती लोहे-जैसी अँगुलियाँ मेज के गन्दे सिरे पर देर तक फेरता रहा।

१३

एक मुसीबत अपने साथ हजार मुसीबतें लेकर आती है।

जिस दिन ग्रिगोरी घर से निकला उसके अगले दिन दोपहर में हेत बाबा की लापरवाही से मिरोन कोर्शूनोव के वंशानुगत सांड ने उसकी सबसे अच्छी घोड़ी की गर्दन में सींग घुसेड़ दिया। हेत-बाबा भय से पीला पड़ गया। वह काँपता हुआ भागा भागा बावर्चीखाने में आया।

माफ करें मालिक! सांड ने... इसे मौत ले जाए, दुष्ट सांड ने...

'क्यों, क्या कर दिया सांड ने?' मिरोन ने घबराहट से भरे स्वर में पूछा।

घोड़ी मार डाली। उसकी गर्दन में सींग घुसेड़...'

मिरोन जैसे बैठा था वैसे ही उठकर हाते में भागा आया। कुएँ के पास मीत्का पाँव साफ करने वाले सांड को डंडे से मार रहा था। सांड का सिर झुका हुआ था, उसकी गर्दन का लटका हुआ माँस बर्फ पर घिसट रहा था और बर्फ को अपने खुरों से रौंदते हुए वह अपनी पूँछ से चारों ओर बर्फ का चूरा उड़ा रहा था। मार के सामने झुकने के बजाय वह तेजी से डकारा और अपने पिछले पाँव इस तरह पटकने लगा जैसे कि हमले की तैयारी कर रहा हो। मीत्का उसकी नाक और बगल

बगल अड़े-पर-दड़े जमाता रहा। मिखेई उसकी पेटी पकड़कर उसे सांड के आगे से पीछे घसीटने लगा पर वह गालियाँ बकता रहा और अपने बचाव की उसने कोई चिन्ता न की।

"मीत्का पीछे रहो जरा भगवान् न करे अगर कहीं उसने तुम्हारे पेट में सींग लगा दिए तो" मालिक कहिये न इससे कि पीछे हटे।

मिरोन भागा भागा कुएँ पर गया। घोड़ी चहारदीवारी के पास गर्दन डाले निढाल खड़ी थी। उसका सारा बदन काँप रहा था। तेज साँस से उठती गिरती बगल का हिस्सा पसीने से तर था और सीने पर से खून की धार चालू थी। उसकी गर्दन में घाव इतना बड़ा हुआ था कि आदमी का हाथ उसमें आसानी से चला जाए। टेंटुआ साफ दिखाई दे रहा था। मिरोन ने उसके माथे के बालों के सहारे उसका सिर ऊँचा किया। घोड़ी ने अपनी आँखें मालिक की ओर उठाईं मानो कि मूक स्वर में पूछ रही हो अब क्या होगा? मिरोन ने चीखकर कहा "दौड़ो और किसी से शाहबलूत की छाल लाने को कहो। जल्दी करो।"

हेत-बाबा भागा भागा छाल लाने गया और मीत्का अपने पिता के पास आया। उसकी एक आँख भौंह पर जमी हुई थी। सांड डकारता हुआ पूरे आँगन में चक्कर काट रहा था।

"घोड़ी के माथे के बाल पकड़ लो।" पिता ने आदेश दिया "कोई आदमी दौड़कर तागा लाओ। जल्दी करो जल्दी, नहीं तो जान उखड़ जाएँगे।"

घोड़ी के ऊपर के होंठ के चारों ओर तागा बाँधा गया ताकि उसे दर्द न हो। बूढ़ा ग्रीश्का हाँफता हुआ भागा आया। एक रंगीन कटोरे में घोल शाहबलूत और फल का जलसंग लाया गया।

बूढ़ा भर्राये गले से बोला "उसे ठंडा करो। बहुत गरम है। मिरोन मेरी बात सुनते हो?"

"पापा तुम अन्दर जाओ। तुम्हें यहाँ सर्दी लग जाएगी।"

"मैं कहता हूँ कि यह दवा ठंडी करो तुम घोड़ी की जान लेने पर

म बात उसकी समझ म आ गई। उसने लैम्प पटका दीवार पर टंगी कटार झटके से खींची और उसकी मूठ को अंगुलियों म इतना जकड़ा कि उसकी अंगुलियों की नसें फूल गईं। अब कटार की नोक स उसने अक्सीनिया की नीली-पीली जैकेट उठाई और उसे ऊपर उछाला। वह नीचे गिरी तो एक हाथ म उसने उसके दो टुकड़े कर दिए।

वह दद और क्रोध से भेड़िये की तरह जगली हो उठा। माथे म न रहा और जकेट के टुकड़ों को बार-बार ऊपर उछालता तार-तार करता रहा। कटार का तेज लोहा हवा म सीटियाँ बजाता रहा।

फिर कटार उसने एक कोने म फेंक दी बावर्चीखाने म गया और मेज के सहारे बैठ गया। उसका सिर झुक गया। वह काँपती लोहे-जैसी अँगुलियाँ मेज के गन्दे सिरे पर देर तक फेरता रहा।

१३

एक मुसीबत अपने साथ हजार मुसीबतें लेकर आती है।

जिस दिन ग्रिगोरी घर से निकला उसके अगले दिन दोपहर म हेत बाबा की लापरवाही स मिरोन कोरशूनोव के खानदानी साँड ने उसकी सबसे अच्छी घोड़ी की गर्दन म सींग घुसेड़ दिया। हेत-बाबा भय से पीला पड गया। वह काँपता हुआ भागा भागा बावर्चीखाने म आया।

'आफत है मालिक! साँड ने इसे मोल ले आए दुष्ट साँड ने

क्यों क्या कर दिया साँड ने?' मिरोन ने घबराहट से भरे स्वर में पूछा।

घोड़ी मार डाली। उसकी गर्दन में सींग घुसेड़'

मिरोन जसे बैठा था वसे ही उठकर हाते में भागा आया। कुएँ क पास मीत्का पाँच साल के लाल साँड को डंडे स मार रहा था। साँड का सिर झुका हुआ था उसकी गदन का लटका हुआ माँस बफ पर घिसट रहा था और बफ को अपने खुरों से रौंदते हुए वह अपनी पूँछ से चारो ओर बफ का चूरा उडा रहा था। मार के सामने झुकने के बजाय वह तेज़ी से डकारा और अपने पिछले पाँव इस तरह पटकने लगा जसे कि हमले की तयारी कर रहा हो। मीत्का उसकी नाक और अगल

बगल हड़े-पग-उड़े जमाता रहा। मिखाई उसकी पटी पकड़कर उस मोड़ ने आगे से पीछे घसीटने लगा पर वह गालियाँ बकता रहा और अपने बचाव की उसने कोई चिन्ता न की।

'मीत्का पीछे रहा जरा "भगवान् न करे अगर कहीं उसने तुम्हारे पेट में सींग मगा दिए तो" मालिक कन्धे न इसमें कि पीछे हटे।

मिरोन भागा भागा कुए पर गया। घोड़ी चहारदीवारी के पास गर्दन डाले निढाल खड़ी थी। उसका सारा बदन काँप रहा था। तेज साँस से उठती गिरती बग़ल का हिस्सा पसीने से तर था और सीने पर से खून की धार चालू थी। उसकी गर्दन में घाव इतना बड़ा हुआ था कि आदमी का हाथ उसमें आसानी से चला जाए। टेंटुआ साफ दिखाई दे रहा था। मिरोन ने उसके माथे के बालों के सहारे उसका सिर ऊँचा किया। घोड़ी ने अपनी आँखें मालिक की ओर उठाई मानो कि मूक स्वर में पूछ रही हो अब क्या होगा? मिरोन ने चीखकर कहा 'दौड़ो और किसी से साहबजूत की खाल मान का बड़ा। जल्दी करो!'

हेत-बाबा भागा भागा दुकान लाने गया और मीत्का अपने पिता के पास आया। उसकी एक आँख साँड पर जमी हुई थी। साँड डकारता हुआ पूरे आँगन में चक्कर काट रहा था।

'घोड़ी के माथे के बाल पकड़ लो। पिता ने आदेश दिया। कोई आदमी दौड़कर तागा लाया। जल्दी करो जल्दी नहीं तो कान उखाड़े जाएँगे।

घोड़ा के ऊपर के होंठ के चारों ओर तागा बाँधा गया ताकि उसे दर्द न हो। बूढ़ा ग्रीश्का हाँफता हुआ भागा आया। एक रगान कटोरे में ओक शहतूत और फल का जमसँग लाया गया।

बूढ़ा मरीज गले में बाला 'उसे ठंडा करो। बहुत गरम है। मिरोन मेरी बात सुनते हो?

'पापा तुम अन्दर जाओ। तुम्हें यहाँ सर्दी लग जाएगी।

मैं कहता हूँ कि यह दवा ठंडी करो 'तुम घोड़ा की जान लेने पर

उनाम्ह हो क्या ?

घाव धोया गया। ठिठुरी हुई अगुलियो से मिरोन ने रफ़ू की सूई मे कच्चा धागा पिरोया और उससे किनारो को साफ-सुथरे ढग से सिया। अब वह घर लौटने को मुडा ही था कि उसकी पत्नी घबराई हुई भागी आई। अपने पति को एकान्त मे बुलाकर उसने कहा नताल्या आई है मिरोन हे मेरे भगवान् !

अब क्या हुआ ? मिरोन ने पूछा। उसका चेहरा पीला पड़ने लगा।

ग्रिगारी ने मुसीबत खडी की है। वह घर छोडकर चला गया है। लुकीनीचना ने अपनी बाँहे ऐसे फैलाई जैसे कि कोई कौवा उड़ने को तयार हो रहा हो। फिर उसने अपने स्कर्ट पर हाथ पटके और फूट कर रो पडी।

सारे गाँव के सामने इज्जत धूल मे मिला दी। हे भगवान्, कैसा दुख दिया है ! आह !

मिरोन ने देखा कि जाडे का छोटा कोट पहने और शाल ओढे नताल्या बावर्चीखाने मे खडी है। उसकी आँखो की कोरो मे आँसू अटके हुए हैं और उसके गाल तमतमाये हुए है।

तुम यहाँ क्या कर रही हो ? कमरे मे झपटकर आते हुए उसका पिता गरजा आपस मे भाग-पीटा है क्या ? तुम एक दूसरे के साथ निभा नही सकते ?

'वह घर छोडकर चला गया है। अपने पिता के सामने घुटनों के बल बढ़ती हुई नताल्या बोली पापा मेरी जिन्दगी बरबाद हो गई मुझे वापस आ जाने दो' ग्रिगारी उसी औरत के साथ भाग गया है उसने मुझे छोड दिया है। पापा मैं मिट्टी मे मिल गई हूँ। अपने पिता की भूरी दाढी की ओर विनयपूर्वक देखते हुए वह सिसकियाँ भरने लगी। देखा बाबा देखा

'मैं वहाँ नही रह सकती। वहाँ अब मेरे लिए कुछ नहो रहा। मुझे यहाँ रहने दो। अपनी बाँहो मे सिर छिपाये घुटनो के बल चलकर वह पास आई और उसने अपना सिर पिता की बाजुओ

पर टिका दिया। ऐसे में कमान सिर में मरख गया और सीधे लाल लाल पीले काना पर आ रह। एस अवसर पर आँसू मई की वर्षा की बौछारों की भाँति होते हैं। माँ ने नताल्या का चेहरा अपने स्कट में छिपा लिया और उसे धीरज बधाने के लिए ममताभरी इधर-उधर की बातें करने लगी। किन्तु मिरोन को क्रोध आ गया। वह सीढ़ियों की ओर दौड़ा।

दो स्लेजें तयार करो! वह चीखा।

सीढ़ियों पर एक मुर्गा अपनी मुर्गी के पीछे फड़फड़ाहट करते हुए दौड़ रहा था। वह मिरोन की चीख में भयभीत हो गया और पंख फड़फड़ाता चीखता खलियान की ओर भागा।

दो स्लेजों में घोड़े जोतो! मिरोन चीखता और सीढ़ियों के जंगले को इस तरह बार-बार ठोकरें लगाता रहा कि होते-होते वह बिलकुल बेकार हो गया। वह बावर्चीखाने में केवल तब लौटा जब कि हेत-बाबा घुड़साल में घोड़े निकाल जातने लगा।

मीस्का और हेत-बाबा नताल्या की सारी चीज़-वस्तु लाने के लिए मेलखोव-परिवार के लिए रवाना हुए। गफलत में हेत-बाबा ने सड़क पर चलते हुए एक छोटे मूसर को उठाकर लादा दिया। मन-ही-मन सोचकर मगन हुआ कि हो सकता है कि मालिक अब घोड़ों का सम्मा भूल जायें। उसने लगाम ढीली कर दी। फिर सोचा— बूढ़ा पाजी है कभी नहीं भूलेगा यह बात! अब उसने घोड़े के शरीर के सबसे कोमल हिस्से पर चाबुक जमाया।

१४

यवानी लिस्नित्स्की अतामान-लाइफगार्ड रेजीमेंट में सेफ्टिनेंट था। अश्वगों की हर्डल रेस में एक बार ठोकर खाकर वह गिर पड़ा और उसका बायाँ हाथ टूट गया। अस्पताल से आने के बाद उसने घर जाने को छ: सप्ताह की छुट्टी ली और अपने पिता के पास चला आया।

वृद्ध अनरल यागोदनाए में अकेला रहता था। अठारह सौ अस्सी में यह सवारी पर सवार वारसा के जंगलों में गुजर रहा था कि उसकी

पत्नी की मृत्यु हो गयी। क्रान्तिकारियों ने कज्जाक जनरल का निशाना बनाया लेकिन निशाना चूकने से वह तो बच गया उसकी पत्नी तथा कोचवान काम आ गए। उस समय यवानी केवल दो वर्ष का था। इस घटना के तुरन्त बाद जनरल अवकाश ग्रहण कर यागोद्नोए में आ बसा और उसने सरातोव प्रदेश की दस हजार एकड़ की जागीर छोड़ दी। यह जागीर १८१२ के युद्ध में पराक्रम दिखाने पर उसके परदादा को दी गई थी। वो यागोद्नोए में आने पर वह कठोर साधना का जीवन व्यतीत करने लगा।

उम्र होते ही उसने अपने पुत्र यवानी को कडेट कोर में भेज दिया और स्वयं खेतीबाड़ी में लग गया। उसने शाही अस्तबलों से अच्छी से अच्छी नस्ल के घोड़े खरीदे और उनसे और नामी प्रावाल्स्की अस्तबलों की सर्वश्रेष्ठ घोड़ियों के खून के मेल से एक नई नस्ल तैयार की। वह अपनी और किराये की जमीन पर पशुपालन करता अनाज उगाता शरद और शिशिर में शिकारी कुत्तों को साथ लेकर शिकार करता और कभी-कभी कमरा अन्दर से बन्द कर हफ्ता शराब के नशे में चूर रहता। उसे पेट की तकलीफ थी और ठोस या भारी खाना खाने के लिए डॉक्टर ने बिलकुल मना कर रखा था। वह अपना भोजन दाँतों से चबाता उसका रस चूसता और कुचला हुआ हिस्सा तश्तरी में थूक देता। यह तश्तरी उसका निजी नौकर वेनयामिन हाथ में साधे रहता।

वेनयामिन काले मोटे बालों वाला एक किसान था। मोटा ताजा जवान था पर दिमाग की कोई कील कहीं ढीली थी। उसे यहाँ नौकरी करते छः वर्ष हो गए थे। पहले तो जब जनरल कुचला हुआ खाना तश्तरी में थूकता तो उससे देखा न जाता पर बाद में उसे आदत हो गई।

जागीर के अन्य निवासी थे बावर्चिन लूकेरिया अस्तबल का पुराना नौकर साश्का तथा गड़रिया तिख़ोन। शुरू से ही लूकेरिया ने अकसीनिया को स्टोव के पास फटकने नहीं दिया।— मालिक गरमी में अमन से सोता को काम पर लगायेंगे तब तुम पकाना अभी तो मैं ही

काफी है इतना कुछ करने के लिए। अकसीनिया को हफ्ते में तीन दिन घर के फर्श धोने असंख्य मुर्गियों को चुग्गा डालने तथा मुर्गी पालन विभाग को साफ रखने का काम सौंपा गया। ग्रिगारी अपना अधिकांश समय साश्का के साथ लट्ठा के बने अस्तबल में गुजारता। बुड्ढा सफेद बालों का एक पिंड था पर हर आदमी उसे प्यार से 'साश्का' ही कहकर पुकारता था। शायद वृद्ध लिस्तनित्स्की भी उसे इसी नाम से पुकारता था। वह पिछले बीस वर्षों से उसकी सेवा करता आ रहा था। शायद बूढ़ा उसका नाम-कुलनाम भूल गया था। अपने यौवन-काल में साश्का कोचवान था पर बुढ़ापा आने के साथ उसकी नजर कमजोर पड़ने लगी तो उसे अस्तबल की देख-रेख का काम सौंप दिया गया। सफेद बालों से भरी उसकी मोटी नाक उसकी जवानी के दिनों में किसी ने एक मुक्के से चपटी कर दी थी। अब उसके मुख पर सदैव बच्चों की-सी मुसकान रहती। वह संसार को निष्कपट नेत्रों से देखता। साश्का को वोद्का पीने का शौक था। जब वह नशे में मस्त होता तो हाते में ऐसे घूमता कि जैसे मालिक बस वही हो। पर पटकते हुए वह वृद्ध लिस्तनित्स्की के शयन-कक्ष के नीचे खड़ा होता और जोर से चिल्लाकर कहता मिकोलाइ अलेक्सेएविच! मिकोलाई अलेक्सेएविच! यदि बूढ़ा लिस्तनित्स्की अपने कमरे में होता तो खिड़की पर आ जाता। गरजता, अब कम्बख्त कहीं के! पी आया है न!

साश्का अपने पाजामे को झटके से ऊपर उठाता पाँव मारता तथा मुसकराता। उसकी मुसकान उसके पूरे चेहरे पर थिरकती रहती।

मिकोलाई अलेक्सेएविच मेरे मालिक मैं आपको खूब जानता हूँ। वह अपनी पतली गन्दी अंगुलिया से उसे धमकाता।

जा सो जा आराम से नशा उतर जाएगा। मालिक शान्त भाव से कहता।

आप साश्का को धोखा नहीं दे सकते! पहरेदारी की रेलिंग के पास जाते हुए साश्का हँसता 'मिकोलाई अलेक्सेएविच! आप मेरी ही तरह हैं। आप और मैं—हम दोनों एक-दूसरे को इस तरह

जानते-समझते हैं जैसे मछली पानी को जानती समझती है। आप और मैं हम लोग रईस हैं रईस! रियासत की लम्बाई-चौड़ाई बतलाने के लिए वह अपने हाथ फैलाता। हमको सब जानते हैं सब जितने भी दोन के इलाके में रहते हैं वे सब हम ... शास्का की आवाज में अचानक ही दर्द घुल उठता ... मैं और आप मेरे हुजूर हम सबके भले हैं। हमारा सब कुछ भला है। बस इतनी-सी बात है कि हम दोनों की नाक खराब है।

ऐसा क्यों है? उसका मालिक हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाता।

वोद्का की वजह से! शास्का आँख मारते और होंठों को चाटते हुए हकलाकर कहता मिकोलाई लक्सेएविच पीना बन्द कीजिये नहीं तो हम बरबाद हो जाएँगे आप और मैं हम दोनों ही जमीन जायदाद जरा-जरा बेचकर पी डालेंगे।

'जाओ और नशा उतारने के लिए पी लो। वह लिस्तनित्स्की बीस कोपेक का एक सिक्का फेंकता। शास्का उसे लोकता अपनी टोपी में छिपाता और चिल्लाता

अच्छा जनरल हास्विदानिया[1]!

घोड़ों को पानी पिलाया? उसका मालिक मुसकराकर पूछता और जवाब की कल्पना पहले से ही कर लेता।

काहिल कमीना सूअर का बच्चा! गुस्से से शास्का का बदन काँपने लगता आवाज फटने लगती शास्का घोड़ों को पानी देना भूल गया क्या? मैं कहता हूँ कि मेरी जान निकल रही हो तो भी मैं अपने घोड़ों के लिए दौड़कर एक बाल्टी पानी न लाने की नीयत रखता हूँ और तू सोचता है कि

बूढ़ा बमतलब आरोपों से क्रोधित होता गालियाँ देता और घूँसे दिखाता भाग जाता। बाद में सब-कुछ माफ कर दिया जाता—वोद्का पीना भी और मालिक के साथ ऊलजलूल ढंग से बातें करना भी।

---

[1] गुडबाई—नमस्ते।

अस्तबल की नौकरी से उसे हटानेवाला कोई न था। जाड़े हों या गर्मी वह अस्तबल की एक खाली कोठरी में ही सोता। वह अपने आप में सईस भी था और घोड़ा-डाक्टर भी। बसन्त में मैदानों और घाटियों से वह घोड़ों के लिए घास और जड़ी-बूटियाँ खोद-खोदकर लाता। उसने अस्तबल की दीवारों पर घोड़ों के रोगों के इलाज के लिए सूखी जड़ी-बूटियों के गुच्छे-के-गुच्छे लटका रखे थे।

जाड़े हों या गर्मी, साश्का के सोने की कोठरी में मकड़ी के जाले की भाँति एक सुन्दर मधुर गन्ध की सनसनाहट का अनुभव होता रहता था। सूखी घास को इतना अधिक दबा दिया गया था कि वह तख्ते की तरह कड़ा हो गई थी। उसके ऊपर घोड़े का ओहार ढँका रहता और घोड़े के पसीने की गन्ध से भरा उसका कोट उसकी चारपाई पर गद्दे-बिछौने का काम देता। घरबार और चीज-वस्त के नाम पर बूढ़े के पास था एक कोट और एक भेड़ की खाल और बस।

तिखान नाम का मोटा-तगड़ा, दिमाग से बुद्धू, कज्जाक लूकरिया के साथ रहता और मन ही मन साश्का तथा लूकरिया से ईर्ष्या करता। माह में एक बार बूढ़े की चिकटी कमीज का बटन पकड़ वह उसे एकान्त में ले जाता और कहता, 'बुड्ढे, मेरी औरत पर अपना हक न जमा।'

यह तो ... साश्का अर्थपूर्ण दृष्टि से आँख मारता।

तुम उससे दूर ही दूर रहो, तिखान आग्रह करता।

चेचक के दागोंवाले चेहरे मुझे बहुत पसन्द हैं, कोई ऐसी औरत मिल जाए तो मुझे वोदका की जरूरत नहीं। चेहरे पर जितने दाग हों औरत मन को उतना ही पसन्द करती है।

अपनी मर्दानगी का तो लिहाज करो। फिर तुम तो डाक्टर भी हो, तुम घोड़ों की देखभाल करते हो, सभी राज समझते हो।

मैं सभी तरह की डाक्टरी कर सकता हूँ, साश्का कहता।

दूर रहो बाबा, बड़ी बुरी बात है।

बेटे, आजकल में ही लूकरिया को हासिल करूँगा मैं। तुम तो बदनाम करो अब उसे। मैं उसे तुमसे उड़ाकर रहूँगा।

खबरदार रहना, मैंने तुम्हें उसके साथ देख लिया तो जान निकाल

लूंगा।" तिखोन आह भरकर कहता और अपनी जेब में ताँबे के कुछ सिक्के निकालता।

और यह क्रम महीनों चलता जाता। होते-होते यागोदनाए का जीवन घटनाविहीन और बेजान होता गया। यागोदनोए सभी चालू सड़कों से दूर एक घाटी में था और शरद् के आरम्भ होते ही आस-पास के सभी गाँवों से उसका सम्बन्ध टूट जाता था। जाड़े की रातों में भेड़ियों के झुंड-के-झुंड जंगल की झाड़ियों से निकलकर आ जाते और गुर्रा-गुर्राकर घोड़ों को डराते। तिखोन मालिक की दुनाली बन्दूक लेकर भेड़ियों को डराने के लिए चरागाह में जाता और लुकेरिया सहमकर सोचती कि बन्दूक अब दगी कि तब दगी। ऐसे मौकों पर गंजा तिखोन एक खूबसूरत बहादुर जवान के रूप में उसकी कल्पना में आता फिर जब नौकरों के क्वार्टर का दरवाजा धड़ाके से होता और तिखोन अन्दर आता तो वह पलंग पर जगह कर देती और अपने बर्फ से ठिठुरे साथी को बड़ी ममता से दुलारती।

गर्मी के दिनों में यागोदनाए में मजदूर काफी रात गए तक काम करते और तब तक चहल-पहल बनी रहती। मालिक ने कुछ सौ एकड़ जमीन पर तरह-तरह की फसलें बोईं और उनके लिए मजदूर नौकर रखे। वेनियामिन जब-तब घर आता तो बगीचे और चरागाह में इधर-उधर चकराया सा घूमता। वह सुबह से ही झील के किनारे मछली पकड़ने की बंसी लेकर बैठ जाता। वेनियामिन मझोले कद का चौड़े सीनेवाला जवान था। वह बाल करीने ढंग से रखता और बालों की एक लट माथे की दायीं ओर लटकती रहती। उसका फौजी कोट उस पर बहुत ही फबता।

जागीर पर ग्रिगोरी के पहले दस दिन तो प्राय छोटे मालिक के साथ बीते। एक दिन वेनियामिन मुसकराता हुआ नौकरों के क्वार्टर में आया और बोला "ग्रिगोरी, तुम्हें छोटे मालिक बुला रहे हैं।"

ग्रिगोरी येव्गेनी के कमरे में गया और सदा की तरह दरवाजे पर खड़ा हुआ रहा। मालिक ने कुर्सी पर बैठने को इंगित किया तो ग्रिगोरी कुर्सी के सिरे पर बैठ गया।

'हमारे घोड़े कैसे लगे?' लिस्तनित्स्की ने पूछा।

सब अच्छे हैं। भूरा वाला तो और भी शानदार है।'

उसका खूब सिखाया सधिन दौड़ाना नहा।

यही मुकम भावा नाका न कहा है।

आँखें मिचकाते हुए मालिक ने कहा तुमका मई म शिक्षण-शिविर जाना है न ?

'जी हाँ।

मैं अतामान म कह दूगा। तुम्हें नही जाना पड़ेगा।'

महरबानी हुजूर !

क्षणभर चुप्पी छाई रही। अपनी वर्दी क बटन खोलकर अक्सीनी न अपनी औरतों-जैसी गोरी छाती खुजलाई।

तुम्हें डर नहीं लगता कि अक्सीनिया का मन उस तुमस छीन ले जाएगा ? उसन पूछा।

उसन अक्सीनिया का छोड़ दिया है अब वह उसकी बात पूछेगा नहो।

तुम्हें कस मालूम ?

कल ही मेरे गाँव का एक आदमी मिला था। उसन मुझे बतलाया कि स्तीपान दिन दिना टटकर पीता है। कहता है—मुझे अक्सीनिया की जरूरत नहीं मैं कोई और ज्यादा गरम औरत खोज लूंगा।

अक्सीनिया खूबसूरत औरत है। लिस्तनित्स्की न जरा मुसकरा कर कहा।

'हाँ बुरी नहीं है। ग्रिगारी न कहा और उसके चहरे पर चिन्ता के बादल छा गए।

अवकाश की छुट्टी क कुछ ही दिन रह गए। इस बीच यवगेनी का अधिकांश समय ग्रिगोरी के कमरे में ही बीतता। अक्सीनिया अपने कमरे को बिलकुल साफ रखती। वह गद म मढ़ी दीवारों पर सफेदी करती खिड़की चौखट रगड़कर साफ करती और फश को टूटी हुई म रगड़ती। अपना छोटा शानदार ढंग स सिला कोट कन्धे पर डाले यवगेनी उसके कमरे म उस समय आता जबकि ग्रिगोरी घोड़ों के काम में फंसा होता। पहले तो वह बावर्चीखाने म जाता और मिनट-दो मिनट मुखेरिया से हंसी

मज़ाक करता और फिर अपने कमरे में चला जाता। एक दिन वह स्टूल पर बैठ गया और मुसकराते हुए बेहयाई से एकटक अक्सीनिया को देखता रहा। औरत परेशान हो उठी और बुनाई की सलाइयाँ उसकी अँगुलियों के बीच काँपने लगीं।

"कहो अक्सीनिया मजे में तो हो?" अपनी सिगरेट का धुआँ छोड़ते हुए वह बोला। सारा कमरा नीले धुएँ से भर उठा।

"बहुत मज़े में हूँ। धन्यवाद!" अक्सीनिया ने अपनी आँखें उठाई तो येवगेनी की पैनी दृष्टि का भाव समझते ही लाल हो गई। उसने येवगेनी के प्रश्नों के उत्तर उलटे-सीधे दिये उसकी निगाह से बचने की कोशिश की और कमरे से बाहर जा सकने का मौका ढूँढ़ने लगी।

"जाऊँ और बत्तखों को चुग्गा डाल आऊँ ज़रा।"

"थोड़ी देर और बैठो। बत्तखें इन्तज़ार कर सकती हैं।" वह मुसकराया और घुड़सवारी के कसे हुए बिरजिस से लैस पैर हिलाते हुए उसके विगत जीवन के विषय में सवालों पर सवाल करने लगा। उसकी मन्दाभर आँखों में उसकी कामना लहरें लेती रही।

ग्रिगोरी के कमरे में आते ही येवगेनी की आँखों की आग राख हो गई। उसने उसे एक सिगरेट दी और तुरन्त ही बाहर चला गया।

"क्या कहता था?" ग्रिगोरी ने अक्सीनिया की ओर देखे बिना ही पूछा।

"यह मुझे क्या मालूम?" फ़ौजी अफ़सर की नज़र की याद कर अक्सीनिया बरबस हँसी। "वह अन्दर आया और चौकी इस तरह से बैठ गया..." उसने उसे बैठकर दिखलाया कि येवगेनी किस तरह कन्धे झुकाए बैठा था—"और तब तक बैठा रहा जब तक कि मैं लाल नहीं पड़ गई।"

"तुमने उसे अन्दर बुलाया?" ग्रिगोरी ने क्रोध से अपनी आँखें सिकोड़ीं। "अब आये तो तुम उसे बाहर निकाल देना यहाँ से। मुझे उस निगाह का क्या ज़रूरत? नहीं तो मैं उसे सीढ़ियों से नीचे धकेल दूँगा।"

अक्सीनिया ने मुसकराते हुए ग्रिगोरी की ओर देखा। वह निश्चय

न कर सकी कि ग्रिगोरी गम्भीर होकर यह बात कह रहा है या मज़ाक कर रहा है।

१५

'लेंत' के चौथे सप्ताह में जाड़ा समाप्त हो चला। पानी की धार दोन के किनारों पर गोटे समान लगी। ऊपर की बर्फ़ भूरी पड़कर स्पंज की तरह फूल गई। एक दिन शाम को पहाड़ियों में ममर ध्वनि आई। पुरानी कहावत के अनुसार तो पाला पड़ना चाहिए था किन्तु वास्तव में यह बर्फ़ के पिघलने की पूर्व-सूचना थी। सुबह की हवा में हल्के पाले की सनसनाहट रही पर दोपहर होते-होते बीच-बीच में जहाँ-तहाँ बर्फ़ गल गई और मार्च चारों ओर गमकने लगा।

मीरोन कोरशूनोव जुताई की तैयारियाँ आराम से करता रहा। दिन लम्बे हो चले। अब वह शेड में बैठा हँगियों के दाँत तेज़ करता या गाड़ी के पहियों की मरम्मत करता। लेंत पर्व के चौथे सप्ताह में वृद्ध ग्रीश्का व्रत रखता। गिरजे से लौटने में वह ठंड के मारे नीला पड़ जाता और अपनी पतोहू लूकीनीचना से शिकायत करता : वह पादरी उबा डालता है। किसी काम का आदमी नहीं है। इतना सुस्त है जितना कि अड़े साँड़ के जाल वाला कोई गाड़ीवान।

आप अपना व्रत यंत्रणा-सप्ताह में रखते तो ज्यादा ठीक रहता। उन दिनों इतनी ठंड नहीं पड़ती।

'नताल्या को बुलाओ।' ग्रीश्का कहता, 'वह मेरे लिए गरम मौज़े बुन देगी।'

नताल्या को अब भी यह विश्वास बना रहा कि एक-न-एक दिन ग्रिगोरी उसे फिर से अपनायेगा और ज़रूर अपनायेगा। उसका हृदय ग्रिगोरी के लिए कलपता। यदि कोई इसके विपरीत कहता तो वह उसकी बात पर कान नहीं देती। दुखभरी रातें वह करवटें बदल-बदलकर बिता देती। शाम उसे खाए जाती। भला उसे ऐसी उम्मीदें कहाँ थी और क्या ऐसा उसने किया था कि यह नरक भुगत वाड़ में पड़ी और बड़ी देर वह भय से कातर हो चुपचाप

उसके परिणाम की प्रतीक्षा करने लगी। अपने अकेले कमरे म उसकी अवस्था एसी रहती जसी जगल के वीराने म पडी घायल टिटहरी की। बात यह हुई कि मक लौटने के बाद से ही उसका भाई मीत्का उसे पाप की नजर से देखने लगा। एक दिन उसे बरसाती म पाकर उससे साफ-साफ पूछने लगा क्या तू अभी तक ग्रीश्का के पीछे दीवानी है ?

"इससे तुम्हें क्या मतलब ?

मैं तुझे तेरे दुख से छुडाना चाहता हूँ।

मीत्का के मन का भाव समझ नताल्या डर गइ। मीत्का की बिल्लियों-जसी हरी आँखें चमकीं और बरसाती की धुंधली रोशनी म आँखों की कोरें जैसे तेल से चिकना उठीं। किवाड बन्द कर भागी भागी नताल्या बाबा के कमरे म गई और वहाँ खडी होकर अपने दिल की धडकनें सुनती रही। अगले दिन हाते म मीत्का उसके पास आया। वह पशुओं के सामने हरी घास डाल रहा था। घास की हरी डठलें उसके खडे बालों और फर की टोपी पर लटक रही थीं।

इस तरह अपनी देह गवा नहीं नताल्या'

मैं पापा स कह दूँगी। अपने बचाव के लिए हाथ उठाते हुए वह चिल्लाई।

तू बेवकूफ है !

अलग रह मुझसे अलग रह। जानवर कहीं का !

आखिर तू चिल्ला क्यो रही है ?

'तुम चले जाओ यहाँ से मीत्का ! मैं अभी पापा के पास जाकर सब-कुछ कह दूगी। तुम इस तरह मेरी तरफ देखते बस हो ! ताज्जुब है कि धरती फट नहीं जाती और तुम उसमे समा नहीं जाते।

धरती मुझे नहीं निगलती तुम देखती तो हो ! मीत्का ने अपनी बात के समथन म पर पटके और नताल्या की ओर बढा।

मेरे पास न आना मीत्का मैं कहे देती हूँ तुमसे

खर, इस समय न सही रात को आऊँगा। भगवान् कसम मैं आऊँगा।

नताल्या भय से काँपती हुई हाते से बाहर चली गयी। उस दिन

रात को उसने सन्दूक पर अपना बिस्तर लगाया और अपनी छोटी बहन को अपने पास सुला लिया। सारी रात करवटें बदलती रही। उसकी जलती हुई आँखें अन्धकार भेदने का प्रयत्न करती रहीं हल्की-से-हल्की आहट पर उसके कान खड़े होते रहे। वह मन-ही-मन सोचती रही कि कोई मेरे पास आया कि मैंने चिल्लाकर सारे घर को जगाया। पर खामोशि भंग होती रही या तो बगल के कमरे में साथ ग्रीश्का के खर्राटों से या कभी-कभी उसकी बहन की गुर्राहट से।

नताल्या के अन्तर की पीड़ा का अनुमान केवल स्त्रियाँ ही लगा सकती हैं। वेदना ऐसी कि धीरज बधाये न बँधे। उस पर दर्द का यह तार दिन-ब-दिन चलता तो भी एक बात थी। यह सिलसिला हर आये-दिन की बात हो गई।

अपनी शादी की बोगिनी में जो कालिख मीश्का ने अपने मुंह पर पोत ली थी वह अभी तक धुल नहीं सकी थी। इस कारण उसके स्वभाव में उदासी के साथ चिड़चिड़ाहट भी घुल गई थी। हर दिन शाम को घर से चला जाता तो सुबह से पहले तो शायद ही कभी लौटता। वह गाँव की ऐसी औरतों के पीछे रहता जो अपने पतियों के फौजी ड्यूटियों पर चले जाने के बाद या अस्ताखोव के यहाँ जुआ खेलते समय अपनी तबीयतें बदलना चाहती। पिता से उसका व्यवहार छिपा नहीं रहा। लेकिन फिलहाल उसने चुप्पी ही साध रखी।

ईस्टर से जरा पहले पन्तली प्रोकोफिएविच ने नताल्या को मोखोव की दूकान के पास से गुजरते देखा तो आवाज देकर बोला नताल्या सुनो जरा!

नताल्या रुक गई। अपने ससुर के चेहरे को देखते ही उसका हृदय धीत्कार करने लगा। ग्रिगोरी की याद ताजा हो गई।

तुम तो कभी मिलने जुलने भी नहीं आतीं। सुनते ऐसा त्याग दिया है हम बूढ़ों को एसा भी क्या! बूढ़ा उसमें आँखें बचाकर इस तरह बोला जैसे कि नताल्या को ठेस उसने ही पहुँचाई हो।

तुम्हारी सास तुम्हें बहुत याद करती है क्या हाल-चाल हैं तुम्हारे?

नताल्या सम्हली। बोली 'धन्यवाद' फिर एक क्षण हिचकिचाई। उसे 'बापू' कहकर सम्बोधित करना चाहती थी पर बोली "पन्तेली प्राकोफिग्विच ! घर पर बड़ा काम रहता है।"

"हमारा ग्रीश्का" उफ! बूढ़े ने दुख से सिर हिलाया "उस बदमाश ने हमारी बड़ी नाक कटाई है। फिर यह कि हम सब कसे आराम से जी रहे थे!"

"ओह पापा!" नताल्या की आवाज फसने लगी "किस्मत में ऐसा लिखा था और क्या कहा जाए!"

नताल्या की आँखों में आँसू देखकर पन्तेली व्यग्र हो उठा। नताल्या ने होंठ भींचे और आँसू पीने की कोशिश की।

पन्तेली बोला "अच्छा बेटी विदा! उस सूअर के बच्चे के लिए दुख न करो। वह तेरी अंगुली के नाखून के बराबर भी नहीं हो सकता कभी। शायद कभी लौट भी आये। मैं उससे मिलना चाहता हूँ। दो-दो बातें करना चाहता हूँ उससे।"

नताल्या सिर झुकाये आगे बढ़ गई। पन्तेली अपनी टाँगें इस तरह इधर-उधर करता रहा जैसे कि भाग जाना चाहता हो। नुक्कड़ पर पहुँचते ही नताल्या ने पीछे मुड़कर देखा। बूढ़ा लँगड़ा-लँगड़ाकर चौक पार करता नजर आया। शरीर का सारा बोझ हाथ की छड़ी पर सधता दीखा।

१६

वसन्त के दिन आये तो स्टॉकमन के यहाँ की बैठकें कम हो चलीं। गाँव के लोग अपने खेतों की तैयारियों में लग गए। बस केवल इंजिन मैन ईवान अलक्सिएविच और मेल मास्तर और मिल से अपने साथ दाविद को ले आते।

ईस्टर के पहले के बृहस्पतिवार के दिन वे लोग वर्कशॉप में शाम को जरा जल्दी ही आ गए। स्टॉकमन अपनी बैंच पर बैठा पचास कोपेक के चाँदी के सिक्के की बनी एक अंगूठी को साफ करता मिला। अस्ताचल को ओर प्रस्थान करते सूर्य की रश्मियाँ कमरे में पीली

गुलाबी गर्म भरी रोशनी उँडेल रही थी। इंजिनमैन ने सँड़ासी उठा ली और उससे खिलवाड़ करने लगा।

मुझे कल मालिक के पास पिस्टन के बारे में पूछताछ करने के लिए जाना पड़ा। वह बताता है कि उसे मिलरोवो ले जाना पड़ेगा। यहाँ उसकी मरम्मत हो नहीं सकती। उसमें इतना लम्बा क्रैक हो गया है। ईवान अलेक्सिएविच ने अपनी अंगुलियाँ दिखलाईं।

मिलरोवो में कारखाना है कोई? कनी में चाँदी के सर्पों की बौछार करते हुए श्टोकमन ने पूछा।

वहाँ स्टील-फाउण्ड्री है। पारसाल कुछ दिनों मुझे वहाँ रहना पड़ा था।

बहुत मजदूर हैं वहाँ?

काई चार सौ के आस-पास हैं।

और कैसी हालत में हैं वे? स्टाकमन ने जान-बूझकर पूछा।

खाते-पीते लोग हैं। उनमें से कोई भी प्रोलेतारियन यानी सर्वहारा वर्ग का नहीं है। ठूठा है सब।

ऐसा क्यों है? श्टोकमन के पास बैठे नव ने पूछा।

क्योंकि वे बहुत मजे में हैं। सबके अपने घर हैं और औरतें हैं हर तरह का आराम है। उनमें आधे से ज्यादा बाप्टिस्ट हैं। नक्स काटते हैं। खुद मालिक उपदेश देता है और सब एक-दूसरे का चूमते रहते हैं और पाप का मैल उनके बदनों पर इतना जमा हुआ है कि हँसिया से भी नहीं खुरचा जा सकता।

'ईवान अलेक्सिएविच, यह बाप्टिस्ट किसे कहते हैं? दाविद ने पूछा।

'बाप्टिस्ट! बाप्टिस्ट वह होता है जो ईश्वर की पूजा अपने ढंग से करता है। उसका अपना सम्प्रदाय होता है।

हर बेवकूफ अपने ढंग से ही सब मनवना है! नव ने कहा।

फिर तो मैं सर्गेई प्लातोनोविच के पास गया। ईवान अलेक्सिएविच ने अपनी कथा आरम्भ की 'उसके पास अत्यापिन था इसलिए मुझसे बाहर रुकने को कहा गया। मैं बाहर ही बैठ गया और दरवाजे

से उनकी बातचीत सुनता रहा। माक्षाव ने कहा कि जर्मनी से लड़ाई बहुत जल्दी छिड़ेगी। मैंने एक किताब में पढ़ा है। इस पर मरायाखिविन बोला जर्मनी और रूस के बीच लड़ाई हो नहीं सकती क्योंकि जर्मनी को हमारे अनाज की जरूरत है। इसी समय मुझे एक तीसरे आदमी की आवाज़ सुनाई दी। पीछे मालूम हुआ कि वह वृद्ध लिस्तनित्स्की का बेटा है। सेना में अफसर है। वह बोला जर्मनी और रूस के बीच पोलैंड व बाल्कनों को लेकर लड़ाई होगी। लेकिन इससे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं। ओसिप दाविदोविच ! तुम्हारी क्या राय है ? इवान ने स्टॉकमन की ओर मुड़ते हुए पूछा।

मैं भविष्यवाणी करने में कुशल नहीं। अपने फैले हुए हाथ में पड़ी अँगूठी की ओर स्थिर दृष्टि से देखते हुए स्टॉकमन बोला।

एक बार लड़ाई अगर शुरू हो गई तो हमको भी उसमें फँसना ही पड़ेगा। हम चाहें या नहीं चाहें बाल पकड़कर घसीट लिया जाएगा हमको।' नेव बोला।

बात ऐसी है भाई ! इंजिनमैन के हाथ से सँड़ासी लेते हुए स्टॉकमन गम्भीरता से बोला जैसे कि मामले को पूरी तरह समझना चाहता हो। नेव बेंच पर आराम से जम गया और दाविद के होंठ गोलिया गए तो उसके दाँत दिखलाई देने लगे।

स्टॉकमन ने संक्षेप में पर साफ-साफ बतलाया कि पूँजीवादी राज्य बाज़ारों और उपनिवेशों के लिए किस तरह संघर्ष चला रहे हैं। जब वह अपनी बात समाप्त कर चुका तो ईवान अलेक्सिएविच ने गुस्से से पूछा 'हाँ ! लेकिन हमारा सवाल इसमें कहाँ उठता है ?

दूसरों का ऐश-आराम के नशे में चूर देखकर तुम्हें भी डाह होने लगेगी। स्टॉकमन मुसकराया।

'बच्चों की-सी बातें न करो। नेव ने व्यंग्य किया कहावत है न— मालिक लड़ते हैं तो किसानों के सिर के बाल हिलते हैं।

और लिस्तनित्स्की माक्षाव से मिलने क्या आया था ? शायद उसकी बेटी के सिलसिले में ! दाविद ने विषय बदला।

"वह कोर्शूनोव का छोकरा वहाँ अभी-अभी पहुँच चुका है नेव

बीच में बोला।

'ईवान अलक्सिएविच सुन रहे हो? यह अफसर भला यहाँ क्या मँडराता है?' दाविद ने दोहराया।

इवान अलक्सिएविच यों चौंका जैसे कि किसी ने एक चाबुक जमा दिया हो, 'अरे हाँ, क्या कह रहे थे तुम?'

'यानी तुम सो रहे हो! अरे, हम लिस्तनित्स्की के बारे में बातें कर रहे थे।'

'वह तो स्टेशन जा रहा था। हाँ, और भी एक नई बात! मकान के बाहर निकलते मैंने उसको देखा। जानते हो किसको? अरे, प्रिगोरी मेलखोव को! वह हाथ में चाबुक लिये बाहर खड़ा था। मैंने पूछा, तुम यहाँ कैसे प्रिगोरी? बोला, मैं सफ्टिनेंट लिस्तनित्स्की को मिलेरोवो स्टेशन ले जा रहा हूँ।'

'वह लिस्तनित्स्की का कोचवान है।' दाविद ने बतलाया।

'रईस की रोटियाँ तोड़ रहा है!'

'तब तुम जंजीर से बँधे एक ऐसे कुत्ते की तरह हो, जो किसी पर भी झपट सकता है।'

देर हो रही थी, अतः सबसे पहले ईवान अलक्सिएविच वहाँ से उठकर चला। फिर दूसरे लोग भी उठे। स्टोकमन अपने अतिथियों को द्वार तक पहुँचाने गया। इसके बाद बरसाती में ताला लगा, घर में चला गया।

ईस्टर-इतवार के पहले की रात को काले-काले बादल आसमान में फिर आए और पानी बरसने लगा। पूरे गाँव पर अँधेरा छा गया। तड़के दोन की बर्फ चटखने लगी। फिर कोई भार बस्ते की बर्फ फटी और नदी की धारा में वह चली। इस बीच गिरजे के हाल में जहाँ-तहाँ खड़े हो गए तो वहाँ तमाम लड़के जमा हो गए। गिरजे के खुले दरवाजे से प्रार्थना के स्वर उमड़ रहे और खिड़कियों से पर्व की दीवानी का प्रकाश छनता रहा। हाल में अँधेरे में लड़के लड़कियों से छेड़खानी करते और उन्हें चूमते रहे। आपस में गन्दी-गन्दी कहानियाँ भी कहते रहे।

गिर्जे के चार्टर के नियम से तमाम जिले के गाँवों के लोग जमा

स उनकी बातचीत सुनता रहा। मोखाव ने कहा कि जर्मनी स लडाई बहुत जल्दी छिड़गी। मैंने एक किताब म पढ़ा है। इस पर प्रत्योपिकिन बोला जर्मनी और रूस के बीच लडाई हो नही सकती क्योकि जर्मनी को हमारे अनाज की जरूरत है। इसी समय मुझे एक तीसरे आदमी की आवाज सुनाई दी। पीछे मालूम हुआ कि वह वृद्ध लिस्तनित्स्की का बेटा है। सेना म अफसर है। वह बोला जर्मनी और रूस के बीच अपूरा क बनाने को लेकर लडाई होगी। लेकिन इससे हमारा कोई सम्बन्ध नही। ओसिप दाविदोविच ! तुम्हारी क्या राय है ? इवान ने स्टॉकमन की ओर मुड़ते हुए पूछा।

'मैं भविष्यवाणी करने म कुशल नही। अपने फल हुए हाथ म सधी अगूठी की ओर स्थिर दृष्टि से देखते हुए स्टॉकमैन बोला।

एक बार लडाई अगर शुरू हो गई तो हमको भी उसमे फँसना ही पडेगा। हम चाहें या नही चाहें बाल पकडकर घसीट लिया जाएगा हमको। नेव बोला।

'बात ऐसी है भाई ! इजिनमत क हाथ स मडासी लेते हुए स्टॉकमन गम्भीरता से बोला जसे कि मामले का पूरी तरह समझ लेना चाहता हो। तब बेंच पर आराम से जम गया और दाविद के होठ गोलिया गए तो उसके दाँत दिखलाई देने लग।

स्टॉकमन ने संक्षेप म पर साफ-साफ बतलाया कि पूँजीवादी राज्य बाजारो और उपनिवेशो के लिए किस तरह सघर्ष चला रहे हैं। जब वह अपनी बात समाप्त कर चुका तो ईवान अलेक्सिएविच ने घृणा म पूछा हाँ ! लकिन हमारा सवाल इसम कहाँ उठता है ?

दूसरो को ऐश-आराम म नशे म चूर देखकर तुम्हे भी डाह होने लगेगी। स्टॉकमन मुसकराया।

बच्चा की-सी बातें न करो। नेव न व्यग्य किया कहावत है न— मालिक लडते हैं तो किसानो के सिर के बाल हिलते हैं।

'और लिस्तनित्स्की मोखोव स मिलने क्या आया था ? शायद उसकी बेटी के सिलसिले म ! दाविद न विषय बदला।

''वह कोरशुनोव का छोकरा वहाँ कभी का पहुँच चुका है नव

बीच म बोला।

ईवान अलेक्सिएविच सुन रहे हो? वह अफसर भला यहाँ क्या मडराता है? दाविद न दोहराया।

इवान अलक्सिएविच यों चौंका जसे कि किसी न एक चाबुक जमा दिया हो अरे हाँ क्या कह रहे थ तुम?

'खाली तुम मा रहे हो! अरे हम लिस्तनित्स्की क बारे म बातें कर रहे थे।

'वह तो स्टेशन जा रहा था। हाँ और भी एक नई बात! मकान के बाहर निकलन मैंने उसको देखा जानते हो किसको? अरे प्रिगारी मेलखाव का! वह हाथ में चाबुक लिय बाहर खड़ा था। मैंने पूछा 'तुम यहाँ कस प्रिगारी?' बोला मैं लफ्टिनेंट लिस्तनित्स्की को लिवाकर स्टेशन ले जा रहा हू।

वह लिस्तनित्स्की का कोचवान है। दाविद न बतलाया।

'ईस की रोटियाँ तोड़ रहा है!'

तब तुम जंजीर म बँधे एक उस कुत्ते की तरह हो जो किसी पर भी भाक सकता है।

देर हो रही थी अत सबसे पहले ईवान अलक्सिएविच वहाँ से उठकर चला। फिर दूसरे लोग भी उठे। स्टाकमन अपने अतिथियों को द्वार तक पहुँचाने गया। इसके बाद बरसाती म ताला लगा घर म चला गया।

ईस्टर-इतवार के पहले की रात को काले-काले बादल आसमान में घिर आए और पानी बरसने लगा। पूरे गाँव पर अँधेरा छा गया। तड़क भाव की अफ चटखने लगी। फिर कोई बाद वर्फ का बड़ा टुकड़ा और नदी के धारा में बह चली। इस बीच गिरजे के हाल में इधर-उधर गाड़ हो गए सा वहाँ तमाम लड़के जमा हो गए। गिरजे क खुले दरवाजे स प्रार्थना के स्वर उमड़ते रहे और खिड़कियों म पड़ की रोशनी का प्रकाश छनता रहा। हाल म अँधेरे में लड़के लड़कियों को छेड़ते रहे और उन्हें चूमते रहे। आपस में गन्दी-गन्दी कहानियाँ भी कहते रहे।

गिरजे क आर्डन के निवास म तमाम जिले क लोगों क [illegible]

रहे। मकान और नमर की घुटन स दूर लोग बंच तो बंच फर्श पर भी सोते रहे।

कुछ लोग टूटी-फूटी सीढ़ियों पर बठे धुआँ उड़ाते और मौसम और जाड़े की फसलों की बातें करते रहे।

'तुम सब लोग खेतों म कब जुटोगे ?

खयाल है कि जल्दी ही काम शुरू होगा

ठीक ही है तुम्हारे खेतों के आस-पास की जमीन बलुही है

हाँ कुछ तो है नाले के इस पार की जमीन खार से भरी है दलदली है

अब तो जमीन को खूब पानी मिल जाएगा।

पिछले साल हमने जुताई की तो जमीन कड़ी थी।

दून्या तुम कहाँ हो ? इस बीच ऊँचे स्वर म किसी ने आवाज दी।

गिरजे के हाते के फाटक म मोटी आवाज गूँजी घूमने क लिए बड़ी अच्छी जगह चुनी है सुनने हो निकल जाओ यहाँ म क्या सूझी है तुम लोगों को भी !

'तुम्हे कोई घूमने को नहीं मिलता तो जाओ हमारे हाते की कुतिया को घूम आओ ! अँधेरा भेदते हुए एक लड़का बोला।

कुतिया को घूम आऊ ? अभी सबक देता हूँ मैं तुम्हें"

इसके साथ ही लड़के भागे और स्कर्ट फड़फड़ाते हुए लड़कियाँ भी भाग चलीं।

पानी टप-टप कर छत से चूता रहा। फिर कोई बोला प्रोखोर स एक हल लेना चाहता हूँ बीस रूबल दे रहा हूँ। राजी ही नहीं होता

ऐसे में आधी रात के समय घोड़े की नंगी पीठ पर सवार मीत्का कोरशूनोव गिरजे म आया। उसने घोड़ा बाँधा अपनी पेटी ठीक की और गिरजे क हाते म घुसा। दरवाजे म उसने टोपी उतारी श्रद्धा स सिर झुकाया और औरतों को धकियाता बढ़ी की ओर बढ़ा। बायीं ओर कज्जाकों की भीड़ थी। दायीं ओर औरतें जमा थीं। मीत्का न आगे की

यहाँ से नदी को पार करना ठीक होगा ?' ग्रिगोरी ने लगामों को घुमाते हुए उससे पूछा।

ग्राज सुबह तो लोगों ने नदी पार की है।

पानी गहरा है ?

नहीं मगर इतना तो है कि स्लेज में उछल आए।

लगामों को सम्हाल चाबुक ले तयार हो ग्रिगोरी ने घोड़ों को हाँक दिया। हिनहिनाते घोड़े बेमन से आगे बढ़े। ग्रिगोरी ने अपना चाबुक सटकारा और अपनी गद्दी पर खड़ा हो गया।

बायीं ओर की घोड़ी ने सिर हिलाया और अचानक ही जोत का झटका दिया। ग्रिगोरी ने अपने पाँवों की ओर देखा। पानी स्लेज के आगे के हिस्से में नाच रहा था। पहले तो पानी घोड़ों के पाँवों तक रहा पर फिर अकस्मात् ही छाती तक आ गया। ग्रिगोरी ने चेष्टा की कि घोड़े वापस मुड़ जाएँ किन्तु लगाम की परवाह न कर घोड़ा ने तैरना शुरू कर दिया। तेज बहाव के कारण स्लेज का पिछला भाग घूम गया और घोड़ों के सिर पानी से ऊपर उठ आए। पानी उनकी पीठों पर बहने लगा। स्लेज हिलने-डुलने और उन्हें बुरी तरह पीछे घसीटने लगी।

अरे ! रे ! दायीं तरफ से ! किनारे पर दौड़ अपनी फर की टोपी को हवा में लहराते हुए उक्रइनी चिल्लाया।

ग्रिगोरी आपे में न रहा। घोड़ों को बराबर ललकारता वह बरबस आगे-ही आगे हाँकता रहा। स्लेज के पीछे भँवरों के झाग उमड़ते रहे। स्लेज के बम लट्ठे के एक टूटे पुल से जा टकराये और स्लेज देखते-देखते उलट गई। ग्रिगोरी कराहता हुआ सिर के बल पानी में जा गिरा लेकिन लगाम उसकी पकड़ में ही रही। स्लेज की बगल में उलटता पलटता वह परों से भिमटता रहा। सहसा ही एक बम उसके हाथ में आ गया। उसने लगाम छोड़ दी और हाथ के ऊपर हाथ रख झटका दे स्लेज के आगे के हिस्से की ओर जा निकला। वह लोहे की मूठ को पकड़ने ही वाला था कि धारा में ऊभते हुए एक घोड़े ने उसके घुटनों में पिछली टाँग मार दी। दर्द से तड़प ग्रिगोरी ने हाथ फेंके और जोत पकड़ ली। उसका सारा बदन ठंड के कारण बुरी तरह काँपने लगा।

काली सूनी सड़कों पर चलते चलते घोड़े बेदम हो गए। सुबह के पाले से जमी कड़ी सड़क पर चलते-चलते वह एक गाँव में पहुँचा। गाँव उसके गाम से चार वस्ट दूर था। वह एक चौराहे पर रुक गया। घोड़ों के पसीना से भाप उठ रही थी। पीछे स्लज में बना चमकीला रास्ता दमक रहा था। वह स्लज से उतर एक घोड़े की नंगी पीठ पर आ चढ़ा और दूसरे घोड़े की लगाम हाथ में पकड़ उसने यात्रा आरम्भ की। वह गाम के इतवार को सुबह यागादनाए आ पहुँचा।

वृद्ध लिस्तनित्स्की ने उसकी गाथा बड़े ध्यान से सुनी और घोड़ों को देखने चला। उनके बढ़े बाजुओं को शोकित दृष्टि से देखता हुआ घायल घोड़ों से इधर-उधर घूमता रहा। फिर बूढ़े ने पूछा कैसे हैं घोड़े? ज़रूरत से ज़्यादा मेहनत पड़ गई है इन पर है न?

नहीं घोड़ी की छाती पर पट्टे की रगड़ से घाव हो गया है लेकिन यह कोई ऐसी बात नहीं है। ग्रीश्का ने घोड़े को बिना रोके जवाब दिया।

जाओ और थोड़ा आराम करो। लिस्तनित्स्की ने ग्रिगोरी को हाथ से इंगित कर कहा। ग्रिगोरी अपने कमरे में चला गया किन्तु आराम उसे केवल रात भर ही मिला। अगले दिन सुबह वेनयामिन आया और उसे बुलाकर बोला ग्रिगोरी मालिक ने तुम्हें फौरन बुलाया है।

जनरल चप्पलें पहने बड़े कमरे में इधर-उधर घूम रहा था। ग्रिगोरी के दो बार खाँसने पर उसने उसकी ओर देखा।

क्या बात है?

हुजूर ने मुझे याद किया है।

अच्छा हाँ! जाओ स्टलियन और मेरे घोड़े पर काठी कस दो। लुकेरिया से कहना कि वह कुत्तों को खाना खिलाये। कुत्ते शिकार पर जा रहे हैं।

ग्रिगोरी मुड़ा कि मालिक ने चिल्लाकर कहा और सुनते हो तुम मेरे साथ चल रहे हो

अकसीनिया ने ग्रिगोरी की जेब में एक केक ठूँसी और गुस्से से

माल ढोने वाली 'मौत से जान ज्यादा' आत्मा का भान तक भी छूटी नहीं देता ... मौत ही ने ला दी।

घोड़ों पर काठी कसने के बाद ग्रिगोरी ने उन्हें साथ लिया और बाड़े के पास आकर कुत्तों के लिए सीटी बजाई। तीन कुत्ते का ... दरवाजे की चरमराहट के साथ दरवाजा खोलकर लिस्तनित्स्की बाहर आया। बाहर के ... एक घोड़ा ... का प्यादा उसकी पीठ पर लटका रहा था। चाबुक उसकी दोनों ... पीछे की ओर एक ... का लटका हुआ था।

जब ग्रिगोरी ने मालिक को सवार करने के लिए घोड़े की लगाम थामी तो उस वह ... मालूम हुआ कि मालिक बड़ा आसानी से उछलकर घोड़े पर सवार हो गया। 'मेरे पीछे साथ-साथ रहना।' कनटर ने ... हाथ में रास सम्हालीं।

ग्रिगोरी स्टेलियन पर सवार हुआ। स्टेलियन के पिछले खुरों में नाल नहीं था। बर्फ के टुकड़ों पर पाँव पड़ते ही वह फिसल पड़ता था और पिछले पाँवों के बल बैठ जाता था। ... पूरा बदन ... झुकाए अपने घोड़े पर ... जमा हुआ था। घोड़े सड़क का चक्कर लगाकर आगे बढ़ गए। स्टेलियन ... मैदान पर जोर डालता ... नाचता सवार की ... को देखता और उसके घुटनों में ... की कोशिश करता। ढाल से ऊपर पहुँचते ही लिस्तनित्स्की ने घोड़े की दुलकी चाल तेज कर दी। शिकारी कुत्ते ग्रिगोरी के पीछे चलते रहे। बूढ़ी काना कुतिया ... स्टेलियन की पूँछ से रगड़ती हुई दौड़ती। घोड़े ने अपने पिछले पाँवों पर बैठकर उस तक पहुँचना चाहा, पर कुतिया पीछे हटकर उलट गई। ग्रिगोरी ने लौटकर देखा तो उसने बूढ़ी औरत की तरह उसकी ओर देखा।

आधे घंटे के अन्दर-अन्दर उन्होंने अपनी मंजिल पा ली और वे भानगाच्का दर्रे तक पहुँच गए। लिस्तनित्स्की झाड़ियों में होता हुआ दर्रे के किनारे-किनारे बढ़ा। ग्रिगोरी अस्तबल ... से सावधानी से बचते पानी में उतरा। बार-बार उसने ऊपर की ओर देखा तो एल्डर वृक्षों के कुंज के बीच से उन रास्तों पर खड़ा लिस्तनित्स्की साफ नजर

आया। उसके पीछे-पीछे शिकारी कुत्ते भागते दीखे। ग्रिगोरी ने अपने दस्ताने उतारकर सिगरेट पीने की सोची और कागज के लिए जेब में हाथ डाला।

ढलवाँ टीले की दूसरी ओर से पिस्तौल की गोली-सी आवाज आई 'इसका पीछा करो!'

ग्रिगोरी ने सिर उठाकर देखा कि हाथ में चाबुक उठाए लिस्तनित्स्की घोड़ा दौड़ा रहा है।

'इसका पीछा करो!'

शरीर को धरती से सटाए एक बड़ा लाल भेड़िया तेजी से दौड़ कर दर्रे को पार करता दिखलाई दिया। एक नाला कूदकर पार करते ही वह ठिठका, तेजी से मुड़ा और उसकी निगाह कुत्तों पर पड़ी। कुत्ते भेड़िये का पीछा करते करते दर्रे के सिरे तक पहुँचे और घाटे की नाल के आकार में फैल गए ताकि वह जंगल में भाग न जाए।

भेड़िये ने बिजली की-सी तेजी से छलांग मारी, एक छोटे टीले पर पहुँचा और जंगल की ओर बढ़ा। बुड्ढी कुतिया उसके आड़े आई। दूसरा शिकारी कुत्ता पीछे रहा। भेड़िया क्षणभर के लिए हिचकिचाया पर ग्रिगोरी दर्रे के बाहर पहुँचते-पहुँचते उसकी आँखों से ओझल हो गया। उसे देखने को वह एक छोटी पहाड़ी पर चढ़ा। इस बीच भेड़िया मैदान में काफी आगे निकल गया और पास के एक दूसरे दर्रे की ओर बढ़ा। वहाँ से ग्रिगोरी ने शिकारी कुत्तों को नीची झाड़ियों के पीछे भागते और बूढ़े लिस्तनित्स्की को अपने घोड़े को तेजी से उसी ओर बढ़ाते देखा। भेड़िये के दर्रे पर पहुँचते ही कुत्ते फिर उसको पकड़ने में लग गए। एक तो शिकार के सिर तक आ पहुँचा।

'पीछा करो!' चीख फिर ग्रिगोरी के कानों में पड़ी।

ग्रिगोरी ने आगे की स्थिति जाननी चाही और अपने घोड़े को एड़ लगाई। उसकी आँखों से पानी टपकने लगा और हवा की सीटी से उसके कान बहरे हो चले। एकाएक वह शिकार की उत्तेजना से भर उठा। गर्दन पर झुक वह घोड़े को हवा की रफ्तार से ले उड़ा। दर्रे तक पहुँचते-पहुँचते कुत्ते भी आँखों से ओझल हो गए और भेड़िया भी।

जरा देर में लिस्तनित्स्की उसके पास आ पहुँचा। घोड़े से ही तेज आवाज में चिल्लाया "किधर गया ?

मेरा ख्याल है दर्रे में।

तुम उसे बायीं तरफ से घेरो। पीछा करो।

वृद्ध ने घोड़े के बाजू में पाँव गड़ाये और दायीं ओर बढ़ गया। ग्रिगोरी एक खाई में पड़ गया। वह चाबुक नचाता और चिल्लाता घोड़े को डेन वस्ट तक दौड़ा ले गया। घोड़े के खुरों के नीचे से कीचड़ उछली और छींटे उसके मुँह पर पड़े। लम्बा दर्रा दायीं ओर मुड़कर तीन हिस्सों में बट जाता था। ग्रिगोरी को पहली शाखा पार करते ही मैदान के पार भेड़िये का पीछा करती हुई कुत्तों की कानी पाँत दिखलाई दी। भेड़िये को शाहबलूत एल्डर वृक्षों के सघन कुंजों से भरे दर्रे के मध्य भाग में कुत्ता ने खदेड़ दिया था और अब वह घाटी के सूखे झाड़ियों और काँटों से भरे भाग की ओर भाग रहा था।

ग्रिगोरी ने रकाबों में खड़े हो कमीज की आस्तीन से अपने आँसू पोछे और भेड़िये और कुत्तों को देखने लगा। बायीं ओर दृष्टि पड़ते ही उसने स्वयं को अपने गाँव के पासवाले मैदान में पाया। पास ही जमीन का वह टुकड़ा था जिसे उसने नताल्या के साथ शरद ऋतु में जोता था। विचारों में निमग्न जान-बूझकर उसने अपना घोड़ा उस टुकड़े में डाल दिया। जब तक जानवर ने ढेलों पर लड़खड़ाते हुए वह हिस्सा पार किया तब तक उसके शिकार का सारा मजा जाता रहा हो गया। अब उसने पसीने से लथपथ घोड़ा शान्ति से आगे बढ़ाया और देखा कि लिस्तनित्स्की कहीं नजर आता है या नहीं।

कुछ दूर आगे उसे जोताई करने वाले के खानी छप्पर दिखलाई दिए। कुछ आगे बलों के तीन जोड़े हल को ताजा मखमली जमीन पर घसीटने लगे।

हो न हो कोई मेरे ही गाँव का है। यह जमीन है किसकी ? अनीकुश्का की तो नहीं है ? हल के पीछे-पीछे चलते हुए व्यक्ति को पहचानने के लिए ग्रिगोरी ने नजर जमाई।

उसने देखा कि हल को छोड़ दो कज्जाक भेड़िये को पास के दर्रे से

भगाने के लिए दौड़। एक कज्जाक लाल पट्टीदार टोपी पहने ठोडी पर पट्टा बाँध लोहे का डंडा नचाता दीखा। अकस्मात् ही भेड़िया एक गड्ढे में बैठ गया। सबसे आगे का शिकारी कुत्ता झपटा और आगे के पाँवों के फिसल जाने से गिर पड़ा। पीछे की बूढ़ी कुतिया ने रुकने का प्रयत्न किया। उसकी पिछली टाँगें जुते खेत की मेड़ को खरोंचते हुए घिसटी। वह समय से रुक न सकी और शिकार चूक गया। पशु ने अपना सिर जोर से झटका और कुतिया ने उसे आगे दौड़ाया। फिर कुत्तों के झुंड ने भेड़िये को घेर लिया और उसे जुते खेत में कुछ गज तक खींच ले गए। अपने मालिक से आधा मिनट पहले ग्रिगोरी घोड़े से नीचे उतरा और शिकारी चाकू साथ घुटनों के बल बैठ गया।

मारो ताककर गले पर! लोहे के डंडेवाला कज्जाक बोला। इस आवाज को ग्रिगोरी भली भाँति जानता था। वह आदमी दौड़कर आया और हाँफते-हाँफते ग्रिगोरी की बगल में आ बैठा। इस बीच शिकारी कुत्ते ने भेड़िये के पेट में दाँत गड़ा दिए तो कज्जाक ने कुत्ते को अलग किया और भेड़िये के दोनों अगले पैर एक हाथ से जकड़ लिए। ग्रिगोरी ने जानवर के रोओं के बीच हाथ डालकर टटोला और टेंटुए पर छूरी चला दी।

कुत्ता को! कुत्तों को! भगाओ! अपने घोड़े की पीठ पर से उतरते हुए वृद्ध लिस्तनित्स्की ने चिल्लाकर कहा।

ग्रिगोरी ने बड़ी मुश्किल से कुत्तों को हटाया और मालिक की ओर देखा। पास ही स्तोपान अस्ताखोव खड़ा था। उसके चेहरे पर बड़े विचित्र भाव थे। वह लोहे के डंडे को भाँजता ही चला आ रहा था।

बहादुर कहाँ के रहने वाले हो तुम? लिस्तनित्स्की ने स्तोपान से पूछा।

तातारस्की का हूँ। क्षण भर हिचकिचाहट के बाद स्तोपान बोला और ग्रिगोरी की ओर क़दम बढ़ाया।

'क्या नाम है तुम्हारा? लिस्तनित्स्की ने पूछा।

अस्ताखोव।

घर कब तक लौटोगे बेटे?

आज रात को लौटूंगा ।

लिस्तनित्स्की ने भेड़िये की ओर पाँव से इशारा किया । उसके जबड़े मौत से लड़ चुके थे और उसका पिछला एक पैर ऊपर को उठकर कड़ा पड़ चुका था ।

बूढ़ा बोला, भेड़िया मेरे यहाँ पहुँचा देना जो खर्च होगा तुम्हें मिलेगा । उसने अपने रूमाल से चेहरे का पसीना पोंछा, मुड़ा और पीठ पर से फ्लास्क खिसकाया ।

ग्रिगोरी अपने स्टैलियन की ओर बढ़ा और रकाब में पैर रखते समय उसने मुड़कर देखा । आवेश से काँपता हुआ स्तोपान उसकी ओर आया और झटकर उसने रकाब थाम ली ।

ग्रिगोरी कैसे हो ? स्तोपान बोला ।

भगवान् की दया है ।

सोच क्या रहे हो ?

सोचूंगा क्या मैं ।

तुम दूसरे की औरत को उड़ा ले गए, तुमने उसे अपनी बात मानने पर मजबूर किया ।

रकाब छोड़ दो ।

डरो नहीं मैं मारूंगा नहीं ।

इसका मुझे डर नहीं । यह बात छोड़ो । ग्रिगोरी ने गुस्से में लाल होकर जोर से कहा ।

मैं तुमसे आज नहीं लड़ूंगा, लेकिन मेरी बात याद रखना कभी न-कभी मैं तुम्हें जान से मार डालूंगा ।

देखा जाएगा ।

मेरी बात अच्छी तरह याद रखना । तुमने मेरे मुंह पर कालिख पोती है । तुमने मुझे सूअर की तरह बधिया करके छोड़ दिया है । उधर देखो, उसने अपने हाथों की हथेलियाँ ऊपर उठायीं— मैं जोतता-बोता हूँ और भगवान ही जानता है कि किसलिए यह सब करता हूँ । क्या मुझे अपने लिए इस सबकी जरूरत है ? मैं थोड़ा उस तरफ चला जाऊंगा और सर्दी पार कर दूंगा । मुसीबत तो इस अकेलेपन ने कर रखी है । यह

मुझे याद आता है। तुमने मुझे बहुत तकलीफ पहुँचाई है ग्रिगारी!

मुझसे शिकायत करना बेकार है। मेरी समझ में कुछ नहीं आएगा। जिसका पेट भरा रहता है वह भूख की बात नहीं समझ पाता।

यह बात सच है। स्तीपान ने ग्रिगोरी के चेहरे की ओर देखते हुए हामी भरी। अचानक ही उसके होंठों पर बच्चों की-सी सरल मुसकान खिल उठी मुझे सिर्फ एक बात का दुख है, और बहुत दुख है— तुम्हें याद है ग्यारह साल पहले तीरे में हम दोनों में मुक्केबाज़ी हुई थी?

नहीं मुझे याद नहीं।

क्या तुम्हें याद नहीं क्वाँरों और ब्याहतों में दंगल हुआ था? मैंने किस तरह तुम्हारा पीछा किया था? उन दिनों तुम मेरे मुकाबले सरपत की तरह सींक-सलाई थे। उस बार मैंने तुम्हें छोड़ दिया था। लेकिन तुम्हारे भागते समय अगर मैंने तुम पर चोट कर दी होती तो तुम्हारे दो टुकड़े हो जाते। तुम ताबड़तोड़ भागे। काश कि उस वक्त में तुम्हारी बगल में एक करारा घूँसा जमा देता तो तुम आज इस दुनिया में जिन्दा न होते!

अब उसके लिए पछताओ नहीं अब कोई भी ऐसा मौका हम दोनों के हाथ आ सकता है।

स्तीपान ने माथा रगड़ा मानो कुछ याद करने की कोशिश कर रहा हो। वृद्ध लिस्नित्स्की ने ग्रिगारी को आवाज़ दी। बाएं हाथ से रकाब थामे स्तीपान ल्निग्यन की बगल में चल रहा था। ग्रिगोरी की निगाह उसकी हर हरकत पर थी। उसने स्तीपान की नीचे को झुकी हुई सन के रंग की मूँछें और बहुत दिनों की बिना बनी दाढ़ी देखी। पसीने की धारा वाली धारियों से भरा उसका गन्दा चेहरा उदास और पहले से बहुत बदला हुआ था। ग्रिगोरी को लगा कि वह किसी पहाड़ी से धुन्ध में नहाये स्तपी मैदान में नज़र दौड़ा रहा है। थकावट और मन के खालीपन ने स्तीपान के चेहरे का रंग राख कर दिया था। मा अलविदा कह बिना ही वह पीछे रह गया। ग्रिगोरी घोड़े पर सवार हो गया और उसे क़दम चाल से ले चला।

ठहरो जरा । और अकसीनिया अकसीनिया मजे में तो है ?

अपने जूते पर पड़ी मिट्टी को चाबुक से नीचे गिराते हुए ग्रिगोरी ने उत्तर दिया हाँ मजे में है।

उसने अपने घोड़े को रोका और पीछे मुड़कर देखा। स्तीपान पाँवों को फलाए खड़ा एक डंठल चबाता दीखा। ग्रिगोरी क्षण भर के लिए बुरी तरह द्रवित और विचलित हो उठा। लेकिन फिर ईर्ष्या ऊपर आ गई। वह काठी पर बैठे-ही-बैठे मुड़ा और चिल्लाकर बोला फिक्र न करो वह तुम्हारे लिए कलपती नहीं !

यह बात है ?

ग्रिगोरी ने घोड़े के कानों के बीच चाबुक जमाया और बिना उत्तर दिये उड़ चला।

१८

ईस्टरी-शुक्रवार को औरतें कोरशूनोव की पड़ोसिन मलागेश्रा माइ दार्मीकोवा के यहाँ बातचीत करने के लिए जमा हुई। उसके पति गावरीला ने मौज से पत्र लिखा था कि मैं ईस्टर पर घर आने के लिए छुट्टियों की कोशिश में हूँ। मेलागेश्रा ने दीवारों पर सफेदी कर ली थी। ईस्टर से पहले ही सोमवार प्रात-प्रात उसने घर को झाड़-बुहारकर साफ कर लिया था। बृहस्पति से तो उसने प्रतिक्षण अपने पति की राह देखी थी—कभी दौड़कर फाटक पर होती तो कभी चहारदीवारी के पास जा खड़ी होती। वह देखने में दुबली-पतली थी और उसके चेहरे पर गर्भ के लक्षण स्पष्ट झलकते थे। आँखों पर हाथ रखे वह सड़क की ओर देखती रही कि शायद वह आ रहा है। गावरीला पिछले साल घर आया था और अपनी पत्नी के लिए पोलैंड की शॉल लाया था। चार रातें उसने अपनी पत्नी के साथ बिताई थीं। पर पाँचवें दिन उसने बहुत शराब पी ली थी पोल और जर्मन में खूब गालियाँ बकी थीं और फिर आँखों में आँसू भरकर पोलैंड के बारे में एक पुराना कज्जाक गीत गाता बैठा रहा था। गीत सन १८३१ का था। खाने के पहले उसके भाई और मित्र उसके साथ बैठकर वोद्का पीते और गीत गाते रहे थे। खाने के

दा^ उसने अपने परिवारवालों को विदा देकर उनसे पिंड छुड़ाया था।

और उसी दिन से पेलागेया के पेट में बच्चा आया था।

उसने नताल्या कोर्शूनोव को बतलाया कि वह गर्भवती कैसे हुई। वह बोली गावरीला के आने से दो-एक दिन पहले मुझे एक सपना हुआ। मैं चरागाह को पार कर रही थी तो मुझे अपनी पुरानी गाय दिखलाई दी। वह गाय हमने पिछले साल बेच दी थी। गाय चर रही थी और उसके थनों से दूध चू रहा था। मैंने सोचा हे भगवान् क्या मैंने आज इसे ऐसी बुरी तरह दुहा है ? अगले दिन बुढ़िया द्रोज़दीका कुछ लताएँ लेने आई। मैंने उसको अपना सपना सुना दिया। वह मुझसे बोली एक मोमबत्ती तोड़कर मोम की गेंद बना लो और कहीं जाकर गाय के गोबर में गाड़ आओ क्योंकि होनी खिड़की से झाँक रही है। मैं उसका कहा करने को भागी किन्तु मोमबत्ती नहीं मिली। एक मोमबत्ती थी घर में लेकिन शायद बच्चे बड़ा मकड़ा पकड़ने के लिए उसे उठा ले गए। फिर गावरीला आया और उसके साथ ही होनी। मैं तीन साल तक झंझट से बची रही लेकिन अब जरा यह देखो। उसने अपने पेट में अंगुलियाँ गड़ाईं।

पेलागेया अपने पति की प्रतीक्षा करते-करते उद्विग्न हो उठी थी। वह अपने आपसे ऊब गई थी इसलिए शुक्रवार की शाम को उसने समय काटने को अपनी पड़ोसिनें बुला लीं। नताल्या अधूरे मोजे साथ ले आई। ये मोजे वह बूढ़े ग्रीश्का के लिए बुन रही थी क्योंकि बसन्त आते ही उसे और भी सर्दी सताने लगती थी। वह असाधारण रूप से प्रसन्न थी और दूसरी औरतों के हँसी-मजाक पर जरूरत से ज्यादा हँसकर अपने पति के विद्रोह का दुख छिपाने का प्रयास कर रही थी। पेलागेया अपनी नीली नसोंवाली नंगी टाँगों को हिलाती जा रही थी और स्टोव के पास बैठी कक्शा फ़ोमिया का मज़ाक बना रही थी।

'फ़ोमिया तुमने अपने मर्द को मारा कैसे ?

और जानती हो मैंने कैसे मारा ? पीठ पर सिर पर और जहाँ भी पड़ गया भरपूर हाथ पड़ा !

मेरा यह मतलब नहीं था मेरा मतलब है कि तुमने उसे मारा क्यों ?

मारना पड़ा। फ्रानिया ने अनिच्छा से उत्तर दिया।

अगर तुम अपने मर्द को किसी दूसरी औरत के साथ देखो तो चुप रह जाओगी? एक दुबली-पतली औरत ने कुछ सोचकर पूछा।

'फ्रोशिया पूरी बात सुनाओ।

सुनाने की क्या बात है

डरो नहीं यहाँ सब तुम्हारी सहेलियाँ ही तो हैं।

सूरजमुखी के बीज का छिलका अपने हाथ में थूककर फ्रोशिया मुसकराई— हाँ तो मैं बहुत दिनों से उसके रंग-ढंग देख रही थी। एक दिन मुझसे किसी ने कहा कि दोन के पार की मिल में काम करनेवाली एक बदचलन औरत के साथ उसकी मोहब्बत चल रही है। सो मैं गई और मुझे दोनों एक साथ मिल गये

तुम्हारे मर्द की कोई खबर मिली नताल्या? दूसरी स्त्री ने नताल्या की ओर मुड़कर उसकी बात काटी।

वह यागोद्नाए में है। उसने धीरे से उत्तर दिया।

'तुम्हारा अब उसके साथ रहने का खयाल है या नहीं?'

यह तो चाहती है लेकिन वह जो नहीं चाहता। पलागेया ने बात काटी। नताल्या को लगा कि उसके चेहरे पर खून झलक आया है। उसने अपने मोज़े पर सिर झुका लिया और दबी नज़र से औरतों की ओर देखा। उसे लगा कि उसका चेहरा जिस शर्म से तमतमाया उसे सभी ने समझा। इस पर उसने ऊन का गोला अपने घुटनों से नीचे इस तरह लुढ़काया इतने भद्दे ढंग से लुढ़काया और फिर झुककर इस तरह समेटा कि सभी औरतें बात को भाँप गईं।

'गोली मार उस छोकरी! गम न करो सलामत रहे जुए बहुत मिल जाएँगे। एक स्त्री ने प्रकट करुणा से भरकर राय दी।

नताल्या का नकली उत्साह हवा में चिनगारी की तरह बुझ गया। औरतों की बातचीत का रुख बदला। वे बेकार की बातें करने लगीं— इधर की उधर की सबर की। नताल्या बैठी चुपचाप बुनती रही। वह औरतों के उठने तक मन मारे बैठी रही फिर घर गई और उसने अपने मन में धुंधला-सा कुछ निश्चय किया। उसे अपनी अनिश्चित

अवस्था के प्रति लज्जा का अनुभव हुआ। अभी तक उसे यह विश्वास नहीं था कि ग्रिगोरी हमेशा के लिए उसकी जिन्दगी से जा चुका है। वह उसे क्षमा कर देने और फिर ग्रहण करने को मन से तैयार थी। इस पर भी उसने अगला कदम उठाने का इरादा किया। उसने ग्रिगोरी को एक गुप्त पत्र भेजने की बात सोची ताकि वह यह जान सके कि उसने उसको याद बिलकुल भुला दी या अभी वह अपना निश्चय बदल सकता है। घर पहुँचकर उसने देखा कि ग्रीश्का अपने छोटे कमरे में बैठा हुआ चमड़े की जिल्द की एक पुरानी-सी चीकट बाइबिल पढ़ रहा है पिता रसोईघर में बैठा जाल की मरम्मत कर रहा है और मिखाईल उन किसी कत्ल का कोई कहानी सुना रहा है। बच्चों को खाट पर सुलाकर माँ स्टोव के ऊपर के तख्ते पर सो गई। नताल्या ने अपनी जकेट उतारी और एक कमरे से दूसरे कमरे में निकम्मी-सी घूमने लगी। क्षण भर बाबा के कमरे में रुककर उसने मूर्तियों के नीचे रखे धार्मिक ग्रन्थों के ढेर की ओर उदासी से देखा।

बाबा! कागज है तुम्हारे पास? वह बोली।

कैसा कागज? पूछते समय ग्रीश्का के माथे पर बल पड़ गए।

लिखने का कागज?

बूढ़े ने भजन-संग्रह के पन्ने पलटे और सुगन्धित धूप से सुवासित एक मुड़ा-मुड़ाया कागज निकाला।

और पेंसिल है?

पापा से माँग। जा बेटी जा मुझे परेशान न कर।

नताल्या अपने पिता से पेंसिल का टुकड़ा ले आई मेज के किनारे बैठ गई और अपने विचारों और भावनाओं से उलझने लगी। वह विचार और ये भावनाएँ उसे इतने समय तक सताती रही थी और मन को अनजानी कसक से भरती रही थी। उसने पत्र लिखा—

ग्रिगोरी पन्तेलिएविच मुझे बतलाओ कि मैं कैसे जिऊँ? मुझे बतलाओ कि मेरी जिन्दगी मिटकर रह गई है या नहीं? तुम घर से चले गये और तुमने मुझसे एक शब्द भी नहीं कहा। मैंने तुम्हारे साथ कोई बुराई नहीं की। मैं राह देखती रही कि तुम आकर मेरे बन्धन

नाटाग लेकिन एसा नही हुआ । तुम चल गय जम कि हमेशा-हमेशा के लिए चले गय और जाकर कब्र की तरह चुप्पी साधकर बठ रह ।

मैं सोचती थी कि तुम या हो आवेश म आ गय हो । मैं तुम्हारे लौटने की इन्तजार करती रही करती रही । वसे मैं तुम्हारे आडे आना नही चाहती । दो का सतान स अच्छा तो यह है कि आदमी एक को जमीन मे गाड दे । मुझ पर थोडा तरस खाओ और चिट्ठी लिखो । उसके बाद ही मैं जान सकूगी कि मुझे क्या करना है । इस समय तो मैं अधर म लटकी हुई हूँ ।

'योगा के नाम पर मुझस नाराज न होना ग्रीश्का !

—नताल्या ।

अगले दिन सुबह हेत-बाबा स वोद्का पिलाने का वायदा कर उसने उस यागोद्नोए जाने को तयार किया । शराब की उम्मीद म मस्त हुए बाबा न एक घोडा निकाला और मिरोन ग्रिगोरिएविच को सूचना दिये बिना ही उस पर सवार हो यागोदनोए चल दिया ।

घोडे पर वह मजा नहीं और एसा अटपटा लगा जसा कि कोई अजनबी कज्जाकों के बीच लगता है । घोडा दुलकी चला तो हेत-बाबा की कुहनियाँ उछल-उछलकर इधर-उधर जाने लगीं ।

गलियो म खेलते कज्जाक-बच्चे उसे देखकर उसका मजाक बनाने और रह रहकर चिल्लाने लगे ।

'उकडूनी गल्ला !

देखो कही नीचे न आ जाना ।

एसे लगते हो जसे कि चहारदीवारी पर कोई कुत्ता !

दोपहर बाद वह लौटा तो चीनी का थली के नील कागज का एक टुकडा लेकर लौटा । उसे जेब से निकालते समय उसने नताल्या की ओर देखकर आँख मारी ।

सडक बडी खराब है । ऐसा पचके लगे कि मरी कमर का ढेर हो गया । वह बोला ।

पत्र पढते ही नताल्या का चेहरा धुआँ हो गया । कागज पर लिखे चार शब्द उसके हृदय ने एसे आर-पार हो गए जसे कि तेज दाँत बुने

हुए कपड़े के आर-पार होते हैं। लिखा था—

अकेले जियो—ग्रिगारी मलखोव।

मानो उस अपनी शक्ति पर भरोसा नहीं रहा। वह तेजी से घर म घुसी और आकर अपनी चारपाई पर ढह पड़ी। उसकी माँ स्टोव जला रही थी ताकि ईस्टरी रविवार की सुबह तक राता रात सारे घर की सफाई हो जाए और ईस्टरी-केक समय से तैयार हो जाए।

नताल्या आकर जरा हाथ तो बंटा बेटी! उसने अपनी लड़की को पुकारा।

माँ सिर म दर्द हो रहा है। मैं जरा देर लेटूँगी।

उसकी माँ ने दरवाजे से झाँककर कहा थोड़ा सिरका पी ले तबीयत फौरन ही ठीक हो जाएगी।

नताल्या ने सूखी जीभ ठंडे होठों पर फिराई और चुप रही।

१६

गरम ऊनी शाल स सिर ढँके नताल्या शाम तक लेटी रही। उसके बदन म हल्की हल्की कपकपी छूटती रही। जब मिरोन ग्रिगोरिएविच और ग्रीश्का गिरजा जाने को हुए तब वह उठी और बावर्चीखाने म गई। उसके सुन्दर कढ़े बालों स ढकी कनपटियों पर पसीने की बूँदें चमक रही थी। उसकी आँखें जस किसी बीमारी से धुँधली धुँधली हो रही थी।

अपने पतलून के बटन बन्द करते हुए मिरोन ने लड़की की ओर देखकर कहा बेटी! बीमार होने का तुमने खूब वक्त चुना। आओ हमारे साथ प्रार्थना म चलो।

आप जाइये मैं जरा देर से आऊँगी। वह बोली।

हम लोगों के घर लौटते-लौटते तो आ जायोगी न?

नहीं मैं जल्दी ही आऊँगी कपड़े पहन लूँ जरा!

पुरुष चले गये। बावर्चीखाने म लुकीनीचना और नताल्या रह गईं। नताल्या बेचैनी स बिस्तर स बक्से की ओर जाती और फिर लौट आती। वह बक्से के अन्दर के उलटे-सीधे रखे कपड़ों के ढेर को ताकती रही बुदबुदाती रही। वही पुरानी बातें दिल और दिमाग को मथती रहीं।

लुकीनीचना ने सोचा कि नताल्या समझ नहीं पा रही है कि कौन-से कपड़े पहने और कौन-सा न पहने। इसीलिए माँ की ममता से भरकर बोली बेटी मेरा नीला स्कर्ट पहन ले। तेरे ठीक आएगा। ले आऊ ?

नताल्या ने ईस्टर पर नये कपड़े नहीं बनवाये थे। लुकीनीचना को यह भी याद हो आया कि शादी के पहले उसकी बेटी उसका गहरा नीला स्कर्ट कितने प्यार से पहनती थी। इसीलिए उसने नताल्या से बार बार उसे पहन लेने को कहा।

नहीं मैं यह पहन जाऊँगी। नताल्या ने सावधानी से अपना हरा स्कर्ट बाहर निकाला तो अकस्मात् ही उसे ध्यान हो आया कि यह तो उसने उस समय पहना था जब ग्रिगोरी से शादी की बात हो चुकी थी वह पहली बार यहाँ आया था और उसने स्वयं के पास उसे चूम लिया था। शर्म से लाल हो गई थी वह। इसके साथ ही उसे रोना आ गया। फिर हिचकियाँ बंधी तो उसका शरीर इस तरह काँपने लगा कि वह बक्से के खुले ढक्कन पर भहरा पड़ी।

'क्या बात है नताल्या ?' माँ ने पूछा।

नताल्या ने अपनी चीखने की इच्छा दबा ली और खोखले ढंग से हँसती हुई बोली पता नहीं आज क्या हो गया है मुझे !

ओह नताल्या मैं समझ गई

क्या समझ गई माँ ? अपने हरे स्कर्ट को मसलते हुए वह खीझ से चिल्लाई।

ऐसे नहीं चलेगा' तुझे आदमी की जरूरत है।

हो लिया आदमी एक आदमी ने कौन कम भलाई की मेरे साथ कि अब दूसरे की तलाश करूँ ?

वह अपने कमरे में गई और जल्दी ही बावर्चीखाने में लौट आई। उसने कपड़े पहन लिये थे। दुबली पतली—देखने में लड़की-सी लगती थी। पीले गालों पर उदासी की नीली रेखाएं थीं।

'तू चली जा। मैं अभी तैयार नहीं हुई हूँ।' माँ ने कहा।

नताल्या आस्तीन में रूमाल खोंस चल दी। तैरती हुई बर्फ की सरसराहट और बर्फ के पिघलने की नमी उसकी नाक में भरने लगी।

स्कर्ट का दामन हाथ से ऊपर उठाये पानी में भरे गढे पार करती वह गिरजाघर पहुँची। रास्ते में उसने पवन-व्याहार और हजारों दूसरी चीजों के बारे में सोचा और अपने को साधने की कोशिश की। किन्तु उसे फिर चीनी के नीले थैले के कागज के टुकड़े का ध्यान हो आया। वह टुकड़ा उसने अपने सीने में छिपा रखा था। इसके साथ ही ग्रिगोरी और वह विस्मय की सिकन्दर औरत अक्सीनिया उसकी कल्पना में साकार हो उठी। नताल्या ने सोचा वह औरत इस समय मेरी हँसी उड़ा रही होगी हो सकता है कि मुझ पर तरस भी खा रही हो!

गिरजाघर के हाते में पैर रखते ही कुछ लड़के उसके रास्ते में आ खड़े हुए। वह चक्कर काटकर निकल गई। लड़कों की बातें उसके कानों में पड़ीं।

कौन है यह? तुमने देखा?

नताल्या कोर्शुनोवा थी।

लोग कहते हैं कि मर्द से इसकी बनती नहीं थी इसलिए इसके मर्द ने इसको छोड़ दिया।

यह बात नहीं है। यह अपने लगड़े ससुर पन्तेली पर डोरे डाल रही थी

अच्छा तो यह बात थी! तो ग्रिगोरी क्या इसीलिए भाग गया?

हाँ इसीलिए भाग गया और यह अभी भी अपनी उसी राह पर चली आ रही है

ऊँचे-नीचे पत्थरों पर लड़खड़ाती नामनाक गन्दी कानाफूसी के बीच वह गिरजे की ड्योढ़ी तक पहुँची। वहाँ बड़े आगे के दरवाजे में मुँह कि पास खड़ी लड़कियाँ बेवकूफों की तरह हँसी। नताल्या शराबियों की तरह गिरती-पड़ती घर को लौट पड़ी। हाते के फाटक पर ही आकर उसने दम लिया। यहाँ स्कर्ट का सिरा इस तरह फँसा कि गिरते-गिरते बची। उसने इस दाँत भींचे कि होठों से खून निकल आया। बकाइनी अंधकार के बीच में गोल का खुला दरवाजा अँधेरे में अँगड़ाई लेता रहा। लज्जा और दुराशा से चूर उसकी आत्मा पर कुविचार का एक काला बादल घिर आया। उसने पूरी शक्ति इकट्ठी की दरवाजे की ओर दौड़ी और

तेज क़दम बढ़ाती हुई कोने में पहुँची। अब उसने एक हँसिया उठाया, सोच-समझे ढंग से झटके से बेंट अलग किया, अपना सिर पीछे की ओर झटका और अपने गले में मार लिया। दर्द अन्तर भेद गया। वह गिर पड़ी। पर अपना निश्चय अधूरा रह गया देख उसे बहुत दुख हुआ। वह हाथ-पैर पटककर घुटनों के बल गिर पड़ी। सीने पर खून बहता देखकर सहम उठी। पर जल्दी जल्दी काँपती अँगुलियों से उसने जाकेट के बटन खोले, एक हाथ से कसी हुई कड़ी छातियों को एक ओर किया और दूसरे हाथ से जमीन पर पड़े हँसिए की नोक सीधी की। फिर घुटनों के बल चलकर वह मिट्टी की दीवार के पास गई, हँसिए का गोठिल सिरा उसने घुसेड़ा और अपने सिर के ऊपर हाथ रखकर दृढ़ता से अपना सीना आगे बढ़ाया और आगे बढ़ाया। उसे फटते हुए माँस की आवाज़ भी सुनायी दी, जैसे गोभी के चिरने की आवाज़ सुनाई देती है और छातियों से गले तक एक तीव्र दर्द की लहर उठी और उसके कानों में असंख्य सुइयाँ एक साथ चुभने लगीं।

बावर्चीखाने का दरवाज़ा चरमराया। लुकीनीचना सीढ़ियों से नीचे उतरी। गिरजे की घंटियों का तालमय स्वर आया। पीस देनेवाली गरज के साथ हिमखंड दोन में टूट-टूटकर बराबर बहते रहे। दोन में उमड़ती नदी पूरे ज़ोर शोर से बर्फ के टुकड़ों को अज़ोव-सागर के पास ले जाती रही।

२०

अक्सीनिया ने ग्रिगोरी को अपने गर्भ की बात उसे छठा महीना लगने पर ही बताई और तब बताई जबकि बताना ही पड़ा। इतने लम्बे काल तक न बताने का कारण था उसका यह डर कि ग्रिगोरी को विश्वास न होगा कि पेट का बच्चा उसका ही है। इस बीच अगर उसकी तबीयत खराब रही तो या तो ग्रिगोरी का उस ओर ध्यान नहीं गया और गया भी तो उसने उसका कारण नहीं समझा।

एक दिन शाम को उत्तेजना में उसने ग्रिगोरी को बात बतला दी और उसके चेहरे पर आने-जाने वाले भावों को पढ़ने के लिए उसकी ओर

देखती रही। किन्तु ग्रिगोरी परेशानी में खिड़की की ओर मुड़ा और सामने लगा।

तुमने पहले क्या नहीं बतलाया मुझे? वह बोला।

मुझे डर था ग्रिगोरी! मैंने सोचा कि तुम मुझे कहीं छोड़ न दो।

पलंग पर अंगुलियाँ बजाते हुए वह बोला बच्चा जल्दी ही होगा?

अगस्त लगते ही होगा शायद।

पर स्तीपान का है?

नहीं तुम्हारा है।

ठीक कहती हो?

खुद हिसाब लगा लो। जंगल की कटाई के दिन

'झूठ मत बोलो अक्सीनिया! अगर पेट स्तीपान से रहता तो भी अब तुम जाती कहाँ? पर मैं चाहता हूँ कि तुम बात ईमानदारी की करो।

क्रोध में रोती हुई अक्सीनिया बेंच पर बैठ गई और बड़बड़ाने लगी मैं इतने साल रही उसके साथ और कभी कुछ नहीं हुआ। खुद सोचो ज़रा! मैं बीमार नहीं हूँ तुमसे ही पेट रहा है और तुम

ग्रिगोरी ने इस विषय में अधिक बातचीत नहीं की। अक्सीनिया के प्रति उसके व्यवहार में घुल गया एक अलगाव और एक मजाकिया सी हमदर्दी। अक्सीनिया ने उस दुख को पी लिया और दया की भीख नहीं माँगी। गर्मियों के शुरू में उसके चेहरे का आकर्षण कम हो गया किन्तु गर्भावस्था के कारण उसकी सुन्दर आकृति प्रकृति में कोई अन्तर नहीं आया। उसके भराव ने उसकी अवस्था पर पर्दा डाला और मुँह लटक जाने पर भी उसकी आशा से चमकती आँखों ने उसे एक नई ही आभा प्रदान कर दी। खाना बनाने का काम वह सरलता से करती रही यद्यपि उस वर्ष खेतों पर काम करने वाले मजदूरों की संख्या भी कुछ कम ही रही।

बूढ़े साश्का को अक्सीनिया से बड़ी ममता हो गई। शायद उसका कारण अक्सीनिया का मेल-मुलम व्यवहार और चिन्ता रही। वह उसके कपड़े धो देती कमीजों की मरम्मत कर देती और खाने को मुलायम चीजें दे देती। साश्का अपने घोड़ों की देख रेख के बाद आता तो पानी

ला देता सूअरों क लिए आलू मसल देता और सारे टंडे-सीधे काम कर देता। जब-तब ही कहता—

तुम्हे मेरी बड़ी फिक्र रहती है। कभी बदला चुका दूंगा। अक्सीनिया तुम्हारे लिए कुछ भी कर दूंगा मैं। तुम्हारी तरह की कोई औरत मेरी तरफ ध्यान न देती तो मैं तो कहीं का न रहता। ये जुए ही खा डालती मुझे! अब यह है कि मेरे लायक कभी कुछ भी काम हो तो मुझसे फौरन कहना"

येवोनी न ग्रिगोरी का बसन्त के निःशक्त शिविर से मुक्ति दिला दी। अब वह घास की कटाई करता कभी-कभी लिस्तनित्स्की को जिला-केन्द्र ले जाता और बाकी समय उसके साथ चिड़ियों के शिकार म लगा रहता। आराम स भरी जिन्दगी ने उसको बिगाड़ना शुरू कर दिया। वह मन्मद और आलसी हो गया। अधिक उम्र का लगने लगा। उसे भविष्य म आने वाले सैनिक जीवन की ही एकमात्र चिन्ता रहती। उसके पास न घोड़ा था न कोई दूसरा साधन। पिता से कुछ प्राप्त होने की आशा भी नहीं थी। वह अपनी तथा अक्सीनिया की तनख्वाह बचाता और सिगरेट वगैरह पर भी व्यय न करता। सोचता कि पापा के सामने बिना हाथ फैलाये ही घोड़ा खरीद लूगा। वृद्ध लिस्तनित्स्की ने भी उसे सहायता देने का वचन दिया। शीघ्र ही उसकी यह भावना पुष्ट हो गई कि पिता कुछ नहीं देगा। जून के अन्त म प्योत्र अपने भाई से मिलने आया और बोला कि पापा तुमसे अभी तक नाराज हैं। कहते हैं कि मैं घोड़ा खरीदने के लिए ग्रिगोरी को कुछ नहीं दूंगा। वह गांव के अधिकारी के पास घोड़े के लिए जाए।

वह बेकार परेशान न हो। मैं अपनी ही खरीद का घोड़ा लेकर नौकरी पर जाऊंगा। ग्रिगोरी ने अपनी ही खरीद पर जोर देते हुए कहा।

'लाओगे कहाँ से?' प्योत्र ने पूछा।

मैं तो काम करूंगा भीख मांगूंगा और अगर इस पर भी कुछ न कर पाऊंगा तो किसी का घोड़ा चुरा लाऊंगा।

शाबाश बहादुर!

घोड़ा मैं अपनी तनख्वाह से खरीदूंगा। ग्रिगोरी ने अधिक गम्भीर

होकर कहा।

प्योत्र ग्रिगोरी के काम खाने और आमदनी के विषय में पूछताछ करता और अपनी मूछों को चबाता सीढ़ियों पर बैठा रहा। फिर उठा जाने के लिए मुड़ा और अपने भाई से बोला तुम्हें घर लौट चलना चाहिए। अपनी जिद पर अड़े रहने से कोई फायदा नहीं। इस तरह तुम कुछ ज्यादा कमा लोगे ?

नहीं ऐसा तो कुछ नहीं है।

तो अब उसके ही साथ रहने का विचार है क्या ?

किसके साथ ?

इस औरत के साथ ?

हाँ क्यों नहीं रहूँगा ?

खैर मैंने तो यों ही पूछ लिया था।

अपने भाई को विदा करते समय ग्रिगोरी को अन्त में परिवार के लोगों का खयाल आया। पूछा घर के क्या हाल चाल हैं ?

सीढ़ियों के जंगले से घोड़ा खोलते हुए प्योत्र हँसा और बोला तुम्हारे घर भी तो बहुत-से हैं खरगोशों के भिटों की तरह ! सब ठीक-ठाक हैं। माँ तुम्हें बहुत याद करती है। हम लोग घास के काम में लगे हुए हैं तीन गाड़ियाँ ला चुके हैं।

ग्रिगोरी ने परेशानी से भाई की बूढ़ी घोड़ी को परखा। पूछा इस साल बच्चा नहीं हुआ ?

नहीं यह सूख गई है। लेकिन जो घोड़ा हमने क्रिस्तोन्या से ली थी उसके बच्चा हुआ है। स्तलियन है—शानदार लम्बी टाँगें थोड़ा सीना अच्छा घोड़ा निकलेगा।

ग्रिगोरी ने आह भरी गाँव की बड़ी याद आती है प्योत्र ! यह बोला दोन के लिए कुढ़ता हूँ। यहाँ बहता पानी देखने को भी नहीं मिलता। खराब जगह है यह।

आना कभी घर। प्योत्र ने घोड़ी की पीठ पर उछलकर सवार होते हुए कहा।

किसी दिन आऊँगा।

अच्छा दास्विदानिया।

भगवान् करे तुम्हारी यात्रा शुभ हो।

आँगन से बाहर निकलकर प्योत्र को एक बात याद आई। उसने ग्रिगोरी को पुकारा। वह अभी तक सीढ़ियों पर खड़ा था।

नताल्या... भूल ही गया था मैं तो... नताल्या मरते-मरते बची...

वाक्य के अंतिम शब्द हवा में सर्राटे भरती हवा उड़ा ले गई। ग्रिगोरी ने नहीं सुने। प्योत्र और उसका घोड़ा मखमली धूल से ढक गये। ग्रिगोरी कंधे हिलाता अस्तबल में चला गया।

३

गर्मी सूखी गई। वर्षा हुई किन्तु कम। अनाज जल्दी पक आया। राई जुनने भी न पाई कि जौ पककर पीला पड़ गया। दिन में काम करने वाले चार मज़दूर और ग्रिगोरी उसे काटने में लग गए।

उस दिन अक्सीनिया का काम जल्दी खत्म हो गया और उसने ग्रिगोरी के साथ जाने की इच्छा प्रकट की। ग्रिगोरी ने उसे रोकने का प्रयत्न किया लेकिन झटपट सिर पर रूमाल बाँध वह दौड़ी और मर्दों की गाड़ी में जा बैठी।

जिस घटना की प्रतीक्षा अक्सीनिया उत्कंठा एवं आह्लादपूर्ण अधीरता से कर रही थी और ग्रिगोरी भय से कर रहा था वह फ़सल की कटाई के समय घटा। लक्षण दिखलाई देते ही अक्सीनिया ने हँसिया ज़मीन पर पटक दिया और पुलिन्दा के एक ढेर के नीचे जा लेटी। तुरन्त ही प्रसव वेदना होने लगी। अपनी काली पड़ी जीभ को दाँतों से काटती वह ज़मीन पर चित लेट गई। कटाई-मशीनें लिये मज़दूर उसके पास से गुज़र रहे थे। एक पीले काठ के-से चेहरे वाला आदमी बोला... अरे तुम यहाँ क्या लेटी हो? उठो यहाँ से नहीं तो धूप में पिघल जाओगी।

मशीन पर अपनी जगह किसी को बिठाकर ग्रिगोरी उसके पास आया। बोला... क्या बात है?

अक्सीनिया के होंठ ऐंठने लगे और वह अपनी सम्हाल में नहीं रही।

'पेट दर्द कर रहा है... बच्चा'

मैंने कहा था न कि मत चल गधी कहीं की ! अब क्या किया जाए ?

गुस्सा न होग्रो ग्रोस्का ! हमारे हाय र ! गाड़ी लाग्रो। मैं घर जाऊँगी यहाँ कसे क्या होगा कज्जाकों के सामने ? दर्द की लौहपकड़ म जकड़ी-सी वह कराही ।

ग्रिगोरी घोड़ा लाने को दौड़ा । वह थोड़ी दूर खड़ा म चर रहा था। जब तक वह आया तब तक अक्सीनिया की सारी गति हो ली । गद से भरे जौ के ढेर म उसने अपना सिर धसा लिया था और दर्द के मारे जो बालें चबा ली थीं उन्हें थू-थू कर थूकने लगी । उसने फटी फटी लुटी-लुटी-सी दृष्टि स ग्रिगोरी को देखा और मुँह म रूमाल ठूस लिया ताकि उसकी चीखें मजदूर न सुनें ।

ग्रिगोरी न उठाकर उस गाड़ी म लिटाया और घोड़े को इलाके की ओर भगा ल चला ।

अक्सीनिया का सिर गाड़ी के पेंदे स टकराया । वह चिल्ला उठी हाय रे जल्दी म करो मर जाऊँगी मैं धीरे हाँको धीरे मुझे धचक लग रहे हैं

ग्रिगोरी न चुपचाप चाबुक नीचे रख दिया और अपने सिर के चारों ओर रास घुमाई । उसने पीछे मुड़कर देखा नहीं ।

उसन अपने गाल हथेलियों पर टिका लिये । गाड़ी ऊँची-नीची सड़क पर आगे बढ़ी तो वह कभी इस ओर को लुढ़कने लगी तो कभी उस ओर को । ग्रिगोरी घोड़े को दौड़ाता ही रहा । क्षण भर के लिए अक्सीनिया ने चीखना चिल्लाना बन्द कर दिया । पहिये लड़खड़ाये और उसका सिर नीचे के तख्ते से टकराया । पहले तो ग्रिगोरी पर उसकी चुप्पी का कोई प्रभाव नहीं पड़ा लेकिन फिर उसे कुछ ध्यान आया । उसने मुड़कर पीछे देखा । अक्सीनिया लेटी हुई थी । उसका मुह बुरी तरह ऐंठ गया था । गाल गाड़ी के बाजू से भिंचा हुआ था । जबड़े पानी के बाहर पड़ी मछली के जबड़ों की भाँति काँप रहे थे । माथे से पसीना बहकर नीचे झुकी आँखों पर आ रहा था । ग्रिगोरी ने उसका सिर उठाया और अपनी मुड़ी मुड़ाई टोपी उसके नीचे रख दी । तिरछी

दृष्टि से उसकी ओर देखती हुई अक्सीनिया दृढ़ता से बोली "मैं नहीं चलूंगी ग्रीश्का ! अब सारा मेल खत्म ही समझो।"

ग्रिगोरी काँप गया। उसके सिर से पैर तक कपकपी दौड़ गई। उसने धीरज बंधाने के लिए कुछ कहना चाहा पर शब्द ही न मिले। उसके थरथराते होंठ ऐंठे और वह गरजा। उसके काँपते होंठों से शब्द निकले

"बकवास मत कर बेवकूफ कहीं की !" इसके बाद उसने सिर हिलाया। वह अक्सीनिया की तरफ झुका और उसका पाँव हिलाते हुए प्यार से बोला "अक्सीनिया मेरी रानी मेरी सोनचिरैया !"

क्षण भर के लिए दर्द बन्द हो गया लेकिन फिर दूने वेग से उभर आया। उसे लगा कि कोई चीज उसका पेट चीरे डाल रही है। मुँह से भयानक गगनभेदी चीख निकली। ग्रिगोरी एकदम घबरा गया। उसने पागल की तरह घोड़े पर चाबुक सटकारा। पहियों की खड़खड़ाहट को भेदती पतली धीमी आवाज़ उसके कानों में पड़ी— "ग्रीशा ! ग्रीश्का !"

उसने घोड़ा रोका और पीछे मुड़कर देखा। अक्सीनिया बाँहें फैलाये खून में लथपथ लेटी थी। उसकी टाँगों के बीच एक गोरी नाम चीज़ पड़ी हिल रही थी। ग्रिगोरी बौखलाता हुआ नीचे कूदा और लड़खड़ाता हुआ पीछे की ओर गया। अक्सीनिया के धौंकनी की तरह जलते हुए मुँह को देखकर उसने उसकी बात सुनी कम उसके भाव समझे ज़्यादा।

"नारकाट डालो सूत बाँध दो कमीज़ चीर डालो।"

ग्रिगोरी ने काँपती हुई अँगुलियों से अपनी सूती कमीज़ की आस्तीन फाड़ी उससे तागे खींचे और आँखें सिकोड़ उसने दाँतों से नारकाट डाला। फिर खून उगलते सिरे को तागे से बाँध दिया।

४

यागोदनाया की जागीर एक चौड़ी घाटी में यों स्थित थी मानो थीम में उग आई हो। हवा कभी दक्षिण की ओर से बहती तो कभी उत्तर की दिशा से। सूरज आसमान की नीलम सफेदी पर लहरें लेता। घ रंग रेग रमी का पीछा करता सरसराता चला जाता। सर्दियाँ बर्फ़

पाले से मढ़ी रहती। पर यागोदनाए ज्यों-का-त्यों जड़ता म जड़ा रहता। दिन जुड़वाँ बच्चों की तरह बीतते जाते और जागीर सारी दुनिया स कटी रहती।

सो काम न होते म माली बस्ती की चहल-पहल अब भी रहती। उनकी आँखो व चारों ओर के काले घेरे चश्मा-स लगते। गिनी व मुर्ग दानदार बूदो की भाँति चारो ओर बिखरे रहते। सुन्दर परो वाले मोर अस्तबल की छत से पी-कहाँ! पी-कहाँ! करते। वृद्ध जनरल का हर तरह के पक्षियों का शौक था। उसके पास एक पालतू सारस भी था। नवम्बर म जब जगली सारसो का दक्षिण की ओर जाते देखता तो उसके कठ के स्वर उसक दिल की तड़प और करुण कराहों देन लगते। वह उड़ नहीं सकता था क्योंकि उसका एक पख बेकार था और एक ओर को झूलता रहता था। खिड़की पर खड़ा हो जनरल जब पक्षी को अपनी गदन तान छलाँग मारते और पख फड़फड़ाते देखता तो हस पड़ता। हसी से सफद दीवारो वाला हाल गूँजन लगता।

वेनयामिन पहले की तरह भवता फिरता और पीछे के कमरे म अकेला ताश खेलता रहता। तीखोन अपनी चेचक के दागो वाली बीवी आक्सा ग्रिगोरी मजदूरो और सारस को लेकर उसी तरह कुढ़ता रहता। विधवा लुकरिया अपने हृदय की सारी ममता सारस पर उँडेलती। बूढ़ा साशका जब-तब ह्याल पाता और लिस्तनित्स्की की खिड़की के नीचे खड़ा हाकर पचास कोपेक माँगता।

यागोदनाए म ग्रिगोरी के निवास-काल में बस दो ऐसी घटनाएं हुई जिनसे वहाँ के एकरस बजान जीवन म कुछ हलचल हुई। एक अक्सानिया का बच्चा हुआ। दूसरे बनावीमती हस मर गया। जहाँ तक ग्रिगोरी की बच्ची का सवाल है यागोदनोए व लोग जल्दी ही उस अपना मानने लगे। हस के मामले में भी उनकी उत्सुकता जल्दी ही समाप्त हो गई। चरागाह म उन्हे पख मिले और उन्होंने मान लिया कि कोई लोमड़ी उसे उठा ले गई।

सुबह जगते ही मालिक वेनयामिन को आवाज देता 'रात को तुमने सपना देखा था कोई?

क्या देखा था शानदार सपना देखा था !

'बनाम्रो मुझे क्या देखा तुमने ?' सिगरेट रोल करते हुए लिस्त निल्स्की ग्रादेश देता ।

ग्रौर वेनयामिन बतलाता । ग्रगर सपना खराब या बुरा निकलता तो जागीरदार बिगड़ उठता गधे हो तुम ! बेवकूफों को ही बेवकूफी के सपने ग्राते हैं ।

इस पर वेनयामिन खुशी से भर मज़ेदार सपने गढ़ने लगता । काम मुश्किल होता । वह कई दिन पहले से ताश के पत्ते में जूझता जूझते वह काम शुरू करता । कभी-कभी तो ऐसा होता कि सोचते-सोचते उसका दिमाग़ काम करना बन्द कर देता । रात को वह सोता तो सुबह उठने पर सपने याद करने की कोशिश करता पर हाय ग्राता केवल अँधेरा ग्रौर सुनसान अँधेरा ।

फिर यह होता कि वेनयामिन का सपना का खज़ाना खाली हो जाता ग्रौर वह सपने दोहराने लगता तो मालिक चीख उठता घोड़े के बारे में इस सपने का किस्सा तो तुमने मुझे पिछले बृहस्पति को सुनाया था ।

वेनयामिन शान्त भाव से जवाब देता मैंने दुबारा देखा यही सपना मिकोलाई लक्सेएविच ! ईश्वर जानता है—दुबारा देखा मैंने वही सपना ।

खैर तो दिसम्बर में एक बार ग्रिगारी को जिला प्रशासन कार्यालय में व्येशेन्स्काया बुलाया गया । वहाँ घोड़ा खरीदने को उसे एक सौ रूबल मिले ग्रौर ग्रादेश दिया गया— बड़े दिन के दो दिन बाद तुम्हें सैनिक चुनाव के लिए मानकोवो गाँव में पहुँचना है ।

ग्रिगारी यागोदनाए लौटा तो काफ़ी परेशान था । बड़ा दिन पास ग्रा रहा था ग्रौर तयारी कुछ भी नहीं हुई थी । ग्रधिकारियों से मिले ग्रौर ग्रपने बचाए उसके पास कुल एक सौ चालीस रूबल थे । सो उसने ग्रपने साथ शाश्का को लिया ग्रौर दोनों ने मिलकर एक घोड़ा खरीदा । घोड़ा छः साल का था । एक पस उसमें थी पर वह छिपी हुई थी । अँगुलियों से दाढ़ी के बालों में फिराते हुए बूढ़े शाश्का ने राय दी इससे सस्ता

नहीं मिलेगा और अफसरों की नजर पल पर आने की नहीं ! इतने समझदार नहीं होते अफसर।

घोड़े की नंगी पीठ पर सवार हो ग्रिगोरी ने यागोल्नोए तक उसकी चाल परखी।

पन्तली के यागोदनोए आने की तो कोई आशा थी नहीं लेकिन बड़े दिन से एक सप्ताह पूर्व वह वहाँ अकस्मात् ही आ पहुँचा। उसने अपना घोड़ा और वास्कट फाटक पर ही छोड़ दी। गाड़ी के ऊपर पड़े हिम-कणों को झाड़ता लंगड़ाता हुआ वह नौकरों के क्वार्टरों में गया। ग्रिगोरी ने खिड़की से उसे देखा तो वह चकित हो उठा। पन्तेली बोला मैं हूँ तेरा पापा !

न जाने किस विचार से अक्सीनिया ने पालने में लेटी बच्ची पर दौड़कर चादर ढक दी। पन्तली अन्दर आया और उसके साथ ही आया ठंडी हवा का एक लहरा। अपने सिर की टोपी उतारकर उसने मूर्ति के सम्मुख क्रॉस बनाया और फिर कमरे में चारों ओर नजर दौड़ाई।

दोब्रयेउत्रा[1] पापा ! बेंच से उठकर बीच कमरे में आते हुए ग्रिगोरी ने कहा।

भगवान् तुम्हें स्वस्थ रखे ! उसने आशीर्वाद दिया।

पन्तेली ने बर्फ-सा ठंडा हाथ मिलाया और भेड़ की खाल लपेटते हुए बेंच के सिरे पर बैठ गया। उसने अक्सीनिया की ओर देखा तक नहीं। वह चूल्हे के पास अब भी शान्त भाव से खड़ी रही।

नौकरी पर जाने की तैयारियाँ कर रहे हो ? उसने पूछा।

हाँ सो तो करनी ही है।

ग्रिगोरी की ओर गहरी प्रश्नभरी दृष्टि से देखते हुए पन्तेली चुप रहा।

पापा ओवरकोट वगैरह उतार दो ठंड से परेशान हो गए होगे।

कोई बात नहीं।

---

१ गुड मार्निंग।

समोवार तयार हो रहा है।

धन्यवाद" बूने ने अँगुली के नाखून से अपने कोट पर लगा कीचड़ का पुराना दाग खुरचा और बोला मैं तुम्हारा सामान ले आया हूँ। दो कोट हैं एक जीन है पतलून हैं। सब-कुछ स्लेज में रखा है।

ग्रिगोरी उठकर गया और स्लेज से दो बार में सामान उठा लाया। उसके आते ही पिता बेंच से उठकर खड़ा हो गया। पूछा कब जाओगे?

बड़े दिन के दूसरे दिन। आप जा रहे हैं क्या? अभी रुकिए न पापा!

'मुझे जल्दी लौटना है।

पन्तली ने ग्रिगोरी से विदा ली और अक्सानिया की दृष्टि से बचता हुआ द्वार की ओर बढ़ा। कुंडी खोलते हुए वह पालने की ओर देखकर बोला तुम्हारी माँ ने तुमको आशीर्वाद भेजा है। पर की तकलीफ से वह बीमार है। फिर क्षण भर चुप रहकर तेज स्वर में कहा मैं मास्लेनीत्सा साथ चलूँगा। आऊँगा तयार रहना।

हाथ के बुने गरम दस्ताने में हाथ डालते हुए वह बाहर चल दिया। अपमान से पीली अक्सीनिया ने मुँह से कुछ नहीं कहा। ग्रिगोरी उसकी ओर तिरछी दृष्टि से देखते हुए कमरे में टहलता रहा। उसके पैरों के नीचे का तख्ता चरमराता रहा।

बड़े दिन के अवसर पर ग्रिगोरी मालिक को बग्घी में व्येशेन्स्काया ले गया। लिस्तनित्स्की धर्म-समाज में सम्मिलित हुआ उसने वहाँ के एक जमींदार अपने भतीजे के साथ भोजन किया और फिर ग्रिगोरी को वापसी के लिए बग्घी जोतने को कहा। ग्रिगोरी अपना शोरबा पी भी नहीं पाया था कि हुक्म पर उठ खड़ा हुआ अस्तबल में गया और वहाँ उसने हल्की स्लेज में भूरे घोड़े जोत दिए।

हवा बर्फ के फाहों को उड़ाती फिर रही थी। रुपहला फेन-सा हाते भर में उमड़ रहा था। जंगल के बाहर के पेड़ों की शाखों पर बर्फ झूला झूल रही थी। हवा उसे उड़ाकर जमीन पर गिरा रही थी और सूरज की किरणें उसमें इन्द्रधनुष बुन रही थीं। धुआँ छोड़ती चिमनी के

नहीं मिलेगा और अफसरों की नजर पत्र पर जाने की नहीं ! इतने समझदार नहीं होते अफसर।

घोड़े की नंगी पीठ पर सवार हो ग्रिगोरी ने यागोदनोए तक उसकी थाह परखी।

पन्तेली के यागोदनोए आने की तो कोई आशा थी नहीं, लेकिन बड़े दिन से एक सप्ताह पूर्व वह वहाँ अकस्मात् ही आ पहुँचा। उसने अपना घोड़ा और बास्केट फाटक पर ही छोड़ दी। दाढ़ी के ऊपर पड़े हिम-कणों को झाड़ता, लंगड़ाता हुआ वह नौकरों के क्वाटरों में गया। ग्रिगोरी ने खिड़की से उसे देखा तो वह चकित हो उठा। पन्तेली वाला मैं हूँ तेरा पापा !

न जाने किस विचार से अकसीनिया ने पालने में लेटी बच्ची पर दौड़कर चादर ढक दी। पन्तेली अन्दर आया और उसके साथ ही आया ठंडी हवा का एक लहरा। अपने सिर की टोपी उतारकर उसने मूर्ति के सम्मुख क्रॉस बनाया और फिर कमरे में चारों ओर नजर दौड़ाई।

दोब्रयेड्न्या[1] पापा ! बेंच से उठकर बीच कमरे में आते हुए ग्रिगोरी ने कहा।

भगवान् तुम्हें स्वस्थ रखे ! उसने आशीर्वाद दिया।

पन्तेली ने बर्फ-सा ठंडा हाथ मिलाया और भेड़ की खाल लपेटते हुए बेंच के सिरे पर बैठ गया। उसने अकसीनिया की ओर देखा तक नहीं। वह झूले के पास अब भी शान्त भाव से खड़ी रही।

नौकरी पर जाने की तैयारियाँ कर रहे हो ? उसने पूछा।

हाँ सो तो करनी ही है।

ग्रिगोरी की ओर गहरी प्रश्नभरी दृष्टि से देखते हुए पन्तेली चुप रहा।

'पापा, ओवरकोट वगैरह उतार दो, ठंड से परेशान हो गए होंगे।

कोई बात नहीं।

---

१ नम स्कार।

समोवार तयार हो रहा है।

धन्यवाद" बूढ़े ने अँगुली के नाखून से अपने कोट पर लगा कीचड़ का पुराना दाग खुरचा और बोला "मैं तुम्हारा सामान ले आया हूँ। दो कोट हैं एक जीन है पतलून हैं। सब कुछ स्लेज में रखा है।

ग्रिगोरी उठकर गया और स्लेज से दो बोरे सामान उठा लाया। उसके आते ही पिता बेंच से उठकर खड़ा हो गया। पूछा "कब जाओगे ?

बड़े दिन के दूसरे दिन। आप जा रहे हैं क्या ? अभी रुकिए न पापा !

मुझे जल्दी लौटना है।

पन्तेली ने ग्रिगोरी से विदा ली और अक्सीनिया की दृष्टि से बचता हुआ द्वार की ओर बढ़ा। कुंडी खोलते हुए वह पालने की ओर देखकर बोला "तुम्हारी माँ ने तुमको आशीर्वाद भेजा है। पर की तकलीफ़ से वह बीमार है।" फिर क्षण भर चुप रहकर तेज स्वर में कहा "मैं मानकोवा साथ चलूँगा। आऊँगा तयार रहना।

हाथ के बुने गरम दस्तानों में हाथ डालते हुए वह बाहर चल दिया। अपमान से पीली अक्सीनिया ने मुँह से कुछ नहीं कहा। ग्रिगोरी उसकी ओर तिरछी दृष्टि से देखते हुए कमरे में टहलता रहा। उसके पैरों के नीचे का तख्ता थरथराता रहा।

बड़े दिन के अवसर पर ग्रिगोरी मालिक को बग्घी में व्येशेन्स्काया ले गया। लिस्तनित्स्की धर्म-समाज में सम्मिलित हुआ उसने वहाँ के एक जमींदार अपने भतीजे के साथ भोजन किया और फिर ग्रिगोरी को वापसी के लिए बग्घी जोतने को कहा। ग्रिगोरी अपना शोरबा पी भी नहीं पाया था कि हुक्म पर उठ खड़ा हुआ अस्तबल में गया और वहाँ उसने हल्की स्लेज में भूरे घोड़े जोत दिए।

हवा बर्फ के फाहों को उड़ाती फिर रही थी। रुपहला फेन-सा हाते भर में उमड़ रहा था। जंगले के बाहर के पेड़ों की शाखों पर बर्फ झूला झूल रही थी। हवा उसे उड़ाकर जमीन पर गिरा रही थी और सूरज की किरणें उसमें इन्द्रधनुष बुन रही थीं। धुआँ रसोई चिमनी के

पास की छत पर कौवे काँव-काँव कर रहे थे। पगध्वनियों से चौंककर वे उड-उडकर बत्तख के रंग की बर्फ के फूलों की तरह मकान के चारों ओर चक्कर काट रहे थे। फिर पूरब में स्थित गिरजे की ओर उडे जा रहे थे। गिरजा सुबह के बजनी आसमान में साये में दूर से लौ दे रहा था।

मालिक से कह दो कि गाड़ी तैयार है। ग्रिगोरी ने मकान की सीढ़ियों पर खड़ी एक नौकरानी से कहा।

लिस्तनित्स्की आया और गाड़ी में बैठ गया। रेकून रीछ के फर वाले कॉलर में उसने अपने गलमुच्छे छिपा लिये। ग्रिगोरी ने अपनी टाँगें ढकी और मखमली अस्तरवाली भेड़िये की खाल ठीक की।

ग्रिगोरी को अपनी गद्दी पर बैठे-ही-बैठे याद आई जाडे की एक भोर और याद आया यह भी कि स्लेज को भद्दे ढंग से चलाने के लिये मालिक ने कस उसके कान गरम किये थे। [illegible] गाड़ी दोन प्रदेश के निचले इलाकों में पहुँची तो ग्रिगोरी ने रास ढीली कर दी और गाल दस्ताने से रगडे।

वे दो घंटे में यागादनोए पहुँच गए। रास्ते में लिस्तनित्स्की और ग्रिगोरी के बीच कोई बातचीत नहीं हुई। एक बार केवल लिस्तनित्स्की ने पीठ पर अँगुली गडाकर ग्रिगोरी को गाड़ी रोकने का इशारा किया क्योंकि वह सिगरेट जलाना चाहता था। पर पहाड़ी से उतरते ही उसने पूछा कल रहने जा रहे हो ?

ग्रिगोरी एक बार को मुडा। जमे हुए होंठ बड़ी मुश्किल से खुले। ठंड से अकड़ी बड़ी जीभ दाँतों के पीछे फँसी-सी लगी।

जी हाँ ! उसने जैसे-तैसे कहा।

स्वर्ग पूरे मिल गए ?

जी हाँ।

अपनी घरवाली की चिन्ता न करना। वह यहीं कायदे से रहेगी। अच्छे सिपाही बनना। तुम्हारे बाबा बड़े अच्छे कज्जाक थे। तुम्हारे काम से तुम्हारे बाबा और पिता की इज्जत पर किसी तरह बट्टा नहीं लगना चाहिए। तुम्हारे पापा को तो सन् १८८३ में राजकीय

प्रदर्शन के समय घुड़सवारी में प्रथम पुरस्कार मिला था है न? लिस्तनित्स्की ने हवा से बचाव के लिए कालर में अपना मुंह छिपा लिया।

'जी हाँ मिला था।'

'तो अब तुम्हें वहां शान रखनी है।' बूढ़े ने अपनी वाणी में रुलाई लाते हुए कहा और फिर फर में चेहरा धसा लिया।

हाते में पहुँचकर ग्रिगारी ने गाड़ी का घोड़ा थमाया और नौकरों के क्वार्टरों की ओर बढ़ा।

'तुम्हारे पापा आ गए हैं।' दाश्का ने पुकारकर कहा।

ग्रिगारी ने पलंगी की मेज के किनारे बैठकर गोश्त की चटनी खाते देखा। 'मजे में हैं।' पिता के तमतमाये चेहरे को देखकर ग्रिगारी ने सोचा।

'तो लौट आये फ़ौजी?' पन्तेली बोला।

'मैं तो बर्फ से अकड़ गया।' ग्रिगारी ने हाथों को रगड़ते हुए कहा। वह अक्सीनिया की ओर मुड़ा और बोला 'मेरा कनटोप खोल दो। ठंड के मारे मेरी अँगुलियाँ सुन्न पड़ गई हैं।'

'हवा विरुद्ध होगी!' पिता ने मुंह चलाते हुए कहा।

इस बार पापा के व्यवहार में कहीं अधिक नम्रता मिली। वह अक्सीनिया से यों बोला मानो अपने ही घर में हो।

'मुझे रोटी और दो बचाकर न रखो!'

खाना खाकर पन्तेली उठा और हाते में जाकर सिगरेट पीने के लिए दरवाज़े की ओर बढ़ा। पालने के पास से निकलते समय उसने पालने को दो-तीन बार हिला दिया। पर दिखावा ऐसा किया जैसे कि यह हरकत यों ही हो गई हो। उसने पूछा 'बच्चा कैसा है?'

'लड़की है।' अक्सीनिया ने ग्रिगारी के बदले जवाब दिया और बूढ़े के चेहरे पर असन्तोष का भाव देखते ही वह तुरन्त बोली 'ग्रीश्का है बिलकुल!'

कपड़ों में बाहर निकले छोटे काले सिर को गौर से देखते हुए, ज़रा अभिमान से पन्तेली बोला 'हमारा खून है इसमें!'

'तुम किस पर आये पापा?' ग्रिगोरी ने पूछा।

प्योत्र का घाड़ा और अपनी घाड़ी मर साथ है ।

एक ही से श्राए होते मानकावो तक मेरा घोड़ा ता जाता ही ।

उस पर जरा बोझ कम डाला । तुम जानो कि घाड़ा बुरा नही है ।

यद्यपि दोनों के दिल म बात एक ही घुम रही थी लेकिन वे हजार दूसरी बाता को लेकर बातचीत करत रहे । अक्सीनिया ने बातचीत में भाग नही लिया और पलग पर बठी रही । उसकी भरी हुई छातियाँ कसा हुआ ब्लाउज जसे भेन्ती रही । प्रसव के बाद वह काफी तगड़ी हो गई थी और उसके मुख पर विश्वास की एक नई चमक आ गई थी ।

काफी रात बीतने पर वे लोग सोये । ग्रिगोरी स चिपटकर लेटी अक्सीनिया ने उसकी कमीज आँसुओ स तर कर दी । उसकी छातियो से दूध बहता रहा ।

मैं तुम्हार बिना मर जाऊगी । कसे रहूँगी तुम्हें छोड़कर ?

ठीक ही रहोगी तुम । ग्रिगोरी ने धीमे से कहा ।

लम्बी रातें बच्ची की खुली हुई आँखें सोचो ता प्रीश्का कैसे कटेंगे चार साल ?

लोग कहत हैं कि पुराने जमाने म तो फौजी-नौकरी पचीस साल की होती थी ।

'पुरान जमाने से मुझे क्या लना-दना ? मैं ता कहती हूँ आग लगाओ फौज की इस नौकरी म !

छुट्टी पर घर आ जाऊगा ।

छुट्टी पर ! सिसकियाँ भरती और नाक पाछती अक्सीनिया बोली तब तक तो दोन म न जाने कितना पानी आएगा और बह जाएगा !

ऐस न सिसको । तुम ता शरद् की बरसात बन गई हो कि बूँद टूटन को ही नही आती ।

तुम मेरी जगह आकर देखो । वह बोली ।

भोर होने से थोड़ी देर पहल ग्रिगोरी को नींद आ गई ।

अक्सीनिया ने उठकर बच्ची को दूध पिलाया और फिर जा लेटी। उसने कुहनियाँ टेकी, अलक ग्रिगोरी के चहरे की ओर देखा और जाने कब तक निहारती रही। उसे वह रात याद आई जब उसने ग्रिगोरी से कूबान चलने का आग्रह किया था। वह रात भी ऐसी ही थी सिवाय इसके कि उस दिन खिड़की के बाहर पूरे हाते में चाँदनी का पसारा था। हर तरफ चाँदनी बिखरी हुई थी। तब भी वे ऐसे ही लेटे थे और ग्रिगोरी भी ऐसा ही था। पर आज पहले जैसा होकर भी वह बिलकुल पहले जैसा नहीं था। उनके पीछे रह गया था एक चला हुआ रास्ता। गुजरे दिन इस रास्ते से ही तो होकर निकल गये।

ग्रिगोरी ने करवट ली और ओलशान्स्की गाँव के बारे में कुछ बुदबुदाया फिर शान्त हो गया। अक्सीनिया ने सोने की चेष्टा की, पर उसके विचार उसकी नींद को इस तरह उड़ा ले गए जिस तरह हवा सूखी घास के ढेर को उड़ा ले जाती है। दिन निकलने तक वह ग्रिगोरी की असम्बद्ध बात पर विचार करती और उसका अर्थ लगाती लेटी रही। पन्तेलेई की आँख तब खुली जबकि दिन का प्रकाश पाले से मढ़ी खिड़की से झाँकने लगा।

ग्रिगोरी, उठो! उसने ज़ोर से पुकारा।

जब तक सामान की बाँधा-बूँधी हुई तब तक पूरी तरह सवेरा हो गया। पन्तेली अपने घोड़ा को जोतने चला। अक्सीनिया के आलिंगन पाश से मुक्त हो और बुम्बनों के अनन्त तार से अलविदा कह ग्रिगोरी नताल्या और दूसरे नौकरों से विदा लेने चला।

बच्ची को गरम कपड़ों से भली भाँति ढक गोद में ले अक्सीनिया अन्तिम विदा लेने के लिए बाहर आई। ग्रिगोरी ने बेटी के नम नन्हे माथे पर हलके से होंठ रखे और अपने घोड़े की ओर चला।

'स्लेज में आ जाओ।' अपने घोड़ा को सहलाते हुए पिता बोला।

'नहीं मैं अपने घोड़े पर चलूँगा।'

ग्रिगोरी ने सधे हाथों से धीरे-धीरे घोड़े के साज के बन्द कस, उस पर सवार हुआ और हाथ में रासें सम्हालीं। अक्सीनिया ने रकाब पर हाथ रखा और बार-बार कहा, ज़रा रुको ग्रीश्का, मुझे तुमसे एक

धान कहती है और अपनी भौंह सिकोड़ते हुए सोचने लगी कि आखिर करना क्या है।

अच्छा दोस्विदानिया[1] बच्चों की देखभाल कायदे से करना जाता हूँ देखो पापा कहाँ पहुँच गए!

देखो राजा! बाएँ हाथ से लोहे की अगली रकाब पकड़कर अक्सीनिया बोली। दायाँ हाथ बच्ची की आँखों पर रखा। नतीजा यह कि आँसुओं की धारा बहती रही। उन्हें पोंछने की नौबत ही न आई।

बेन्यामिन ने सीढ़ी पर आकर आवाज दी ग्रिगोरी तुमको मालिक बुला रहे हैं!

ग्रिगोरी ने गाली दी अपना चाबुक घुमाया और घोड़े को दौड़ाकर हाते से बाहर आ गया। धूप में घाघरे में लड़खड़ाती हुई अक्सीनिया पीछे-पीछे दौड़ी।

घोड़ा दौड़ाकर पहाड़ी की चोटी पर उसने पिता को पकड़ लिया। फिर मुड़कर उसने पीछे देखा। बच्चे को सीने से सटाए अक्सीनिया अब भी फाटक पर खड़ी थी। उसका लाल शाल हवा में फड़फड़ा रहा था।

उसने अपना घोड़ा पापा की रकाब की बगल में कर लिया। क्षण भर बाद बूढ़े ने घोड़े की ओर पीठ की ओर बोला तो तुम अपनी बीवी के साथ नहीं रहना चाहते?

फिर वही पुरानी पंचायत मैंने तुमसे पहले ही कह दिया

तो तुम नहीं रहना चाहते ?

नहीं मैं उसके साथ नहीं रहना चाहता।

'तुमने सुना उसने अपनी जान देने की कोशिश की थी?

हाँ, सुना था। मुझे गाँव का एक आदमी मिला था।

'और भगवान की नजर में ?

पापा क्या आखिर क्या चिड़ियाँ खेत चुग जाएँ तो पछताने से क्या होगा?

---

१ गुड-बाई।

इस तरह की बकवास मुझसे न करो। जो बात मैं कह रहा हूं तुमसे तुम्हारे भले के लिए कह रहा हूं। कोविन हो पन्तेली उबल पड़ा।

तुम्हें मालूम है कि मेरे एक लड़की हो चुकी है। अब तो बातचीत का सवाल ही नहीं उठता। अब तुम दूसरी औरत मेरे ऊपर नहीं थोप सकते

कहीं ऐसा तो नहीं है कि बच्ची किसी और की हो और पाल रहे हो तुम!

ग्रिगोरी का चेहरा उतर गया। पापा ने दुखती रग पर हाथ रख दिया था। लड़की के जन्म के समय से ही उसके मस्तिष्क में यह भ्रम पनपता रहा था और उसने अक्सीनिया से छिपाये रखा था। कई बार रातों को अक्सीनिया सोई रही कि वह पालने के पास गया और बच्चा के गुलाबी चेहरे में अपने नाक-नक्श खोजे पर गाँठ सुलझी नहीं। वह फिर बिस्तर पर जा लेटा। स्तीपान का भी ढँका हुआ रंग लाली लिये हुए था। उसे कैसे मालूम होता कि लड़की की नसों में किसका खून दौड़ रहा है? कभी उसे लगता कि बच्ची मुझ पर गई है और कभी लगता कि नहीं स्तीपान से मिलती है। ग्रिगोरी के हृदय में उसके लिए कोई भावना न थी। अगर थी तो शायद दुश्मनी की क्योंकि उसके होने के पहले अक्सीनिया को जंगल से घर लाते समय वह काफी भुगत चुका था। जन्म के बाद से अब तक केवल एक बार उस बच्ची का पोतड़ा बदलना पड़ा था क्योंकि अक्सीनिया काम में फँसी हुई थी। सो कपड़ा बदलते समय आक्रोश सीमा पार कर गया था। उसके बाद वह चुपचाप पालने पर झुका था और उसने बच्ची के गुलाबी अंगूठे को दाँतों के बीच कसकर दबा लिया था।

उसके पिता ने बेरहमी से घाव कुरेद दिया। ग्रिगोरी ने काठी पर हाथ रखकर धीरे से उत्तर दिया किसी की भी हो मैं बच्ची को छोड़ नहीं सकता।

पन्तेली ने मुड़के बिना ही घोड़ा पर चाबुक सटकारा।

नताल्या ने अपना चेहरा बिगाड़ लिया। उसका सिर एक तरफ़

भूलता रहता है जैसे कि लकवा मार गया हो। मालूम पड़ता है कि उसने कोई नस काट ली। वह चुप हो गया।

और अब उसकी हालत कैसी है? घोड़े की मयान के बीच से धातु का एक खुरदुरा टुकड़ा हटाते हुए ग्रिगोरी ने पूछा।

किसी तरह ठीक हो गई। सात महीने पड़ी रही चारपाई पर। ट्रिनिटी रविवार को तो उसके प्राण निकलते-निकलते बचे। पादर पाखण्डी उसके आखिरी संस्कार के लिए बुला लिये गए थे। फिर उसकी नई जिन्दगी हुई। वह सम्हलने लगी और चलने फिरने लगी। उसने अपने कनपट में हँसिया धसाया था लेकिन उसका हाथ काँप गया और वार खाली चला गया था।

पहाड़ी से जल्दी उतर ला। ग्रिगोरी ने प्रस्ताव रखा अपना चाबुक सन्कारा और पापा की स्लज के ऊपर घोड़े के खुरों से बर्फ उछालता आगे निकल गया।

हम नताल्या को अपने घर ला रहे हैं। उसके बराबर में आते हुए पन्तली ने चिल्लाकर कहा लड़की अपने बूढ़े माँ-बाप के यहाँ नहीं रहना चाहती। वह मुझे अभी उस दिन मिली थी तो मैंने उससे अपने यहाँ आने को कह दिया था।

ग्रिगोरी ने कोई उत्तर नहीं दिया। वे पहले गाँव तक चुपचाप बढ़ते गए। पिता ने उस विषय पर आगे कुछ नहीं कहा।

उस दिन उन्होंने सत्तर वर्स्ट तय किए। अगले दिन धुँधलका होते होते वे मानकोवा पहुँच गए और ब्यान्स्काया के रंगरूटों के लिए निश्चित क्वाटरों में उन्होंने रात बिताई।

अगले दिन सुबह जिला-अतामान ने व्येशेन्स्काया के रंगरूटों को स्वास्थ्य-परीक्षा के लिए भेजा। ग्रिगोरी अपने गाँव से आए दूसरे लड़कों के साथ हो लिया। तड़क एक शानदार नई काठीवाले ऊँचे घोड़े पर सवार मीत्का कारशूनोव ग्रिगोरी के पास से निकला पर उसे देखकर मुँह भी न खोला।

स्थानीय नगर प्रशासन के ठंडे कमरे में अपनी अपनी पारी से सबने कपड़े उतारे। फौजी-क्लर्क काम में व्यस्त इधर-उधर करते रहे कि

प्रान्तीय मतामान का एडजुटंट उधर से तेजी से गुजरा। भीतरी कमरे से डॉक्टर के आदेशों और बातचीत की आवाज आती रही।

उन्हत्तर'

पावेल इवानोविच जरा वह पक्की पेंसिल उठा देना। नाक से भर्रायी-सी आवाज में किसी ने कहा।

सीने की चौड़ाई

हाँ साफ है कि पुश्तैनी है

लिख लो गरमी

हाथ हटाओ कोई लड़की तो हो नहीं तुम!

बहुत अच्छा स्वास्थ्य है।

सारे गाँव को लग जाती है खास कदम उठाए जाने चाहिएँ मैंने इसके बारे में महामहिम से निवेदन किया है

पावेल इवानोविच जरा इस आदमी का स्वास्थ्य देखो

मो हो!

ग्रिगोरी ने एक दूसरे गाँव के लाल बालावाले लड़के के सामने कपड़े उतारे। इसी समय एक क्लर्क बाहर आया। उसने अपने कंधे या सीधे किए कि पीछे ट्यूनिक में बल पड़ गए। उसने रूखे ढंग से ग्रिगोरी और दूसरे लड़कों से डॉक्टरी जाँच के कमरे में जाने को कहा।

जल्दी करो! लाल बालावाले लड़के ने पैर का एक मोज़ा खींचते हुए शर्म से लाल होकर कहा।

ग्रिगोरी अन्दर चला गया। ठंड के कारण उसकी सारी पीठ कलहंस के माँस की तरह लगी थी। उसका बदन शाहबलूत के रंग की याद दिलाने लगा। अपनी बालों से भरी टाँगों को देखकर वह व्यग्र हो उठा। डॉक्टरी जाँच के रवय ने उसे सीख दिला दी। सफेद लबादा पहने भूरे बालोंवाले डाक्टर ने स्टेथेस्कोप उसके सीने पर रखकर देखा। उससे कम उम्र के डॉक्टर ने उसकी पलकें उलटाकर देखीं और जीभ देखी। उसके पीछे एक तीसरा डॉक्टर सींग के फ्रेम का चश्मा पहने अपने हाथ मलता हुआ इधर-से-उधर घूमता रहा।

'वजन की मशीन पर खड़े हो! एक अफसर ने आज्ञा दी।

ग्रिगोरी एक ठंडे चबूतरे पर चढ़ा।

"पाँच फुट साढ़े छः पौंड।"

"क्या था? यह कोई ऐसा लम्बा तो नहीं है!" बाँह पकड़कर ग्रिगोरी को घुमाते हुए भूरे बालोंवाले डॉक्टर ने कहा।

"ताज्जुब है!" छोटा डाक्टर खाँसते हुए बोला।

"वजन कितना है?" कुर्सी पर बैठे एक अधिकारी ने अचरज से पूछा।

"पाँच फुट* साढ़े छः पौंड!" भूरे बालों वाले डॉक्टर ने जवाब दिया।

"लाइफगार्ड में भेज दिया जाए इसे तो कैसा रहे?" जिला सैनिक-कमिसार ने अपने पड़ोसी की ओर झुककर पूछा।

"लुटेरा की-सी शक्ल है इसकी। बिलकुल जंगलियों-जैसी।"

"ए, मुड़ना पीछे! यह तुम्हारी पीठ पर क्या है?" बदन के मोटे लम्बोतरे एक व्यक्ति ने अधीरता से मेज पर अँगुलियाँ बजाते हुए चिल्लाकर पूछा।

अपने बदन की सिहरन को रोकने की चेष्टा करते हुए मेज की ओर मुँह कर ग्रिगोरी ने उत्तर दिया, "बसन्त में सर्दी लग गई थी। यह फोड़े का निशान है।"

परीक्षा के अन्त में मेज पर बैठे हुए अधिकारियों ने निर्णय दिया कि ग्रिगोरी को साधारण रेजीमेंट में रखा जाएगा।

"बारहवीं रेजीमेंट मेनलाइन, सुना तुमने?" उससे कहा गया।

दरवाजे की ओर बढ़ते समय उसे फुसफुसाहट सुनाई दी, "यह हो नहीं सकता। सोचो तो, सम्राट की निगाह के सामने यह आदमी पड़ गया तो क्या होगा? उसकी आँखें ही..."

"इसमें दो जातियों का खून मिला हुआ है। पूर्व की धार का खून तो है ही।"

"और इसका बदन भी साफ नहीं है। वे फोड़ों के निशान..."

---

* १ फुट=लगभग १६ पौंड=१८ सेर।

बाहर आते ही गाँव के बाकी लोग उसके चारों ओर जमा हो गए।

कैसा रहा ग्रीशा ?

किस रेजीमेंट में लिया ?

आइफगार्ड-रेजीमेंट में न ?

वज़न कितना निकला ?

पतलून में पैर डालते और एक पैर पर डगमगाते हुए ग्रिगोरी ने झिड़का आह भाड़ में जाए कौन-सा रेजीमेंट ? बारहवाँ और कौन-सा ?

कोरशुनोव न्मित्री कारगिन ईवान ! क्लर्क ने दरवाज़े से होकर आवाज़ दी।

कोट के बटन लगाते हुए ग्रिगोरी ने सीढ़ियाँ पार कीं। गरमी से भरी हवा बर्फ के पिघलने का संकेत दे रही थी। सड़क की बर्फ जहाँ-तहाँ से पिघल गई थी और उससे भाप निकल रही थी। मुर्गियाँ सड़क पर पंख फड़फड़ाती हुई कुड़क रही थीं। बत्तखें तालाब में छींटे उड़ा रही थीं। उनके पर पानी में नारंगी-गुलाबी लग रहे थे जैसे कि शरद की पाला मारी पत्तियाँ हों।

अगले दिन घोड़ों की परीक्षा हुई। चौक में गिरजे की दीवार से सटाकर उन्हें एक पाँत में खड़ा किया गया। घोड़ा-डॉक्टर अपने सहायक के साथ उस पंक्ति के पास से निकला। व्यशेन्स्काया का अतामान दौड़ता हुआ चौक के बीचों-बीच रखी मेज़ के पास गया। वहाँ परीक्षा के परिणाम लिखे जा रहे थे। एक फ़ौजी पुलिस अफ़सर एक जवान कप्तान से बातचीत करता हुआ बगल से गुज़रा।

अपनी बारी आने पर ग्रिगोरी अपने घोड़े को वज़न की मशीन पर ले गया। सर्जन और उसके सहायक ने घोड़े के प्रत्येक अंग को नापा फिर उसे तोला। ग्रिगोरी घोड़ा मशीन से उतार भी नहीं पाया कि सर्जन ने चतुराई से उसका ऊपरी होंठ परखा, उसका गला देखा, सीने के पुट्ठों पर हाथ फेरा और अपनी मज़बूत अँगुलियाँ का मकड़ी की टाँगों की तरह उसकी टाँगों पर फेरने लगा। उसने घुटनों के जोड़ टटोले, पुट्ठे थपथपाए और टखनों के पीछे के बालों के ऊपर की हड्डी दबाई। जब

परीक्षा कर चुका तो अपने सफेद लबादे में लटक्स भाग की हवा में फड़फड़ाता कार्बोलिक एसिड की गन्ध उड़ाता वहाँ से चल दिया।

ग्रिगोरी का घोड़ा नामजूर हो गया। नाना के आश्वासन झूठे सिद्ध हुए। अनुभवी सजन ने वह गुप्त खोट ढूँढ निकाला जिसके विषय में उस वृद्ध ने पहले ही सचेत किया था। तुरन्त ही जोन से भरकर ग्रिगोरी पिता के पास गया, उसकी राय ली और आधा घंटा बीतते-न-बीतते प्योत्र के घोड़े को वजन की मशीन पर ले आया। सर्जन ने उसे देखते ही पास कर दिया।

घोड़े को ले ग्रिगोरी थाने लौट आया और जरा सूखी जगह देख उसने जीन के कपड़े को जमीन पर फैला दिया। पिता घोड़ा पकड़ एक बूढ़े से बातें करता रहा। वह बूढ़ा भी अपने बेटे को पहुँचाने आया था। भूरे बाला बाला हलका भूरा लबादा पहने और रुपहली अस्तरवाली टोपी लगाए जनरल घोड़े पर सवार बगल से गुजरा। उसके पीछे-पीछे अधिकारियों का दल चला आ रहा था।

'यह प्रान्तीय अतामान है।' पन्तेली ने ग्रिगोरी की पीठ पर अंगुली गड़ाकर कहा।

'जनरल मालूम होता है'

'यह मेजर जनरल माकेयेव है बड़ा सख्त है शैतान!'

माकेयेव के आते ही अलग अलग रेजीमेंटों के अफसर उमड़ आए। एक चौड़ मुस्हा और काया बाला तापखान का मेजर अतामान रेजीमेंट के गार्ड से अफसर से बातें करता रहा—

भयानक है ऐसा उलटा हिसाब किताब है कि अचरज होता है। एस्तोनिया के गाँव में ज्यादातर लोगों के बाल सुनहरे देखे और यह लड़कों ऐसा विरोधाभास देखा कि बस! और काई यह अकेली ही ऐसी थोड़े थी! हमने बड़ी-बड़ी कठमठियाँ बठा ली। अन्त में पता चला कि बीस साल पहले

अफसर ग्रिगोरी की बगल से गुजरा सा हँसी के ठहाका के बीच आखिरी नाना बाना में पड़े तुम्हारे गार्डों की एक टोली गाँव में रहा करती थी बात साफ है।

अपनी जकेट के बटन बन्द करता अगुलियो म स्याही पोत एक फ्लक दौडता दीखा। जिले की पुलिस के सहायक प्रमुख ने चिल्लाकर कहा तीन प्रतियो के लिए कहा था मुझसे दिमाग खराब है!

ग्रिगोरी ने अधिकारियो और अफसरो के अपरिचित चेहरो को कुतूहल से देखा। एक एडजुटेन्ट ने उसे पनी दृष्टि से देखा किन्तु ग्रिगोरी के सावधान नजरो से नेत्र मिलते ही उसने अपना मुह फेर लिया। एक बूढा कप्तान किसी कारण उत्तेजित अपने पीले दाँतो से ऊपरी होठ भीचे लगभग भागता हुआ बगल स निकला।

जीन के कपडे पर ग्रिगोरी ने हरी गोटवाली अपनी जीन रखी। उसके पास रखे दो फौजी कोट दो जोडी पतलून एक छोटा कोट दो जोडी लागबूट डेढ पौंड बिस्कुट नमकीन गोमास का एक टीन और क़ानून के अन्दर आने वाली खान की दूसरी चीजें थी। थैलो मे थी चार नालें जूते की कीलें सुइयां धागा और तौलिये। यह हुआ सिपाही का साधारण साज-सामान।

अपनी फौजी पोशाकों पर अन्तिम दृष्टि डाल वह फीतो पर जमी कीचड छुडाने के लिए आलती-पालथी मारकर बैठ गया। अपने-अपने जीन के कपडो पर बैठे हुए कज्जाको के सामने से सैनिक-कमीसन धीरे धीरे निकला। अधिकारियो और अवामान ने सामानों की पूरी जाँच की। वे झुककर ओवरकोटो के किनारो को देखते थैलो को टटोलते सामान उलट-पुलट देते और बिस्कुटो व थैलो की तोल करते।

जरा उस लम्बे आदमी को देखो! ग्रिगोरी की बगलवाला कज्जाक फौजी पुलिस के प्रान्तीय प्रमुख की ओर इशारा करते हुए बोला या खराचा-खरोंची कर रहा है जैसे कि पीसड की बिल्ली के पीछे दौडने वाला कुत्ता हो।

जरा उसे देखो थैला ही उलटकर रख दिया"

कुछ-न-कुछ थैले म होगा वरना थैला उलटा न जाता।

हाँ नहा तो घोडे की नाल तो कोइ गिनने की चीज नही।

बिलकुल कुत्ते की तरह

कमीसन के आते ही बातचीत का स्वर धीरे धीरे शान्त हो गया।

प्रान्तीय अतामान के बाएँ हाथ में दस्ताना सधा हुआ था । दाहिना हाथ हिलता जा रहा था । कुहनी सीधी थी बिलकुल । ग्रिगोरी तनकर सीधा हो गया । उसके पीछे बैठा पिता खाँसा । घोड़ों के पेशाब और पिघली बर्फ़ की बास हवा चौक में जहाँ-तहाँ से आ रही थी । मुख उनका लग रहा था जैसे कि शराब के दौरा के बाद उठा हो ।

अधिकारियों का दल ग्रिगोरी की बगल वाले व्यक्ति के पास रुका । वहाँ से वे एक-एक कर उसके पास आये ।

तुम्हारा कुल-नाम और उपनाम ?

मेलेखोव ग्रिगोरी ।

अधिकारी ने सिर से पकड़कर उसका बट कोट उठाया उसका अस्तर सूँघा और उसके बटन गिने । कोरनेट का भब्बा लगाए दूसरे अधिकारी ने पाजामे का कपड़ा अंगुलियों से देखा । तीसरा आया उसने झुककर उसके थैले की छानबीन की । कमिसार ने सावधानी से जूते की कीलों के टाट में हाथ यों डाला मानो वह गरम हो । उसने फुस फुसाते हुए कीलें गिनीं ।

तेईस ही कीलें क्या है ? क्या बात है ? क्रोध से उसने टाट का सिरा खींचा ।

'नहीं साहब चौबीस हैं ।

'क्या मैं अन्धा हूँ ? '

ग्रिगोरी ने तुरन्त ही मुड़ा हुआ सिरा पलटा और चौबीसवीं कील खोज निकाली । इस सिलसिले में उसकी आला से भरी काली अंगुलियाँ अधिकारी के गोरे हाथ से छू गईं । कमिसार ने अपना हाथ झटके से अलग हटाया जैसे कि चोट आ गई हो । फिर उपेक्षा की दृष्टि से त्योरियाँ बदलते हुए उसने दस्ताना पहन लिया ।

उसकी हरकतें देखकर ग्रिगोरी को हँसी आ गई । आँखें मिलते ही कमिसार क्रोधित हो उच्च स्वर में बोला 'यह क्या है क्या बात है यह कज़ाक ? न तुम्हारे अन्द ठीक हैं और न लगाम ! इसका मतलब क्या है ? तुम कज़ाक हो या देहाती मुजिक ? कहाँ है तुम्हारा पिता ? '

पन्तेली ने घोड़े की रासें खींची और लँगड़ाता हुआ एक कदम आया।

तुम्हें कज़्ज़ाकी कायदा-कानून नहीं मालूम? कमिसार उबल पड़ा। आज सुबह ताश में हार जाने की सारी खीझ उसने उतार डाली।

इसी बीच प्रान्तीय अतामान आ गया और कमिसार चुप हो गया। अतामान ने अपने जूते का सिरा ज़ीन में गड़ाया और आगे बढ़ गया। रजीमेंट का चुनाव अधिकारी सबसे बाद में आया। उसने सारा सामान उलट दिया और आगे बढ़ा। फिर पीछे हटकर सिगरेट जलाने के लिए न्यिासनाई की तीक पर आड़ की।

अगले दिन घोड़ों कज़्ज़ाकों और घोड़ों का चारा-दाना ले गाड़ी के लाल डिब्बे वारोनेज के लिए रवाना हो गए। उन्हीं में से एक डिब्बे में ग्रिगोरी खड़ा रहा। खुले दरवाज़े के सामने से अनजाना प्रदेश गुज़रने लगा। दूर जंगलों का दृश्य नीले पतले धागे की भाँति नाचता नज़र आया। ग्रिगोरी के पीछे खड़े घोड़े सूखी घास चबाते रहे। गाड़ी के हिलने डुलने के कारण कभी यह पैर उठाते तो कभी वह। डिब्बों से चिरायते घोड़ों के पसीने और वसन्त में बर्फ के पिघलने की बास आती रही। क्षितिज पर नीले जंगलों के पसारे ने लौ दी पर वे साँझ के धुँधले सितारे की तरह ही पहुँच के बाहर लगे।

भाग ३

१

सन् १९१४ की माच म उमग से भरे बसन्त के जमाने म एक दिन नताल्या अपने ससुर के घर आ गई । पन्तेली सरपत की टूटी चहारदीवारी की मरम्मत पेड़ की क रग की टहनिया स कर रहा था । पहले हिमकण छत से टपक रहे थे । सूरज की धूप म लाली और ताप घुल गया था । धूप पहाड़िया को दुलार रही थी और धरती खुशी से फूली नही जा रही थी ।

नताल्या पीछे से उभरकर पैन्तेली के सामने आई और आदर से झुकी । उसकी गर्दन म दाग थे और वह एक बार फो झुकी हुई थी । बोली पापा भगवान् आपको स्वस्थ रख ।

नताल्युश्का । तुम्हारा स्वागत है बेटी स्वागत है । पन्तेली गद्गद होकर बोला । टहनियाँ उसके हाथ स छूट गिरी । तुम कभी आइ ही नही यहाँ । अन्दर आओ तुम्हारी साम तुम्ह देखकर फूली नही समाएगी ।

'पापा मैं आ गई हू नताल्या ने हाथ फलाए और बोली अब अगर आप धक्के देकर ही न निकालें तो मैं अब शायद ही जाऊँ यहाँ से ।

और क्या तुम यहाँ क्या नहीं रहो बेटा ? तुम कोई गैर हो ? देखो ग्रिगोरी ने इस चिट्ठी म तुम्हारी चर्चा की है । तुम्हारे बारे में पूछताछ करने को लिखा है ।

अब व दानों बावर्चीखाने मे गये । जब इलीनिचना ने नताल्या को

बाँहों में भरा तो उसके आँसू बह चले। रूमाल में नाक साफ कर वह धीरे से बोली तुम्हारे एक बच्चा हो जाए तो सब-कुछ ठीक हो जाए। बच्चा उसका दिल खींच लेगा। बैठो मैं तुम्हारे लिए पनकेक लाती हूँ। ले आऊँ न ?

दून्या मुसकराती हुई बावर्चीखाने में दौड़ी आई और नताल्या को सीने से लगाया। उसे झिड़कते हुए बोली शर्म नहीं आती तुम्हें ? हम सबको तो जैसे तुमने भुला ही दिया !

पागल है तू क्या ? पिता ने बेटी को घुड़का।

कितनी बड़ी हो गई हो तुम ! नताल्या ने दून्या की आँखों में आँखें डालकर कहा।

फिर वे सब एक-दूसरे की बात काटते हुए आपस में बातें करने लगे। हथेली पर गाल रख इलीनिचिना नताल्या को एकटक देखती रही। उसे नताल्या का आज का चेहरा देखकर दुख हुआ। उसने सोचा—कितनी खूबसूरत थी यह पहले !

अब तुम यहीं रहोगी न ? नताल्या के हाथों को अपने हाथों में लेते हुए दून्या ने पूछा।

भगवान् जाने !

क्या और कहाँ रहेगी मेरे बेटे की बहू ? तुम यहीं रहोगी हमारे पास। मेज पर पनकेक सरकाते हुए इलीनिचिना ने फ़ैसला-सा दिया।

बड़े लम्बे सोच-विचार के बाद नताल्या अपनी ससुराल में लौटकर आई थी। पहले तो उसके पिता ने ही नहीं मान दिया। जब उसने पिता के सामने यहाँ आने का प्रस्ताव रखा तो वह क्रोध से चीख पड़ा और उसने उसे बहुत समझाया-बुझाया। पर नताल्या अपने मैके के लोगों से घुल-मिल नहीं पाती थी। अपनी आत्महत्या की कोशिश के बाद से वह अपने को वहाँ गैर समझने लगी थी। रही बात पन्तेली की वह ग्रिगोरी के सेना में चले जाने के बाद से ही नताल्या से ससुराल चले आने का आग्रह करता रहा था क्योंकि नताल्या को अपने यहाँ बुलाकर उसने और ग्रिगोरी में समझौता करा देने का दृढ़ पक्का इरादा कर चुका था।

माघ के उस दिन से नताल्या मेलखोव परिवार म रहने लगी। प्योत्र उसस स्नेह का भाई का-सा व्यवहार करता। दार्‌या बाहर तो कुछ जाहिर न करती पर अपने अन्दर का सारा आक्रोश अपनी कनखियो म उँडेल देती। पर दून्या की ममता और वद्धा के माँ-बाप जसे व्यवहार स यह कमी काफी हद तक पूरी हो जाती।

नताल्या के आने के अगले दिन ही पन्तेली न दून्या स ग्रिगोरी का पत्र लिखवाया—

बेटे ग्रिगोरी पन्तलीएविच! स्नेह और आशीष! हम सब तुम्हारे स्वास्थ्य की शुभ कामना करत हैं। तुम्हारी बहन दून्या और घर क अन्य लाग भी तुम्ह प्यार भेजते हैं। तुम्हारा पाँच फरवरी का पत्र मिला। धन्यवाद। तुमने लिखा है कि तुम्हारा घाड़ा पाँव पटकता है सो तुम उसकी टाँगा म थोडी-सा सूअर की चर्बी की मालिश कर दो। और उसक पिछल पाँवा म तब तक नाल न ठुकवाना जब तक कि बर्फ न पडे या फिसलन न हो। तुम्हारी पत्नी नताल्या हमारे ही पास रह रही है और मजे मे है। तुम्हारी माँ तुम्हार लिए कुछ सूखी चरी ऊनी मोजा की एक जोडी और खान की कुछ चीजें भेज रही है। हम सब ठीक है। हाँ दार्‌या का बच्चा जाता रहा है। अभी उस दिन मैंने और प्योत्र ने शेड पर छत डाली है। वह तुम्ह हुक्म देता है कि घाडे को क़ायद स रखना और उसकी पूरी देखभाल करना। गाया न बच्च द दिय हैं। बूढी घोडी का नायद बच्चा होगा। हमन उसक लिए जिले के अस्तबल स एक स्टलियन मँगवाया था। हम तुम्हारी नौकरी के बारे म यह जानकर खुशी हुई कि तुम्हारे अफसर तुमसे खुश हैं। नौकरी ईमानदारी स करना। जार की सवा बेकार नहीं जाएगी और नताल्या अब यहा रहगी। तुम इस मामल म फिर ठडे दिल से सोचना। एक दुख की बात और है। खेत म थोडे पहल भेडिय न तीन भेडें मार डालीं। ठीक स रहना भगवान् की प्रार्थना करना। अपनी पत्नी को न भूलना। यह तुम्हारे लिए मेरा हुक्म है। वह बडी भली औरत है और तुम्हारी ब्याहता बीबी है। बने-बनाय क़ानून-क़ायदे म तोडा अपने पिता की बात मानो।

—तुम्हारा पापा सीनियर सार्जेंट पन्तेली मेलखोव।

ग्रिगोरी की रेजीमेंट न रूस ग्रास्ट्रिया की सीमा से लगभग चार वस्ट दूर रादजीविनोवो नामक एक छोटे-स गाँव म पडाव डाल रखा था। ग्रिगोरी घर पर पत्र कम ही लिखता था पर जिस पत्र म उस नताल्या के पिता क यहाँ रहन का समाचार मिला जवाब उसन बडी सावधानी से न्या और पत्र पिता का लिखा कि मेरी तरफ स नताल्या को स्नह कहना। वह किसी तरह का कोई कौल न हारता और अपने सारे पत्र गोल-मोल ढग से लिखता। उन्ह बार-बार पढवान क लिए पन्तली कभी प्योत्र को बुलाता तो कभी दून्या को फिर वह गब्दा म छिपे हुए आशय को समझन क लिए गम्भीरता म सोचता रहता। ईस्टर से पहल उसन ग्रिगोरी का चिट्ठी लिखी और पूछा कि तुम ठीक-ठीक बतलाओ कि तुम सेना स लौटने पर अपनी बीवी क साथ रहोग या पहल की तरह अक्सीनिया के साथ ही रहते रहोगे ?

ग्रिगोरी ने पत्रोत्तर म विलम्ब लगाया। ट्रिनिटी रविवार क बाद कही उसका संक्षिप्त-सा पत्र प्राप्त हुआ। दून्या गब्दो क अन्तिम अक्षरो का खाती हुई जल्दी जल्दी पढ़न लगी। पन्तेली को जरूरी बात समझने म कठिनाई हुई क्योकि उसम स्नेह-प्यार के सन्देशा और प्रश्नो के ढर लगे हुए थ। पत्र के अन्त म ग्रिगोरी ने नताल्या की चर्चा की थी

तुमन पूछा है कि मैं नताल्या क साथ रहूँगा कि नही पापा मैं कहता हू कि जो तार एक बार टूट जाता है वह फिर कभी जुडता नही। और मैं नताल्या क साथ रह भी क्से सकता हू जब तुम्ह खुद मालूम है कि मर एक बच्ची है। एसी हालत मे मैं कोई वायदा नही कर सकता क्योकि इस बारे म बात करने स मुझे तकलीफ होती है कल एक यहूदी सामान चोरी स सीमा के पार से आ रहा था कि हम लोगा न उस देख लिया। उसन बतलाया कि आस्ट्रिया से लडाई जल्दी ही शुरू हो जाएगी। जार यह देखन सीमा पर आया है कि लडाई कहाँ से शुरू की जाए और कौन-सी जमीन वह अपने लिए हडप ल। लडाई शुरू हो गई तो मैं मोर्चे पर काम भी आ सकता हूँ। इसलिए इतन पहले स कहा भी क्या जा सकता है।

नताल्या अपने सास-ससुर की सेवा करती रही। उसे अपने पति के वापस लौटने की आशा निरन्तर बनी रही। उसने ग्रिगारी को कभी कोई पत्र नहीं लिखा। लेकिन परिवार भर में पत्र का इन्तज़ार सबसे ज़्यादा उसी को रहता था और पत्र के न आने पर सबसे अधिक दुख भी उसी को होता था।

गाँव में ज़िन्दगी अपनी गति से चलती रही। जिन कज़ाकों ने फौजी सेवा पूरी कर ली वे गाँव लौट आए। काम के दिनों में लोग व्यस्त रहते और समय बीतते देर न लगती। रविवार के दिन बहुत-से परिवार गाड़ियों में लदकर गिरजाघर जाते। ऐसे अवसर पर कज़ाक पुरुष पहनते छोटे कोट और पतलून और स्त्रियाँ पहनतीं लम्बे रंग-बिरंगे स्कर्ट। ये स्कर्ट सड़क की धूल बुहारते चलते। उनके कसीदाकारी वाले ब्लाउज़ों की बाँहें फूली रहतीं।

चौक में खाली गाड़ियों के बम हवा में ऊँचे उठे रहते। घोड़े हिन हिनाते रहते। आगवासी छानों की बगल में बल्गारिया से आकर बसे लोग लम्बी कतार में बैठकर फूल-फल बेचते। उनके पीछे दल बनाकर बच्चे दौड़ते भागते और बड़े घमंड से बाज़ार में घूमने आज़ाद ढंग को कुतूहल से देखते। हर जगह लाल धारीदार टोपियाँ पहने पुरुषों और चमकीले रूमाल बाँधे स्त्रियों की भीड़ दिखाई पड़ती।

शाम को पाँवों की पटपटाहट, गानों की आवाज़ों और अकॉर्डियन की धुन पर होने वाले नृत्यों से सड़कें कराह उठतीं। बस काफी रात भीगने पर ही कहीं जाकर गाँव के आस-पास शान्ति होती।

नताल्या शामों के राग रंग के आयोजनों में कभी नहीं जाती। वह दुन्या की सीधी-सादी कहानियों को खुशी से सुनती रहती। दुन्या के नाक-नक्श निखरने आ रहे थे और उसका सौन्दर्य अपने ढंग से उभरता आ रहा था। वह जल्दी पक जाने वाले सेब की तरह ही पकती जा रही थी। उस साल उसकी उमर की बड़ी सहेलियाँ यह भूल ही गईं कि यह तो अभी छोटी है। उन्होंने उसे अपनी मण्डली में भर लिया। दुन्या अपने पिता की ही भाँति साँवली और तगड़ी थी। उसकी अवस्था अब पन्द्रह की थी लेकिन उसकी सूरत से अब भी बचपन छलकता था। उसके

व्यक्तित्व म खिलती हुई जवानी और बचपन एक-दूसरे में घुल-मिल रहे थ । उसकी छोटी छातियाँ बडी हो गई और ब्लाउज के बीच में अपना पता देने लगी थी । उसकी लम्बी काली आँखों में लाज और शैतानी अब भी लहरें लेती थी । ऐसे म वह शाम को लौटती तो अपने दिल के राज केवल नताल्या को बताती । कभी कहती नताल्या एक बात कहनी है

अच्छा कहो ।

कल गाँव के खलिहान की बगल वाले ठूँठ पर मीशा कोशेवोई सारी शाम मेरे साथ बैठा रहा ।

तो चेहरे पर लाली क्यों दौड रही है ?

नहीं ऐसी तो कोई बात नहीं ।

मीशा देखो ज़रा सारा चेहरा अंगार-जैसा भभक उठा है ।

दून्या अपने जलते हुए गालों पर अपनी साँवली हथेलियाँ रगडती बरौनियों पर अँगुली जमाती और भोलेपन से हँस पडती 'वह कहने लगा कि तुम ऐसी हो जैसे कोई छोटा-सा नीला-सा फूल ।

मान ! उसकी खुशी से खिलते हुए नताल्या उसका दिल बढाती और पाँवों तले रौंदी गई अपनी हँसी-खुशी को भूल जाती ।

मैं बोली 'मीशा झूठ न बोल ! इस पर उसने कसम खाकर कहा'

दून्या की हँसी से सारा कमरा गूँज उठता । उसका सिर हिलता और उसकी काली-लम्बी लटें छिपकलियों की तरह कंधों और पीठ पर सरक आतीं ।

और क्या कहा उसने ?

'वह बोला कि यादगार के लिए मुझे अपना रूमाल दे दो ।

तुमने दे दिया ?

नहीं । मैंने कहा मैं नहीं दूँगी । अपनी औरत से जाकर माँग । लोगों ने उसको मरोज़ोव के लडके की बहू के साथ देखा है । वह औरत खराब है । लोगों के पीछे दौडती-फिरती है ।

तुम उससे बचकर रहना ।

आखिर यहाँ करता क्या है ? समय दिल ही तो दहलते हूं न । यह बदमाश हमारे लिए आफत बुना रहा है । लड़ाई छिड़ जाएगी तो सरकार के लोग मुझे घसीटकर ले जाएँगे । फिर इस मन की फिक्र कौन करेगा ? उसने साम हुए बच्चा की ओर हाथ दिखाकर कहा ।

सो चरागाह की पहली घास कटाई की राह देख रही थी। दोन पार का घास घटिया किस्म की थी । उसम न तो गन्ध थी और न हरियाली । धरती वही थी लेकिन घास के रंग-रूप में अन्तर था। चरागाह की काली मिट्टी इतनी सख्त और भारी थी कि पशुओं के चलने फिरने से उस पर कोई निशान न बनते थे । वहाँ की घास पानी और महकदार थी । किन्तु दोन के किनारे की मिट्टी तर और सड़ी हुई थी जिसकी ओर पशु मुंह भी न उठाते थे ।

घास की कटाई शुरू ही होने वाली थी कि एक ऐसी घटना घटी जिसने सारे गाँव को एक सिरे से दूसरे तक हिलाकर रख दिया। जिला कमिसार गाँव में आया । उसके साथ आया एक इन्स्पेक्टर और दूसरा नकली दाँतो वाला साँवला-सा अफसर । उसकी वर्दी उस गाँव वालो के लिए बिलकुल नई थी । उन्होंने अतामान को बुलाया गवाह इकट्ठे किए और फिर ऐंची-तानी आँखो वाली लूकन्का के घर की ओर रवाना हुए । वे सड़क के किनारे किनारे धूप में चले और गाँव का अतामान एक छोटे मुर्गे की तरह आगे-आगे दौड़ा। इन्स्पेक्टर ने धूलभरे जूते पटकते हुए पूछा स्तोकमन घर पर है ?

जी हुजूर है।

'वह अपनी रोजी रोटी कैसे चलाता है ?

हाथ का कारीगर है वह।

तुम्हें उसके बारे में कोई सन्देह तो नहीं ?

जी नहीं बिलकुल नहीं ।

पुलिस अफसर ने टोप हाथ में लेकर चलते-चलते नाक के सिरे पर एक मुहासा फोड़ा । वह मोटी वर्दी के कारण हाँफ रहा था । छोटे अफसर ने एक तिनके के सहारे अपना काला दाँत और सोने फ्रेम का चश्मा उतारा ।

उसके पास लोग-बाग आते-जाते हैं ? इन्स्पेक्टर ने सतामान को पीछे खींचते हुए पूछा।

'जी हाँ जब-तब ताश खेलने के लिए लोग पहुँच जाते हैं।

कौन-कौन जाता है वहाँ ?

मिल-मजदूर जाते हैं।

आखिर कौन-कौन ?

इंजीनियर तार करने वाला, रोन करने वाला एराय दाविर कभी-कभी हमारे कज्जाक भी चले जाते हैं वहाँ।

इन्स्पेक्टर रुककर अफसर की प्रतीक्षा करने लगा क्योंकि वह पीछे रह गया था। उसने उससे कुछ बातचीत की असुविधा से अपने छोटे कोट के बटन को ऐंठा और सतामान को बुलाया। सतामान हाँफता हुआ दौड़ा आया।

दो सिपाहियों को ले जाओ और जिनके नाम अभी तुमने गिनाए हैं उन सभी को गिरफ्तार कर लाओ। वहीं अपने दफ्तर में ले आना। हम लोग अभी पहुँचते हैं दस मिनट में समझे !

सतामान सीधा हुआ और आज्ञा-पालन के लिए लौटकर चल दिया।

स्तॉकमन की वास्कट के बटन खुले हुए थे। दरवाजे की ओर पीठ किये बैठा वह लकड़ी पर बने एक नमूने को देख रहा था। लोगों के अन्दर आने पर वह घूमा और उसने अपने हाथ खींचे।

मेहरबानी करके चलिए आप गिरफ्तार किए जाते हैं।

आखिर किसलिए ?

आपके पास दो कमरे हैं ?

हाँ।

'हम उनकी तलाशी लेंगे।

अधिकारी ने मेज के पास आकर सामने रखी पुस्तक उठा ली। उसके माथे पर बल पड़ गए। बोला 'मुझे उस बक्स की ताली दो।

'यह दौड़ आखिर क्यों ?

ये सब बातें थाने में होंगी।

स्तोकमन की पत्नी ने दूसरे कमरे से झाँककर देखा और पुलिस को देख पीछे हट गई। इन्स्पेक्टर अपने दीवान के साथ अन्दर आया।

यह क्या है ? पीली जिल्दवाली किताब हाथ म उठाकर अफसर ने धीरे से पूछा।

किताब है कन्धा झटकते हुए स्तोकमन बोला।

मजाक फिर कर लेना। सवाल का जवाब कायदे से दो।

स्तोकमन न मुसकराते हुए स्टोव स अपनी पीठ सटाई। कमिसार न अधिकारी के पीछे स झुककर पुस्तक पर नजर डाला और मुड़कर बोला क्या आप इसका अध्ययन करते हैं ?

मेरी इस विषय म दिलचस्पी है। स्तोकमन ने दाढ़ी के बालो के बीच कघी दौड़ाते हुए रुखाई से कहा।

ठीक।

अफसर ने पन्ने उलट-पलटकर किताब मेज पर पटक दी। दूसरी पुस्तक उठाई और वह भी एक तरफ रख दी। तीसरी का नाम पढ़ा तो स्तोकमन की ओर फिर घूमा और बोला ऐसा और साहित्य कहाँ रखा हुआ है आपने ?

स्तोकमन ने अपनी एक आँख या सिकोड़ी जैसे कि निशाना साध रहा हो। जवाब दिया मेरे पास जो कुछ है आपके सामने है।

तुम झूठ बोलते हो ! किताब हाथ में लेकर खिसियाते हुए अफसर ने घुड़का मैं चाहता हू कि कमरा की तलाशी ली जाए।

अपनी कटार की मूठ पर हाथ रखे कमिसार बक्से के पास पहुँचा। वहाँ चेचक के दाग़ो वाला कज्जाक चौकीदार इस परिस्थिति स भयभीत होकर कपड़ा और दूसरी चीजो को उलटने पलटने लगा।

मैं अनुरोध करता हूँ कि मेरे साथ क़ायदे का व्यवहार किया जाए। स्तोकमन ने जैसे-तैसे कहा और अपनी निगाह अफसर की नाक के सिरे पर गड़ा दी।

शान्त रहो समझे !

फिर वर्कशॉप की भी तलाशी ली गई। इन्स्पेक्टर ने अपनी अगुलियो की पोरो स दीवारो तक को बजाकर देखा।

तलाशी के बाद व लोग स्तॉकमन का प्रशासन-कार्यालय म ल घन। स्ताकमन वीच सडक में चल रहा था। उसका एक हाथ पुराने कोट की बाँह म खासा हुआ था तो दूसरा यो हिलता जा रहा था जस कि वह कीचड भाग रहा हो। दूसर लाग दीवारा के सहारे-सहारे धूप में चल रहे थे।

वहाँ सारे वदिया क बाद स्तॉकमन की पारी आई। ईवान अलक्सिएविच क हाथो म अभी भी तेल पुता हुआ था। दाविद अपराधिया की भाँति मुसकरा रहा था। नव के कधो पर जकट पडी हुई थी। मीशा काशवोई स सवाल जवाब हो चुक थ। य सभी लोग पीछे क कमरे म एक साथ बन्द थ और वहाँ कज्जाका का पहरा था।

अपने पोर्टफोलियो को टटोलते हुए इन्स्पक्टर न स्ताकमन स पूछा जब मैंने मिल के कत्ल क मामले म तुम्हारी जाँच की थी तब तुमने यह बात क्यो छिपाई थी कि तुम रूसी सोशल डेमोक्रेटिक लवर-पार्टी क सदस्य हो ?

पर स्तॉकमन चुपचाप पूछनवाले क सिर क ऊपर नजर गडाय रहा।

इतना तो साबित हो ही चुका है। इस काम के लिए तुम्हें भरपूर इनाम मिलगा। कल्नी की कुर्सी म तग आकर इन्स्पेक्टर ने चीखकर कहा।

कृपा कर अपनी जाँच आरम्भ करें। स्ताकमन धक स्वर म बोला और एक स्टूल दखकर उसने उस पर बठन की अनुमति माँगी। इन्स्पेक्टर न कोई जवाब नहा दिया लकिन स्तॉकमन को स्टूल पर बठते दख वह क्रोधित हो उठा तुम यहाँ कब आय ?

चार साल।

अपनी सस्था क आदेश पर ?

बिना किसी आदेश क।

तुम इस सस्था क सदस्य कितने दिना स हो ?

आप किस सस्था की बात कर रहे हैं ?

मैं पूछता हूँ कि तुम रूसी सोशल डेमाक्रेटिक लबर-पार्टी क

स्तॉकमन की पत्नी ने दूसरे कमरे से झाँककर देखा और पुलिस को देख पीछे हट गई। इन्सपेक्टर अपने दीवान के साथ अन्दर आया।

यह क्या है ? पीली जिल्दवाली किताब हाथ में उठाकर अफसर ने धीरे से पूछा।

किताब है कन्धा झटकते हुए स्तॉकमन बोला।

मज़ाक फिर कर लेना। सवाल का जवाब कायदे से दो।

स्तॉकमन ने मुसकराते हुए स्टोव से अपनी पीठ सटाई। कमिसार ने अधिकारी के पीछे से झुककर पुस्तक पर नजर डाली और मुड़कर बोला क्या आप इसका अध्ययन करते हैं ?

मेरी इस विषय में दिलचस्पी है। स्तॉकमन ने दाढ़ी के बालों के बीच कंघी दौड़ाते हुए रुखाई से कहा।

ठीक।

अफसर ने पन्ने उलट-पलटकर किताब मेज पर पटक दी। दूसरी पुस्तक उठाई और वह भी एक तरफ रख दी। तीसरी का नाम पढ़ा तो स्तॉकमन की ओर फिर घूमा और बोला ऐसा और साहित्य कहाँ रखा हुआ है आपने ?

स्तॉकमन ने अपनी एक आँख या सिकोड़ी जैसे कि निशाना साध रहा हो। जवाब दिया मेरे पास जो कुछ है आपके सामने है।

तुम झूठ बोलते हो ! किताब हाथ में लेकर हिलाते हुए अफसर ने घुड़का मैं चाहता हूँ कि कमरे की तलाशी ली जाए।

अपनी कटार की मूठ पर हाथ रखे कमिसार बक्से के पास पहुँचा। वहाँ चाक से दाग़ा बाबा कज़्ज़ाक चौकीदार इस परिस्थिति से भयभीत होकर कपड़ा और दूसरी चीजों को उलटने पलटने लगा।

मैं अनुरोध करता हूँ कि मेरे साथ कायदे का व्यवहार किया जाए। स्तॉकमन ने जैसे-तैसे कहा और अपनी निगाह अफसर की नाक के सिरे पर गड़ा दी।

शान्त रहो समझे !

फिर वर्कशॉप की भी तलाशी ली गई। इन्सपेक्टर ने अपनी अंगुलियों की पोरों से दीवारों तक को बजाकर देखा।

तलाशी के बाद वे लोग स्तॉकमन को प्रशासन-कार्यालय में ले चले। स्तॉकमन बीच सड़क में चल रहा था। उसका एक हाथ पुराने कोट की बाँह में सोया हुआ था तो दूसरा यों हिलता जा रहा था जैसे कि वह कीचड़ झाड़ रहा हो। दूसरे लोग दीवारों के सहारे-सहारे धूप में चल रहे थे।

वहाँ सारे बन्दियों के बाद स्तॉकमन की पारी आई। ईवान अलेक्सिएविच के हाथों में अभी भी तेल पुता हुआ था। नादिम अपराधियों की भाँति मुसकरा रहा था। नंगे के कंधों पर जैकेट पड़ी हुई थी। सारी कार्यवाही में सवाल-जवाब हो चुके थे। ये सभी लोग पीछे के कमरे में एक साथ बन्द थे और वहाँ कज्ज़ाकों का पहरा था।

अपने पोर्टफोलियो को टटोलते हुए इन्स्पेक्टर ने स्तॉकमन से पूछा: जब मैंने मिल के क़त्ल के मामले में तुम्हारी जाँच की थी तब तुमने यह बात क्यों छिपाई थी कि तुम रूसी सोशल डेमोक्रेटिक लेबर-पार्टी के सदस्य हो?

पर स्तॉकमन चुपचाप पूछनेवाले के सिर के ऊपर नज़र गड़ाये रहा।

इतना तो साबित हो ही चुका है। इस काम के लिए तुम्हें भरपूर इनाम मिलेगा। बन्दी की चुप्पी से तंग आकर इन्स्पेक्टर ने चीखकर कहा।

कृपा कर अपनी जाँच आरम्भ करें। स्तॉकमन थके स्वर में बोला और एक स्टूल देखकर उसने उस पर बैठने की अनुमति माँगी। इन्स्पेक्टर ने कोई जवाब नहीं दिया लेकिन स्तॉकमन को स्टूल पर बैठते देख वह क्रोधित हो उठा: तुम यहाँ कब आये?

'पार साल।

'अपनी संस्था के आदेश पर?

बिना किसी आदेश के।

तुम इस संस्था के सदस्य कितने दिनों से हो?

आप किस संस्था की बात कर रहे हैं?

मैं पूछता हूँ कि तुम रूसी सोशल डेमोक्रेटिक लेबर-पार्टी के

सदस्य कब से हो ?

मेरा विचार है कि

मुझे इससे मतलब नहीं कि तुम्हारा विचार क्या है समझे ! सवाल का जवाब दो। नकार जाने से कोई फायदा नहीं होगा' उलटे जान खतरे में ही पड़ेगी। इन्सपेक्टर ने फाइल से एक कागज निकाला और उसको मेज पर पिन कर दिया— मेरे पास रास्ताव की सूचना है कि जिस संस्था का मैंने नाम लिया है तुम उसके सदस्य हो।

स्तोकमन ने कागज पर नज़र डाली क्षण भर देखता रहा फिर अपने घुटने पर हाथ धरते हुए दृढ़ता से बोला सन् १९०७ से।

ठीक ! और तुम इस बात से इन्कार करते हो कि तुम्हारी संस्था ने तुम्हें यहाँ भेजा है ?

जी।

फिर तुम यहाँ आये क्यों ?

यहाँ मिस्त्रियों की कमी बताई गई थी।

लेकिन तुमने इसी ज़िले को क्यों चुना ?

कारण बता चुका हूँ।

अब या इससे पहले इस संस्था से तुम्हारा कोई सम्बन्ध रहा है ?

नहीं।

क्या संस्था के लोगों को इस बात का पता है कि तुम यहाँ रह रहे हो ?

हो सकता है।

इन्सपेक्टर ने कलम बनाने के चाकू से अपनी पेंसिल की नोक तेज की और होंठ मिकोड़कर बोला क्या संस्था के किसी सदस्य से तुम्हारा पत्र-व्यवहार चलता है ?

नहीं।

तब यह पत्र कहाँ से आया जो तलाशी के सिलसिले में तुम्हारे पास पाया गया है ?

यह पत्र मेरे एक मित्र का है। उसका किसी क्रान्तिकारी संस्था से किसी तरह का कोई भी सम्बन्ध नहीं है।

रोस्ताव से तुम्हारे नाम कोई आदेश आया है ?

नहीं।

'तो ये मिल मजदूर तुम्हारे यहाँ क्यों जमा होते रहे हैं ?

स्तोंकमन ने कंधे भटके जैसे कि इस बेवकूफी के सवाल पर उसे अचरज हो रहा हो।

लोग जाड़े के दिनों में शाम को अपना समय काटने के लिए मेरे यहाँ चले आते थे। हम लोग ताश खेला करते

और जरूर किताबें पढ़ा करते थे। इन्स्पेक्टर ने अपनी ओर से जोड़ा।

नहीं वे सब-के-सब लगभग अपढ़ हैं।

'इस पर भी मिल का इंजीनियर या कोई और इस बात से इन्कार नहीं करता।

'यह झूठ है!

मुझे लगता है कि तुम्हे इस बात की इतनी-सी भी जानकारी नहीं है यह सुनकर स्तोंकमन मुसकराया तो इन्स्पेक्टर भूल गया कि वह कह क्या रहा था। उसने अपनी बात समाप्त की तुमम अक्ल की बिलकुल कमी है। तुम चीजों से जिस तरह इन्कार करते हो उससे तुम्हारा अपना नुक्सान होगा। साफ़ है कि तुम अपनी संस्था के आदेश पर यहाँ आये थे और तरह-तरह की हरकतों से कज्ज़ाकों को सरकार के खिलाफ भड़का रहे हो। मेरी समझ में यह नहीं आता कि तुम बन क्या रहे हो! इससे तुम्हारा जुर्म कम नहीं होता

ये सब आपकी अपनी अटकलबाजियाँ हैं सिगरेट पी लूँ ? धन्यवाद और इन अटकलबाजियों का कोई आधार नहीं है।

क्या तुमने अपने यहाँ आनेवाले मजदूरों को यह पुस्तक पढ़कर सुनाई थी ? इन्स्पेक्टर ने एक छोटी-सी पुस्तक के नाम का हाथ से ढककर उससे पूछा। हाथ से ऊपर प्लेखानोव नाम नजर आ रहा था।

हमने कविता पढ़ी। स्तोंकमन ने सिगरेट से कश लेते हुए हड्डी के सिगरेट-होल्डर को अंगुलियों से और कसकर पकड़ा।

अगले दिन सुबह स्तोंकमन को डाक-घोड़ागाड़ी में चढ़ाकर गाँव से

बाहर ले जाया गया। वह पिछली सीट पर बैठा ऊँघ रहा था और उसकी दाढ़ी कोट के कालर के नीचे दबी हुई थी। उसकी अगल-बगल नंगी तलवारें लिये कज्जाक बैठे थे। उनमें से एक के बाल घुंघराले थे और चेहरे पर चेचक के दाग थे जिसने कि तलाशी ली थी। उसने अपनी टेढ़ी गन्दी अंगुलियों से स्तोकमन की कुहनी पकड़ रखी थी। वह उसकी ओर *कभी-कभी भय से भरी तिरछी दृष्टि डाल लेता था।* घोड़ागाड़ी सड़क पर खटर-पटर करती चली जा रही थी। एक ठिगनी औरत शाल ओढ़े मैलखाव के फाम के पास चहारदीवारी से टिकी उसकी प्रतीक्षा में खड़ी थी।

घोड़ागाड़ी आगे निकल गई अपने वक्ष से हाथ सटाए वह औरत उसके पीछे दौड़ी।

ओसिप! ओसिप दाविदोविच! हाय अब मैं क्या करूँगी !

स्तोकमन ने उसको देखकर हाथ हिलाना चाहा लेकिन चेचक के मुँहवाले कज्जाक ने उछलकर उसकी बाँह थाम ली और मोटी जंगली आवाज में चीखा बैठ जा नहीं तो अभी तेरे टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा!

कज्जाक ने अपनी सीधी-सादी जिन्दगी में यह पहला आदमी देखा था जिसने कि स्वयं जार के खिलाफ कदम उठाने की हिम्मत की थी।

२

माल्लोवा से रान्जीविलावा नामक छोटे कस्बे को जानेवाली धूल से भरी लम्बी सड़क पीछे छूट गई थी। ग्रिगारी ने सड़क बीच-बीच में याद करनी चाही लेकिन इनके दम से याद आई उस कस्बे स्टेशन की इमारतें हिलते प्लेटफार्म के नीचे रेलगाड़ी के गड़गड़ाते हुए पहिये घोड़ा और सूखी घास की गंध उनके बीच बिछी रंग की पटरियां के अनन्त सार इंजिन में उमड़ता धुआँ और वोरोनेज या कीयेव के स्टेशन पर मिलने वाले दाढ़ीवाले हथियारबन्द फौजी का पहरा।

जिस स्टेशन पर ये लोग उतरे वहाँ अधिकारियों और सफाचट मूँछों वाले लोगों की भीड़ थी। सभी ने भूरे रंग के ओवरकोट पहन रखे थे। बातें सभी बाल्टी में कर रहे थे जो ग्रिगोरी की समझ से बाहर थी।

घाड़ा क उतारन म बहुत समय लगा लकिन जब यह काम हो गया तो महायक कमाडर तीन सौ या तीन सौ स ज्यादा कज्जाको का घाडा ग्रस्पताल म ले गया। यहाँ काफी दर तक घोड़ा की परीक्षा की गई। फिर घाडे दला म बाँटे गए।

पहला दल बना इनके भूरे घाडा का दूसरा ताँबे क रग या चितकबरे घाडा का तीसरा गहर भूरे घाडा का चौथा सीधे-सादे भूरे और सुनहरे घाडों का पाँचवाँ बादामी घाडा का और छठा काल रग क घोडा का। ग्रिगारी का घाडा चौथे दल म पडा।

घाडों के दल माजेंट जनरल की कमान म दिय गय। वह उन्हें पास पडोस क गाँवा और जागीरा म स्थित स्क्वडरना म ल चला। लम्बी फौजी सेवा क प्रतीक-स तमाम तमगे लगाए वह ग्रिगोरी की बगल से गुजरा और बाला किस इलाके के हो तुम ?

व्यशन्स्काया का।

'तुम्हारी दुम म बाल हैं कि नहीं ?

बाकी इलाका के कज्जाक ठहाका हँस पडे। ग्रिगारी अपमान पी गया और चुप रहा।

ग्रिगारी का दल जिस सडक पर बढा वह चौडी और पक्की थी। दान के घाडा को ऐसी सडक स पहल कभी वास्ता न पडा था। सो पहल तो व बाना को खडा किये हीसते हुए बडी सावधानी स यों चले जसे कि हनवार वफ पर कदम रख रहे हो लकिन थाडी दर बाद ही रास्ता उनकी समझ म आ गया और उनक नालदार खुर सडक पर पटापट बजन लग। पोलड की उस अपरिचित सडक के आगे-बाएं जहाँ-तहाँ जगला क टुकडे छिटके पडे थ।

यह कौन-सा गाँव है चाचा ? एक कज्जाक ने बाग के पटा क लग सिर झुककर माजेंट मेजर स पूछा।

कौन-सा गाँव है ? अब अपन कज्जाक-गाँवा की बात भूल जाओ—यह काई दान प्रदेश थोडे ही है ?

'तो यह क्या है चाचा ?

मैं तुम्हारा चाचा हूँ ? क्या नालदार भतीजा मिला है मुझे ! साहब

आगे यह राजकुमारी उरमावा की जागीर है। हमारी चौथी कम्पनी का हेडक्वाटर यहीं है।

रादजीविलोवो स्टेशन से कोई चार वस्ट दूर था और मंजिल आधे घंटे में ही तय हो गई। अपने घोड़े की गर्दन थपथपाते हुए ग्रिगोरी ने शानदार दुमंजिले मकान, लकड़ी की पहारदीवारी और नई तरह की बनावट की फार्म की इमारतों पर नजर डाली। किन्तु जब वे बगीचे के नंगे पेड़ों की बगल से गुजरे तो वे उसी भाषा में बोले जिस भाषा में दूर दोन प्रदेश के नंगे पेड़ बोलते हैं।

अब कज्ज़ाकों की जिन्दगियों में एक नया और मुश्किल दौर आया। उनके दिमाग खोखले पड़ने लगे। काम न होने के कारण जवानों को घर की याद सताने लगी और अपना खाली वक्त वे गपशप में उड़ाने लगे। ग्रिगोरी का दल मकान की टाइलवाली बड़ी छतवाले हिस्से में ठहरा था। वे लोग खिड़कियों के नीचे फूस के बिछावन पर सोते थे। खिड़कियों में चिपका हुआ कागज़ रात के समय हवा से ऐसे बजता था जैसे दूर के गड़रिये का सींगा। ज्योंही वह उस आवाज़ को सुनता उसकी उत्कट इच्छा होती कि वह उठे, अस्तबल में जाए, घोड़े पर जीन कसे और फिर तब तक घोड़ा दौड़ाता रहे, दौड़ाता रहे जब तक कि घर न पहुँच जाए।

पाँच बजे सुबह बिगुल बजता तो सबसे पहले घोड़ों को साफ और खरहरा करना पड़ता। घोड़ों के दाना-दाने के आधे घण्टे में उन्हें आराम में गपशप का मौका मिलता।

ज़िन्दगी है कि नरक है यहाँ!

मुझसे तो वतन से रहा।

और यह सार्जेंट मेजर कैसा सूअर है! वह हमसे घोड़ों के गुर तक घुलवाता है।

घर पर तो आज पनचक्की चल रही होगी—आज मंगल-मंगल है।

कल रात मैंने एक सपना देखा मैंने देखा कि मैं अपने पिता के साथ घास की कटाई कर रहा हूँ और गाँव के लोग आस-पास या जमा हैं जैसे गलिशन में डेजी के फूल। गाय के बछड़े-जैसी आँखें वाले प्रोखार

जिकोव ने कहा   और हम घास काटते रहे   काटते रहे   जी खुश हो गया !

शत बदकर कह सकता हूँ कि मेरी औरत मेरी याद कर रही होगी कह रही होगी— पता नही निकोलाई क्या कर रहा होगा इस वक्त।

हा   हो   तुम्हारे बाप से कही ताद न लडा रही हो वह !

मैं कहता हू कि दुनिया म शायद ही कोई एसी औरत हो जो अपने पति के न रहन पर किसी दूसरे आदमी की आजमाइश न करे,

अरे इसकी भी क्या फिक्र करना   औरत कोई दूध का घडा तो होती नही   वापस जाने पर भी कुछ-न-कुछ मजा तो बचा ही रहेगा हमारे लिए।

यगोर भारकोव उनम सबसे ज्यादा खुशमिजाज और साथ ही-साथ फूहड आदमी था। आदर उसके मन म किसी के लिए न था। शम या लिहाज तो इससे भी कम थी। वह आँखें मारते और मुसकराते हुए बीच म टपक पडा   खर यह तो तय ही समझो   तुम्हारा बाप तुम्हारी बीवी को छोडेगा नही   मैं तुम सबको एक कहानी सुनाता हू।   उसकी आँखें चमकन लगी—

एक बूढे की आँखो म लडके की बहू गडी तो अब हालत यह कि वह उस साँस ही न लेने दे मगर बेटा कि हर बार आडे आ जाए। तो जानते हो क्या किया बूढे ने ? एक दिन वह हाते म गया और उसने फाटक खोल दिया। फाटक खोल दिया तो सार जानवर बाहर निकल गए। जानवर निकल गए तो वह बटे से बोला   यह क्या किया तुमने ?   तुमसे फाटक भी बद नही करते बना !   देखा न   सारे ढोर बाहर निकल गए   जाओ हाँककर अन्दर लाओ ! बूढे ने सोचा कि उधर लडका गया और इधर उसे मौका मिला। मगर बेटा कि एक काहिल ! बीवी से बोला   जा तू हाँक ला। सो बेचारी औरत गई। उसका ससुर आहट लेता रहा और उसने बात समझी नही। वह धीरे से पलग स नीचे उतरा और हाथ और परो के बल पत्तोहू की चारपाई तक पहुँचा। बटे न इस बीच एक मोटी-सी चीज उठा ली थी। फिर तो बाप

ने जैसे ही उस पर हथेली रखी उसने बाप की खोपड़ी पर भरपूर हाथ जमाया। "चला भाग जा यहाँ से! कम्बख्त में दाँत न लगें! मौत ले जाए तुझे!"

बात यह हुई कि घर में एक बछड़ा था और बछड़े को चीज चबाने की आदत थी। इसलिए बेटा ऐसा बना जैसे कि उसने बछड़े को मारा हो। बूढ़ा अभिमान से अपने पलंग पर जा लेटा। लड़के ने बाबा "किसे मारा अभी तुमने?"

"बछड़े को।"

"तुम घर के अच्छे मालिक बनोगे! मारोगे जानवर को सिर फूटेगा इन्सान का!"

"तुम झूठों के सरदार हो!"

"क्या बाजार लगा रखा है तुम लोगों ने!" सहसा ही सार्जेंट मेजर ने कन्धे झाड़ते हुए कहा। कज्जाक हँसते हँसते एक-दूसरे को धकेलते अपने घोड़ों की ओर बढ़े।

परेड के समय अफसर सिगरेट पीते किनारे खड़े रहते। कभी-कभी ही बीच में बोलते। ऐसे में ग्रिगोरी की दृष्टि चमकीले कायदे से कढ़े हुए बालों वाले भूरे रंग के सुन्दर लबादों और बिलकुल फिट कपड़ों में कसे अधिकारियों पर पड़ी। उसने अपने आपसे कहा "मेरे और इनके बीच एक ऐसी दीवार है जिसे पार नहीं किया जा सकता। इनकी जिन्दगी बिलकुल अलग है। आराम में बीतती है। सारा हिसाब ठीक है। इन्हें न गर्द धूल की फिक्र है न पिस्सुओं की और न सार्जेंट-मेजर के घूँसों की।"

राज्जौविलोवा पहुँचने के तीसरे दिन जो घटना घटी उसका ग्रिगोरी पर तो पड़ा ही, सभी जवान कज्जाकों पर बड़ा ही बुरा असर पड़ा। वे घुड़सवारी का अभ्यास कर रहे थे कि प्रोखोर जिकोव के घोड़े ने पास से निकलते समय सार्जेंट मेजर के घोड़े को लात मार दी। लात जोर की नहीं पड़ी और घोड़े की सिर्फ बाईं टाँग के घुटने में मामूली-सी खराब आ गई। लेकिन सार्जेंट-मेजर ने प्रोखोर जिकोव के मुँह पर चाबुक मारा और ठीक सामने आकर चीखा "सूअर के बच्चे! देखता नहीं कि तू जा किधर रहा है? दस सूना तुझे! अगले तीन दिन तू ड्यूटी पर

रहेगा।

सयोगवश कम्पनी-कमाण्डर भी वहां खड़ा था। पर अपनी तलवार की मूठ पर हाथ फेरते हुए उसने पीठ फेर ली और दूर से झगड़ा देखने लगा। प्रोखोर के होंठ काँप उठे और उसने अपने सूजे हुए गाल पर बहती हुई खून की धार पोछी। ग्रिगोरी ने घोड़े पर से अफसरों पर नजर डाली। वे मद या बातों में मगन रहे जैसे कि कुछ हुआ ही न हो।

पाँचवें दिन ग्रिगोरी के हाथ से छूटकर एक बाल्टी कुएं में जा गिरी। इस पर सार्जेंट-मेजर बाज की तरह उस पर टूट पड़ा और घूसा जमाने को बढ़ा।

मुझे हाथ न लगाइये। नीचे कलकल करते पानी की ओर देखकर ग्रिगोरी ने धीरे से कहा।

सुनता है वे पानी में कूद और बाल्टी निकालकर ला! दोगला कहीं का!

मैं बाल्टी निकाल लाऊंगा पर मेरे बदन को अंगुली से भी छुइयेगा नहीं। ग्रिगोरी ने सिर झुकाये-ही-झुकाये कहा।

अगर घोड़े-से कज्जाक भी कुएं के पास होते तो अफसर ग्रिगोरी को बिना मारे छोड़ता नहीं। पर वे लोग अपने घोड़े के साथ चहार दीवारी के पास थे और उनके कानों तक बातें पहुँच न रही थीं।

यानी सार्जेंट-मेजर पीछे मुड़कर कज्जाकों की ओर देखते हुए ग्रिगोरी की तरफ बढ़ा। वह क्रोध से पगला उठा। उसकी आँखों में आग धधकने लगी। गरजा— क्या समझता है तू अपने को! अपने अफसर से बात किस तरह करता है?

'बकार की मुसीबत मोल न लो सम्मान्य यगारोव!

धमका रहा है तू मुझे! मैं'

देखिये ग्रिगोरी ने सिर ऊंचा करते हुए कहा अगर आपने मुझ पर हाथ उठाया तो मैं आपको जान से मार डालूंगा। समझे न?

सार्जेंट-मेजर का काप-मछली का-सा बड़ा मुंह आश्चर्य से फैल गया और उससे कोई जवाब देते न बना। ग्रिगोरी का चेहरा भयानक

हो गया था। सार्जेंट-मेजर के छक्के छूट गए। वह वहाँ से आगे बढ़ा तो कीचड़ में फिसल गया। पर कुछ दूर जाने पर मुड़ा और मुट्ठी दिखाते हुए बोला 'स्क्वैड्रन-कमाण्डर से तुम्हारी शिकायत करूँगा मैं! की शिकायत तक करूँगा।'

पर जाने क्या उसने शिकायत की नहीं। लेकिन पन्द्रह दिन तक बराबर ग्रिगोरी के काम में कोई-न-कोई दोष निकालता और पारी बेपारी उस मन्तरी की ड्यूटी देता रहा।

इस अजीब नीरस जीवन ने युवक कज्जाकों को बेजान कर दिया। सूरज डूबने तक वे ड्रिल या घुड़सवारी का अभ्यास करते। शाम को घोड़ों को खरहरा करते और उन्हें दाना चारा खिलाते। दस बजे रात को उनकी हाज़िरी होती। पहरेदार तैनात किये जाते और फिर उन्हें प्रार्थना के लिए बुलाया जाता। प्रार्थना में अपने सम्मुख खड़े हुए सैनिकों की ओर मुँह कर एक सार्जेंट-मेजर ईश्वर की वन्दना गाता।

सुबह से फिर वही क्रम शुरू हो जाता और दिन-पर दिन मटर के दाने की तरह लुढ़कते चले जाते।

पूरी जागीर में औरतें वहाँ सिर्फ दो थीं—कारिन्दे की बूढ़ी बीवी और उसकी जवान और खूबसूरत नौकरानी पालका की फ्रान्या। फ्रान्या अक्सर घर से भागकर बावर्चीखाने में पहुँच जाती। वहाँ का मालिक था बिना मूँछोंवाला बूढ़ा फौजी बावर्ची। सो परेड के मैदान में ड्रिल करते जवान उसे देखने को आँखें मारते और लम्बी-लम्बी साँसें लेते। उसके भूरे स्कर्ट की हर हरकत हसरत से देखते। लड़की कज्जाकों और अफसरों की निगाह पहचानती। उनकी कामुकता में रस लेती आते जाते समय पुट्ठे मटका-मटकाकर स्पष्टवाली तीन सौ आँखों में वासना उँडेलती और हर दृष्टि का उत्तर अपने ढंग से मुसकराती। अक्सर पर तो मुसकान मरना भी। वैसे तो सभी उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने पर अफवाह उड़ी कि सफलता सिर्फ स्क्वैड्रन-कमाण्डर को मिली।

वसन्त के प्रारम्भ में एक दिन ग्रिगोरी की ड्यूटी अस्तबल में लगी। वह शाम तक मन की तरफ घूमता रहा। वहाँ अफसरों के घोड़े तक घोड़ी

की उपस्थिति के कारण पगला रहे थे। इस तरह चन्नकम्मी करता हुआ वह कमाण्डर के घोड़ेवाली कोठरी से आगे निकला कि उसे लड़ाई झगड़े और शोन की आवाज सुनाई दी। आवाज अस्तबल के अंधेरे कोने से आ रही थी। ग्रिगोरी अचम्भे में पड़ा और तेजी से उस ओर बढ़ा। किसी ने अस्तबल का दरवाजा भड़ाक से बन्द किया कि उसकी आँखों के सामने अंधेरा छा गया। उसने दबी हुई आवाज में किसी को चिल्लाते हुए सुना जल्दी लड़की जल्दी!

ग्रिगोरी ने कदम तेज कर पुकारा कौन है वहाँ?

इसी समय उसकी टक्कर एक कम्पनी-सार्जेंट से हो गई। सार्जेंट दरवाजा टटोल रहा था। तुम हो मेलेखोव? ग्रिगोरी के कंधे पर हाथ रखकर सार्जेंट ने धीमे स्वर में कहा।

रुकिये! बात क्या है? ग्रिगोरी ने पूछा।

अपराधियों की भाँति सार्जेंट हलके से हँसा और ग्रिगोरी की आस्तीन पर हाथ रखते हुए बोला हम लोग अरे तो तुम कहाँ जा रहे हो? ग्रिगोरी ने बाँह छुटाते हुए दौड़कर दरवाजा खोल दिया। हाते के उस वीराने में एक मुर्गी अंडा देने के लिये लीन कास रही थी। उसे क्या पता कि कारिन्दे के शोरबे के लिए बावर्ची उसे हलाल करने के मन्सूबे बाँध रहा है।

दूसरी ओर रोशनी के कारण ग्रिगोरी कुछ देख नहीं सका। उसने आँखों पर हथेली का साया लिया और बढ़ते हुए कोलाहल को सुन अस्तबल के अंधेरे कोने की तरफ मुड़ा। उसने मारकोव का अपनी पतलून के बटन लगाते देखा।

क्या बात है तुम क्या कर रहे हो यहाँ?

'जल्दी करो!' मारकोव ने ग्रिगोरी के मुँह पर साँस छोड़ते हुए धीमे से कहा बड़ा मजा है लाग फ्रान्या को यहाँ खींच लाए हैं नंगी पड़ी है यहाँ! पर ग्रिगोरी का घूसा पड़ते ही उसकी हँसी हवा हो गई और वह लकड़ी के खुन्ना की दीवार से जा टकराया। ग्रिगोरी कोने की ओर झपटा। वहाँ उसने पहले ट्रूप के कज्जाकों को देखा। वह धूप धाप मार्ग बनाता आगे बढ़ता गया। वहाँ फ्रान्या जमीन पर निश्चल पड़ी

थी। उमका सिर घोड़े क कपड़े स ढका था। उसके कपड़े फटे और सीने तक उलटे हुए थे। अंधेरे म भी चमकती उसकी गोरी जाँघें अयानक ढग से नगी नजर आ रही थी। अभी अभी एक कज्जाक उसके ऊपर से उठा था कि दूसरा आया। ग्रिगारी भीड चीरता हुआ वापस भागा और दरवाजे पर जाकर उसन सार्जेंट मजर को आवाज दी। लेकिन दूसरे कज्जाको न दौड़कर उसे पकड लिया। अब एक ने उसके मुह को बनाया तो दूसरा उस घसीटकर वापस स चला। पर एक को तो उसन घूँसा द एक ओर का ढकल दिया और दूसर के पट म लात मारी। लकिन बाकी लागा ने उसक ऊपर घोड़े का कपड़ा आलाया और हाथ पीछ बाँधकर उस एक खाली नाँद म डाल दिया। उम बन्बूदार कपड़े म उसका दम घुटन लगा। उसन चिल्लाने की चेष्टा की और बीच के तख्ते पर ठोकरा पर ठोकरें मारी। इस बीच काने म लोग फुसफुसाते रहे और एक कज्जाक अन्दर जाता तो एक बाहर आता रहा। लगभग बीस मिनट बाद ग्रिगोरी का छुटकारा मिला। उसन सार्जेंट मेजर और दूसरे द प क दा कज्जाको को दरवाजे पर खड़ा पाया।

तुम मह सिय रहना। सार्जेंट मेजर ने आँख मारकर उसकी ओर देख बिना कहा।

आवाज न निकल नही तो कान उड़ा दिए जाएँगे। दुवाक नाम के एक दूसरी टुकड़ी के कज्जाक न दाँतें निपोरते हुए कहा।

फान्या क पर स्कट क नीच कड़े पड़कर फस गए थ।

ता क दाना कज्जाक अन्दर गय गतिहीन फान्या के पुलिन्द को उठाकर एक नाँद क ऊपर चढ़े और दीवार के बायी ओर के तख्ता स बनी एक मच म उन्होंने उस धर दिया। दीवार बगीच की सरहद पर थी और हर कोठरी क ऊपर एक छोटी गन्ने-सी खिड़की थी। कुछ कज्जाक खाली पर यह देखने का चढ़ कि देखें फान्या करती क्या है? बाकी अस्तबल से निकलन का इन्तजाम लगे। ग्रिगारी के अन्दर भी पाशविक कौतूहल जागा। वह भी एक खिड़की पर चढ़कर नीच झाँकने लगा। इस तरह दजना आँखें उन गन्दी खिड़किया स दीवार क नीच पड़ी लड़की का आँकन लगी। लड़की पीठ के बल पड़ी थी। उसकी टाँगें

कची की तरह एक-दूसरी पर सधी थी। उसकी अगुलियाँ दीवार से लगी वर्फ को खुरच-सी रही थीं। ग्रिगोरी कन्या का चेहरा न देख सका पर दूसरे कज्जाक की दबी हुई साँस और उनके परो क नीचे दबती सूखी घास की कोमल सुहावनी आवाज़ उसने जरूर सुनी।

लड़की वहाँ बड़ी देर तक पड़ी रही इसक बाद उसने हाथों और घुटनो के बल उठने का प्रयत्न किया। ग्रिगोरी ने देखा कि उसके हाथ इस तरह काँप रहे है कि उसे साध नही पा रहे। उसके बाल बुरी तरह बिखर गए थे। किसी तरह गिरती-पड़ती वह उठकर खड़ी हुई और उसने दुश्मनी से भरी अजीब-सी नजर खिड़कियो पर डाली। यो कहे कि वह उन खिड़कियो को एकटक घूरती रही।

फिर वह एक हाथ से बेल की झाड़ियो का सहारा लेती और दूसरे से दीवार टटोलती हुई लड़खड़ाती आगे बढ़ी।

ग्रिगोरी ने नीचे कूदकर अपना गला मला। उसे अपना दम घुटता लगा। दरवाज़ पर किसी ने उससे स्पष्ट और निश्चित स्वरो मे कहा एक शब्द भी मुह से निकला तो याशु की कसम तुम अपनी जान से हाथ धोओगे!

पीछे उसे ध्यान नही रहा कि यह कहा किसने था।

और परेड ग्राउण्ड पर ग्रिगोरी के कोट का एक बटन टूटा देखकर कमाण्डर ने उससे पूछा किससे कुश्ती लड़ डाली? यह कौन-सा तरीका है?

ग्रिगोरी ने बटन के टूटने से उभर आए छोटे छेद को देखा। इस पर उस पूरी घटना याद आई तो उसका हृदय भर आया और जीवन म पहली बार रोने का जी ललका।

३

जुलाई का महीना था। स्तपी का मैदान धूप मे नहा रहा था। गेहूँ की पकी बालो की बाढ़ स पीली गर्द का धुआँ-सा उठ रहा था। कटाई क यन्त्रो का लोहा इतना गरम था कि हाथ से छुआ भी नही जाता था। निखरे पीले आसमान की ओर देखने स भी आँखों म दर्द

हाता था । गहूँ क खेता का पसारा जहाँ खत्म हाता था वही से निन पतिया धास का कसरिया फलाव शुरू हो जाता था ।

सारा-का-सारा गाँव राई की कटाई क लिए मदान म स्रा बसा था । सीखी गर्मी स्रोर धून क कारण घोडा क प्राण मुह को स्रा रह थ । व कटाई क यत्रा का खीचते-खीचत मड जाते थे । नदी की स्रोर से स्राती हवा मदान में धूल क बान्ल उडा रही थी स्रोर धुध स सूरज के प्रकाश पर भी पर्दा पड रहा था ।

प्याप्र कटाई क यत्र क चबूतर स गहू को स्रलग कर रहा था । सुबह स स्रव तक पी-पीकर उसने पानी की स्राधी बाल्टी खाली कर डाली थी । पर गरम बेस्वाद पानी पीने के बाद भी उसका गला फिर सूखने लगता था । कमीज पसीने स तर हो गई थी स्रोर चेहरे स पसीने की धारें चालू थी । दार्या न मुँह रुमाल से ढक रखा था स्रोर कमीज के बटन खाल रखे थ । वह स्रनाज क गट्ठर बाँधती जा रही थी । पसीना बूँद बूँद कर उसकी साँवली छातिया क बीच बहा स्रा रहा था । नताल्या घोडा को चला रही थी । धूप क मारे उसक चेहरे का रग चुकन्दर की जड की तरह लाल हा उठा था । सूरज की तेज किरणा क कारण उसकी स्राँखा म स्राँसू भर भर स्राव थे । पन्तली स्रनाज की टालों क पास म स्रा-जा रहा था । उसकी गीली कमीज उसक बदन स चिपट गद थी । उस स्रपनी दाढी एसी लग रही थी जस कि दाढी न हाकर वह गाडी की काली ग्रीज हा जा पिघल पिघलकर उसके सीने तक बही चली स्रा रही हा ।

पसीना छूट रहा है ? ग्रिस्तान्या ने बगल स गुजरती गाडी म कहा ।

'तर-बतर हुए जा रहे हैं पैन्तेली न पसीने से तर स्रपने पेट की कमीज के सिरे स पाछते हुए कहा ।

दार्या दूर स चिल्लाई प्योत्र स्रव बस करो ।

थोडा ठहरो इस पांत को पूरा कर लें ।

बन्द करो धूप कम हा जाए ता फिर कर लेंगे । मैं ता बोल गई ।

नताल्या ने घाडे रोक दिए । उसका सीना इस तरह उभर स्रोर

उठ-बठ रहा था जैसे कि वही कटाई के यन्त्र में जुती रही हो। कटे हुए अन्न पर सावधानी से फफोलों से भरे अपने साँवले पैर रखती हुई दार्या इस पार आई।

प्योत्र ताल यहाँ से दूर नहीं है।

हाँ ज्यादा दूर नहीं है। शायद तीन वर्स्ट है।

नहा तो जाकर नहा आऊ?

तो तुम इतनी दूर जाओगी और लौटोगी नताल्या ने लम्बी साँस लेते हुए कहा।

भाड़ मारो पैदल क्या जायेंगे? हम घोड़ों का ख्याल लेंगे और उन पर सवार होकर चलेंगे।

पन्तेली गट्ठर बाँध रहा था। प्योत्र ने बेचैनी से उसकी ओर देखा और कन्धे हिलाकर बोला अच्छा खोल लो घोड़े।

दार्या ने जोतें खोलीं और फुर्ती से कूदकर घोड़ी की पीठ पर सवार हो गई। नताल्या मुसकराते हुए अपने घोड़े को कटाई के यन्त्र के पास ले आई और उस पर चढ़कर घोड़े पर सवार होने की कोशिश करने लगी। सहायता को प्योत्र उसके पास गया। उसने उसकी टाँग को उठाकर घोड़े की पीठ पर रख दिया। वे चल दिए। दार्या कज्जाक ढंग से घोड़े की पीठ पर जमी आगे-आगे चल रही थी। उसने अपना स्कर्ट नंगे घुटनों के ऊपर तक चढ़ा लिया था रूमाल सिर के पीछे पहुँच गया था।

देखो कहीं चोट चपेट न लगा लेना प्योत्र पीछे से चिल्लाया।

फिक्र न करो दार्या ने लापरवाही से जवाब दिया।

दार्या और नताल्या ने खेत पार किया तो प्योत्र ने बायीं ओर देखा। धूल का एक छोटा-सा बादल गाँव से दूर की बड़ी सड़क की ओर पंख लगाकर उड़ता नजर आया।

कोई घुड़सवार चला आ रहा है उसने नेत्रों को सिकोड़ते हुए नताल्या से कहा।

और बहुत तेजी से चला आ रहा है। देखो तो कैसी धूल उड़ रही है!" नताल्या ने अचरज से भरकर जवाब दिया।

कौन हो सकता है भला दार्या? प्योत्र ने अपनी

पुकारकर कहा   एक मिनट का रास खींचना देखें तो कौन है यह आदमी।

धूल का बादल शून्य में विलीन हो गया। फिर दूसरी बार छा गया। अब उड़ती हुई धूल के बीच से घुड़सवार उभरा। गर्मियों में पहन जानेवाले तिनकों के टोप पर अपनी गन्दी हथेली रखकर प्योत्र बैठा उधर ही देखता रहा।

कोई घोड़ा इतनी तेज रफ्तार से इतनी मंजिल तय नहीं कर सकता   यह आदमी तो मार डालेगा इसे। प्योत्र के माथे पर बल पड़ गए और उसने अपना हाथ हटा लिया। चेहरे पर परेशानी की रेखाएँ खिंच गई।

अब घुड़सवार बिलकुल साफ दिखाई देने लगा। वह घोड़े को धुआँधार ढंग से दौड़ाता ला रहा था। उसके बाएँ हाथ में टोपी थी और दाएँ में फरफराता हुआ लाल झंडा। वह उनके इतने पास से गुजरा कि प्योत्र ने उसके घोड़े की हफहफी तक सुनी। पास से निकलते हुए वह व्यक्ति चिल्लाकर बोला   खतरा है।

उसके घोड़े के मुँह से साबुन-सा पीला झाग चूआ और खुर के एक निशान पर जा गिरा। प्योत्र घुड़सवार को देखता रहा। घोड़े का हाँफना, उसका हर गुजरती चीज को एकटक देखना और उसके इस्पात से पुट्ठों का पसीने में तर होकर इस्पात-सा चमकना उसके हृदय पर गहरी लकीर बना गया।

प्योत्र मन तो न समझ सका कि आखिर मुसीबत का कौन-सा पहाड़ टूटने वाला है पर धूल में पड़े झाग को वह निगाह गड़ाये देखता रहा। फिर उसने अपने चारों ओर के चरागाह मैदान पर नजर डाली। हर ओर से कज्जाक गाँव की ओर को भागते दीखे। मशान के पार दूर के टीले पर धूल के बादल अब भी दिखायी दिए। यानी और घुड़सवारों की उपस्थिति का भी संकेत मिला। गाँव को जाने वाली सड़क पर धूल के बादलों का एक सिलसिला लम्बा हो गया। सक्रिय सेवा की सूची में जिन कज्जाकों के नाम थे उन्होंने अपना-अपना काम छोड़ा जोतों से घोड़े खोले और सवार होकर उन्हें दौड़ाते हुए गाँव की

ओर चल पड़े।

यह सब है क्या? नताल्या ने प्योत्र की ओर भय से देखा और जाल में फँसे हुए खरगोश की तरह सहम गई। उस दृष्टि से प्योत्र विचलित हो उठा। घोड़ा वापस दौड़ाकर वह कटाई की मशीन के पास पहुँचा उसके रुकने के पहले ही नीचे कूद गया। काम करते समय जो पतलून एक ओर को फेंक दी थी उसे चढ़ाया और अपने पिता की ओर देखकर हाथ हिलाता हुआ घोड़े को हवा की रफ्तार से हाँक चला। गर्द के बादलों के फूले हुए फूलों में एक फूल और जुड़ गया।

४

चौक में उसने भारी भीड़ जमा देखी। कितने ही लोग तो फ़ौजी वर्दी में अपने साज-सामान से लस मिले। अतामान रेजीमेंट के सैनिक नीली टोपियाँ लगाये बत्तखों में हंसों की भाँति दूसरों से अलग नज़र आ रहे थे।

गाँव की सराय बन्द थी। सैनिक कमिसार के चेहरे पर उदासी और चिन्ता थी। औरतें सड़क के किनारे की बाड़ों के सहारे एक सीध में खड़ी थीं। हरेक के मुँह पर एक ही शब्द था—भरती। सभी व्यग्र और उत्तेजित थे। चारों ओर की परेशानी का अनुभव घोड़ों को भी हो गया था। वे भी गुस्से से लाल हो रहे थे उछल रहे थे और नथुने फड़फड़ा रहे थे। चौक में खाली बोतलें और सस्ती मिठाइयों के कागज़ जहाँ-तहाँ बिखरे पड़े थे। धूल का बादल नीचे की ओर झूल रहा था।

कसे-कसाये घोड़े की लगाम पकड़े प्योत्र आया। उसने गिरजे की चहारदीवारी के पास अतामान रेजीमेंट के एक मोटे-तगड़े कज़्ज़ाक को अपने नीले पतलून के बटन लगाते देखा। वह झूम रहा था और उसकी बत्तीसी खिली हुई थी। उसके पास खड़ी उसकी भारी भरकम नाटी पत्नी या प्रेयसी उसके चारों ओर घूम घूमकर बरस रही थी अब की तुम उस छिनाल के पास गये तो मैंने तुम्हें समझा

औरत नशे में धुत्त थी। उसके बिखरे हुए बालों में सूरजमुखी के

बियों के छिलके बिखरे हुए थे। उसका फूलदार रूमाल एक ओर को लटक रहा था। कज्जाक अपनी पेटी को कस रहा था और हँसता जा रहा था।

मादाका तुम मेरी जान छोड़ो न !

बेशर्म जानवर कहीं का ! छिनरा !

पास ही लाल दाढ़ी वाला सार्जेंट मेजर एक तोपची से बातचीत कर रहा था।

डरो मत युद्ध होने का नहीं। वह उसको हिम्मत बँधा रहा था थोड़े दिन के लिए भरती हो रही है उसके बाद घर लौट आयेंगे।

लेकिन मान लीजिये लड़ाई शुरू हो जाए तब ?

'थोड़ा भी हमसे लोहा लेने की हिम्मत किस देश म है ?

पास के एक दल मे एक सुन्दर बूढ़ा कज्जाक क्रोध से उबल रहा था हम इससे क्या लेना-देना सरकार खुद लड़े ! हमारा तो अनाज भी घर म नहीं पहुँचा।

शम की बात है। हम यहाँ हाथ पर हाथ रखे खड़े हैं। आज तो ऐसा दिन है कि हम दिन भर म मानभर की फसल काट सकते थे।

अनाज म जानवर घुस जायेंगे।

और अभी तो जौ की कटाई बाकी है।

सुना है कि आस्ट्रिया का आर मार डाला गया

नहीं उसका वारिस मारा गया है।

लेकिन अताामान का तो कहना है कि हम वक्त-जरूरत के लिए बुलाये गए हैं।

अब तो मौगसी म सिर देना ही है, भाई !

और बारह महीने बीत पाते तो मैं स्थायी सना की तीसरी पंक्ति स निकल गया होता। एक प्रौढ़ कज्जाक ने दुखी स्वर में कहा।

"तुम्हारा य लोग क्या करेंगे बाबा ?

घबराने की कोई बात नहीं मार काट शुरू हुई कि उन्होंने बुड्ढों को भी गुहार की।

आज तो शराबखाना बन्द है।

तो मारफुत्का के यहाँ चलो पीपे का पीपा मिल जाएगा।

मुआइना शुरू हुआ। एक शराब-धुत रक्त-रंजित कज्जाक को तीन दूसरे कज्जाक गाँव प्रशासन-कार्यालय में ले गये। वहाँ वह छिटककर पीछे हटा अपनी कमीज फाड़ी और आँखों को नचाते हुए चीखा 'मैं बतलाऊँगा उन गवाँर मुझिकों को! मैं उनका खून पी जाऊँगा! उन्हें पता लग जाएगा कि दोन के कज्जाक कैसे होते हैं!

उनके चारों ओर खड़े लोग बात का अनुमोदन करते हुए हँसे।

ठीक बात है उन्हें सीख तो देनी ही चाहिए।

इसको बाँध क्या रखा है?

यह किसी मुझिक के फेर में गया था।

उन्हें यही चाहिए।

हम उन्हें और मज़ा चखायेंगे।

१६०५ में उन्होंने उन्हें दबाया तो उसमें मेरा भी हिस्सा रहा। चीज़ देखने लायक थी।

'लड़ाई होने वाली है मोर्चा मारने के लिए वे फिर हमें बुलायेंगे।

मोखोव की दूकान में लोगों की भीड़ लगी हुई थी। नशे में चूर इवान तामीलीन खड़ा बहस कर रहा था। मोखोव उसे शान्त करने की कोशिश कर रहा था। उसका साझीदार अत्यापिन्किन दरवाज़े की ओर बढ़ गया था क्या है यह सब? बड़ा जुर्म है लड़के जा तो ज़रा अतामान के पास।

पसीने से तर हाथ पतलून में रगड़ते हुए तामीलीन क्रुद्ध व्यापारी की ओर बढ़ा और व्यंग्य से बोला सूअर! तुमने चूसा और जी भर चूसा अब बनते हो मैं तुम्हारा मुँह चकनाचूर करके रख दूँगा' तुम हम कज्जाकों के हक मारते हो

गाँव का अतामान अपने चारों ओर खड़े कज्जाकों की भलाई के लिए मीठे-मीठे शब्द उँडेले जा रहा था— 'लड़ाई? नहीं कोई लड़ाई नहीं होने की! सबसे बड़े फौजी कमिसार ने कहा है कि भरती तो महज हिफाज़त के लिए की जा रही है। घबराने की कोई बात नहीं है।

क्या कहते हैं बस घर से लौटो और फिर खेतों में जुटो '

ये अफसर लोग पता नहीं चाहते क्या हैं ? मुझे एक सौ देस्सियातीन से ज्यादा जमीन की कटाई करनी है

तिमोशका घरों में कह देना कि हम लोग कल घर वापस पहुँच जायेंगे ।

काफ़ी रात गए देर तक उत्तेजित भीड़ का शोरगुल और चहल पहल चौक में होती रही ।

कोई चार दिन बाद कज्जाक फ़ौजी गाड़ी के लाल डिब्बों में सवार होकर रूस और आस्ट्रिया की सरहद के लिए रवाना हुए ।

'लड़ाई'

डिब्बों से घोड़ों की हिनहिनाहट की आवाज और लीद की बदबू आती रही ।

उसी तरह की बातें यहाँ भी चलती रहीं उसी तरह के गीत गूँजते रहे ।

स्टेशनों पर लोग बड़ी ही उत्सुकता और ममता से कज्जाकों को देखते । लोग उनकी पतलूनों की पट्टियों और उनके चेहरों को एकटक घूरते । उनके साँवले चेहरे खेतों की इधर की मेहनत से और सँवरा गए थे ।

लड़ाई'

अखबारों में बड़े-बड़े अक्षरों में खबरें छपतीं । स्टेशनों पर औरतें रूमाल हिलातीं मुस्कराती सिगरेटें फेंकती मिठाइयाँ खोजतीं । गाड़ी के वारोनेज पहुँचने के पहले आधे नशे में चूर रेलवे के एक पुराने कर्मचारी ने दूसरे २६ कज्जाकों के साथ बैठे मेलेखोव के डिब्बे में झाँका। उसने पूछा 'तुम लोग जा रहे हो ?

हाँ दादा तुम भी आ जाओ हमारे साथ। एक कज्जाक ने जवाब दिया ।

भाई मेरे बस होते हैं कटने के लिए ' बूढ़े ने कहा और सिर हिलाया ।

ऐसी घटना सिर्फ़ एक बार घटी ।

५

तातारस्की और उसके आस पास के गाँवो के कज्जाकों के पहले दस्ते ने दूसरी रात को एक छोटे-से गाँव मे पड़ाव डाला। तातारस्की के निचले भाग क कज्जाको का एक अलग दल बन गया था और ऊपरी भाग वालों का एक अलग। इसलिए प्योत्र मेलेखोव अनीकुश्का क्रिस्तोन्या स्तीपान अस्ताखोव इवान तोमीलीन और बाकी लोग एक मकान में टिकाये गए। कज्जाक बावर्चीखान और सामने वाले कमरे म कम्बल बिछाकर सोने को लेटे और उन्होंने आखिरी सिगरेटें जलाइ। लम्बे क़द का दुबला पतला बूढा मकान-मालिक उनके पास बठकर बातें करने लगा। उसने भी पहले तुक युद्ध म भाग लिया था।

तो मोर्चे पर जा रहे हो फ़ौजियो ?

हाँ बाबा लडाई पर जा रहे हैं हम लोग।

जहाँ तक मेरा ख़याल है तुर्की की लडाई की तरह अब लडाई नही होगी। अब तो हथियार ही बदल गए।

"यह लडाई भी वसी ही होगी उतनी ही खतरनाक होगी। जसे तब तुक लोग मारे गए थे वस ही अब मारे जाएँगे। तोमीलीन न क्रुद्ध होकर कहा किन्तु यह कोई नही जान सका कि वह क्रुद्ध हुआ किस बात पर।

यह बेकार की बात है आज की लडाई दूसरी क़िस्म की लड़ाई होगी।

'हाँ सो तो होगी क्रिस्तोन्या ने हामी भरी।

हम भी अपने जौहर दिखलायेंगे। प्योत्र मेलेखोव ने जमुहाई ली और ओवरकोट से मुँह ढँक लिया।

लडको मैं एक बात कहता ▌। गम्भीरता से कहता हूँ। उसे तुम ध्यान से सुनो। वृद्ध ने कहा 'एक बात याद रखो। अगर तुम मौत के पजे से सही-सलामत और साबित लौटना चाहते हो तो तुम्हें इन्सानियत के क़ानूना पर अमल करना पड़ेगा।

'कसे इन्सानियत के क़ानून ? स्तीपान ने अविश्वास स मुसकराते हुए पूछा। जब से उसने युद्ध का समाचार सुना था उसके होठों पर मुसकान लौट आई थी। वृद्ध ने उसे आवाज लगाई और इस प्रकार में

उसका अपना दुख और अपनी चिन्ता डूब गई।

यानी यह कि दूसरे के सामान पर नजर न रखो। यह हुई पहली बात। दूसरी बात यह कि ईश्वर से डरो और किसी औरत की इज्जत न लो। इसके साथ ही तुम्हें कुछ प्रार्थनाएं याद होनी चाहिए।

सब कज्जाक उठकर बैठ गए और एक साथ बोल उठे दूसरे का सामान यहां से मिलेगा कहीं अपना ही न खा जाए!

लेकिन हम औरत से दूर क्या रहें?

मान लीजिए कि आप राजी न हों पर वह खुद ही राजी हो जाए तो?

उनकी ओर कठोर दृष्टि से देखकर बूढ़ा बोला औरत को हाथ से न छूना चाहिए, कभी नहीं। अगर तुम नहीं मानोगे तो या तो तुम नहीं बचोगे या फिर चोट खाओगे। पीछे पछताओगे लेकिन तब तक चिड़ियां खेत चुग चुकी होंगी। मैं तुम्हें प्रार्थनाएं बतलाऊंगा। मैं पूरी तुर्की की लड़ाई में मोर्चे पर रहा और मौत बराबर मेरे सिर पर मंडराती रही लेकिन इन्हीं प्रार्थनाओं के सहारे मैं जिन्दा बचकर आ गया।

यह दूसरे कमरे में गया और मूर्ति के नीचे से भूरे-से रंग के कागज का एक मुड़ा मुड़ाया टुकड़ा निकाल लाया।

उठो और लिख डालो। उसने आदेश दिया तुम लोग सुबह तड़के ही यहां से चल दोगे है न?

उसने मेज पर कागज खोलकर रख दिया। सबसे पहले अनीकुश्का उठा। उसके चिकने जनाने चेहरे पर टिमटिमाती लौ की प्रकाश रेखाएं खिंचा। स्तोपान ने बनाया बाकी सभी उठकर प्रार्थनाएं लिखने लगे। अनीकुश्का ने कागज को तह करके सीने पर लटकते क्रॉस की डोरी में बांध लिया। स्तोपान ने व्यंग्य कसा जुओं के लिए शानदार घोंसला बना लिया सुमने!

देखो अगर तुम्हें विश्वास नहीं तो अपनी जबान पर काबू क्यों नहीं रखते? बूढ़े ने बीच में ही कठोरता से उसकी बात काटते हुए कहा दूसरों की राह के पत्थर न बनो और धर्म की खिल्ली न उड़ाओ। यह पाप है।

स्तीपान मुसकराया किन्तु चुप रहा।

कुज्आका द्वारा लिखी गई प्रार्थनाओं की संख्या तीन रही। प्रत्येक ने अपनी इच्छानुसार एक-एक प्रार्थना लिखी।

प्रार्थना—शस्त्रों के विरुद्ध

प्रभु रक्षा करो! पहाड़ पर एक सफेद पत्थर पड़ा है जैसे घोड़ा। जैसे पानी उस पत्थर पर असर नहीं करता वैसे ही तीर और गोलियाँ न मुझ पर असर करें न मेरे साथियों पर और न मेरे घोड़े पर। जैसे हथौड़ा निहाई से पलट जाता है वैसे ही गोलियाँ दूर से ही पलट जाएं। जैसे सूर्य और चन्द्र में प्रकाश है वैसे ही मुझमें बल हो। इस पहाड़ के पीछे एक गढ़ी है। मैं इस गढ़ी में ताला जकड़ दूंगा और ताली समुद्र में फेंक दूंगा। मैं उसे अलतोर नाम के सफ़ेद पत्थर के नीचे रख दूंगा कि न भूनों को उसका पता चलेगा न चुड़ैलों को न सन्यासियों को और न सन्यासिनियों को। जैसे महासागर का पानी कोई बहाकर कहीं और नहीं ले जा सकता और जैसे पीले रेत-कणों की गिनती कोई नहीं कर सकता वैसे ही हे प्रभु मुझे कोई हानि न पहुँचा सके। परमपिता पिता यीशु और पवित्र देवदूत के नाम पर आमीन!

लड़ाई की प्रार्थना

एक महासागर है और इस महासागर में एक सफेद पत्थर पड़ा है—अलतोर। उस पत्थर पर पत्थर का एक लम्बा चौड़ा आदमी है। प्रभु मैं तुम्हारा दास हूँ मुझे और मेरे साथियों को पूर्व से पश्चिम तक धरती से आकाश तक पत्थरों से ढक दो। मेरी रक्षा करो—तेज कटारों और तलवारों से फरसों कफारों और भालों की नोकों से कटारों कुल्हाड़ी और तोपों से सीसे की गोलियों और घातक हथियारों से बाजा हूसो बत्तखों सारसों और काले नौवों के परवाल तीरों से तुर्की क्रीमिया के सागों आस्ट्रिया के लागों तातारों लिथुआनियाइयों जर्मनों और काल्मीकों से। पवित्र देवताओ और स्वर्ग की शक्तियो मेरी रक्षा

करो मैं प्रभु का सेवक हूं आमीन !

हमले के समय की प्रार्थना

सर्वशक्तिमान पावन माँ-मेरी और प्रभु ईसामसीह ! मैं और मेरे जो साथी युद्ध में जा रहे हैं उन सबको आशीर्वाद दो । हम सबको बादलों से ढक लो और अपने स्वर्ग के पत्थर से गोलों से हमारी रक्षा करो । सालोनिका के पवित्र दिमित्री मुझे और मेरे साथियों को चारों ओर से बचाओ । दुष्ट न गोली चलायें न भाला घुसेड़ें न कुल्हाड़ी से मारें न तलवार से मारें या काटें न चाकू मारें न बूढ़े न जवान न भूरे न काले न भांत्रिक न जादूगर ! मैं प्रभु का सेवक हूं अनाथ मेरे भाग्य का लेखा निश्चित है । सागर में महासागर में बुयान का द्वीप में लोहे की एक चौकी है । चौकी पर लोहे का एक आदमी लोहे के दण्ड से टिका विश्राम कर रहा है । वह लोहा इस्पात सीसा जस्ता और सभी धातुओं के हथियारों पर हुक्म चलाता है । लाहे मेरे और मेरे साथियों और मेरे घोड़े के पास से निकलकर माँ धरती में समा जाओ ! तीरो के फाड़ो जंगल में चले जाओ ! परो अपनी-अपनी चिड़ियों को वापस लौट जाओ । प्रभु अपने सेवक की रक्षा करो—आग की आग से तोपों के गोलों से भाले से चाकू से । प्रभु मेरा शरीर कवच से अधिक सावधान हो जाए ! आमीन !

अन्य प्रार्थनाएं भी लगभग ऐसी ही थीं । इन्हें लिखकर कज्जाकों ने अपने गांव-गांव की मिट्टी और छोटी-छोटी देव-मूर्तियों के साथ ही बांधा और अपनी-अपनी कमीजों के अन्दर रख लिया । पर मौत ने अन्तर नहीं किया—उसने उस प्रार्थना लिखने वालों को अपना ग्रास बनाया बस ही प्रार्थना न लिखनेवालों को । मानो जहाँ भी लड़ाई की आग फैली और कज्जाकों के घोड़ों के खुरों के निशान जहाँ भी बने वहीं खेतों और मैदानों में उनकी लाशें सड़ीं—क्या गलीशिया और पूर्वी प्रशिया क्या कार्पेथिया और रूमानिया !

६

जुलाई १९१४ के चौथे सप्ताह में डिविज़नल-स्टाफ़ ने ग्रिगोरी मेलेखोव की रेजीमेंट को रोवनो नामक नगर में भेज दिया। एक पखवाड़े के बाद एक दिन ग्रिगोरी और चौथी कम्पनी के दूसरे कज्जाक राज-वरोज के काम से थक-थकाये अपने तम्बुओं में लेटे हुए थे कि कम्पनी-कमाण्डर लेफ्टिनेंट पालकोवनीकोव रेजीमेंटल-स्टाफ़ से घोड़ा दौड़ाता हुआ वापस आया।

हम फिर यहाँ से कहीं जाना पड़ेगा शायद। कहकर प्रोखोर जिकोव बिगुल की आवाज़ की प्रतीक्षा करने लगा।

ट्रूप साजेंट पतलून की मरम्मत कर रहा था। उसने टोपी में सूई खोंस ली और बोला मुझे लगता है ये लोग हमें दम नहीं लेने देंगे।

दो मिनट बाद ही बिगुल बजा। कज्जाक उछलकर खड़े हो गये।

'मेरी तम्बाकू की थली क्या हुई?' प्रोखोर ने हड़बड़ाते हुए कहा।

'बूट पहनो और घोड़ा पर सवार हो जाओ!'

तुम्हारी तम्बाकू की थली जाए भाड़ में! ग्रिगोरी ने बाहर की ओर दौड़ते हुए चिल्लाकर कहा। निश्चित समय के अन्दर अन्दर घोड़े कस गए। ग्रिगोरी तम्बू के खूँटे उखाड़ रहा था कि साजेंट ने धीरे से कहा इस बार तो लड़ाई होगी ही!

बेवकूफ़ बनाते हैं आप! ग्रिगोरी ने अविश्वास से कहा।

भगवान् कसम! साजेंट-मेजर ने मुझसे खुद कहा।

कम्पनी चल दी। आगे आगे कमाण्डर था।

गाँव से बाहर की बड़ी सड़क पर घोड़ों की टापों की टप-टप गूँजी। पहली सफ़ा पाँचवीं कम्पनी के घुड़सवार सैनिक पड़ोस के गाँव से निकलकर स्टेशन की ओर जाते दीखे।

अगले दिन आस्ट्रिया की सीमा से लगभग पतीस वर्स्ट इधर के स्टेशन पर रेजीमेंट उतरी। वर्च के वृक्षों के पीछे से प्रभात उभर रहा था। लगा कि मौसम सुहावना रहेगा। ओस से चमकती लाइनों पर इंजिन कोलाहल कर रहा था। चौथी कम्पनी के कज्जाकों ने घोड़ों की लगाम पकड़ उन्हें नीचे उतारा, और फिर उन पर सवार हो चल दिए।

उस गुलाबी पहले अधकार म उनकी आवाजें भयानक लगी । जल्दी ही लोगो के चेहरा और घोडों की आकृतियों ने अधकार भेदा ।

यह कौन-सी कम्पनी है ?

तुम कौन हो ? कहाँ के हो ?

बतलाऊँ कि मैं कौन हू ! अफसरो से इस तरह बात करने की हिम्मत ?

माफ कीजियेगा मैंने आपको पहचाना नही था ।

बढे चलो बढे चलो !

तुम इधर क्या कर रहे हो ? आग बढो !

तुम्हारी तीसरी टुकडी कहाँ है सार्जेंट-मेजर ?

कम्पनी पीछे के लोग आगे आएँ ।

पीछे के लोग आगे आएँ —भाड म जाए यह ! दो राता स हमने पलकें नहीं झपकाई हैं ।

एक सिगरेट तो मिला स्यामका ! कल से पी नही है ।

अपना घोडा पकडो

इसने साज का बन्द काट लिया है

मेरे घोडे क आगे के एक पर की नाल गायब है ।

कुछ दूर आगे पहली कम्पनी ने चौथी कम्पनी को थोडी देर क लिए रोका । व लोग इनसे पहल गाडी स उतर थे । आसमान के नीलम भरे रग की पृष्ठभूमि म आग घुडसवारो की काली आकृतियाँ या लौ देती रहीं जसे कि उनको भारतीय स्याही स खींचा गया हा । उनके भाले मूरजमुखी के फूना के डठलो की तरह लटके लगे । ऐसे म कभी रकाब खटकी तो कभी साज खडका ।

प्रोखार जिकाव ग्रिगारी की बगल म चल रहा था । उसन उसके चेहरे की ओर देखकर धीर स कहा भैनेखोव तुम्हें डर तो नहीं लगता ?

डर की बात क्या ?

"आय" हमको आज मार्चा लेना पडे ।

तो इसस क्या ?

लेकिन मुझे तो डर लगता है। प्रोखोर ने स्वीकार किया। उसकी अंगुलियाँ काँपने लगीं सारी रात मेरी पलक नहीं झपनी।

एक बार फिर कम्पनी आगे बढ़ी। नपे-तुले कदम घोड़े रखते चले। भल्लम एक लय-ताल मे हवा में लहराने लगे।

ग्रिगारी के हाथ की लगामें ढीली हो गईं। वह ऊंघने लगा।

वह अपना घोड़ा भी भूल गया और उसकी चाल भी। वह तो एक कानी सड़क पर खुश-खुश झूमता चलने लगा। उसकी बगल में चलता हुआ प्रोखोर बातें करता रहा किन्तु उसकी आवाज साज की खड़खड़ाहट और घोड़े की टापों में डूब गई। नतीजा यह कि उसकी विवेकहीन तन्द्रा भंग नहीं हो पाई।

कम्पनी एक ओर को मुड़ी। चारो ओर सन्नाटा छाया हुआ था। सड़क के दोनों ओर पक्के जौ उग रहे थे। उनसे भाप उठ रही थी। घोड़ों ने गर्दन नीचे करने के लिए सवारों के हाथ में सधी लगामें ढीली की। सूरज की किरणें ग्रिगोरी की पलकें चूमने लगीं। उसने अपना सिर उठाया और गाड़ी के पहिये की चर चूँ की तरह प्रोखोर का भारी स्वर उसके कानों में पड़ा।

सहसा ही जई के खेतों में धड़का-सा हुआ और ग्रिगोरी की आँखें खुल गईं।

गोली! जिकोव चिल्ला उठा और उसकी बछड़े की-सी आँखों में आँसू भर आए। ग्रिगोरी ने सिर ऊँचा किया। सामने ही ट्रूप-सार्जेंट का पूरा ओवरकोट घोड़े की पीठ के समान ही उठता गिरता रहा। दोनों ओर बच्चे अन्न के खेत खड़े दीखे। आसमान में एक बुलबुल बार-बार चक्कर काटने लगी। सारी कम्पनी सजग हो गई। गोली चलने की ध्वनि बिजली के करेंट की तरह लगी। लेफ्टिनेंट पोलवावनीकोव ने कम्पनी को तेज रफ्तार से भाग चलाया। चौराहे से आगे एक टूटी-फूटी सराय के पास से उन्हें शरणार्थियों की गाड़ियाँ मिलने लगीं। हृष्ट-पुष्ट सुन्दर घुड़सवारों का एक दल निकला। बढ़िया नस्ल के घोड़े पर सवार उनके कप्तान ने कज्जाकों की ओर उपेक्षा की दृष्टि से देखा और अपने घोड़े को एड़ लगाई। मार्ग में उन्हें बहुत-से

उस गुलाबी पड़ते अंधकार में उनकी आवाजें भयानक लगी। जल्दी ही लोगों के चेहरा और घोड़ों की आकृतियों ने अंधकार भेदा।

यह कौन-सी कम्पनी है?

तुम कौन हो? कहाँ के हो?

बतलाऊँ कि मैं कौन हूँ! अफसरों से इस तरह बात करने की हिम्मत?

माफ कीजियेगा मैंने आपको पहचाना नहीं था।

बढ़े चलो बढ़े चलो!

तुम इधर क्या कर रहे हो? आगे बढ़ो!

तुम्हारी तीसरी टुकड़ी कहाँ है सार्जेंट-मेजर?

कम्पनी पीछे के लोग आगे आएँ।

पीछे के लोग आगे आए—भाड़ में जाए यह! दो रातों से हमने पलक नहीं झपकाई है।

एक सिगरेट तो पिला स्योमका! कस से पी नहीं है।

अपना घोड़ा पकड़ो

इसने साज का बन्द काट लिया है

मेरे घोड़े के आगे के एक पैर की नाल गायब है।

कुछ दूर आगे पहली कम्पनी ने चौथी कम्पनी को थोड़ी देर के लिए रोका। वे लोग इनसे पहले गाड़ी से उतर थे। आसमान के नीलम भरे रंग की पृष्ठभूमि में आगे घुड़सवारों की काली आकृतियाँ या लौ देती रही जैसे कि उनको भारतीय स्याही से खींचा गया हो। उनके भाले सूरजमुखी के फूलों के डंठलों की तरह लटके लगे। ऐसे में कभी रकाब खटकी तो कभी साज खड़का।

प्रोखार जिकोव ग्रिगोरी की बगल में चल रहा था। उसने उसके चेहरे की ओर देखकर धीरे से कहा 'मेलखोव तुम्हें डर तो नहीं लगता?

डर की बात क्या?

"शायद हमको आज मोर्चा लेना पड़े।

तो इससे क्या?

लेकिन मुझे तो डर लगता है। प्रोखोर ने स्वीकार किया। उसकी अंगुलियाँ काँपने लगी सारी रात मेरी पलक नही झपकी।

एक बार फिर कम्पनी आगे बढी। नपे-तुले क़दम घोडे रखते चल। वल्लम एक लय-ताल से हवा में लहराने लगे।

ग्रिगारी के हाथ की लगामें ढीली हो गई। वह ऊघन लगा।

वह अपना घोडा भी भूल गया और उसकी चाल भी। वह तो एक बानी सडक पर खुश-खुश झूमता चलन लगा। उसकी बग़ल में चलता हुआ प्रोखोर बातें करता रहा किन्तु उसकी आवाज साज की खडखडाहट और घोडे की टापों में डूब गई। नतीजा यह कि उसकी विवेकहीन तन्द्रा भग नही हो पाई।

कम्पनी एक ओर को मुडी। चारो ओर सन्नाटा छाया हुआ था। सडक के दोना ओर पकके जौ उग रहे थे। उनसे भाप उठ रही थी। घोडा ने कान नीचे करन के लिए सवारो के हाथ में सधी लगामें ढीली की। सूरज की किरणें ग्रिगोरी की पलकें चूमने लगीं। उसने अपना सिर उठाया और गाडी के पहिये की चर-चूँ की तरह प्रोखोर का भारी स्वर उसके काना में पडा।

सहसा ही जई के खेता में धडका-सा हुआ और ग्रिगोरी की आँखें खुल गई।

गाली! जिकोव चिल्ला उठा और उसकी बछडे की-सी आँखा म आँसू भर आए। ग्रिगारी न सिर ऊँचा किया। सामने ही ट्रूप-सार्जेंट का पूरा ओवरकोट घोडे की पीठ के समान ही उठता गिरता रहा। दोना ओर बच्चे अन्न क खेत खडे दीखे। आसमान म एक बुलबुल बार-बार चक्कर काटने लगी। सारी कम्पनी सजग हो गई। गोली चलने की ध्वनि बिजली के करेंट की तरह लगी। लफ्टिनेंट पोलवावनीकोव ने कम्पनी को तेज रफ्तार स आगे बढाया। चौराहे से आग एक टूटी-फूटी सराय न पास स उन्ह शरणार्थियो की गाडियाँ मिलने लगी। हृष्ट-पुष्ट सुन्दर घुडसवारा का एक दल निकला। बढिया नस्ल क घोडे पर सवार उनके कप्तान न कज्जाको की ओर उपेक्षा की दृष्टि स देखा और अपने घाडे को एड लगाई। माग म उन्हें बहुत-स

तख्ते ले जाता चेचक के दाग वाला एक तोपची मिला। ये तख्ते सराय की चहारदीवारी से उखाड़े गए थे। कीचड़ और दलदल के बीच उन्होंने छोटी तोपों की एक बटरी देखी। इसके घुड़सवार घोड़ों पर चाबुक सटकार रहे थे और बन्दूकची गाड़ियों के पहियों से जूझ रहे थे।

कुछ आगे बढ़ने पर उन्होंने एक पल्टन रेजीमेंट जाता देखा। फ़ौजी तेज़ी से चल रहे थे। उनके ओवरकोट पीछे की ओर उड़ रहे थे। दमकते सिरस्त्राणों पर सूरज की किरणें पड़ रही थीं और बन्दूकें चमचमा रही थीं। आख़िरी कम्पनी के कारपोरल ने ग्रिगोरी पर मिट्टी का एक ढेला फेंका—'लो पकड़ो आस्ट्रियनों को मारना इससे।'

'खिलवाड़ न कर मसफोड़े!' ग्रिगोरी ने कहा और मिट्टी के ढेले को चाबुक से तोड़ दिया।

'उन्हें हमारा सलाम कह देना कज्ज़ाको!'

'तुम्हें मौका मिलेगा ख़ुद कह देना!'

यहाँ से आगे कम्पनी को बराबर राह में मिले पदली रेजीमेंट कटरपिलर बटरियाँ माल के डिब्बे और रेड क्रॉस की गाड़ियाँ। वातावरण में मौत का संकेत था कि लड़ाई नज़दीक ही हो रही है।

कुछ ही देर बाद चौथी कम्पनी गाँव में प्रवेश करने लग रही थी कि रेजीमेंट-कमाण्डर लफ्टिनेंट-कर्नल कालेदिन अपने सहायक के साथ आ पहुँचा। वे पास से गुज़रे तो ग्रिगोरी ने सहायक को कालेदिन से कहते सुना नक़्शे में यह गाँव नहीं दिखलाया गया है वसिली मक्सिमोविच! कहीं हम घिर न जाएँ।

कर्नल का उत्तर ग्रिगोरी सुन नहीं पाया।

रेजीमेंट की चाल बराबर तेज़ होती गई। घोड़ों का पसीना छूट चला। गहरे ढाल के नीचे बसे एक छोटे-से गाँव की खपरैलें दूर से दिखलाई दीं। गाँव के दूसरे छोर पर जंगल था जिसमें पेड़ों की चोटियाँ आसमान चूमती थीं। जंगल के पार से गोलियों की आवाज़ आती रही थी। कभी-कभी राइफ़लों की आवाज़ भी आ जाती। घोड़ों में मान खड़े कर लिए। आसमान में तोप के फटते हुए गोले का धुआँ ऊँचा उठता रहा। राइफ़लों की आवाज़ें होते होते कम्पनी की बायीं

ग्रोर से ग्राती गईं।

ग्रिगोरी हर ग्रावाज को ध्यान से सुनता। उसकी नसें तनती जाती। प्रोखोर जिकोव ग्रपनी काठी पर जड-सा बना बराबर बातें करता रहा ग्रिगोरी गोलियाँ ऐसे चल रही हैं जसे लडक रेलिंग पर छडियाँ पीटते चले जाते हैं। है न ?

चुप भी कर न, यार!

कम्पनी गाँव में प्रविष्ट हुई। फ़ौजी हाता म भागदौड करते मिले। गाँव के लोग भागकर जान के लिए ग्रपना साजो-सामान बाँधते दीखे। उनके चेहरों पर डर ग्रौर बेबसी उमडी। उधर से निकलते समय ग्रिगोरी ने सनिकों को एक शेड की छत जलाते देखा। पर उसका भूरे बालोंवाला बेला रूसी उधर स निकला तो बदकिस्मती स उधर उसका ध्यान ही नहीं गया। ग्रिगोरी न देखा कि उस व्यक्ति के परिवार के लोग लाल गद्दावाली गाडी म फ़रनीचर लाद रहे हैं ग्रौर वह खुद टूटे पहिये के रिम को बडी होशियारी से उठाकर ले जा रहा है। रिम बेकार था ग्रौर शायद बरसात के दिनों म ग्राँगन में इसी तरह पडा रहा था। ग्रिगोरी को ग्रौरतों की बेवक़ूफ़ी पर ताज्जुब हुग्रा। वे रंगीन बतन ग्रौर मूर्तियाँ गाडी पर लाद रही थी ग्रौर जरूरी बेशकीमती चीज़ों को घर में ही छोडे जा रही थीं। सडक के ढाल पर पत्तों के एक बिछौने से पत्त इस तरह उड रहे थ जस कि बफ का छोटा-मोटा तूफान चालू हो गया हो।

गाँव के सिरे पर एक यहूदी उन्ह ग्रपनी ग्रोर ग्राता मिला। वह चिल्लाया कज्ज़ाक भाई भाई कज्ज़ाक ह भगवान्!"

पर एक कज्ज़ाक ग्रपना चाबुक सटकारता उसकी बग़ल स निकल गया। उसन यहूदी की ग्रोर ध्यान ही नहीं दिया।

रुको! दूसरा कम्पनी के एक जूनियर कप्टान ने कज्ज़ाक को ग्रावाज देकर कहा।

कज्ज़ाक ग्रपनी काठी पर झुका ग्रौर बग़म की एक गली में मुड गया।

रुको किस रेजीमट के हो तुम ?

कज्जाक का गोल सिर घोड़े की गर्दन में मिल गया। वह पागल की तरह बाड़ की ओर बढ़ता गया। वहाँ उसने घोड़ा रोका और वह सफाई से घोड़े की पीठ से उतरा। नवें रेजीमेंट का पड़ाव है यहाँ, यह कज्जाक उसी रेजीमेंट का है सार्जेंट ने कहा।

भाड़ में झोंको उसको ! जूनियर कप्तान ने कहा और अपनी रकाबों से सटे यहूदी की ओर मुड़ा तुम्हारी क्या चीज़ छीन ले गया वह ?

अफसर साहब मेरी घड़ी अफसर साहब' यहूदी ने पास आते हुए अफसरों की तरफ देखकर पलक झपकाई।

जूनियर कप्तान अपनी रकाबों को मुक्त कराता हुआ आगे बढ़ा।

चौथी कम्पनी पास से गुज़री। घोड़ों की टापें टपाटप पड़ती रहीं और साज चरमराते रहे। कज्जाकों ने परेशान यहूदी का मज़ाक बनाया और आपस में बातचीत की—

हमारी किस्म के लोग चोरी के नाम से बदनाम न हों यह तो नहीं हो सकता

'हर चीज़ चिपक रहती है कज्जाक के हाथ में

तेज़ है यहूदी !

बस बाड़ थामी उसने !

छीनी दौड़े पहले इसके कि

यहूदी हाँफता हुआ दौड़ा। सार्जेंट मेजर पीछे दौड़ा और उसने उस पर चाबुक जमाया। यहूदी लड़खड़ाया और हथेलियों से चेहरा ढँकते हुए सार्जेंट-मेजर की ओर मुड़ा। उसकी पतली-पतली अँगुलियों के बीच से खून चू रहा था। सिसकते हुए बोला 'यह आखिर क्यों ?

सार्जेंट मेजर की बटन-जैसी आँखें मुसकराती रहीं। वह घोड़ा आगे बढ़ाते हुए चीखा ऐसे कहाँ जाते हो तुम गधे !

गाँव के परे इंजीनियरों का एक दल झाड़-पौधों और जलकुम्भियों से भरे एक खड्ड के आर-पार चौड़ा पुल बना रहा था। पुल समाप्त होने को ही था। पास ही एक मोटर भड़भड़ा रही थी और ड्राइवर कुछ इधर उधर कर रहा था। भूरे बालों और स्लेटी दाढ़ीवाला एक भारी

मरकम जनरल पीछे की सीट में आधा बैठा और आधा लेटा था। लेफ्टिनेंट-कनल कालेदिन और प्रधान इंजीनियर सामने एटेंशन की मुद्रा में खड़े थे। जनरल अपने नक्शे के केस का बन्द झटकते हुए बोला—

आपको कल तक यह काम खत्म कर देने का हुक्म दिया गया था। कोई जवाब है? चीजों का इन्तजाम आपको पहले ही कर लेना चाहिए था। कोई जवाब दे सकते हैं आप इसका? अफसर ने कोई जवाब दिया ही नहीं। जनरल फिर गरजा अब कैसे पार जाऊंगा भला मैं? जवाब दीजिए कैसे उस पार जाऊंगा मैं?'

काली मूछों वाला एक कमउम्र जनरल मोटर में बैठा सिगार पीता रहा। उसके होठों पर मुस्कान दौड़ गई। इंजीनियर कप्तान आगे की ओर झुका और पुल के एक सिरे की ओर इशारा करने लगा।

पुल के पास सवार-फौजी झट से उतरे तो घोड़े घुटनों घुटनों तक गद में तहा गए

कम्पनी ने दोपहर को आस्ट्रिया की सीमा पार की। घोड़ों ने सीमा के काले सफ़ेद बांस को कूदकर पार किया। दाहिनी ओर राइफलें आग उगल रही थीं। किसी फार्म की टाइलों की छत दिखलाई दे रही थी। सूरज की किरणें सीधी पड़ रही थीं। हर चीज़ पर धूल का बादल छा रहा था। रेजीमेंटल कमाण्डर ने फ़ौजियों को दलों में बाँट कर आगे जाने के आदेश दिये। चौथी कम्पनी से लेफ्टिनेंट सेम्योनोव के नेतृत्व में तीसरी टुकड़ी गई। लगभग बीस कज्जाकों की टोली ने पगडंडी से होकर खेत पार किया।

अनुसंधानिक दल को कुछ दूर ले जाकर लेफ्टिनेंट मानचित्र का अध्ययन करने को रुका। धुआं उड़ाने के लिए कज्जाक पास-पास आ गये। साज की पेटी ढीली करने के लिए मिशारी घोड़े से उतरा ही कि सार्जेंट चिल्लाया तुम यह कर क्या रहे हो? चढ़ो घोड़े पर!

अफसर ने सिगरेट जलाई और दूरबीन से आगे का इलाका देखा। दायीं ओर आरी की भाँति जंगल का रेखा थी। लगभग एक मील आगे एक छोटा-सा गाँव था। उसके बाद गहरी नदी थी और

झलाझल सतह थी। अधिकारी जान-बूझकर दूरबीन से देखता रहा। वह गाँव के वातावरण का अध्ययन करता रहा किन्तु गाँव श्मशान की भाँति शान्त लगा सिर्फ पानी की नीली धारा ही कलकल करती चुनौती देती रही।

यह कोरोलिग्रोव का गाँव होगा। गाँव की तरफ आँखों से इशारा कर अधिकारी बोला।

सार्जेंट मेजर अपना घोड़ा आगे बढ़ाकर उस अधिकारी के और भी पास आया किन्तु बोला कुछ नहीं। उसके चेहरे के भाव से स्पष्ट झलका आपको मुझसे अधिक जानकारी है। मेरा सम्बन्ध तो केवल छोटी-मोटी बातों से है।

अच्छा वहीं चलो। अधिकारी ने दूरबीन रख अनिश्चित भाव से कहा। उसके माथे पर भी बल पड़े जैसे कि वह दाँत के दर्द से पीड़ित हो।

साहब कहीं हम दुश्मनों से न घिर जायँ?

होशियारी से चलेंगे।

प्राव्वार जिवाव ग्रिगोरी के साथ ही साथ चलता रहा। वे उजाड़ सड़क पर बड़े पर चौकन्ने रहे। हर खिड़की से आशंका होती कि इसके पीछे कहीं कोई छिपा न बैठा हो हर कोठरी के खुले दरवाजे से वीरानगी टपकती और पूरे बदन में कँपकँपी दौड़ जाती। सबकी आँखें बाड़ों और गाड़ियों की ओर ऐसे लगी रहीं जैसे कि कोई चुम्बक उन्हें अपनी ओर खींच रहा हो। वे बलि के बकरों की भाँति आगे बढ़ते गये या उन भेड़ियों की भाँति आगे बढ़ते गये जो जाड़े की नीली रात में बस्तियों की ओर चलता चला जाता है। पर सड़कों पर आदमी का नाम निशान तक न मिला। वीरानगी सांय-सांय करती रही। किसी मकान की खुली खिड़की से घड़ी की स्वाभाविक टिक-टिक की आवाज आई। पर उस समय यह आवाज ऐसी लगी जैसे कि कहीं पिस्तौल की गोलियाँ दग रही हों। ग्रिगोरी ने देखा कि अधिकारी भय से सिहरा और उसका हाथ थमकर रिवाल्वर पर पहुँचा।

आदमी की कौन कहे गाँव में मक्खी भी नहीं थी। दन नदी

को पार करने लगा । पानी घोड़ा के पेट तक पहुँच गया । वे बड़े मन से नदी में घुसे और चलते चलते पानी पीने लगे । सवार लगाम खींचकर उन्हें आगे बढ़ाने लगे । ग्रिगोरी ने उस गन्दे पानी की ओर प्यासी नजर से देखा । पानी पास होते हुए भी उसकी पहुँच से बाहर था और पूरी ताकत से उसे अपनी ओर खींच रहा था । यदि हो सकता तो ग्रिगोरी छलाँग लगाकर कपड़े पहने-ही-पहने धारा में हिल जाता और उसकी शीतलता से वह अपनी थकान मिटा लेता ।

गाँव के पार के एक टीले से काफी दूर पर उन्हें एक कस्बा दिखाई दिया—मकानों की चौकोर पंक्तियाँ, ईंटों की इमारतें, बगीचे और गिरजे । अफसर उस टीले की चोटी पर गया और आँखों पर दूरबीन चढ़ाकर देखने लगा ।

"वे रहे वे लोग!" वह चिल्लाया । उसके बाएँ हाथ की अंगुलियाँ काँपने लगीं ।

"कितने सारे हैं?" प्रोखोर ने कहा ।

दूसरों के मन में भी यही बात आई । वे चुप रहे । ग्रिगोरी ने अपने दिल की तेज धड़कन सुनी और इन विचित्र स्थितियों को देखकर उसे ऐसा लगा कि दुश्मन का ख्याल नहीं आया था । कुछ अजीब-सी अनुभूति हुई ।

सार्जेंट मेजर धूप से नहाई चोटी पर चढ़ा । उसके पीछे-पीछे कज्जाक एक-एक की पंक्ति में चढ़े । उन्होंने देखा कि सड़कों पर लोगों की भीड़ भाड़ है, बगल की सड़कों पर गाड़ियाँ खड़ी हैं और घुड़सवार तेजी से घोड़े दौड़ा रहे हैं । आँखें सिकोड़ हथेली की आड़ कर ग्रिगोरी ने भी उधर निगाह दौड़ाई । उसे भूरे रंग की अनजानी वर्दियाँ दिखाई दीं । कस्बे के पहले ताजा खुदी खाइयाँ थीं और उनके चारों ओर लोग जमा थे ।

सार्जेंट मेजर ने कज्जाकों को तुरन्त ही टीले से नीचे रवाना किया । अधिकारी ने अपनी युद्ध की नोटबुक में पेंसिल से कुछ लिखा और ग्रिगोरी को बुलाया ।

"मेलेखोव!"

साहब !

ग्रिगोरी घोड़े से उतरकर अधिकारी के पास गया । इतनी लम्बी सवारी के कारण उसकी टाँगें पत्थर हो गई थीं । अधिकारी ने उसे एक मुड़ा हुआ कागज दिया ।

तुम्हारा घोड़ा सबसे अच्छा है । इस कागज को रेजीमेंटल कमाण्डर को दे आओ । हवा की तरह जाना । उसने आदेश देते हुए कहा ।

कागज को अपनी सामने वाली जेब में रख ग्रिगोरी अपने घोड़े के पास वापस पहुँचा । अधिकारी की नजर उस पर जमी रही और ग्रिगोरी के घोड़े की पीठ पर चढ़ते ही उसने अपनी घड़ी देखी ।

जब तक ग्रिगोरी रिपोर्ट लेकर पहुँचा तब तक रेजीमेंट कारोलिआव्का गाँव तक पहुँच गया । कागज पढ़कर कर्नल ने अपने एडजुटेंट को कुछ आदेश दिया और एडजुटेंट घोड़े पर सवार होकर पहली कम्पनी की तरफ उड़ चला ।

चौथी कम्पनी कारोलिआव्का से होकर निकली और परेड के मैदान की-सी फुर्ती से पार के खेतों में फैल गई । घोड़े मक्खियाँ उड़ाने के लिए अपने सिर हिलाते और लगामों को बराबर झटकते रहे । पहली कम्पनी गाँव में होकर निकली तो दोपहर की शान्ति भंग हो गई ।

लेफ्टिनेंट पोलकोवनीकोव अपने घोड़े पर सवार होकर सबसे आगे पहुँचा । एक हाथ से कसकर लगाम साधे उसने दूसरा हाथ अपनी तलवार की मूठ पर रखा । ग्रिगोरी साँस रोककर आदेश की प्रतीक्षा करने लगा । पहली कम्पनी ने पोजीशन ली तो घोड़े की पटापट से बायाँ सिरा गूँज गया ।

अधिकारी ने म्यान से अपनी तलवार निकाली । धार ने नीलम सी दी ।

कम्पनी ! तलवार दायें और घूमी फिर बायें और और अन्त में सामने घोड़े के कानों के ऊपर बीचोबीच सधी । ग्रिगोरी मन ही-मन अगले आदेश की कल्पना करने लगा । 'बर्छियाँ सावधान ! तलवारें कमानों से बाहर ! हमला बोलो । चाल तेज !' अधिकारी ने

आदेश देकर अपने घोड़े को एड़ दी।

हजारों टापों की टपाटप से धरती कराह उठी। ग्रिगोरी अग्रिम दस्ते में था। वह अपनी बर्छी संभाल भी न पाया कि दूसरे घोड़ों की सरपट चाल से चौंककर उसका घोड़ा भिचका और भरपूर वेग से दौड़ पड़ा। खेत की भूरी पृष्ठभूमि में कमाण्डिंग अधिकारी आगे-आगे चमकता रहा। जुती हुई जमीन का एक ढेला उछलकर तड़ाक से उसकी ओर आया। पहली कम्पनी ने काँपते हुए स्वर में तीव्र कोलाहल किया। चौथी कम्पनी ने स्वर-में-स्वर मिलाया। उस हो-हल्ले में भी ग्रिगोरी को दूर की गोलियों की आवाज सुनाई दी। इसी बीच एक बम आया और उनके ऊपर से निर्मल आकाश के गुम्बज में लकीर-सी खींचता निकल गया। ग्रिगोरी ने अपनी बर्छी का गरम डंडा बगल में दबा लिया। इससे उसे तकलीफ हुई और उसकी हथेलियों में पसीना आ गया। सिर दर्द करते बम-धड़ाम-धड़ाम गिरने लगे। ग्रिगोरी ने अपना सिर घोड़े की गर्दन तक झुका लिया। घोड़े के पसीने की तीखी गंध उसकी नाक में भर गई। उसे लगा कि वह दूरबीन के धुँधले शीशे से देख रहा है। खाइयों की लाल जमीनें और भूरे लिबास में लोग वापिस नगर को भागते दिखाई दिए। एक मशीनगन कज्जाकों के ऊपर गालियाँ बरसाने लगी। सामने से और घोड़ों के परों के नीचे से धूल के बादल उड़ते रहे।

ग्रिगोरी के खून की रफ्तार पहले तो तेज हो गई थी पर अब वहां खून जैसे पत्थर की तरह जम गया। अब उसे केवल दो बातों का अनुभव हुआ—एक कानों में सनसनाहट का और दूसरा बाएँ पैर में टखने के दर्द का। डर से उसका मस्तिष्क जड़ हो गया। सारे विचार बीम की तरह बस ढेर बनकर रह गए।

सबसे पहले ध्वज-वाहक घोड़े से गिरा। प्रोखोर उससे आगे निकल गया। ग्रिगोरी ने मुड़कर पीछे दृष्टि डालते ही जो कुछ देखा वह उसके दिमाग में ऐसी बैठी जैसे काँच में हीरे की काट। गिरे हुए ध्वज को फाँदकर पार करते ही प्रोखोर के घोड़े ने दाँत निकाले और लड़खड़ा गया। प्रोखोर काठी से उछलकर दूर जा पड़ा और सिर के बल गिरते ही पीछे से आते हुए घोड़े की टापों के नीचे आ गया। ग्रिगोरी

की चीख तो सुनाई नहीं दी किन्तु ग्रोसोर के चेहरे उसके ऐंठे मुह और बछड़े की आँखों-जस निर्दोष नेत्रों से ऐसा लगा जसे कि वह पूरी ताकत से चीख रहा है। दूसरे कज्जाक भी जमीन से लगे और उनके घोड़े भी। हवा की तेजी स ग्रिगोरी की आँखें भर आई। इस पर भी उसने उस ब्रिज आस्ट्रियनों को पाम्यों स भागते देखा।

गाँव से तो कम्पनी एक बंधी हुई धारा की भाँति निकली थी पर अब वह बट गई और इधर-उधर फल गयी थी। सामने वाले कज्जाक झाड़ियों तक पहुँच गये थे ग्रिगोरी सबसे आग था।

एक लम्बे सफेद मोंछो वाले आस्ट्रियन ने आँखों तक अपनी टोपी झुका रखी थी उसने ग्रिगोरी के ऊपर बिना निशाना साधे गोली चलाई। गोली की गर्मी स उसका गाल झुलस गया। उसन पूरी ताकत स रास खींची और आस्ट्रियन पर बर्छी चलाई। बर्छी इतने जोर से बढ़ी कि आस्ट्रियन का सीना चीरती पीठ के पार हो गई। ग्रिगोरी ने उसे खींचना चाहा लेकिन फिर वह निकल न सकी। उसका हाथ काँप गया। आस्ट्रियन का सिर पीछे की ओर झुका और केवल उसकी ठोड़ी दिखाई दी। वह बर्छी के डडे को अगुलियों स खरोचने लगा। ग्रिगोरी ने बडा छोडा और अपनी सुन्न अगुलियाँ कटार की मूठ पर जमाई।

आस्ट्रियन नगर की सड़कों पर भाग दिए।

बर्छी नीचे छोड़ते ही पता नहीं क्या ग्रिगोरी ने घोड़ा मोड़ा। उसन मार्जेट-मेजर का बगल स गुजरत देखा। ग्रिगोरी ने तलवार की मूठ घोड़े पर जमाई। गदन टेढी कर घोड़ा गली म दोड़ थमा। एक बगीचे के लोहे के जगले के सहारे एक निहत्थ आस्ट्रियन हाथ म टोपी साधे इधर उधर डगमगाता भाग रहा था। ग्रिगोरी को उसके सिर का पिछला हिस्सा और उसके छोटे कोट के गले का कॉलर दिखाई दिया। ग्रिगोरी न घोड़ पर झुककर अपनी तलवार तिरछी की और आस्ट्रियन के मस्तक पर जमाई। आस्ट्रियन के मुँह स उफ तक न निकली। चोट को हाथ म दबा वह चक्कर खाकर जगले पर जा गिरा। ग्रिगोरी न घोड़ा नहीं रोका। वह घूमा और तेजी स वापस लौट पड़ा। आस्ट्रियन का भय स विकृत चौकोर चेहरे का रग कन

लोहे के समान काला पड़ने लगा। उसकी बाँहें पतलून के सिरा पर झूल गई। उसके गाल के रंग के होंठ काँपने लगे। कटार उसके माथे से फिसल गई थी। कटा हुआ माँस उसके गाल पर लाल चीथड़े की तरह लटक आया था। खून उसकी वर्दी पर बहा आ रहा था। ग्रिगोरी की आँखें उस आस्ट्रियन की भय में डूबी आँखों से जा मिलीं। व्यक्ति धीरे धीरे दोहरा हुआ। ग्रिगोरी ने अपनी तलवार घुमाई और उसके मस्तक को बीच से दो कर दिया। आदमी ढह पड़ा उसका सिर बड़े जोर से सड़क के पत्थर से जा टकराया। आवाज सुन ग्रिगोरी का घोड़ा बिदका और बीच सड़क में आ गया।

बीच-बीच में सड़क पर गोलियां की धाँय धाँय सुन पड़ी। झाग देता एक घोड़ा किसी मृत कज्जाक को सड़क पर घसीटता ग्रिगोरी से आगे निकल गया। कज्जाक का एक पैर रकाब से बाहर निकला हुआ था। ग्रिगोरी ने उसके पतलून की लाल पट्टी और उलटी हुई हरी कमीज देखी। पतलून और कमीज का पुलिंदा कज्जाक के सिर पर आ गया।

ग्रिगोरी का सिर सीसे की तरह भारी हो उठा। घोड़े से उतर उसने बड़े जोर से उसे झटक दिया। तीसरी कम्पनी के कुछ कज्जाक अपने ओवरकोटों में लपेटे किसी घायल को ले जाते दीखे। उनके आगे आगे आस्ट्रियन-बन्दियों का एक दल था। वे उस हाँफते हुए ग्रिगोरी के सामने से गुजरे। बड़ी गहरे भूरे रंग के कपड़े पहन दौड़-दौड़ कर चल रहे थे। पत्थरों पर उनके जूते खट-खट कर रहे थे। ग्रिगोरी को उनके चेहरा का रंग ऐसा दिखाई दिया जैसे कि गीली मिट्टी के ढलों का। उसने घोड़े की रास ढीली की और अपने आस्ट्रियन शिकार के पास गया। आस्ट्रियन जहाँ गिरा था वहीं जंगल के पास पड़ा हुआ था। उसकी गन्दी हथेलियाँ इस तरह फैली हुई थीं जैसे कि भीख माँग रहा हो। ग्रिगोरी ने उसके चेहरे पर निगाह डाली। वह उससे छोटा और बच्चा-जैसा था यद्यपि उसके मूँछें थी और चेहरे पर दुख की गहरी रेखाएँ थी—शायद शारीरिक कष्ट के कारण—शायद हँसी-खुशी से भरे अतीत की याद के कारण।

'अरे तुम !' घोड़े पर सवार एक विचित्र-सा कज्जाक-अधिकारी सड़क के बीच से गुजरते हुए बोला।

ग्रिगोरी ने उसकी ओर देखा और लड़खड़ाता हुआ अपने घोड़े के पास लौटा। उसके कदम मन मन के हो रहे थे मानो उसकी पीठ पर सामर्थ्य से अधिक बोझ हो। नफरत और पछतावे ने उसका उत्साह भंग कर दिया। उसने रकाब में पंजा तो रखा पर कई क्षणों तक उसी तरह विस्मय में पड़ा रहा और उचककर घोड़े की पीठ पर सवार न हो सका।

७

व्येशेन्स्काया-सहित ऊपरी दोन के इलाकों के कज्जाक सदा से ग्यारहवीं बारहवीं कज्जाक रेजीमेंट और अतामान के लाइफ-गार्डों में भरती किये जाते थे। किन्तु १९१४ के युद्ध में किसी विशेष कारण से उनको तीसरी दोन-कज्जाक रेजीमेंट में भी भरती होने का अवसर दिया गया। बस इस रेजीमेंट में खास तौर पर उस्त-मेदवेदित्स्काया के कज्जाक भरती किये जाते थे। पर इस बार जिन लोगों को नया मौका मिला उनमें मीत्का कारशूनोव भी था।

तीसरी दोन कज्जाक रेजीमेंट ने विलना स्टेशन पर पड़ाव डाला। उसके साथ तीसरी घुड़सवार डिवीजन की भी कुछ टुकड़ियाँ थीं। इन में एक दिन अलग अलग कम्पनियाँ नगर में गाँवों में रहने को चलीं। धूप तो नहीं थी लेकिन गर्मी जरूर थी। होते-होते तैरते हुए बादलों के दल आकाश में छा गए और उन्होंने सूरज को ढँक लिया। रेजीमेंट का बड़ा दल में भाग-भाग चला। अफसर गर्मी की हलकी टोपियाँ लगाए ड्रिल की वर्दियाँ पहने घोड़े हवा में उड़ाते चले। सिगरेट का बादल हवा में उड़ता रहा।

सड़क के दोनों किनारों पर किसान और रंग बिरंगे कपड़े पहने औरतें घास काट रही थीं। ये लोग अपने पास से निकलकर जाते हुए कज्जाकों के दल को देखकर काम करते-करते रुक जाते। गर्मी के कारण वे पसीने से तर थे। दक्षिण-पूर्व से चलती हुई हलकी बयार में गर्मी

कम नहीं हुई उलटे उसस उमग और बनी।

मर उन्होंने आधा रास्ता पार किया और गाँव के पास पहुचे ही थ कि झाड़ के पार स एक बछेड़ा दुलकी चाल स निकला। वह इतन सारे घोडा को एक साथ देखकर हिनहिनान लगा और कुलाँचें भरता पाँचवी कम्पनी म ठीक सामन आ गया। उसकी मिन्न दुम एक बार को लहरी और उसक खुरा म उठती हुई धूल घास पर बिखर गई। वह पहली कम्पनी के पास आया और सार्जेंट मेजर क स्टलियन को सूघने लगा। स्टलियन न खीझ तो दिखलाई पर बछेडे पर तरस खाकर लात नहीं फटकारी।

हट व भो सार्जेंट मेजर ने चाबुक नचाते हुए चिल्लाकर कहा पर बछेड़ा इतन इत्मीनान से खडा रहा कि दूसरे कज्जाका को हसी आ गई। उसी समय एक अप्रत्याशित घटना घटी। बछेडा जो पक्तियो के बीच घुसा तो सभी हुई व्यवस्था गडबडा गई। घोडे अपने मालिको का हुक्म मानन स जमे इन्कार करन लगे। बछेडे न अपने पास के घोडे को दाँत स काटना चाहा।

कम्पनी का कमाण्डर घोडा दौडाता हुआ आया क्या हो रहा है यहाँ ?

घोडे उस बछेडे पर तिरछी नजरें डालत और हीसत रहे। दूसरी ओर कज्जाक चाबुक स बछड़े को भगान की कोशिश करत रहे। ट्रूप पूरी तरह गडबडा गया।

क्या हो रहा है आखिर ? कम्पनी क कमाण्डर ने भीड क बीच अपना घोडा लाते हुए चीखकर कहा।

यह बछेडा

यह यहाँ आ कसा है

तुम इस भगा नहीं सकत ?

चाबुक जमाओ इस पर" इस पर चाओ नहीं"

कज्जाक दाँत निकालते हुए अपने घोडों को साधने की कोशिश करने लगे।

सार्जेंट मजर ! आखिर यह तूफान क्या है ? अपने ट्रूप काय*

में साथो ! मैंने ऐसा तो कभी न देखा न सुना।

कम्पनी-कमाण्डर इस परेशानी से अलग हुआ तो उसके घोड़े के पिछले पैर सड़क के किनारे की एक खाई में फिसल गए। उसने एड़ लगाई और घोड़ा खसखस के पेड़ों के निशानों और डेज़ी के पीले फूलों से भरे किनारे की ओर बढ़ा। इस बीच दूर पर अफसरों की टोली ठिठकी। लेफ्टिनेंट कनल सिर पीछे की ओर कर अपने फ्लास्क से पानी पीने लगा।

सार्जेंट मेजर ट्रूप से अलग हुआ और बुरी-बुरी गालियाँ बकते हुए बछड़े को भगाने लगा। ट्रूप फिर ठीक हो गया और डेढ़ सौ जोड़ी आँखों ने सार्जेंट मेजर को रकाबों पर खड़े होकर बछड़े को वहाँ से दूर करते देखा। पर बछेड़ा छिटकता, लम्बे चौड़े स्टैलियन के किनारे तक आता और फिर कुलाँचें भरता आगे बढ़ जाता। नतीजा यह कि सार्जेंट मेजर उसकी पूँछ पर ही चोट कर पाता। पूँछ बार-बार नीची हो जाती पर दूसरे ही क्षण हिम्मत से हवा में लहराने लगती।

यह दृश्य देखकर कम्पनी के लोग तो हँसे ही, अफसर भी ठहाके लगाने लगे। कप्तान के कुटिल चेहरे पर भी मुस्कान खेल गई।

मीत्का कोर्शूनोव आगे के ट्रूप की तीसरी पंक्ति में था। उसके साथ मिखाइल इवानकोव और याकोव कपरूलोव थे। दोनों ही डान प्रदेश के थे।

चौड़े चेहरे और चौड़े कंधोंवाला इवानकोव तो शान्त रहता, लेकिन चेचक के दागों से भरे चेहरे और गाल कंधोंवाला कपरूलोव मीत्का के सामने में काईं-न-कोईं पंच निकालता रहता। याकोव कपरूलोव का नाम कुट के नाम से पुकारते। यह पुराना कज़्ज़ाक था, यानी यह उसकी फौजी सेवा का आखिरी साल था। इसके मानी यह कि बेलिनस्की कानूनों के नाम पर उसे भी बूढ़े कज़्ज़ाकों का अधिकार प्राप्त था, यानी यह भी कम उम्र फौजियों का पीछा करना, उन पर हुक्म चलाना और छोटे-से अपराध के लिए पेटियाँ जमाना। मज़ा तब की—१९१२ में भरती हुए लोगों के लिए १३ पेटियाँ और १९१४ में भरती हुए कज़्ज़ाकों के लिए १४ पेटियाँ। सार्जेंट और अफसर उस व्यवस्था को बढ़ावा देते क्योंकि

इसम कज़्ज़ाक पन क साथ-साथ उम्र का भी इज्जत करना सीखत

कुचकाव ग्रभी थाडे समय पहल नारपाग्ल बना था । वह ग्रपन घाडे की काठी पर चिडिया की तरह जमा वठा रहा । उसन एक भूर बाग्ल पा दखकर ग्राँखें मिकाड़ी ग्रौर कम्पनी-कमाण्डर कप्तान पोपाव क लहजे म मीत्का से पूछा ग्रा वन लाग्रा तो" ग्रा कोग्शूनाव हम ग्रपन कम्पनी-कमाण्ण्र को किस नाम से बुलात हैं ?

मीत्का को ग्रपनी हठधर्मी ग्रौर हुक्म न मानने के लिए ग्रक्सर ही पटियाँ खानी पड़ती थी । मा उसन वडे ग्रन्व म उत्तर न्यिा कप्तान पापाव साहव वहादुर !

क्या ?

कप्तान पोपोव साहव !

मैं यह जानना नहीं चाहता तुम मुझे यह वतलाग्रा कि हम कज्जाक ग्रपन वीच उन्हें किस नाम स पुकारत हैं ?

इवानकाव न मीत्का का ग्रागाह करत हुए ग्राँख मारी ग्रौर खीसें बान लगा । मीत्का ने पीछ मुडकर दखा ता कप्तान ग्राता नजर ग्राया ।

'वो जवाव दा न !

'कप्तान पापोव कहत हैं हम सव !

'चौन्ह पटियाँ लगेंगी तुझे जवाव द दागला कहीं का !

मैं नही जानता साहव !

कुचकोव साधारण स्वर म वोला कम्प पहुँचन ही मैं तुम्हारा खाल खींचकर रख दूगा । सवाल का जवाव दो !

'मैं नहा जानता साहव !

मीत्का ने कप्तान क घोड़े का टाप सुनो ग्रौर चुप हा गया ।

पीछ की पंक्तिया म कुछ हसी क फव्वारे छूटे । कुचकोव इसी का कारण नहीं समझा । उसे लोग ग्रपन ऊपर हँसन लग । वह गरजा—होशियार रहना कोरशूनाव कम्प पहुँचत हा मैं तुम्हें पचास पट्टियाँ एस जमाऊगा कि जिन्दगी भर याद रहेंगी !

मीत्का ने कुछ भक्क ।

साला कलहम है यह !

न लायो ! मन ऐसा तो कभी न देखा न सुना ।

कम्पनी-कमाण्डर इस परेशानी से अलग हुआ तो उसके घोड़े के पिछले पर सड़क के किनारे की एक खाई में फिसल गए। उसने एड़ लगाई और घोड़ा वक्तों के परों के निशाना और ढेलों के पीने पूलास भर किनारे की ओर बढ़ा। इस बीच दूर पर अफसरों की टोली ठिठकी। लफ्टिनेंट क्लस सिर पीछे की ओर कर अपने पस्ताव से मानो पीने लगा।

सार्जेंट मेजर ट्रूप से अलग हुआ और बुरी-बुरी गालियाँ बकते हुए बछड़े का भगाने लगा। ट्रूप फिर ठीक हो गया और कम सो जाड़ी आँखों ने सार्जेंट-मेजर को रकाबों पर खड़े होकर बछड़े को वहाँ से दूर करते देखा। पर बछड़ा ठिठकता लम्बे चौड़े स्टलियन के किनारे तक आता और फिर कुलाँचें भरता आगे बढ़ जाता। नतीजा यह कि सार्जेंट मेजर उसकी पूँछ पर ही चोट कर पाता। पूँछ चार होने पर नीची हो जाती पर दूसरे ही क्षण हिम्मत से हवा में लहराने लगती।

यह दृश्य देखकर कम्पनी के लोग तो हँसे ही अफसर भी ठहाके लगाने लगे। कप्तान के कुटिल चेहरे पर भी मुसकान खेल गई।

मीत्का कोरशूनोव आगे के ट्रूप की तीसरी पंक्ति में था। उसके साथ मिखाइल इवानकोव और काजमा कुचकोव थे। दोनों ही दोन प्रदेश के थे।

चौड़े चेहरे और चौड़े कंधोंवाला इवानकोव तो शान्त रहता लेकिन चेचक के दागों से भरे चेहरे और गोल कंधोंवाला कुचकोव मीत्का के सामने से कोई-न-कोई पख निकालता रहता। वो कुचकोव को लोग ऊँट के नाम से पुकारते। वह पुराना कज़्ज़ाक था यानी यह उसकी फौजी सेवा का आखिरी साल था। इसके मानी यह कि रेजिमेंट कानूनों के नाम पर उसे भी 'बूढ़े कज़्ज़ाकों' का अधिकार प्राप्त था यानी वह भी कम उम्र फौजियों का पीछा करता उन पर हुक्म चलाता और छोटे-से अपराध के लिए पट्टियाँ जमाता। मजा यह थी—१६१३ में भरती हुए लोगों के लिए १३ पट्टियाँ और १६१४ में भरती हुए कज़्ज़ाकों के लिए १४ पट्टियाँ। सार्जेंट और अफसर उस व्यवस्था को बढ़ावा देते क्योंकि

इससे कज्जाक पद के साथ-साथ उम्र की भी इज्जत करना सीखते

कुचकाव अभी थोडे समय पहल कारपोरल बना था। वह अपने घोडे की काठी पर चिडिया की तरह जमा बठा रहा। उसने एक भूरे बादल को देखकर भ्रोर्लें सिकाडी और कम्पनी-कमाण्डर कप्तान पोपोव के लहज म मीत्का स पूछा 'ओ वत साम्रो तो भो कोरशुनाव हम अपने कम्पनी-कमाण्डर को किस नाम स बुलाते हैं ?

मीत्का को अपनी हठधर्मी और हुक्म न मानने के लिए अक्सर ही पटियाँ खानी पडती थी। सो उसने बडे अदब म उत्तर दिया कप्तान पोपोव साहब बहादुर!

क्या ?

कप्तान पोपोव साहब!

मैं यह जानना नहीं चाहता तुम मुझे यह बतलाओ कि हम कज्जाक अपने बीच उसे किस नाम से पुकारते हैं ?

इवानकोव न मीत्का को आगाह करते हुए आँख मारी और खीसें बान लगा। मीत्का न पीछे मुडकर देखा तो कप्तान आता नजर आया।

तो जवाब दो न!

'कप्तान पोपोव कहते हैं हम सब!

चौदह पटियाँ लगेंगी तुम्हें जवाब द दोगला कहीं का!

मैं नहीं जानता साहब!

कुचकोव साधारण स्वर म बोला कम्प पहुँचने ही मैं तुम्हारी खाल खींचकर रख दूंगा। सवाल का जवाब दो!

'मैं नहीं जानता साहब!

मीत्का ने कप्तान के घोडे की टाप सुनी और चुप हो गया।

पीछे की पंक्तियों म कुछ हसी क फव्वारे छूटे। कुचकोव हंसी का कारण नहीं समझा। उसे लोग अपने ऊपर हँसते लगे। वह गरजा—होशियार रहना कोरशुनोव कम्प पहुँचते ही मैं तुम्हें पचास पटियाँ एस जमाऊंगा कि जिन्दगी भर याद रहेंगी!

मीत्का न कंधे झटके।

काना कलहम है यह!

"सो रहे हैं"

"क्रुचकोव!" पीछे से आवाज आई।

बूढ़ा कज्जाक क्रुचकोव ऑटेन्शन की हालत में हो गया।

"क्या नाम है तुम्हारा, कम्बख्त बूढ़े?" क्रुचकोव के बराबर आते हुए कप्तान ने कहा, "इस जवान कज्जाक को क्या समझ रहे हो तुम?"

क्रुचकोव ने पलक झपकाई। उसका चेहरा लाल हो उठा। पीछे की पंक्तियों से हँसी की लहरें आईं।

"पिछले साल किस सबक दिया था मैंने? किसके बदन में नाखून मैंने इस तरह गड़ाया था कि वह टूट गया था?" कप्तान ने अपनी अंगुलियों का नाखून क्रुचकोव की नाक के नीचे लाते हुए पूछा, "कभी दुबारा सुनाई न पड़े ऐसा। समझ में आई बात?"

"जी हुजूर!"

क्रुचकोव ने कन्धे सीधे किये और पीछे मुड़कर देखा। कप्तान वापस जाता दीखा। तो क्रुचकोव ने अपनी बायीं सीधी की ओर सिर हिलाते हुए कहा, "यह बूढ़ा मनहूस यहाँ टपक कहाँ से पड़ा?"

हँसी से पसीने-पसीने होते हुए इवानकोव बोला, "वह हम लोगों के पीछे-पीछे तो आ ही रहा था। बात का मतलब तो समझ लिया होगा उसने।"

"काठ के उल्लू हो निरे। मुझे आँख मार देनी चाहिए थी।"

"आँख मार देनी चाहिए थी?"

"तुम्हारा ख्याल है कि आँख नहीं मारनी चाहिए थी?" "ची-ची" पंक्तियाँ जमा हुईं।

मंजिल पर पहुँचने पर रेजीमेंट कम्पनियों में बँट गई और कम्पनियाँ जिले के अलग-अलग इलाकों में भेज दी गईं। दिन में कज्जाक अपने जमीन के मालिकों के लिए घास और तिनपतिया घास काटते। रात में निश्चिन्त मैदानों में अपने घोड़े चराते और कम्पनी की आग के धुएँ के बीच खाना बैठते या किस्से-कहानियाँ कहते-सुनते। छठी कम्पनी पोर्सेक के रहनेवाले एक जमींदार के इलाके में ठहरी थी। अफसर

मकान म रहते साग खसते शराब पीते और कारिन्दे की लड़की से नजरें लड़ाते। कज़्ज़ाकों ने अपने हर घर म काफ़ी फासले पर डाले। कारिन्दा हर सुबह ड्रोजकी म सवार होकर कज़्ज़ाकों के पास जाता और अपनी सफ़ेद चमकीली तिकोनी टोपी हिला हिलाकर उनके प्रति स्नेह और ममता दिखलाता।

आइये जनाब ! हमारे साथ घास काटिये। थोड़ी चर्बी घट जाएगी। कज़्ज़ाक उससे कहते। कारिन्दा धीमे धीमे मुसकराता रूमाल से अपना गंजा सिर पोंछता और फिर सार्जेंट मेजर के पास जाकर बतलाता कि अब घास कहाँ से काटनी है।

दोपहर को खाना आ जाता। कज़्ज़ाक मुंह-हाथ धोने और खाने के लिए आते।

उस समय तो वे चुप रहते लेकिन बाकी समय इस चुप्पी की भी कमी पूरी कर लेते।

यहाँ भी कोई घास है भला हमारी स्तेपी की घास से इसका क्या मुकाबला !

घर पर तो अब तक लोगों ने कटाई खत्म कर दी होगी

जल्दी ही खत्म हो जाएगी कल चाँद निकला था पानी बरसेगा"

अपना यह पोल बड़ा ही कंजूस है हमारी मेहनत के बदले म एक बोतल पिला दे तो क्या बिगड़ जाए उसका ?

जी हाँ वह पिलायेगा आपको अरे उसका बस चले तो वह खुद अपने लिए बोतल गिरजे की वेदी से उठा लाए।

देखो भाई तुम्हारी बहस बेकार है" आदमी के पास जितनी ही रकम होती है उतना ही उसका लालच बढ़ता जाता है समझे न ?

जार म जाकर पूछा जरा

'मालिक की लड़की को देखा है किसी ने ?

क्यों क्या हुआ ?

कहते हैं रही है बिलकुल बदन पर माँस ही-माँस है।

'खैर'

पता नहीं बात सही है या गलत पर लोग कहते हैं कि दाही खानदान से उसकी नानी की बात आई है।

उसका जैसा रसीला माल किसी मामूली आदमी का नहीं मिलेगा"

अरे लड़को सुना है कि हमारा नये सिरे से मुआइना होने वाला है और सो भी जल्दी ही होगा।

मैंने क्या कहा था बिल्ले का कुछ और करने को न मिले तो तो वह मौज उड़ाएगा परों में

ज़रा एक सिगरेट तो पिलाओ यार।

तुम शैतान की आँख हो और तुम्हारा हाथ उतना लम्बा है जितना गिरजे के फाटक पर बैठे भिखारी का होता है।

ज़रा देखो वेदोत देखने में बुजुर्ग है पर कैसा सोचता है सारी सिगरेट एक फूँक में ही राख कर दी।

अरे ज़रा फिर देखो सिगरेट औरत की तरह अंगार हो रही है।

वे पटों के बल लेटे सिगरटों के कश लेते रहते। उनकी नंगी पीठें धूप में जलने लगतीं। एक ही दिन मत के सिरे पर पाँच कज़्ज़ाकों ने एक नौमिनिय को घेरा कहाँ के हो?

"पेसान्स्काया का।

नमक को जाना के?

जी हाँ।

तुम्हारी सड़क से नमक की गाड़ियाँ कैसे ले जाते हैं ले जाने वाले?

पास ही दो चार वालावाली अपनी मूँछों के सिर ऐंठता चुपचाप खड़ा रहा।

पादरी के सहारे।

"और किसके सहारे?

बैलों के सहारे"

और नौमिया में मछलियाँ कैसी सान हैं? तुम जानते हो एक

तरह का बल ऐसा होता है कि उसकी पीठ पर कूबड़ होना है' काँटे खाता है वह

'ऊट कहते हैं उसे'

सब ठठाकर हँस पड़े।

कुचकोव अलसाते हुए उठा और नौसिखियों की ओर बढ़ा। इस बीच उसने अपने कन्धे गड़ाये और माटी गन्ध भाग की ओर बढ़ाई।

मुझे ! अपनी पटी हाथ में लेते हुए उसने हुक्म दिया।

जून के महीने में एक दिन दोनों समय मिल रहे थे कि कज्ज़ाक कम्प-फायर के चारों ओर इकट्ठे हुए और गाने लगे—लाम पर जाने वाले सिपहिया' के

'हुआ घोड़े पर सवार।
चला छोड़ घरबार॥
फिर पलट के नहीं देखा
उसने गाँव घर को !

एक रुपहली आवाज़ ऊँची उठी गिरी और गहरी करुणा उमड़ी

'अब कभी भी नहीं आना उस गाँव घर को

स्वर अब पहले से भी ऊँचे उठे

नार उसकी रतनार
बैठी करके सिंगार।
उठती हिया मे पुकार
आवें घर भरतार॥
पर सिपहिया कहाँ
लौटता है गाँव घर को !

गान में और भी लोगों ने स्वर मिलाये और वह घर की बनी शराब की तरह तीखा और तेज़ हो उठा

'ऊँचे पहाड़ों के पार
जहाँ बर्फ़ एकसार।
देवदार औ चिनार
इस पार उस पार॥

भगवान कसम ! लेकिन मुँह से साँस न निकले इस बारे में।

अगले दिन सुबह रेजीमेंट को कम्पनियों के क्रम से बरकों के बाहर खड़ा किया गया। कमाण्डर की प्रतीक्षा होने लगी। बरकों के कोने को पार कर कमाण्डर ने रेजीमेंट के सामने आकर अपने घोड़े को एक तरफ मोड़ा। एड्जुटेंट ने अपनी नाक पोंछने को रूमाल निकाला किन्तु उसे इसके लिए समय ही नहीं मिला। तनाव से भरे सन्नाटे को कर्नल के शब्द ने बेधा—

कज्जाको !

अब मुसीबत आई ! हरेक के हृदय में विचार उठा। तनाव के कारण सब इस्पात की कमानी-से हो रहे। इस बीच मीत्का कोर्शूनोव के घोड़े ने कभी यह टाँग बदली तो कभी वह टाँग। मीत्का ने बार-बार उसके बाजू में एड़ी लगाई।

जर्मनी ने हमारे खिलाफ लड़ाई छेड़ दी है

दलों में कानाफूसी होने लगी जैसे कि बड़ी बालों वाली पकी जई के खेत में हवा का लहरा लहर जाता है। फटी फटी-सी आँखों और खुले मुहों से सब लोग पहली कम्पनी की ओर देखने लगे। वहीं एक घोड़ा सहसा ही हिनहिना उठा था।

कर्नल ने बहुत कुछ कहा। उसने राष्ट्रीय गौरव की भावना उत्पन्न करने के लिए सावधानी से चुन चुनकर शब्दों का प्रयोग किया। लेकिन कज्जाकों की कल्पना के सामने रेशमी विदेशी झंडे कदमों पर सरसराने साकार नहीं हुए बल्कि साकार हुई उनकी अपनी तार-तार हो गई जिन्दगियाँ उनकी पत्नियाँ उनके बच्चे उनकी प्रेमिकाएँ खलिहानों में पड़ा पड़ा अनाज और भरकर में पड़े अनाथ गाँव।

'घंटे-दो घंटे में ही हम सवार होंगे पशुओं वाली रेल पर' बस यही विचार सबके दिमागों में नाचने लगा।

रेजीमेंट के लोग घोड़ों पर सवार होकर गाते हुए स्टेशन की ओर बढ़े। कज्जाकों की आवाज ने बैंड की आवाज को दबा लिया। अधिकारियों की पत्नियाँ ड्रोजकियों[1] में जा रही थीं। पगडंडियों

[1] बग्घियों।

पर रंग-बिरंगे कपड़ों में सजी भीड़ जमा हो गई थी। घोड़ों के खुरों से धूल का बादल उठने लगा था। सबसे आगे के गायक ने अपने और बाकी लोगों के गुस्से की खिल्ली उड़ाते हुए कंधों को इस तरह झटका कि उसके कंधे की नीली पट्टी गिरते गिरते बची। फिर उसने एक फूहड़-सा गीत गाना शुरू किया। गीत स्टेशन पर खड़ी गाड़ी के लाल डिब्बों तक चला। वहाँ कज्जाकों को विदा देने के लिए स्त्रियों की भीड़ लग गई। किसी कज्जाक ने औरतों की ओर देखकर आँख मारी।

पटरी पर इंजिन ने भाप उगलना शुरू की और सीटी दी कि लोग तैयार हो जाएँ।

गाड़ियाँ, गाड़ियाँ और अनगिनत गाड़ियाँ!

देश के स्नायु-जाल में दौड़ाया जा रहा था मनमन रूस का खून—इस खून पर भूरे ओवरकोटों की बाढ़ थी और रेल की पटरियों के सहारे यह खून जा रहा था पश्चिम की सीमा की ओर।

७

उसी लाइन पर स्थित एक छोटे-से नगर में रेजीमेंट कम्पनियों में बाँट दिया गया। डिविजन-स्टाफ के आदेश पर छठी कम्पनी तीसरी पैदल टुकड़ियों की कोर के साथ लगा दी गई। लोग निरन्तर मार्च करते हुए पनीकालिव पहुँचे।

सीमा पर अब भी सरहदी ट्रूपों का पहरा था। पैदल फौजियों और घुड़सवारों की नई टुकड़ियाँ वहाँ पहुँचाई जा रही थीं।

२७ जुलाई को कम्पनी-कमाण्डर ने पहले ट्रूप में सार्जेंट-मेजर और अस्ताखोव नाम के एक कज्जाक को बुला भेजा। अस्ताखोव दोपहर के काफी बाद ट्रूप में लौटा। उस समय मीत्का कोरशुनोव घोड़ों को पानी पिलाकर लौट रहा था।

मोटा-ताजा साँवला कज्जाक अस्ताखोव अपनी झोंपड़ी में यों आँखें दबाकर आया जैसे कि कुछ ऐसा हो न रहा हो। मेज के पास बैठा शिचोल्कोव बत्तीवाले लैम्प की रोशनी में टूटी लगाम सी रहा था। क्रुचकोव हाथ बाँधे स्टोव के पीछे खड़ा स्यानकोव से बातें कर

रहा था। झोपड़ी का मालिक एक पोल था और जलोदर के कारण पलंग पर पड़ा था। उसका बदन सूजा हुआ था।

अभी अभी उन्होंने एक मज़ाक किया था और इवानकोव के गाल में हँसी के कारण गड्ढे पड़ रहे थे।

'लड़को, कल सुबह तड़के ही हम लियूशाव की चौकी पर पहुँचना है।

कौन जायगा ? उसी क्षण घड़े का दरवाज़ा पर रखकर झोपड़ी में प्रवेश करते हुए मीश्का ने पूछा।

शिचेगोल्कोव अचकोव रवाचेव पोपोव और इवानकोव।

और मैं ? मीश्का ने पूछा।

तुम यहीं ठहरोगे मीश्का !

अगर ऐसा है तो शैतान उठा ले जाए तुम सबको !

क्रुचकोव स्टोव के पास से हटा और मज़ाक में पूछने लगा जगह यहाँ से कितनी दूर है ?

यही कोई चार घण्टे।

पास ही है। अस्ताखोव ने कहा और बेंच पर बैठते हुए बूट उतारे।

सुबह दूसरे दिन तड़के ही रवाना हो गए। गाँव के सिरे पर एक लड़की कुएँ से पानी लाती दीखी। क्रुचकोव ने लगाम खींची थोड़ा पानी पिला दोगी ?

अपने घर के बने स्कर्ट का सिरा पकड़े लड़की ने पानी छलछलाया। उसकी भूरी आँखें मुसकराने लगीं। उसने बाल्टी आगे बढ़ाई। क्रुचकोव ने सिर झुकाते हुए पानी पिया तो बाल्टी के बोझ से उसका हाथ दबने लगा। पानी की बूँदें उछल उछलकर उसकी पतलून की लाल पट्टियों पर पड़ने लगीं।

प्रभु यीशु तुम्हारी रक्षा करें भूरी आँखों वाली !

ईश्वर कृपा करेगा

लड़की ने धन्यवाद दी और मुसकराकर चारों ओर नज़रें दौड़ाती हुई चल दी।

दाँत क्या निकाल रहे हो ? बढ़ाओ घोड़ा आगे !

क़ुचकोव लाठी पर इस तरह एक ओर खिसका जैसे कि लड़की के लिए जगह कर रहा हो।

'बढ़ो न आगे!' अस्ताख़ोव ने आवाज़ देकर खुद अपना घोड़ा आगे बढ़ाया।

आखिर क़ुचकोव से बोला निगाह हटाये नहीं हटती है न

'लड़की के पर कबूतर के परों की तरह गुलाबी हैं' क़ुचकोव ने हँसते हुए कहा तो बाकी सभी लोग यन्त्रवत् मुड़कर देखने लगे।

लड़की कुएँ पर झुकी हुई थी। उसके गुलाबी पर फैले हुए थे।

काश कि हम ब्याह कर सकते ! पोलोव के मुँह से आह निकली।

अगर मैं अपने चाबुक से तुम्हारा ब्याह रचा दूँ तो ? अस्ताख़ोव बोला।

इससे कुछ बात नहीं बनेगी'

हमें उसे पकड़कर बैल की तरह बधिया करना पड़ेगा !

इस तरह आपस में हँसते-हँसते कज्ज़ाक आगे बढ़ते गये। थोड़ी दूर चलने के बाद उन्होंने ढाल पर से नदी की घाटी में बसा हुआ बड़ा गाँव ल्युबाव देखा। सूरज पीछे से उगा। पास ही टेलीफ़ोन के खम्भे पर बैठी एक लंबी चिड़िया गानी मिली।

अस्ताख़ोव ने गाँव का सबसे अन्तिम खेत निरीक्षण-चौकी के लिए चुना क्योंकि वह सीमा के बिलकुल पास था। उसका मकान भूरी मूँछों वाला मालिक पार्लेंड का रहनेवाला था। सो फ़ेल्ट का मज़बूत टोप लगाये-हीं-लगाये उसने कज्ज़ाकों को घोड़े बाँधने के लिए जगह दिखलायी। शेड के पीछे तिनपतिया घास का हरा मैदान था। ढाल के दूसरे छोर पर जंगल था। अनाज के खूब पनार को एक सड़क बीच में काटती थी। आगे घास उगी थी। वे मुड़े कि शेड के पीछे का साइड में पहुँचकर दूरबीनों से सब-कुछ देखेंगे। बाकी लोग शेड की ठंडी छाया में लेट रहे। यह शेड वर्षों से अनाज रखने के काम में आ रहा था। उसमें भरा हुआ था आज धूल से भरे भूसे और चूहों से पैदा होने वाली बू। घास की नमी का संकेत यहाँ अलग से मिलता था।

रहा था। झोपड़ी का मालिक एक पोल था और जलोदर के कारण पलंग पर पड़ा था। उसका बदन सूजा हुआ था।

अभी अभी उन्होंने एक मजाक किया था और इवानकाव के गाल में हँसी के कारण गड्ढ पड़ रहे थे।

लड़का कल सुबह तड़के ही हम लियूबोव की चौकी पर पहुँचना है।

कौन जायगा? उसी क्षण घड़े का दरवाजा पर रखकर झोपड़ी में प्रवेश करते हुए मीशा ने पूछा।

निचगादकोव, क्रवकाव, ख्वाचव, पोपोव और इवानकाव।

और मैं? मीशा ने पूछा।

तुम यहां ठहरोगे मात्का।

अगर ऐसा है तो शैतान उठा ले जाए तुम सबको।

क्रवकाव स्टोव के पास से हटा और मजबान से पूछने लगा जगह यहां से कितनी दूर है?

यही कोई चार वस्ट।

पास ही है। मस्लाकोव ने कहा और बेंच पर बैठते हुए बूट उतारे।

लोग दूसरे दिन तड़के ही रवाना हो गए। गाँव के सिरे पर एक लड़की कुएँ से पानी खींचती दाखी। कुचकोव ने लगाम खींची। थोड़ा पानी पिला दोगी?

अपने घर के बने स्कर्ट का सिरा पकड़े लड़की ने पानी छपछपाया। उसकी भूरी आँखें मुसकराने लगीं। उसने बालटी आगे बढ़ाई। क्रुचकोव ने सिरा माथन हुए पानी पिया सा बालटी के थाम ने उसका हाथ दर्द करने लगा। पानी की बूँदें उछल उछलकर उसकी पतलून की लाल पट्टियों पर पड़ने लगीं।

प्रभु यीशु तुम्हारी रक्षा करे भूरी आँखों वाली।

ईश्वर कृपा करेगा।

लड़की ने बाल्टी ली और मुसकराकर चारों ओर नजर दौड़ाती हुई चल दी।

'दाँत क्या निकाल रहे हो ?' कहा और थोड़ा आगे।

कुचकोव काठी पर इस तरह एक ओर खिसका जैसे कि लड़की के लिए जगह कर रहा हो।

"बको न यार!" अस्ताखोव ने आवाज़ देकर खुद अपना घोड़ा आगे बढ़ाया।

साचेव कुचकोव से बोला, "निगाह हटाये नहीं हटती है न लड़की के पर। कबूतर के परों की तरह गुलाबी हैं," कुचकोव ने हँसते हुए कहा, तो बाकी सभी लोग यन्त्रवत् मुड़कर देखने लगे। लड़की कुएँ पर झुकी हुई थी। उसके गुलाबी पर फैले हुए थे।

"काश कि हम ब्याह कर सकते!" पोगाव के मुँह से आह निकली।

"मगर मैं अपने चाबुक से तुम्हारा ब्याह रचा दूँ तो?" अस्ताखोव बोला।

"इससे कुछ बात नहीं बनेगी।"

"हम उसे पकड़कर बैल की तरह बधिया करना पड़ेगा।"

इस तरह आपस में हँसते-हँसते कज्ज़ाक आगे बढ़ते गये। थोड़ी दूर चलने के बाद उन्होंने टीले पर से नीचे की घाटी में बसा हुआ बड़ा गाँव ल्युबोव देखा। सूरज पीछे से उगा। पास ही टेलीफ़ोन के खम्भे पर बैठी एक लवा चिड़िया गाती मिला।

अस्ताखोव ने गाँव का सबसे अन्तिम खेत निरीक्षण-चौकी के लिए चुना क्योंकि वह सीमा के बिलकुल पास था। उसका मकान-मालिक पोलैंड का रहनेवाला था। सो फ़ौज का सफ़ेद टोप लगाये-ही-लगाये उसने कज्ज़ाकों को घोड़े बाँधने के लिए एक शेड दिखलाया। शेड के पीछे तिनपतिया घास का हरा मैदान था। ढाल के दूसरे छोर पर जंगल था। अनाज के कपूरी पसार का एक सड़क बीच में काटती थी। आगे धान उगी थी। वे मुड़े कि शेड के पीछे की खाई में पहुँचकर दूरबीनों से सब-कुछ देखेंगे। बाकी लोग शेड की शीतल छाया में लेट रहे। यह शेड वर्षों से अनाज रखने के काम में आ रहा था। उसमें भरा हुआ था आज धूल से भरे भूसे और चूहों से पैदा होने वाली बू। धरती की नमी का संकेत यहाँ अलग से मिलता था।

इवानकोव एक अंधेरे कोने में पड़े हल के पास आराम में सो गया। सूरज डूबने के समय कुचकोव वहाँ आया और उसकी गर्दन में चुटकी काटते हुए बोला: सूअर सो रहा है, फौज की हराम की रोटी में फूलता जा रहा है। उठ और जाकर पहरेदारी कर—जमना पर निगाह रख।

बेवकूफ बनाना बन्द कर, कज़ाक।

तू उठकर तो बैठ।

चुप भी रह, मैं अभी उठता हूँ।

इवानकोव उठा और उसने अपनी गर्दन इधर उधर हिलाई डुलाई। इस बीच उसे छींकें आई। नम ज़मीन पर लेटने के कारण जुकाम हो गया था उसे। अब उसने अपनी कारतूसों वाली पेटी खींच ली और राइफल को ज़मीन पर घसीटता बाहर आया। उसने निकेगोल्कोव की जगह ली। उस पहर में मुक्त किया।

निकेगोल्कोव दोपहर के बाद से बराबर ड्यूटी पर रहा था। इवानकोव ने स्वयं दूरबीन लगाकर उत्तर-पश्चिम के जंगल की ओर देखा तो हवा में झूमती अन्न की बालियाँ दिखाई दीं और लाली में डूबा देवदार का पूरा-का-पूरा जंगल। गाँव के पार शानदार नीले मोड़ पर स्थित पानी की धारा में कुछ बच्चे छप-छप करते और शोरगुल करते नज़र आए। कोई औरत आवाज़ देती सुन पड़ी: स्तास्या! स्तास्या! यहाँ आ! निकेगोल्कोव ने एक सिगरेट जलाई और शेड में वापिस लौटकर बोला: सूरज डूब गया है। ज़रा आसमान के रंग भी देखो! हवा चलेगी आज।

हाँ शायद चलेगी। इवानकोव ने बात का समर्थन किया।

उस रात घोड़ों पर साज़ नहीं कसे गए। गाँव में नाम को भी रोशनी नहीं की गई। एक आवाज़ कहीं सुनाई नहीं पड़ी।

दूसरे दिन सुबह क्रूचकोव ने इवानकोव को बाड़ से बुलाया। बोला: आओ, शहर चला जाए।

आखिर क्या?

खाने के साथ-साथ कुछ पीने को भी शायद मिल जाए वहाँ।

मिल जायेगा इवानकाव के मन म सन्देह रहा।

ज़रूर मिलेगा। मैंने अपने मेज़बान से पूछा था। उसने वहाँ उस घर का पता बताया—देखते हो वह खपरली छत ? क्रुचकोव न अपने काल नाखून वाली अगुली से इशारा किया वहाँ बीयर मिलगी आओ चलें !

दोनों बाहर निकल। अस्ताखाव ने पीछे म आवाज दी कहाँ जा रहे हो तुम लोग ?

क्रुचकोव फ़ौजी पद की दृष्टि से अस्ताखाव स बडा था। उसने उसे टरकाया हम अभी आते है।

आ जाना वापस !

भूँकना बन्द कर !

इसी समय घुघराल बालो वाले एक यहूदी न भुककर उनका अभिवादन किया।

'बीयर है ?

थी तो लेकिन बची नही साहब !

हम उसकी कीमत अदा करेंगे।

प्रभु यीशु मां मेरी ! साहब मैं ईमानदार यहूदी हूँ। मरी बात का यकीन कीजिय। अब बीयर नही है।'

तुम झूठ बोल रहे हो !

कज्जाक साहब मैं आपस कह रहा हू

यह देखो   क्रुचकोव एक नन्ही-सी थली अपनी पतलून की जेब स निकालते हुए बोला चाहे जहाँ स लाओ थोडी-सी बीयर लाओ नहीं तो मैं नाराज़ हो जाऊगा।

यहूदी ने सिक्का हथेली म दबाया अपना ऐंठा हुआ होठ नीचा किया और गलियारे म गया।

एक क्षण बाद ही वह जो न भूसे म लिपटी एक बोतल वोद्का लिये हुए लौटा।

और तुमने तो कहा था कि तुम्हारे यहाँ दारू है ही नही ?

मैंने कहा था कि बीयर नहीं बची।

कुछ खाने को भी लाओ।

कुचकोव ने डाट आसानी से खोलने के लिए बोतल के पेंदे पर हथेलियाँ जमाईं और प्याले में वोद्का उँडेली। वे लौटे तो आधे नशे में चूर। कुचकोव लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ा। वह खिड़कियों के खाली काले चौखटे की ओर हाथ उठा-उठाकर मुट्ठियाँ दिखाता रहा।

शेड में मस्ताखोव जम्हाइयाँ लेने लगा। दीवार की उस तरफ घोड़े गीली घास खाते रहे।

अगला दिन आलस में बीता। दोपहर के बाद पोपोव को एक रिपोर्ट देकर कम्पनी वापस भेजा गया।

शाम हुई। रात आई नये चाँद का पीला घेरा गाँव के ऊपर उठा। बगीचे से जब-तब पके सेब के गिरने की आवाज आई।

इवानकोव पहरा देता रहा कि कोई आधी रात के लगभग गाँव की सड़क से उसे घोड़ों की टापें सुनाई दीं। वह खाई से रेंगकर बाहर आया। लेकिन चाँद बादलों में छिप गया तो उस घुप अँधेरे में उसे कुछ भी दिखलाई न दिया। उसने जाकर दरवाजे पर सोते कुचकोव को जगाया।

कोज़मा! घुड़सवार आ रहे हैं। उठो।

कहाँ से?

गाँव से मालूम होते हैं।

वे दोनों बाहर आये। टापों की आवाजें कोई सौ गज के फासले पर सड़क की ओर से आती रहीं।

बाग में चलें वहाँ से और साफ सुनाई देगा।

वे झाड़ी पार कर दौड़ते हुए सामने के छोटे बगीचे में गये और वहाँ जाकर चहारदीवारी के सहारे लेट गए। रकाबों की खड़खड़ाहट और साजों की चरमर पास आती गई थी। फिर उन्हें घुड़सवारों के धुँधले चेहरे दिखाई देने लगे। वे चार थे और चारों अगल-बगल थे।

कौन लोग हो? कुचकोव ने डाँटकर कहा।

और तुम क्या चाहते हो? किसी ने रूखी में सवाल के बदले सवाल किया।

कौन है ? मैं गोली मार दूगा । कुचकोव ने अपनी राइफल का कुन्दा खटकाया।

एक घुड़सवार ने अपना घोड़ा रोका और उसे चहारदीवारी की ओर मोड़ा। बोला हम सीमारक्षक हैं। क्या तुम चौकी के पहरेदार हो ?

जी हाँ।

किस रेजीमेंट के ?

तीसरी कज्जाक

किनीन किससे बातें कर रहे हो ? अश्वारोही चीरता हुआ एक स्वर आया।

चहारदीवारी के पास खड़े व्यक्ति ने उत्तर दिया यहाँ कज्जाकों की चौकी है हुजूर !

अब दूसरा घुड़सवार चहारदीवारी के पास अपना घोड़ा लाया।

हलो कज्जाको

हलो ल्वानकोव ने नपे-तुले ढग से जवाब दिया।

क्या तुम लोगो को यहाँ बहुत दिन हो गए ?

नहीं सिर्फ कल से हैं हम यहाँ ! दूसरे घुड़सवार ने दियासलाई की तीली से सिगरेट जलाई। क्षणिक प्रकाश में कुचकोव ने सीमारक्षक दल के अधिकारी को देखा। अफसर बोला हमारा रेजीमेंट वापस बुलाया जा रहा है। तुम्हें यह भूलना नहीं चाहिये कि तुम्हारी चौकी सबसे आगे की है। हो सकता है कि दुश्मन कल आगे बढ़े । अब वह मुड़ा और उसने अपने आदमियों को आगे बढ़ने का आदेश दिया।

'आप कहाँ बढ़े जा रहे हैं हुजूर ? कुचकोव ने अपनी राइफल के घोड़े पर अँगुली रखकर पूछा।

हम अपनी कम्पनी में जा रहे हैं कम्पनी यहाँ से दो वर्स्ट के फासले पर है। अच्छा साथियो चलो अच्छा कज्जाको अलविदा !

उसी क्षण हवा ने चन्द्रमा को छिपानेवाले बादल बेरहमी से चीर दिया। अब गाँव पर बागों पर झाड़ियों के पानी से तर छप्परों पर और पहाड़ी पर चढ़ते सीमारक्षकों के ऊपर मौत की-सी पीली रोशनी

छा गई।

अगले दिन रिपोर्ट लेकर साथेव कम्पनी लौटा। रातभर घोड़े बस खड़े रहे। कज्जाक भयभीत रहे कि अब शत्रु का सामना करने के लिए अकेले वे ही रह गए हैं। जब तक उन्हें यह विश्वास रहा कि हमारे आगे सीमारक्षक हैं तब तक उन्हें थकाव और अकेलापन अनुभव नहीं हुआ। लेकिन जब उन्हें पता लगा कि सीमा पर अब कोई नहीं रहा, वे विचलित हो उठे।

अस्ताखोव की पोलैंडवासी किसान से बातें हुई और उसने थोड़े से पैसे में ही घोड़े के लिए तिनपतिया काट लेने की अनुमति दे दी। चरागाह शहर से दूर नहीं थी। अस्ताखोव ने इवानकोव और शिचेगोल्कोव को घास काटने के लिए भेजा। वहाँ शिचेगोल्कोव ने घास काटी और इवानकोव ने हुगी से बटोरकर गट्ठर बाँधे।

वे दोनों घास काटने में लगे रहे कि अस्ताखोव ने दूरबीन उठाई और सीमा को जाने वाली सड़क पर निगाह दौड़ाई। सहसा ही उसे कोई लड़का दक्षिण-पश्चिम के खेतों को पार कर भागता नजर आया। लड़का पहाड़ से नीचे की ओर लाल खरगोश की तरह दौड़ रहा था। जब फासला थोड़ा ही रह गया तो वह चिल्लाकर कुछ बोला और अपने कोट की लम्बी आस्तीन हिलाने लगा। लड़का अस्ताखोव के पास आया और अपनी आँखों को नचाते और हाँफते हुए बोला

कज्जाक! जर्मन... कज्जाक! जर्मन आ रहे हैं।

उसने अपने हाथ से इंगित किया। अस्ताखोव ने अपनी आँखों पर दूरबीन चढ़ाकर देखा तो दूर से घुड़सवारों का एक दल आता दीखा। दूरबीन हटाये बिना ही वह चीखा ... क्रूचकोव दौड़कर साथियों को बुलाओ। एक जर्मन दस्ता आ रहा है।

क्रूचकोव भागा भागा घास के मैदान में गया।

अब अस्ताखोव को घास के मैदानों की भूरी पट्टियों के पीछे घुड़सवारों का दल स्पष्ट दीख पड़ने लगा। उसे घोड़ों का लाल रंग तथा फौजियों की वर्दियों का हलका नीला रंग भी साफ नजर आने लगा। उनकी संख्या बीस से अधिक थी और वे घोड़ों पर सवार आस-पास थे।

उसका विश्वास था कि जमन उत्तर पश्चिम स आयेंगे किन्तु व आ रहे थ दक्षिण-पश्चिम स। सडक पारकर व ढलवाँ टील क सहारे-सहारे घाटी म उतरे। वही तो गाँव था।

हाँफते हुए इवानकोव थन मे घास ठूस-ठूँसकर भर रहा था। पोन अपना पाइप चूसता पास ही खडा था और अपनी पेटी मे हाथ खाम अपने टोप क छज्जे स निचेगोल्कोव का एकटक देखता जा रहा था। शिचेगोल्कोव घास काट रहा था।

इसी को हसिया कहत हैं ? निचगोल्कोव न हसिय को हाथ म लत हुए पूछा इसस घास कटती है ?

मैं तुम्हे इसी से घास काटकर दिखला दू ! पोन न जवाब दिया और एक अगुली अपनी पेटी स बाहर निकाली।

यह हसिया तुम्हारा बस इस लायक है कि इसस औरत की सही जगह की घास साफ की जा सके।

हाँ आ मा तो है पोन जससहमत हुआ।

इवानकोव हसा और कुछ कहने ही जा रहा था कि पीछे मुडन पर उस कुचकोव ऊबड-खाबड खेत पार करता और अपना हाथ कटार पर रख दौडता नजर आया। पास आत हुए चीखा छोडो यह काम !

बात क्या है ? शिचेगोल्कोव न हसिय की नोक जमीन म गडाई।

जमन आ गए है

यह सुनत ही इवानकोव क हाथ स घास क गट्ठर छूट पडे। पोन दोहरा होते हुए इस तरह अपने घर की ओर भागा जस कि गोलियाँ उसके सिर क ऊपर सनसना रही हो। व शेड म पहुँचे और कूदकर घोडो की पीठो पर सवार हुए कि पेलिकानिय की ओर स दमी गाँव म घुसन दीख। बज्जाक उनसे मिलन को लपके। अस्ताखोव न कम्पनी क कमाण्डर को सूचना दी कि जमनो का एक टुकडी पहाडी की तरफ स गाँव की ओर बढ रही है। कप्तान न उसके जूतो की धूल म नहाय पजा को आर देखा और मन्द आवाज म पूछा कितने हैं गिनती म ?

तीस स ज्यादा

मुड़े और द्वार की तरफ़ हमला करने को बढ़े। इवानकोव ने अपना घोड़ा मोड़ा। इस समय उसने जर्मन अधिकारी को देखा तो सफाचट मूछोंवाला उसका चिंता में डूबा चेहरा तथा काठी में मूर्तिवत् जमा उसका स्वरूप उसके दिमाग़ में जम गया। उसकी पीठ में ऐसा दर्द होने लगा जैसे कि मौत आ जाएगी। बिना उफ़ किये उसने अपना घोड़ा अपने साथियों की ओर बढ़ाया।

अस्ताखोव को इतनी साँस भी नहीं मिली कि वह तम्बाकू की पानी तो अपनी जेब में रख लेता। जर्मनों को इवानकोव का पीछा करते देख क्रूचकोव ने सबसे पहले उनकी ओर अपना घोड़ा बढ़ाया। दाहिनी ओर के जर्मन घुड़सवार इवानकोव पर वार करने के लिए बराबर उसके पास आते जा रहे थे। इवानकोव चाबुक-पर चाबुक जमाते हुए घोड़े को भगाए ला रहा था। उसके चेहरे पर भय अंकित था और आँखें निकली पड़ रही थीं। अपनी काठी पर झुका अस्ताखोव सबसे आगे पहुँचा।

'किसी भी क्षण उनके हाथ पड़ सकता हूँ मैं।' बस एक यही ख़याल था इवानकोव के दिमाग़ में। दुश्मन का सामना करने की बात सामने आई ही नहीं। उसने अपने लम्बे-चौड़े शरीर को गेंद की तरह समेट लिया। उसका सिर घोड़े की अयाल के बराबर आ गया।

एक लम्बे-चौड़े लाल चेहरे वाले जर्मन ने इवानकोव के पास पहुँच कर उसकी पीठ में अपनी बर्छी घुसेड़ दी। बर्छी बदन में एक इंच गहराई तक घुसती चली गई।

'लौटो भाइयो!' पागलों की तरह चीखकर उसने अपनी तलवार खींची। आते हुए वार को रोका और बाईं ओर में आते हुए एक जर्मन की गर्दन उड़ा दी। किन्तु वह घिर चुका था। एक जर्मन घोड़ा उसके घोड़े से आ टकराया। उसका घोड़ा लड़खड़ाया पर फिर सम्हल गया। सामने ही एक दुश्मन का चेहरा उभरा।

सबसे पहले अस्ताखोव उस दल तक पहुँचा। उसे घेर लिया गया। उसने अपनी तलवार खींची और साँप का वार करने की मछली की तरह अपनी काठी में ऐंठा। उसकी दोनों मिंचें गईं और फड़क उठे और उसका चेहरा मौत की तरह भयानक हो गया। इवानकोव की गर्दन में तलवार

की नाक गढ़ा। बाई ओर से एक जर्मन घुड़सवार — सर्र ऊपर धड़ता चला आया और इस्पात की चमक में उसकी आँखों में चकाचौंध पैदा हो गई। उसने तलवार से हमले का जवाब हमले से दिया। नाहा नाहे से टकराया। किसी ने पीछे से उसके कन्धे की पेशी में जबरदस्ती बर्छी घुसेड़ी। पेटी फट गई। सामने से पसीने में तर एक बीमार-से और जर्मन ने इवानकोव के वक्ष में अपनी तलवार घुसेड़नी चाही किन्तु असफल रहा। तलवार उसने पटक दी और काठी का खलीसे छोटा बन्दूक निकाला। इस बीच इवानकोव के चेहरे से उसने एक बार भी अपनी आँखें नहीं हटाईं। वह अपनी बन्दूक निकालने में भी असफल रहा क्योंकि किसी जर्मन की बर्छी छीनकर घोड़ा दौड़ाता क्रुचकोव पास आ पहुँचा और उस पर झपट पड़ा। अपने सीने से बर्छी को निकालकर जर्मन डर और अचरज में कराहता हुआ पीछे की ओर लुढ़क गया।

आठ घुड़सवारों ने क्रुचकोव को जीता-जागता पकड़ लेने के लिए उसे चारों ओर से घेर लिया। किन्तु उसने अपने घोड़े को पिछली टाँगों पर खड़ा कर ऐसा मोड़ा लिया कि दुश्मन से इसके टुकड़े-टुकड़े कर डालने की कमर कस ली। उसने छीनी हुई बर्छी का इस तरह प्रयोग किया जैसे कि वह जमीन पर हो। पीछे हटे हुए जर्मन अपनी तलवारें ले उसकी ओर बढ़े। वे जमीन के एक जुते हुए टुकड़े पर एकत्र हो गए और ऐसे इधर-उधर करने लगे जैसे कि हवा उन्हें झकझोर रही हो।

कज्जाक और जर्मन दोनों ही भय से बौखला उठे। जो भी दुश्मन सामने आता वे उसका जो भी अंग पाते काट डालते—पीठ बाँह, घोड़ा हथियार, कुछ भी। मौत की आशंका से पागल घोड़े एक-दूसरे को धक्का देते और आपस में टकरा जाते। इवानकोव ने मझले ही लम्बे चेहरे सन के-से बालोंवाले एक पास के जर्मन पर जितनी ही बार वार किया किन्तु उसकी तलवार उसके शिरस्त्राण पर पड़कर बार-बार फिसलती गई।

अस्ताखोव उस व्यूह से निकलकर रक्त की धार बहाता हुआ भाग खड़ा हुआ। जर्मन अफसर ने उसका पीछा किया। अस्ताखोव ने कन्धे से राइफल उतारकर ठीक सीध में निशाना साध गोली चला दी। अधिकारी

मुड़े और डाल की तरफ हमला करने को बढ़े। इवानकोव ने अपना घोड़ा मोड़ा। इस समय उसने जर्मन अधिकारी को देखा तो सफाचट मूँछोंवाला उसका चिंता में डूबा चेहरा तथा काठी में मूर्तिवत् जमा उसका स्वरूप उसके दिमाग में जम गया। उसकी पीठ में ऐसा दर्द होने लगा जैसे कि मौत आ जाएगी। बिना उफ किये उसने अपना घोड़ा अपने साथियों की ओर बढ़ाया।

अस्ताखोव को इतनी साँस भी नहीं मिली कि वह तम्बाकू की थैली तो अपनी जेब में रख सका। जर्मनों को इवानकोव का पीछा करते देख क्रूचकोव ने सबसे पहले उनकी ओर अपना घोड़ा बढ़ाया। दाहिनी ओर से जर्मन घुड़सवार इवानकोव पर वार करने के लिए बराबर उसके पास आते जा रहे थे। इवानकोव चाबुक पर चाबुक जमाते हुए घोड़े को भगाए ला रहा था। उसके चेहरे पर भय अंकित था और आँखें निकली पड़ रही थीं। अपनी काठी पर झुका अस्ताखोव सबसे आगे पहुँचा।

किसी भी क्षण उनके हाथ पड़ सकता हूँ मैं। बस एक यही खयाल था इवानकोव के दिमाग में। दुश्मन का सामना करने की बात सामने आई ही नहीं। उसने अपने लम्बे चौड़े शरीर को गेंद की तरह समेट लिया। उसका सिर घोड़े की अयाल से बराबर आ गया।

एक लम्बे-चौड़े लाल चेहरे वाले जर्मन ने इवानकोव के पास पहुँच कर उसकी पीठ में अपनी बर्छी घुसेड़ दी। बर्छी बदन में एक इंच गहराई तक घुसती चली गई।

"लौटो भाइयो!" पागलों की तरह चीखकर उसने अपनी तलवार खींची और आते हुए वार को रोका और बाईं ओर से आते हुए एक जर्मन की गर्दन उड़ा दी। किन्तु वह खुद घिर चुका था। एक जर्मन घोड़ा उसके घोड़े से आ टकराया। उसका घोड़ा लड़खड़ाया पर फिर सम्हल गया। सामने ही एक दुश्मन का चेहरा चमका।

सबसे पहले अस्ताखोव उस दल तक पहुँचा। उसे खदेड़ दिया गया। उसने अपनी तलवार खींची और साँप की डंकन की मछली की तरह अपनी काठी में ऐंठा। उसकी आँखें मिच गईं, होंठ फड़क उठे और उसका चेहरा मोम की तरह भयानक हो गया। इवानकोव की गर्दन में तलवार

की नोक गड़ी। बाइं ओर से एक जर्मन घुड़सवार उसके ऊपर चढ़ता चला आया और इस्पात की चमक से उसकी आँखों में चकाचौंध पैदा हो गई। उसने तलवार से हमले का जवाब हमले से दिया। लोहा लोहे से टकराया। किसी ने पीछे से उसके कन्धों की पेटी में जबरदस्ती बर्छी घुसेड़ी। पेटी फट गई। मामन्त से पसीने में तर एक बीमार-से और जर्मन ने इवानकोव के वक्ष में अपनी तलवार घुसड़नी चाही किन्तु असफल रहा। तलवार उसने पटक दी और काठी की थली से छोटी बन्दूक निकाली। इस बीच इवानकोव के चेहरे से उसने एक बार भी झपकती आँखें नहीं हटाईं। वह अपनी बन्दूक निकालने में भी असफल रहा क्योंकि किसी जर्मन की बर्छी छीनकर घोड़ा दौड़ाता क्रुचकोव पास आ पहुँचा और उस पर झपट पड़ा। अपने सीने से बर्छी को निकालकर जर्मन डर और अचरज से कराहता हुआ पीछे की ओर लुढ़क गया।

आठ घुड़सवारों ने क्रुचकोव को जीता-जागता पकड़ लेने के लिए उसे चारों ओर से घेर लिया। किन्तु उसने अपने घोड़े को पिछली टांगों पर खड़ा कर ऐसा लोहा लिया कि दुश्मन ने उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालने की कमर कस ली। उसने छीनी हुई बर्छी का उस तरह प्रयोग किया जैसे कि वह ज़मीन पर हो। पीछे हटे हुए जर्मन अपनी तलवारें ले उसकी ओर बढ़े। वे ज़मीन के एक जुते हुए टुकड़े पर इकट्ठे हो गए और ऐसे इधर उधर करने लगे जैसे कि हवा उन्हें झकझोर रही हो।

कज्ज़ाक और जर्मन दोनों ही भय से बौखला उठे। जो भी दुश्मन आगे आता वे उसका जो भी अंग पाते काट डालते—पीठ, बाँह, घोड़ा, हथियार कुछ भी। मौत की आशंका से पागल घोड़े एक-दूसरे को धक्का देते और आपस में टकरा जाते। इवानकोव ने सम्हलते ही लम्बे चेहरे सन के-से बालोंवाले एक पास के जर्मन पर कितनी ही बार वार किया किन्तु उसकी तलवार उसके शिरस्त्राण पर फिसलकर बार बार फिसलती गई।

अस्ताखोव उस व्यूह से निकलकर रक्त की धार बहाता हुआ भाग खड़ा हुआ। जर्मन अफसर ने उसका पीछा किया। अस्ताखोव ने कन्धे से राइफल उतारकर ठीक सीध में निशाना साध गोली चला दी। अधिकारी

८

बाद म इस घटना का वीर-गाथा का रूप द दिया गया। कुचकाव कम्पनी कमाण्डर का बहुत प्रिय था। उसने इस घटना को खूब बढ़ा चढ़ा कर सुनाया और उसे सेंट-जाज का क्रास मिल गया। उसके साथी मारन भी हो न पाए। शूर को नियुक्ति डिवीजनल-स्टाफ के प्रधान कार्यालय म हो गई। वहाँ युद्ध की समाप्ति तक वह सुख-सुविधाओं से घिरा रहा। उसे तीन क्रास और मिले क्योंकि पीतमबुग और मास्को से प्रभावशाली अफसर और औरतें उसे देखने आइ। महिलाओं ने उसे दान प्रेम के कज्जाक को बेशकीमती सिगरेटें और चाकलेट भेंट किये। पहले तो वह उन्हें कोसता रहा लेकिन बाद म अधिकारियों की वर्दियाँ पहने चापलूस स्टाफ के असर से उसने अच्छा दिखावा करना सीख लिया। वह अपने कारोचिन काय को खूब बढ़ा चढ़ाकर वर्णन करता। इसम उसे आत्मा कचोटती लेकिन उसने इस ओर रत्ती भर भी ध्यान नहीं दिया। औरतें उस कज्जाक पराक्रमी को देखकर प्रसन्नता से भर उठतीं। उसके चेहरे पर म चेचक के दाग थे और वह देखने में डाकू-सा लगता था।

जार ने प्रधान कार्यालय का दौरा किया। कुचकाव को जार के सामने पेश किया गया। निकट से सम्राट ने कुचकाव की ओर इस तरह देखा जैसे कि वह आदमी न होकर घोड़ा हो। अपनी भारी पलकें झपकाते हुए सम्राट ने कज्जाक की पीठ ठोंकी।

'शाबाश कज्जाक!' वह बोला और अपने साथ के लोगों की ओर देखकर उसने कुछ मेल्जर पानी माँगा।

कुचकाव का चित्र समाचारपत्रों और पत्रिकाओं म बराबर छपा। उसके नाम से सिगरेटें निकलीं। निजनीनोवोगोरोद के व्यापारियों ने उसे शान से मढ़ी तलवार भेंट की।

अस्ताखोव ने जिस जर्मन अफसर को मारा था उसकी वर्दी प्लाइवुड बोर्ड पर भेज दी गई। फिर जनरल वान रेननकाम्फ ने उसे घमण्ड से गाड़ी पर रखा। इवानकोव और एडजुटेंट ने उसे साथी और सवारी नदी पर जानेवाले ट्रेनों के सामने म निकली। साथ ही आपस या दिया गया गाया भाग उगली गई।

पर सचमुच बात क्या थी ? बात यह थी कि जिन इंसानों का दूसरे इंसानों को तलवार के घाट उतारने का अभ्यास न था मौत के मैदान में एक दूसरे में गुथ गए थे। मरने का डर उनके दिलों में जड़ पकड़ गया था। नतीजा यह कि वे अंधे हो गए थे। उनके सामने जो भी आया था उसी को उन्होंने हलाल कर डाला था। न आदमी का खयाल था न घोड़े का। पर उसी बीच एक आदमी जो गोली खाकर गिर गया था तो वे बौखलाकर भाग खड़े हुए थे। यानी वे आत्मा से चूर चूर होकर लौटे थे।

और इस घटना को वीर-गाथा की संज्ञा दी गई थी।

मोर्चे के नाम से पन तो बाद में ताना था अभी क्या था ! पर सीमा पर घुड़सवारों के बीच छोटी-मोटी मुठभेड़ें और लड़ाइयाँ बराबर होती रहीं। लड़ाई की घोषणा के कुछ दिनों बाद ही जर्मन कमान ने घुड़सवारों की छोटी छोटी टुकड़ियाँ भेजीं। ये टुकड़ियाँ रूसी चौकियों के पास से निकलीं तो उनमें घबराहट फैल गई। साथ ही उन्होंने जासूसी कर दुश्मन की फौज की टुकड़ियों की गिनती भी मालूम कर ली। जनरल कालेदिन की कमान में घुड़सवारों के बारहवें डिविजन ने आठवीं रूसी फौज का मुआइना किया। इस बीच घुड़सवारों का ग्यारहवाँ डिविजन आस्ट्रिया की सीमा तक बढ़ गया था पर लेसुनुव और ब्रोदी के अधिकार के बाद उसका आगे बढ़ना रोक दिया गया था क्योंकि आस्ट्रिया को हंगरी के घुड़सवार मिल गए थे। हंगरी घुड़सवार रूसी यूनिटों पर टूट पड़े थे और उन्होंने उन्हें ब्रोदी तक खदेड़ दिया था।

१६

ग्रिगोरी मेलखाव अपनी पहली लड़ाई के बाद से बराबर एक भयानक आन्तरिक वेदना से पीड़ित रहा था। वह बहुत दुबला हो गया था। उसका वजन घट गया था। वह जागता होता या सोता होता उसे बराबर उस आस्ट्रियन का ध्यान रहता जिसे जंगले के पास उसने जान से मार डाला था। सोता तो वह निरन्तर अपनी पहली लड़ाई सपने में देखता। कभी-कभी उसका दायाँ हाथ भय से फड़कने लगता। इसी हाथ से तो

उसन उस समय वर्छी साधी थी। वह जाग उठता। उसके माथे पर बल पड जात। वह आँखों पर हाथ रखता और सपना भुलाने की चेष्टा करता।

घुडसवारा न पके अनाज को रौंद डाला। खेतों भर म घोडा के खुरों के निशान इस तरह बन गए मानो सारे गलियारा पर ओले पडे हो। फौजियों के भारी बूटो की खटाखट से सडकें गूंज उठीं। उन्होंने गिट्टियाँ उखाड डाली अगस्त की कीचड रौंद डाली। धरती का उदास मुख बमों से दाग-दगीला हो गया। मानव रक्त के प्यासे लोहे और इस्पात के टुकड धरती को बेधत चले गये। रात म क्षितिज पर भूरी आग टिम टिमाने लगी। पेड गाँव और नगर गरमी के दिनों की बिजली की तरह दहकने लगे। अगस्त म यो तो फल पक जाते हैं और अनाज कटाई के लिए तयार हो जाता है पर इस बार आसमान उदास और भूरा रहा। हवा उस रह रहकर झकझोरती रही।

अगस्त खत्म होने को आया। बाग-बगीचों म पत्तियाँ पीली पडी और डंठलें बदलनी हो चली। दूर से ऐसा लगता जैसे कि पडो के बदन म घाव हो गए हैं और उनका खून बह रहा है—मौत के संकेत-सा।

ग्रिगोरी ने अपने साथियों में होनेवाले परिवर्तनों को बडी दिलचस्पी से देखा-समझा। प्रोखोर जिकोव अस्पताल से लौटा तो गाल पर घोडे की नाल का निशान लेकर। उसके होठो के सिरों पर अज्ञात आकुलता और वेदना करवटें बदलती। उसकी पलकें दहल से ज्यादा झपतीं। येगोर मारकोव गालियाँ देने और कसमें खाने का कोई भी मौका हाथ से निकलकर जाने नहीं देता। वह पहले से अधिक फूहड हो गया था और धूप म बैठा हर चीज को कोसता रहता था। यमेल्यान ग्रोशेव ग्रिगोरी के ही गाँव का गम्भीर और होशियार कज्जाक था। उसका चेहरा काला पड गया था जैसे कि जलकर कोयला हो गया हो। उसकी हँसी भद्दी हो उठी थी। उसमें उदासी नजर आती थी। कोई चेहरा ऐसा न था जो बदल न गया हो। हर अन्तर म युद्ध म जमा वेदना के बीज फूल फल रहे थ।

रेजीमेंट को तीन दिन के आराम के लिए मोर्चे से हटा लिया गया। उसकी कमी दोन प्रदेश के जवानों की भरती से पूरी की गई। ग्रिगोरी

की कम्पनी के कज्जाक पास की एक झील में नहाने के लिए तयार हुए कि लगभग तीन वस्ट दूर के एक केन्द्र से घुडसवारों का एक बहुत बड़ा दल गाँव में दाखिल हुआ। कज्जाक झील के बाँध तक ही पहुँच पाए कि घुडसवार टुकडी पहाडी से नीचे उतरी। कमीज उतारते समय प्रोखोर जिकोव ने मुँह ऊपर कर सामने देखा तो चीख उठा अरे ये तो कज्जाक हैं—दोन के कज्जाक।

ग्रिगोरी ने देखा कि साँप की तरह रेंगता हुआ दल चौथी कम्पनी के पडाव वाली सडक पर बढ़ा चला आ रहा है।

मेरे खयाल से नई भरती हुई है।

देखो वह तो स्तीपान अस्ताखोव ही मालूम पडता है सामने तीसरी पंक्ति में। कोशेव ने चिल्लाकर कहा और ठठाकर हँसा।

और वह अनीकुश्का है।

ग्रिगोरी तुम्हारा भाई भी तो है। तुमने देखा?

ग्रिगोरी ने आँखें सिकोडकर प्योत्र के घोडे को पहचानने की कोशिश की। नया घोडा लाया होगा उसने सोचा और अपने भाई को देखने लगा। इस बीच वह बहुत बदल गया था। उसका रंग और साँवला पड गया था। मूँछें बाकायदा कटी हुई थीं।

टोपी उतारकर हिलाता हुआ मशीन की तरह ग्रिगोरी उससे मिलने को बढ़ा। उसके पीछे-पीछे आधी दर्जन अधनंगे कज्जाक भी हो लिए। एंगेलिका और बुरदाक के पौधे उनके पैरों के नीचे रौंद उठे।

आगे-आगे था एक बुजुर्ग-सा कप्तान। उसके चेहरे और सफाचट मूँछों से लगता था कि वह है तो अफसर पर बडा ही ठस दिमाग का आदमी है। उसके पीछे पीछे आ रही थी झूमती झामती टुकडी। टुकडी बगीचे से घूमकर जागीर में दाखिल हुई। ग्रिगोरी ने कप्तान पर निगाह डाली तो वह उसे पूरब के किसी इंसान सा लगा। ग्रिगोरी अपने भाई को देखकर हर्ष से विह्वल हो उठा।

'हलो प्योत्र! उसके मुँह से आपसे आप जोर से निकला।

ईश्वर दया कर! अब हम दोनों साथ रहेंगे मजे में तो हो?

हाँ बिलकुल मजे में हूँ।

'तो तुम अभी सही-सलामत हो ?'

'अभी तक तो हूँ ।'

'घर के लोगों ने तुम्हें स्नेह भेजा है ।'

'सब ठीक तो हैं ?'

'बहुत ठीक हैं ।'

अपने घोड़े के पुट्ठे पर हथेली टेककर प्योत्र ने घोड़े पर बैठे-ही-बैठे अपना पूरा शरीर घुमाया और मुसकराते हुए ग्रिगोरी को सिर से पैर तक देख गया । फिर वह आगे बढ़ा तो पीछे आनेवाले जाने अनजाने कज्जाकों के दलों के बीच आ गया ।

'हलो मलेखोव सारे गाँव के लोगों ने तुम्हें याद किया है ।'

'तुम हम लोगों के परिवार में शामिल हो रहे हो ?'

ग्रिगोरी ने सुनहरे बालों के लच्छों से मिखाइल कोशेवोइ को पहचाना ।

'हाँ अब हम साथ रहेंगे—अनाज के दानों के छितराये जाने के बाद पूलों की तरह ।'

'देखना कहीं कोई घाव न मार दे ।'

'देखा जाएगा ।'

येगोर झारकोव केवल कमीज़ में आया और एक पैर से खड़ा होकर दूसरे पाँयचे में पैर डालने लगा ।

'अच्छा झारकोव भी आया है !' किसी ने चिल्लाकर कहा ।

'हलो स्टलियन ! तो तुम्हारी तो पिछाड़ी बाँधी गई होगी ?'

'मेरी माँ की तबीयत कैसी है ?'

'अभी ज़िन्दा है । उसने तुम्हें प्यार भेजा है उपहार हम लाए नहीं । अपना ही सामान बहुत था ।'

उत्तर सुनकर येगोर बहुत गम्भीर हो गया । उसने अपना दुखी चेहरा छिपा लिया और काँपती टाँगों को व्यर्थ ही पाजामे में घुसेड़ने लगा ।

नंगे चूतड़ों में ही घास पर बैठ गया और अपना चेहरा छिपाने की कोशिश करने लगा । काँपते पैर पाँयचे में जाने से इनकार करने लगे ।

अधनंगे कज्जाक नीले जंगल के पार खड़े रहे । दोन प्रदेश के नये रंगरूटों की कम्पनी सड़क से हाते में आती रही ।

अच्छा अलेक्साद्र यह तुम हो ?
हाँ मैं हू ।
अद्रयेन अच्छा तुम मुझे नही पहचानते ?
अपनी बीवी का प्यार सा यह है फौज की जिन्दगी समझे।
'प्रभु यीशु तुम्हारी रक्षा करें।
बोरिस बालेव कहाँ है ?
किस कम्पनी म था वह ?
मेरा खयाल है कि चौथी कम्पनी म ।
कहाँ का था वह ?
व्यशन्स्काया के जातोन का ।
क्या जरूरत आ पड़ी तुम्हें उसकी ? एक तीसरी आवाज
बातचीत के बीच म टपकी ।
उसके लिए एक चिट्ठी लाया हू मैं ।
'वह तो कुछ दिन पहले मारा गया—रायग्रानी म ।
सचमुच ?
यक़ीन करो मैंने तो सारा-कुछ अपनी आँखों से देखा है गोली सीने में लगी थी'
कोई वोरोनया-येवका का है यहाँ ?
'नही आगे पूछ लना ।
दस हाने म लाया गया । बाकी सरदार नहाने को लौटे । बाद म नये लोग भी वहीं आ गए । ग्रिगारी अपने भाई के पास चला गया । बाँध की नम मिट्टी से बदबू-सी आ रही थी । किनारे का पानी हरा था और उसमें चमक थी । ग्रिगारी अपनी कमीज की सिलवटों और सिलाई से जूँ बीन-बीनकर मारते हुए भाई म बातें करने लगा ।
'प्योत्र मैं टूट चुका हूँ । मैं आज उस आदमी की तरह हूँ जिसे मौत के गढे म गिरने क लिए सिर्फ एक धक्के की जरूरत है । मैं तो जसे चक्की के दो पाटों क बीच आ पड़ा हूँ । सालों ने मुझे कूट कूट कर मुँह के कुचले हुए कौर की तरह थूक दिया है। उसकी आवाज दद से फटने-सी लगी । माथे पर बल पड़ गए । प्योत्र को चिन्ता हुई । लगा

कि इस बीच ग्रिगोरी बहुत ही बदल गया है और खासा परेशान है।

क्यों क्या बात है ? प्योत्र ने कमीज उतारते हुए पूछा। उसका सारा बदन गोरा था सिर्फ गर्दन के पास का हिस्सा धूप से साँवला पड़ गया था।

बात यह है ग्रिगोरी तुरन्त ही बोला। उसके स्वर में अधिक कटुता घुल गई हम लोगों का आपस में भिड़ा दिया है। हम भेड़िया से भी गए-बीते हो गए हैं। हर जगह नफरत का बोलबाला है। हम सबमें जहर घुस चुका है। मेरा खयाल है कि अगर मैं किसी को दाँत से काट लूँ तो वह पागल हो जाएगा।

क्यों तुम्हें क्या किसी को मारना पड़ा ?

हाँ ! लगभग चीखते हुए ग्रिगोरी ने कमीज मोड़-माड़कर नीचे पटक दी। फिर वह दूसरी ओर देखता अपने गले को अँगुलियों से दबाता इस तरह बैठा रहा जैसे कि कोई गला उसका गला घोंट दे रहा हो और वह उसे निगलकर बाहर कर देना चाहता हो। उसने आँखें फेर लीं।

कहो कहो ! अपने भाई की नजर बचाते हुए प्योत्र ने आदेशात्मक स्वर में कहा।

मेरी आत्मा काट रही है मुझे। मैंने बर्छी घुसेड़ दी एक आदमी के बदन में गरम-गरम खून मैं किसी भी कीमत पर ऐसा नहीं कर पाता लेकिन मैंने किसी दूसरे की जान ली आखिर क्यों ?

खैर

खैर नहीं है। मैंने उसका मार डाला और आज उसी सूअर के कारण ही मेरा दिल दुखी है। वह दोगला मुझे सपनों में दिखाई देता है। क्या गलती थी मेरी ?

अभी तुम उसके आदी नहीं हुए हो जाओगे।

क्या तुम हमारी कम्पनी के साथ रहोगे ? अचानक ही ग्रिगोरी ने पूछा।

'नहीं मेरा रेजीमेंट सत्ताइसवाँ है।

मैं तो समझा कि तुम्हीं हमें मदद दोगे।

हमारी कम्पनी तो पदल या ऐसी ही किसी और डिवीजन के

साथ नत्थी की जा रही है। लेकिन हमारे साथ तुम्हारे कुछ एवजी आये हैं

कम उम्र हैं अभी।

अच्छा आओ थोड़ा तरा जाए।

ग्रिगोरी तुरन्त ही अपना पाजामा उतारकर बाँध में पानी में हिल गया। शरीर धूप से साँवला और झुके कन्धों के बावजूद कसा हुआ। प्योत्र का पहले की तुलना में वह अधिक प्रौढ़ लगा। उसने हाथों को ऊपर उठाकर पानी में गोता लगाया तो एक हरी लहर उसके ऊपर से लहरती निकल गई। वह बीच में नहाते कज़ाकों की ओर तरने लगा तो उसकी हथेलियों ने जैसे पानी को दुलराया। उसके कन्धे एक गति से धीरे धीरे हिले।

प्योत्र को प्रार्थना वाले क्रॉस को गर्दन से उतारने में देर लगी। उसने क्रॉस अपने कपड़ों के ढेर में रखा। वह सावधानी से पानी में घुसा और बदन भिगोते हुए ग्रिगोरी को पकड़ने के लिए हाथ-पैर चलाने लगा। दोनों भाई दूसरे किनारे की ओर बढ़े। वहाँ रेत और झाड़ियाँ थीं। तरने में ग्रिगोरी के चित्त की परेशानी कम हुई और उसे कुछ शान्ति मिली। अब वह अधिक संयम से बातें करने लगा। बोला मैं तो ऐसा डूब गया कि जुएँ मुझे खाती रहीं और मैं देखता रहा कि किसी तरह घर पहुँच सकता। मेरे पंख होते तो उड़कर पहुँच जाता वहाँ। बस सिर्फ एक झलक देखना चाहता हूँ कि कैसे हैं सब लोग।

नताल्या अपने यहाँ ही रहती है।

पापा और माँ कैसे हैं?

मज़े में हैं लेकिन नताल्या अब भी तुम्हारी राह देखती रही है। उसको भरोसा है कि तुम उसकी ओर में लौट आओगे।

ग्रिगोरी ने मुँह में भरा पानी कुल्ला कर दिया। मुँह से कुछ नहीं कहा। प्योत्र ने सिर घुमाकर अपने भाई की आँखों में आँखें डालनी चाहीं।

तुम्हें अपनी चिट्ठी में दो शब्द उसके लिए भी लिख देने चाहिएँ। वह सिर्फ तुम्हारे लिए जी रही है।

क्या अब भी वह टूटे धागे को जोड़ने के सपने देखती है?

गई वह उम्मीद के सहारे है वही भली लड़की है। अपने मामले म मस्त भी। किसी को पास फटकने नही देती।

उसकी दूसरी शादी हो जानी चाहिए।

तुम्हारे मुँह स यह बात बडी ही अजीब लगती है"

इसम अजीब बात क्या है ? सही तरीका तो यही है।

खर यह तुम्हारा मामला है। मैं बीच म नहीं पडता।

और दून्या के क्या हाल चाल हैं ?

दून्या सयानी हो गई है। इस साल तो इतनी बढ़ी है कि तुम उस पहचान नही पाओगे।

अच्छा ! ग्रिगोरी ने अचरज स कहा पर उस खुशी भी हुई।

भगवान् कसम ! अगल साल उसकी शादी हो जाएगी और हम वोदका चख तक न पाएँगे। हो सकता है कि तब तक हम लोग मर-खप भी जाएँ। भाड म जाए यह सारा तूफान !

व अगल-बगल लटे हुए सहती-सहती धूप का मजा लेते रह।

इसी बीच मीशा कोशवोई बग़ल स तरता हुआ निकला ग्रीशा पानी म आओ !

' नही मैं जरा सुस्ता रहा हू।

एक गुबरल को रेत म दबाते हुए ग्रिगोरी ने पूछा अक्सीनिया का कोई खबर मिली ?

लड़ाई छिडन के जरा पहल मैंने उसे गाँव म देखा था।

''वह वहाँ क्या करने आई थी ?

' वह आई थी अपनी चीजें अपने आन्टी के यहाँ स लेन।

तुम्हारी बात हुई उसम ?

' सिफ दिनभर ही रही वह यहाँ। देखन में ठीक और खुश लगी। लगता है कि इलाके पर उसके अच्छे दिन स गुजर रहे हैं।

और स्तीपान का क्या हाल चाल है ?

उसन अक्सीनिया का सारा सामान कायदे स दे दिया। काफी भलमनसाहत बरती। लकिन तुम होशियार रहना। सुना है कि एक न पहली लड़ाई म वह तुम्हें गोली

से न उड़ा दे तो कोई बात नहीं। वह तुम्हें माफ नहीं कर सकता।

"मैं जानता हूँ।"

"मैं नया घोड़ा लाया हूँ।" प्याव ने बात बदली।

बैल बेच दिए?

एक सौ अस्सी में। घोड़ा एक सौ पचास में आया। अच्छा है!

अनाज कैसा हुआ?

मज का हुआ। अनाज के घर में आने से पहले ही हमारी भरती हो गई।

अब बातचीत घरेलू समस्याओं पर आई और तनाव समाप्त हो गया। ग्रिगोरी ने घर के समाचार बड़ी उत्सुकता से सुने। थोड़ी देर को तो ऐसा लगा जैसे कि वह घर पर ही हो।

वे कज़्ज़ाकों की भीड़ के साथ हाने में लौटे। बगीचे की चहारदीवारी पर स्तीपान उससे आ मिला। वह अपने बाल काढ़ता आ रहा था। ग्रिगोरी के पास आकर बोला, हलो दोस्त!

हलो! ग्रिगोरी ने रुककर कहा और उसके चेहरे की ओर थोड़ी परेशानी और थोड़े अपराध की भावना से भरकर देखा।

'तुम मुझे भूल गए न?

क़रीब क़रीब।

लेकिन मैं तुम्हें नहीं भूला। स्तीपान मुसकराया और आगे जाते कारपोरल की बग़ल में हाथ देकर बिना रुके आगे बढ़ गया।

सूरज डूबने के बाद डिवीज़नल-स्टॉफ ने टेलीफोन से ग्रिगोरी की रेजीमेंट को मोर्चे पर जाने का आदेश दिया। पन्द्रह मिनट में कम्पनियाँ इकट्ठी हो गई और घोड़ों पर सवार होकर लोग चल दिए।

सब एक-दूसरे से विदा लेने लगे कि प्याव ने अपने भाई के हाथ में एक मुड़ा हुआ काग़ज़ दिया।

यह क्या है? ग्रिगोरी ने पूछा।

मैंने तुम्हारे लिए एक प्रार्थना लिखी है। साथ लेते जाओ इस

क्या फ़ायदा होगा इससे?

हँसी न उड़ाओ ग्रिगोरी!

मैं हँसी नहीं उड़ा रहा।

अच्छा भया विदा ! मोर्चे पर सबसे आगे तुम्हीं न बढ़ जाना। गरम खून के लोगों को मौत बहुत पसन्द करती है। होशियारी से रहना। प्योत्र ने चिल्लाकर कहा।

तो फिर प्रार्थना किसलिए है ?

प्योत्र ने हाथ हिलाया।

कुछ देर तक तो कम्पनियाँ बिना सावधानी बरते बढ़ती रहीं। फिर सार्जेंटों ने आदेश दिया कि चुपचाप चला जाए और सिगरेटें बुझा दी जाएँ।

दूर के जंगल में धुएँ की दुमवाली लपटें लौ देती रहीं।

१०

मारक्का की निल्क की एक छोटी भूरी नोटबुक—कोने फटे और कटे हुए—शायद एक लम्बे अर्से तक जेब में पड़े रहने के कारण—पन्ने टेढ़ी शानदार लिखाई से भरे हुए

जान कब से अपने मन के भाव शब्दों में बाँधने की बात सोचता रहा हूँ। मैं कॉलेज-डायरी क़िस्म की चीज़ अपने पास रखना चाहता हूँ। सबसे पहले उस लड़की की चर्चा करूँ। मेरी जान-पहचान उससे फरवरी में हुई—तारीख याद नहीं। जान-पहचान कराई उसके पड़ोस के बोयारिन्किन नाम के एक विद्यार्थी ने। उन दोनों से मुलाक़ात हुई सिनेमा के बाहर। बोयारिन्किन ने उसका परिचय मुझसे कराते हुए कहा लीज़ा म्योनेस्काया क्षेत्र की है। इनके साथ मधुर व्यवहार करना तिमोफ़ेइ। बड़ी अच्छी लड़की है। इस पर मैंने कुछ यों हीं-से शब्द कहे और उसका कोमल पसीने से तर हाथ अपने हाथ में ले लिया। इस तरह मैं मिला इस एलिज़ावेता मोखोवा से। लड़की मुझे पहले दिन ही बिगड़ी हुई लगी। इस तरह की औरतों की आँखों में कुछ-न-कुछ ऐसा होता है जो जाने कितनी बातें सहज ही बता जाता है। मुझे यह मानने में कोई संकोच नहीं कि उसने मेरे चित्त पर कोई अच्छा असर नहीं डाला। हो सकता है कि इसका कारण रहा हो उसके हाथ का

गीलापन। मैं कभी ऐसे किसी व्यक्ति से नहीं मिला जिसका हाथ इतना पसीना छोड़ता हो। फिर उसकी वे आँखें सचमुच खूबसूरत होने पर भी और सुहाने-सुहाने हलक-हलक ढग से चमकती रहने पर भी कुछ अजीब सी थीं कुछ खटकता था उनमें।

वास्या मेरे पुराने गहरे दोस्त मैं यह डायरी जान-बूझकर एक खास ढंग से लिख रहा हूँ कहीं-कहीं रूपकों का भी सहारा लेता हूँ क्योंकि मैं चाहता हूँ कि यह तुम्हें मिले तो तुम चीजों को पूरी तरह जान समझ सको। इसे मैं भेजूँगा तुम्हारे पास सेमीपलातिन्स्क पर येनिझावेता मोखोवा की इस मोहब्बत के तूफान के बाद—अभी नहीं अभी तो मोहब्बत की यह दास्तान शुरू ही हुई है। मेरा ख्याल है कि डायरी से तुम्हारा खासा मनबहलाव होगा। मैं घटनाओं का उसी क्रम से वर्णन करूँगा

खैर मैंने तुम्हें बताया कि मेरा उससे परिचय हुआ और हम तीनों ही रद्दी-सी फिल्म देखने गये। बोयारिन्किन चुप रहा। उसने अपने दाँतों के दर्द की शिकायत की। और मेरी समझ में ही न आया कि मैं बातें करूँ तो क्या करूँ ? हम पड़ोस के ही निकले यानी पास के इलाकों के। सो कुछ देर तक तो स्तेपी मैदान के दृश्या आदि की कहानियाँ चलती रहीं पर फिर गाड़ी ठप हो गई। मैं चुप होकर बात का विषय खोजता रहा और वह लड़की चुप्पी सहती रही—बिना किसी खास तकलीफ के।

पता चला कि वह डॉक्टरी पढ़ रही है और दूसरे साल की छात्रा है उसके परिवार के लोग व्यापार करते हैं और उसे तेज चाय और अम्मों सोव की संगनी का शौक है। तुम खुद सोचो जिस लड़की की आँखें हलके पीले रंग की भाड़ मारती हों उस करीब से जानने के लिए इतनी सी बातें कुछ भी तो नहीं हैं ? तो हम उसे ट्राम के अड्डे तक पहुँचाने गये। वहाँ हमने विदा ली तो उसने मुझसे कहा—कभी मेरे यहाँ आना। मैंने उसका पता नोट कर लिया।

२६ अप्रैल

आज मैं उसके यहाँ गया। उसने चाय और हलवे से मेरी खातिर की। सच तो यह है कि उसमें कुछ बात है। जबान तेज है मामूली ढंग से होशियार है। लेकिन उसे पूरा अधिकार प्राप्त है मार्क्सवाद के जो

मन चाहे वह करो माल सिद्धान्त पर। दूर से ही आत्मा को गन्ध मिल जाती है इसकी। घर देर से लौटा और सिगरेटें रोल कर ऐसी बातों के बारे में सोचता रहा जिनका उससे किसी तरह का कोई सम्बन्ध नहीं। खास तौर से सोचता रहा स्वैन-कोपेक के बारे में। मेरा सूट बिलकुल जवाब दे चला है पर जेब खाली है यानी यह कि कुल मिलाकर हालत पतली है।

१ मई

आज एक महत्त्व की घटना घटी। हम सोकोल्निकी-पार्क में मज़े में समय गुज़ार रहे थे कि एक उलझन में फँस गए। वहाँ हो रही थी मज़दूरों की मई दिवस की मीटिंग। लेकिन अचानक ही आ गए पुलिस के लोग और कुछ कज़्ज़ाक और लगे मीटिंग भंग करने। इतने में हां एक शराबी ने कज़्ज़ाक के एक घोड़े को बेंत चुभा दिया। बस कज़्ज़ाक उबल पड़ा और लगा चाबुक बरसाने। मैंने बीच-बचाव करने का निश्चय किया और उस ओर बढ़ा। विश्वास करो बिलकुल ऊँचे विचार से बढ़ा। मैंने कज़्ज़ाक को उजड्ड और जाने क्या-क्या कहा। उसने मुझ पर चाबुक उठाया तो मैंने उससे ज़ोरदार शब्दों में कहा मैं भी कज़्ज़ाक हूँ और कामेन्स्काया प्रदेश का हूँ। अगर तुमने मुझ पर हाथ उठाया तो तुम्हारी हड्डी-पसली एक भी साबुत न छोड़ूँगा कज़्ज़ाक स्वभाव का अच्छा था—कम उम्र था—फौज में अभी थोड़े ही दिन रहा था इसलिए दिमाग़ खराब न हुआ था। उसने जवाब दिया मैं उस्त खोपेस्काया का हूँ और मुट्ठियाँ मज़े में जमाता हूँ खैर हम शान्ति से ही एक-दूसरे से विदा हुए। अगर वह मेरे खिलाफ अंगुली भी उठा देता तो झगड़ा हुए बिना न रहता और उस हालत में मेरी मृत्यु भी नौबत हो सकती थी

अब पूछोगे कि तुम बीच में पड़ने क्यों चले गये? यार बात यह है कि लीज़ा मेरे साथ थी और जब वह मेरे साथ होती है तो मुझमें एक बड़ी ही बचकानी-सी इच्छा जगती है। इच्छा यह होती है कि कुछ-न-कुछ बहादुरी कर दिखाऊँ। सच मानो ऐसा लगता है कि मैं आत्मा नहीं छोटा-सा मुर्ग़ा हूँ और मेरे सिर पर एक लाल सी कलगी उगती चली

आ रही है आखिर मुझे यह हो क्या रहा है!

३ मई

आजकल जैसा दिल और दिमाग रहता है उसे देखते हुए शराब पीने के अलावा मेरे सामने कोई और चारा ही नहीं। और उस पर मजा यह है कि टका पास एक नहीं है। पतलून बहुत नाजुक जगह से फट गया है। रफू भी क्या ही करा पाऊंगा! उसे सिलवाने की कोशिश करने के मानी होंगे तरबूज को सिलवाने की कोशिश करना' बोलोद्का स्पेजनेव इधर आया था। कल मैं दफ्तर में हाजिर रहूँगा।

४ मई

पापा से रूबल मिल गए हैं। बड़ी लम्बी चौड़ी चिट्ठी भी मिली है मुझे राई बराबर भी शर्म महसूस नहीं होती। क्या हो अगर उन्हें पता लग कि उनके बेटे के चरित्र का जोड़-जोड़ इस तरह खुल रहा है? मैंने एक सूट खरीद लिया है मेरी टाई की तरफ बग्घी के कोचवानों तक का ध्यान खिंच आता है आज शहर की सबसे शानदार बाल काटने की दूकान से दाढ़ी बनवाकर निकला तो बजाज के सहायक की तरह ताजगी का अनुभव हुआ। बुलवार के नुक्कड़ पर खड़ा पुलिस का सिपाही मुझे देखकर सहज ही मुसकरा पड़ा। पुराना हरामजादा है! खैर जो बीत गई सो बीत गई उसका जिक्र क्या! बिलकुल औरों की ही बात कहो कि आज लीजा नजर आ गई। नजर उस पर पड़ी ट्राम की खिड़की से। उसने अपना दस्ताना हवा में लहराया और मुसकराई। कैसा लगा तुम्हें यह सुनकर?

८ मई

'प्यार के सामने हर जमाने ने हथियार डाल हैं' अब भी है ताचाना के पति का चेहरा मेरी कल्पना की आँखों के सामने—मुह खुला हुआ मेरी ओर तनी बन्दूक की नली की तरह। मेरा बड़ा जी चाहा कि अपनी जगह से नीचे उतर उसके मुँह में थूक दूं। जब भी मुझे 'हथियार डाले हैं' शब्दों का ध्यान आता है तो मुझे जमुहाई-पर-जमुहाई आनी शुरू जाती है शायद नशा की खराबी के कारण ऐसा होता है

मगर मसला तो यह है कि जरा मुझे देखिए जरा मेरी उम्र देखिए और जरा यह देखिए कि मैं मोहब्बत फरमाता हूँ। यसे यह बात लिखने बठता हूँ तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं लीजा के यहाँ गया। बड़ी लम्बी-चौड़ी भूमिका बाँधी शुरू शुरू में। वह ऐसी बनी जैसे कि कुछ समझती ही नहीं और बात बदलने लगी। क्या अभी बहुत जल्दी है? शैतान ले जाए इसे इस नये सूट ने तो सब-कुछ गड्ड मड्ड कर दिया है। मैं शीशे मे अपना चेहरा देखता हू तो लगता है कि बिजली गिरकर रहेगी। मैं तो सोचता हूँ कि यही वक्त है। सच पूछो तो सीधा-सादा दो-टूक हिसाब अपने से सधता है और इसी से अपनी जीत होनी है। मगर मैं अभी दो महीने के अन्दर अन्दर प्रस्ताव नहीं करूंगा तो बहुत देर हो जायगी। मेरा पतलून घिस जाएगा और तब प्रस्ताव प्रस्ताव ही रह जाएगा

ये बातें लिखते समय मैं अपनी तारीफ आप करते थक नहीं रहा। घमण्ड से तना जा रहा हूँ। कैसा शानदार योलमेन है मुझमें अपने जमाने के अच्छे-से अच्छे लोगों के अच्छे-से-अच्छे गुणों का! तुम्हें आग-सा दहकता आवेश मिलेगा तो यह भी प्यारा लगेगा। और उसके साथ मिलेगी जमे हुए तर्क की आवाज। सारे सद्गुणों का रूसी-सलाद समझो। बाकी गुणों की चर्चा यहाँ नहीं करता। एक से एक हैं कि तारीफ को लफ्ज न मिलें।

खैर तो जहाँ तक लीजा का मामला है मामूली परिचय के आगे बात अभी तक नहीं बढ़ पाई। हमारी बातचीत के बीच में बूढ़ी मकान मालकिन। वह उस गलियारे में न गई और केवल उधार माँगने लगी। पर लीजा ने इन्कार कर दिया। बस केवल उसके पास थे और यह बात मैं पक्की तरह जानता था। इसीलिए ना करते समय उसने आवाज में जिस तरह सचाई भरी और हलके-पीले रंग की झाड़ मारती अपनी आँखों में जिस तरह ईमानदारी घोली उसकी एक तसवीर सी खिंच गई मेरे सामने। इसके बाद तबीयत उखड़ गई और प्यार की बातें करने को मेरा जी ही न हुआ।

१३ मई

मैं सचमुच उतार में आ गया हूँ। मुझे सचमुच प्यार हो गया है।

इसम सन्देह और शक की कोई गुंजाइश नहीं । हर चीज मुकम्मल मोहब्बत का अफसाना कहती है । कल मैं प्रस्ताव सामने रखूँगा । अभी तक मैंने अपना मसाला तयार नहीं किया है ।

१४ मई

सारा-कुछ बहुत ही अप्रत्याशित ढंग से सामने आया । पानी की फुहार पड़ रही थी फुहार बड़ी प्यारी प्यारी-सी लग रही थी । हम मस्कोवामा के किनारे किनारे चल आ रहे थे । हवा पानी की बूँदों को पटरी तक उड़ाए ला रही थी। ऐसे में मैं बात कर रहा था और वह यों चुप थी जैसे कि सोच म डूबी हो । पानी का एक कतरा उसके टोप के छज्जे से बह कर गालों पर आ गया । वह बड़ी ही हसीन लगी । अब यहाँ अपने और उसके बीच की बातें लिखे देता हूँ—ज्यों-की-त्यों—

येलिजावेता सर्गेवना मैंने अपने मन की भावना तुम्हारे सामने रख दी" अब अपनी बात तुम जानो

मुझे तुम्हारी ईमानदारी म सन्देह है

मैंने बेवकूफ की तरह अपने कन्धे झटके और बुझी हुई तबीयत से कहा तुम कहो तो मैं कसम खा लूँ या जो कहो सो करूँ ?

वह बोली सुनो तुम तो तुर्गनेव क उपन्यास के चरित्र की तरह बातें करते हो अपनी बात और आसान बनाकर और साफ ढंग से नहीं कह सकते ?

इससे आसान और साफ और क्या हो सकता है ? मैं तुम्हें प्यार करता हूँ ।

और अब आगे क्या होगा ?

आगे सब-कुछ तुम पर निर्भर करता है ।

'तुम चाहते हो कि मैं कहूँ— मैं भी तुम्हें प्यार करती हूँ

मैं चाहता हूँ कि तुम कुछ तो कहो ही—

जानते हो निकोलाई मैं क्या कहना चाहती हूँ । मैं कहना चाहती हूँ कि मुझे तुम पसन्द हो लेकिन थोड़े पसन्द हो तुम कद म लम्बे बहुत हो ।

अभी तो और कद बढ़ेगा मेरा

लेकिन हम एक-दूसरे को जानते ही कितना हैं ? बहुत ही कम जानते हैं हम

दस साल साथ रहेंगे तो हम एक-दूसरे को छरो जान जाएँगे

उसने गुलाबी हथेली से अपना पसीने से भीगा गाल रगड़ा और बोली 'खैर तो ठीक है हम लोग साथ रहेंगे आगे की बात आगे से है लेकिन तुम मुझे थोड़ा समय दो मुझे अपना पिछला लगाव तोड़ना पड़ेगा'

किससे लगाव है तुम्हें ? मैंने पूछा।

तुम उसे नहीं जानते वह डॉक्टर है औरतों और मर्दों की गुप्त बीमारियों का

'तो तुम कब तक खाली हो जाओगी ?

आशा है 'शुक्रवार तक'

तो हम एक साथ रहेंगे मेरा मतलब है उसी फ्लैट में ?

हाँ मेरा खयाल है कि इस तरह आसानी ज्यादा होगी तुम मेरे फ्लैट में चले आओ—

पर क्या ?

मेरा कमरा बड़ा आरामदेह है साफ-सुथरा है और मालकिन बहुत ही बढ़िया औरत है।

मैंने कोई आपत्ति नहीं की। त्वरस्काया के मोड़ पर हम एक दूसरे से अलग हो गए। अलग होने के पहले हमने एक-दूसरे को चूमा तो उधर से निकलती एक औरत ताज्जुब से ठिठक रही।

भविष्य के गर्भ में आखिर क्या है ?

२२ मई

जिन्दगी नहीं जी रहा हूँ रस की धारा में बह रहा हूँ। पर आज मेरे 'रस' पर सहसा ही बादल घिर आए। लीडा ने कहा— तुम अपना जाँघिया बदल डालो बस इसमें कोई शक नहीं कि मेरा जाँघिया है बहुत ही पुराना और मस्ताहाल लेकिन रूबल रूबल तो चाहिये मेरे पास जो कुछ है उसी से हम जा रहे हैं और उसमें भी अब ज्यादा कुछ बाकी नहीं है कोई कामकाज ढूँढना पड़ेगा

२४ मई

आज मैंने नया जाँघिया खरीदने का फ़ैसला किया पर उम्मीद नहीं थी कि लीज़ा ने एक दूसरा ही खर्च निकाल दिया। उसके मन में हसरत का तूफ़ान-सा उठा कि किसी अच्छे रेस्तराँ में खाना खाया जाए और उसके लिए रेशमी मोज़े खरीदे जाएँ। सो हमने रेस्तराँ में खाना खाया और सिल्क के मोज़े खरीदे। पर मेरी तो हालत पतली है। मेरे पास जाँघिया बिलकुल नहीं है।

२७ मई

लीज़ा मुझे चूसे डाल रही है। मेरा बदन ऐसा हो गया है जैसा सूरजमुखी के फूल का सूखा डण्ठल। वह औरत नहीं है धधकती हुई आग है!

२ जून

हम आज सुबह नौ बजे जाकर उठे। मुझे अपने अँगूठे ऐंठने की कम्बख्त ऐसी आदत है कि हद है! पर आज उसी आदत ने नये गुल खिलाये। लीज़ा ने पलंग की चादर एकतरफ़ खींच ली और देर तक मेरे पैरों को देखा-समझा। फिर अपना फ़ैसला देती हुई बोली—

तुम्हारा पैर है कि घोड़े का खुर! उससे भी बुरा है। और, तुम्हारे अँगूठे पर बाल हैं, छि! उसने बहुत ही परेशानी से अपने कन्धे झटके, पलंग के कपड़ों में अपना मुँह छिपा लिया और दीवार की तरफ़ मुँह कर लेट रही।

मैं बिलकुल हैरान हो गया। मैंने अपना अँगूठा बिलकुल छिपा लिया और उसके कन्धे पर हाथ रखा, लीज़ा, सुनो।

तुम मुझे अकेला छोड़ दो।

लीज़ा, इससे क्या फ़ायदा होगा? मैं अपने पैर का अँगूठा बदल नहीं सकता। तुम समझो कि कोई आर्डर देकर तो बनवाया नहीं है। और जहाँ तक बालों का सवाल है कोई नहीं जानता कि बाल अब कहाँ उगेंगे। वे तो हर जगह उग आते हैं। तुम तो डॉक्टरी पढ़ रही हो। तुम्हें प्रकृति के नियमों की जानकारी होनी चाहिए।

वह मुड़ी। पीले रंग की झाँई देती उसकी आँखों में भयानक-सी

समझ आई। बोली भगवान् के लिए बदबू सोखने वाला थोड़ा-सा पाउडर ले आओ। तुम्हारे घरा मे ऐसी बू आती है जैसे आदमी की लाश से।

मैंने तख्त का सहारा लेते हुए कहा और तुम्हारे हाथ जो हमेशा पसीने से तर रहते हैं सो ? वह चुप हो गई। या कहूँ कि इस तरह मेरी आत्मा पर एक काला बादल घिर आया।

४ जून

आज हम मास्को नदी की सैर करने गये—नाव पर बैठकर। दोन के गाँव-गवई के इलाको की सहज ही याद हो आई। लीजा का व्यवहार बड़ा ही अटपटा होता है। उसे शोभा नहीं देता। वह मुझ पर फिकरे कसती रहती है और ये फिकरे कभी-कभी बड़े रूखे होते हैं। उसकी ऐसी हर बात का जवाब बात में दिया जा सकता है पर इससे हमारे सम्बन्ध टूट जाएँगे और यह मैं चाहता नहीं। तमाम बातों के बावजूद उसके प्रति मेरा मोह दिन-पर-दिन बढ़ता ही जाता है। बात सिर्फ इतनी है कि वह बिगड़ी हुई लड़की है। लेकिन मुझे डर है। शायद ही मेरे असर में इतनी ताकत हो कि उसके चरित्र में कोई बड़ा फेर-बदल हो सके। बड़ी प्यारी-प्यारी-सी है। हाथ से बेहाथ हो गई है। दुनिया में अभी लड़की है पर उतनी लुटी है जितना अभी मैंने सुना ही है।

सो हम घर लौटे तो रास्ते में वह मुझे एक केमिस्ट की दूकान में घसीट ले गई और मुस्कराते हुए टैल्कम पाउडर और जाने क्या-क्या अंड-बंड खरीद लिया। कहने लगी इससे बदबू दबी रहेगी।

मैं शानदार ढंग से आदर से झुका और बोला धन्यवाद !

गधापन है यह सब लेकिन है।

७ जून

दिमाग उसके पास थोड़ा है पर बड़ी तमाम बातें जानती है।

हर दिन रात को सोने से पहले मैं पैर गरम पानी में धोता हूँ उन पर यू डि कोलोन छिड़कता हूँ और जाने क्या-क्या ऊलजलूल की चीजें लगाता हूँ। उबकाई आने लगती है।

१६ जून

उसके साथ रहना दिन पर दिन मुश्किल ही होता जाता है। कल उसे मिरगी आ गई। भला कैसे रहा जाए ऐसी औरत के साथ!

१८ जून

हम दोनों के बीच कुछ भी एक-सा नहीं है। हमारी तो जबानें भी अलग अलग हैं।

आज सुबह वह डबलरोटी खरीदने चली तो पैसा के लिए उसने मेरी जेब में हाथ डाला। उसके हाथ लग गई यह डायरी। उसने इसे देखा उलटा-पलटा। बोली यह क्या चक्कर है?

मेरे शरीर का अंग अंग जलने-सा लगा— कहीं वह इसे पढ़ने लगी तो? मैंने बहुत ही स्वाभाविक स्वर में उत्तर दिया हिसाब किताब लिखा है इसमें "मामूली नोटबुक है। मुझे अपने जवाब पर खुद ही ताज्जुब हुआ।

उसने बहुत ही अन्यमनस्क भाव से डायरी मेरी जेब में डाल दी और रोटी लेने चली गई। मुझे इस मामले में और होशियारी बरतनी चाहिये। इस तरह की सीधी बातों का असर तभी पड़ता है जब दूसरा आदमी उनके बारे में कुछ भी नहीं जानता।

खैर इन बातों से मेरे मित्र बाल्या का दिलबहलाव होगा।

२१ जून

लीजा को देखकर तो मैं आश्चर्य से ठगा रह जाता हूँ। वह इक्कीस साल की है। इस तरह बिगड़ने और हाथ से बेहाथ होने का समय उसे कब और कैसे मिला? कैसे हैं उसके परिवार के लोग और किसका हाथ है उसके विकास में? ये सारे सवाल हैं जिनके जवाब का मुझे बहुत ही दिलचस्पी से इन्तजार है। लड़की कयामत की हसीन है और अपने नाक-नक्श को हर तरह ठीक रखने में गौरव का अनुभव करती है। अपने को पूजने का नशा है उसको। दुनिया में उसके और कुछ उसके लिए है ही नहीं। मैंने कई बार उससे गम्भीरता से बातें करने की कोशिश की पर मुझे लगता है कि पुराने-से-पुराने आस्थावान का ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास उठवा देना कहीं आसान है पर लीजा

को नए सिर से सीखें देना और एक नए साँचे में ढालना बड़ी मुश्किल।

हमारा साथ इतना बेहूदा हो गया है कि एक साथ रह पाना अब सम्भव नहीं दीखता। इस पर भी तार तोड़ने में मेरा मन हिचकता है। मुझे यह मानने में कोई संकोच नहीं कि तमाम बातों के बावजूद मैं उसे पसन्द करता हूँ।

२४ जून

सब-कुछ तड़पड़ हो गया। आज हमने एक-दूसरे से दिल खोलकर बात की। लीज़ा की शिकायत है कि मैं उसके शरीर की भूख मिटा नहीं पाता सम्बन्ध टूट रहे हैं इस बात को अभी तक नियमित रूप नहीं दिया जा सका है शायद कुछ ही दिनों में दे दिया जाएगा।

२६ जून

उसे तो स्टलियन घोड़ा चाहिये असली स्टलियन।

२८ जून

उसे छोड़ना बहुत ही कठिन है मेरे लिए। वह तो मुझ पर में चिपके कीचड़ की तरह घसीटती जाती है। आज हम सवारी से वारोबयोवी पहाड़ियों पर गये। वह होटल की खिड़की के पास जा बैठी। धूप टेढ़ी छन से छनकर उसके बालों के छल्लों पर आने लगी। उसके बाल पक्के सोने के रंग के हैं तुम हो तो एक कविता गढ़ दो उन पर।

४ जुलाई

मैंने अपना काम छोड़ दिया है। लीज़ा ने मुझे छोड़ दिया है। आज मैंने बीयर पी—स्त्रेल्नेव के साथ। कल हमने वोदका पी थी। लीज़ा और मैं यानी हम पढ़े लिखे लोगों की तरह एक-दूसरे से अलग हुए—जैसे होना चाहिए। कुछ भी बेमतलब की बात नहीं हुई। आज मैंने उसे एक जवान के साथ दिमीत्रोव मार्ग पर देखा। जवान ने घुड़सवारी के बूट पहन रखे थे। लीज़ा ने मेरा अभिवादन स्वीकारा पर ज़रा रोब-दाब के साथ।

अब मुझे डायरी लिखनी बन्द कर देनी चाहिए। मूल-स्रोत ही सूख गया है।

३० जुलाई

आशा नहीं थी कि ऐसा मौका दुबारा आएगा। पर मैं कहूँ क्या मैं अपनी कलम उठाने पर मजबूर हूँ लड़ाई छिड़ गई—जानवरों का-सा जोश फूटा पड़ रहा है हर तरफ। हर बड़ा आदमी देशभक्ति के भूखे कुत्ते की तरह सड़ और गया रंगा है। दूसरे लोगों के मन निराशा से भरे हुए हैं पर मुझे गौरव का अनुभव हो रहा है मेरा मन कांप रहा है मेरा विगत-स्वप्न अन्तर में टीस रहा है कल मैंने लीजा को सपने में देखा अपना शान्ति से धुला रहा।

लड़की मेरे मन में बड़ा कसरव छोड़ गई है बड़ी खुशी हो मुझे मेरा मन कहता तो

१ अगस्त

इस शोरगुल और बकवास से ऊब गया हूँ मैं। पुरानी कामना की प्यास लौट आई है मैं उससे इस तरह चिपटा हुआ हूँ जैसे कोई बच्चा किसी बबुए में।

३ अगस्त

एक रास्ता है मैं लड़ाई पर चला जाऊँगा। बेवकूफी है यह। हाँ बड़ा बेवकूफी है शर्म की बात है है न?

पर और मैं कर भी क्या सकता हूँ? उफ प्यास है कि कहीं और से रस मिले। इस पर भी एक तरह का सन्ताप है मन में और दो साल पहले सन्तोष की ऐसी कोई रेखा मेरे मन में न थी। कहीं मैं अन्दर से बूढ़ा तो नहीं हो रहा?

७ अगस्त

गाड़ी चली जा रही है और मैं लिख रहा हूँ। हम अभी अभी वारोनेज से रवाना हुए हैं। बस मैं घर पहुँच जाऊँगा। मैंने निश्चय कर लिया है। मैं आस्था जार और पितृभूमि के लिए लड़ाई के मोर्चे पर जाऊँगा।

१२ अगस्त

क्या शानदार विदाई दी लोगों ने मुझे! अतामान ने दो-एक गिलास

पढान के बाद बडा जाशभरा भाषण दिया। पीछे मैंने उससे कहा कि तुम बेवकूफ हो! इस पर वह उलट गया और उसने ऐसा बुरा माना कि उसका सारा चेहरा काला पड गया। फिर वह नफरत से फुफकारने लगा— और तुम अपने को निखा-पढा कहते हो! तुम उनमे तो नहीं हो न जिनकी सन् १९०५ म खाल उधेडी गई थी? मैंने कहा— अफसोस की बात है कि मेरी गिनती उनमे नही रही है

मेरे पिता रोये। आँसू उनकी नाक की नोक तक बह गया। उन्होंने मुझे चूमने की कोशिश की। बेचारे मेरे पिता! काश कि वह मेरी जगह होते! मैंने उनसे कहा— आइये मेरे साथ चलिये। वह घबरा गए। कहने लगे और इस फ़ार्म का क्या होगा?

कल मैं स्टेशन के लिए रवाना हो जाऊंगा।

१३ अगस्त

जहाँ-तहाँ कटाई के लिए तयार फसलें टीलों पर दौडती हुई चमकदार गिलहरियाँ जस काडमा कुचकोव के वक्ष्ले स छिप गए जमन। एक जमाने म मैं गणित और दूसरे उपयोगी विज्ञानो का विद्यार्थी था उस समय शायद ही कभी आया हो मेरे दिमाग म कि यह दिन भी देखना पडेगा। मुझे! रेजीमेंट म पहुँचने के बाद कज्ज़ाकों से बातें करूंगा।

२२ अगस्त

एक स्टेशन पर मैंने कैदियों का पहला दल देखा। एक खिलाडी किस्म का खूबसूरत-सा आस्ट्रियन अफ़सर पहरे म स्टेशन की इमारत की तरफ ले जाया जा रहा था। प्लेटफॉर्म पर चहलकदमी करती दो औरतें उसे देखकर मुसकराइ। बिना रुके उसने अस-तम झुककर उनका अभिवादन किया और एक चुम्मी उनके नाम पर हवा की लहरों पर लहरा दी।

कैदी होने पर भी उसकी दाढ़ी साफ बनी हुई थी और भूरे बूट चमाचम कर रहे थे। जवान-सा प्यारा-प्यारा-सा आदमी था। चेहरा बडा ही मोहक था—ऐसा कि अगर लडाई के मैदान म तुम्हे मिल जाए तो उस पर हाथ उठाते न बने।

२४ अगस्त

शरणार्थी शरणार्थी और शरणार्थी रेलवे की हर लाइन पर शरणार्थियों और फौजियों से भरी गाड़ियों पर गाड़ियाँ चली आ रही हैं। कहीं साँस नहीं मिलती।

पहली अस्पताली गाड़ी अभी अभी गुजरी है। वह रुकी तो एक जवान फौजी नीचे कूद गया। उसके चेहरे पर पट्टियाँ बँधी हुई थीं। हम बातें करने लगे। गोली आर-पार हो गई थी। उस घड़ी खुशी थी। उसका ख्याल था कि अब शायद फौज में न जाना पड़ेगा। उसकी आँख भी चोटीली हो गई थी। सच तो यह कि इस पर भी वह हँस रहा था।

२७ अगस्त

मैं अपने रेजीमेंट में हूँ। रेजीमेंट का कमाण्डर सयाना-सा बड़ा ही बढ़िया आदमी है। कज्जाक है दोन प्रदेश के निचले हिस्से का। यहाँ हर तरफ खून की बू आती है। अफवाह है कि परसों हम लोग आगे की पंक्ति में पहुँच जाएँगे। मैं तीसरी कम्पनी के तीसरे ट्रूप में हूँ। तीसरी कम्पनी कॉन्स्तांतीनोव्स्काया इलाके के कज्जाकों की है। नीरस लोग हैं। सिर्फ एक आदमी ऐसा है जो जरा खुशमिजाज है और थोड़ा गुनगुनाता रहता है।

२८ अगस्त

हम यहाँ से जा रहे हैं। आज बाहर बड़ा शोरगुल है। दूर से बिजली के कड़कने की-सी आवाज़ें आ रही हैं। मुझे तो हवा से लगा कि पानी बरसेगा पर आसमान है कि नीले साटन की तरह नीला है।

कल मेरे घोड़े की एक टाँग खराब हो गई। उसका एक पैर फौजी खाने की गाड़ी के नीचे आ गया। यहाँ हर चीज़ नई और अजीब है। मेरी समझ में नहीं आता कि किस चीज़ से शुरू करूँ और किन चीज़ों के बारे में लिखूँ।

३० अगस्त

अब लिखने को समय ही न मिला। इस समय मैं घोड़े पर सवार हूँ और काठी पर जैसे ही-जैसे लिखता जा रहा हूँ। हिचकोलों के कारण पेंसिल से ऐसी-ऐसी लकीरें खिंच जाती हैं कि क्या कहिए। हम तीन

घुड़सवार एक साथ चल आ रहे हैं। घास की एक गाड़ी हमारे साथ है। साफ है कि घास घोड़ों के लिए है।

अब बाकी दोनों जवान बोझ बाँध रहे हैं और मैं पट के बल लेटा कर की घटनाएं शब्दों में बाँध रहा हूँ। कल सार्जेंट तोलोकोन्निकोव ने हम छः लोगों को फौजी समझ-बूझ के लिए भेजा। यह सार्जेंट मुझे नफरत से विद्यार्थी कहकर बुलाता है। एक बार कहने लगा ए विद्यार्थी देखते नहीं तुम्हारे घोड़े के एक पैर की नाल निकली जा रही है।

तो हम छहों जलकर राख हो गए एक गाँव से गुजर। गरमी बहुत थी। घोड़े भी पसीने-पसीने हुए जा रहे थे और हम भी। कज्जाकों को गरमी में सर्ज के पतलून पहनने का हुक्म नहीं होना चाहिए गाँव के बाहर की खाई में मैंने एक लाश देखी। इस तरह की लाश मैंने जीवन में पहली बार देखी थी। एक जर्मन पीठ के बल मरा पड़ा था। उसके पैर खाई में थे। एक हाथ नीचे दबा हुआ था। दूसरे में राइफल थी। आस-पास कोई राइफल न थी। भयानक दृश्य था। इस समय भी उस दृश्य की कल्पना कर मेरे रोंगटे खड़े हो गए हैं ऐसा लगता था जैसे कि वह जर्मन खाई में पैर लटकाए बैठा रहा बैठा रहा कि आराम करने को लेट गया। भूरी वर्दी और सिर पर लोहे का टोप चमड़े का अस्तर दूर से झलक रहा था। यह सब देखकर मेरी आँखें ऐसी चौंधियाई कि उसका चेहरा मुझे याद ही न रहा। उसके पीले माथे पर बड़ी-बड़ी पीली-पीली चींटियाँ रेंग रही थीं और अधमुँदी आँखें आधी खुली हुई थीं। कज्जाक उसकी बगल से गुजरे तो उन्होंने क्रॉस बनाया। मैंने उसकी वर्दी की दायीं ओर के खून के छोटे धब्बे को देखा। गोली दायीं ओर लगी थी और उसे छेदती हुई चली गई थी। मैं पास से निकला तो मैंने गौर किया कि जहाँ से गोली निकली थी वहाँ वर्दी में निशान पड़ा था और जमीन पर पड़ा खून भी काफी था। वर्दी तार-तार हो गई थी।

मैं काँपने लगा। तो यह सब होता है यहाँ।

हमारे सार्जेंट-मेजर का नाम टीजर है। उसने हमें देखा तो गन्दी कहानी सुनाकर हममें जान डालने की कोशिश की। पर उसके अपने

हाठ थरथराने लगे थे।

गाँव से कोई आधे वस्र्ट की दूरी पर हम एक सहम-नहम फक्टरी मिली। सिर्फ इटा की दीवारें बच रही थी। उनका ऊपरी हिस्सा धुए से काला था। राख के अम्बारा की बगल की सडक से गुजरने म हमारा दिल दहला। इसलिए हमने घूम जाने का फसला किया। पर हम ज्यों ही सडक से कटे फक्टरी स कोई गालियाँ बरसाने लगा हम पर। यह लिखते हुए मुझे लज्जा का अनुभव हो रहा है पर यह सही है कि पहली गोली दगा ता मैं साज स गिरकर नीचे आते आते बचा। मैंने काठी कसकर पकड ली और अल्लर के संकेत पर एकदम मुड गया। रास्ते मैंने जकड ली। हम घाडे दौडाते हुए उस गाँव की बगल स गुजरे जहाँ रात म जमन मरा पडा था। नतीजा यह कि जब सब गाँव एकदम पीछे छूट नहीं गया हम ठिकाने नहीं आए। फिर हम मुडे और घोडा से नीचे उतरे। हमने दो साथियो का घोडो के साथ वहीं छोडा और बाकी हम चारो फिर उसी सडक पर बढे। पोल बूटा म कसे उस जमन के पर हम दूर स अपकत नजर आए। उधर स निकल आने के बाद ही मैंने साँस ली जसे कि वह सो रहा हो और मुझे डर हो कि वह कहीं उठकर बठ न जाए उसके नीचे की घास नम और हरी थी।

हम खाई म छिपकर लेट रहे कि जरा देर बाद राख हो गई फक्टरी के पीछे से सात जमन घाडो पर सवार निकले। मैंने उनकी वर्दी स उन्हें पहचान लिया। उनमें स एक अफसर था। उसने चिल्लाकर कुछ कहा और पूरी टुकडी हमारी ओर बढी

लडके मुझे आवाज द रहे हैं मुझे जाकर घास के लान के काम म उनकी मदद करनी चाहिए। आना ही है आता हूँ

० अगस्त

मैं बयान करना चाहता हू कि पहले-पहल किसी आदमी का गोली मैंने कस मारी। वे जमन हमारी ओर बढते आए। उनकी छिपकली के रंग की वर्दियाँ उनके चमचमाते हुए लोहे के टोप उनके घर्षे और बर्छो के सिरा पर फहराती हुई झंडियाँ इस समय भी मेरी निगाहो के आगे हैं।

वे गहरे भूरे रंग के घोडा पर सवार थे। मैं नहीं जानता क्या

पर खाई के सिर तक मेरी निगाह दौड़ ही तो गई और मैंने पन्ने के रंग का एक हरा गुबरला देखा। मेरे देखते-देखते गुबरला अपना आकार बढ़ाता गया। होते-होते बहुत बड़ा हो गया। शैतान की तरह घास की पत्तियों को राह से काटते हुए वह मेरी तरफ आया और मेरी ट्यूनिक की आस्तीन पर चढ़ आया। फिर राइफल पर पहुँच गया। और मैं उसकी उड़ान देख ही रहा था कि टीज़र की चीख कानों में पड़ी—"गोली दागो" आखिर तुम्हें हुआ क्या है?

मैंने अपनी कुहनी कसकर जमाई और अपनी बायीं आँख सिकोड़ी। मेरा दिल धड़कने लगा। भूरी-हरी वर्दी की पृष्ठभूमि से टकराकर मेरी नज़रें लड़खड़ा गई। मैंने राइफल का घोड़ा दबाया और अपनी गोली की राह से मेरी सरसराहट सुनी। मेरे बाद टीज़र ने गोली दागी। मैंने निशाना शायद नीचे से साधा था क्योंकि मेरी गोली से गर्द का बादल सा उमड़ा। इस तरह यह पहली गोली थी जो मैंने किसी इन्सान पर दागी थी। मैंने बिना निशाना साधे सारी गोलियाँ खाली कर दीं और घोड़ा दबाने पर कोई असर न होने के बाद ही जमना की ओर निगाह दौड़ाई। वे अपने पिछले क्रम से घोड़े दौड़ाए चले जा रहे थे। अफ़सर पीछे था। जमन गिनती में नौ थे। उनके अफ़सर के गहरे भूरे घोड़े का कूल्हा और लोहे के टोप के सिरे की धातु की प्लेट साफ़ नज़र आ रही थी।

२ सितम्बर

युद्ध और शान्ति नाम के अपने उपन्यास में ताल्सताय ने एक जगह विरोधी सेनाओं के बीच की एक रेखा की चर्चा की है। यह अनजानी रेखा ज़िन्दा लोगों को मुर्दों से अलगाती है। निकोलाई रोस्तोव की कम्पनी हमला करती है तो यही रेखा उसकी कल्पना में सामने साकार हो उठती है। आज वे पंक्तियाँ मुझे याद आ रही हैं और बिलकुल साफ़-साफ़ याद आ रही हैं क्योंकि आज सुबह हमने जमन हुस्सारों की एक टुकड़ी पर हमला बोला। सवेरे से ही उनके ट्रूप शानदार तोपों की मदद से हमारी पैदल टुकड़ियों के लोगों को सता रहे थे। मैंने अपनी तरफ़ के कुछ लोगों का मत सुना है कि ४१वें और ७१वें पैदलों

रजीमेटों के लोगों को हड़बड़ाकर भागते देखा। उनके पीछे तोपों की मन्द न थी और सच तो यह है कि उनकी हिम्मत सचमुच जवाब दे गई थी। दुश्मन ने आग बरसाकर उनमें से एक तिहाई को भूनकर रख दिया था और बाकी का पीछा जर्मन-हुसार कर रहे थे। सिर्फ इस हालत में जंगल के साफ किये हिस्से में खड़ी हमारी रेजीमेंट को मोर्चा सम्हालने का हुक्म दिया गया। मुझे याद है—घटना कुछ इस तरह घटी

तिन्चिखी नाम के गाँव से हम सुबह दो-तीन बजे के बीच रवाना हुए। तड़का होने का समय हो रहा था पर अंधेरा बड़ा गहरा था। हवा जई और देवदार की नालों की महक से भारी थी। रेजीमेंट कम्पनियों में बटकर आगे बढ़ रही थी। हम सड़क से कटे और खेतों के बीच से गुजरने लगे। घोड़ों के पैर जई के पौधों पर पड़े तो उनके खुरों से घास की बूँदें अपनी जगह से उछलकर इधर-उधर बरसने लगीं। घोड़े हींसे।

ओवरकोटों में भी सर्दी लगती रही। रेजीमेंट बहुत देर तक खेतों पर सेंत मार करती गई कि एक घण्टे बाद एक अफसर घोड़ा दौड़ाता आया और उसने रजीमेंटल कमाण्डर को एक आदेश सौंपा। हमारे सरदार ने आदेश असन्तोष की भावना से भरकर हमें दिया। हमारी रेजीमेंट मुड़कर समकोण बनाती हुई जंगल की ओर मुड़ी। सकरे रास्ते पर पत्तियाँ एक-दूसरी से बिल्कुल सटकर चलने लगीं। लड़ाई कहीं बगल में चल रही थी और आहट की आवाज पर जर्मन-तोपची आग बरसा रहे थे। तोपों की आवाज हवा में देर तक गूँजती और ऐसा लगता जैसे कि देवदार के महमह करते पूरे-के-पूरे जंगल में आग लगी हुई है। सूरज निकलने तक हमने देखा कुछ नहीं केवल आवाजें सुनीं। सूरज निकला तो अपने साथ थोड़ा उल्लास लाया पर उस उल्लास ने तन्तु मड़े-गले और ढीले लगे। यह उल्लास थोड़ी देर तक बना। उसके बाद फिर सब-कुछ जमकर रह गया और मशीनगनों की आवाजें साफ सुनाई पड़ने लगीं। इस समय मेरा दिमाग चक्कर खाने लगा अचानक एक विचार मेरे दिमाग में आया। मुझे आगे बढ़ती अपनी पल्टी फौजों के

लोगों का खयाल आया और मेरी आँखों के आगे उनकी तसवीरें-सी खिंच गईं।

मैंने कल्पना की दृष्टि से देखा चौरस फ़ौजी टोपियाँ लगाए मटमैले टॉप-बूट पहने शरद् की धरती रौंदते ये पश्चिमी फ़ौजें। साथ ही मेरे कान में सनसनाहट पैदा करने लगीं जर्मन मशीनगनें जो जुटी हुई थीं जान जोखते पसीने से तर प्राणियों को लाशों में बदलने में।

दो रेजीमेंटें गाजर-मूली की तरह कटने लगीं। लोग हथियार छोड़-छोड़कर भागे। इसी समय जर्मन-हुस्सार की रेजीमेंट उन पर टूट पड़ी। हम उनसे कोई सात सौ गज़ या इससे भी कम फ़ासले पर रह गए कि हमें आर्डर मिला। हम दूसरे ही क्षण व्यवस्थित हो गए। आवाज़ कानों में पड़ी— 'फ़ॉरवर्ड मार्च!' इस पर एक क्षण तक तो हम ठिठके, परन्तु फिर आगे की ओर हवा की रफ़्तार से लपके। मेरे घोड़े ने अपने कान नीचे कर सिर से इस तरह चिपका लिये कि आप अंगुली लगाते तो भी उन कानों को उठा न पाते। मैंने चारों ओर नज़र दौड़ाई तो अपने पीछे रेजीमेंटल कमाण्डर और दो अफ़सरों को देखा।

हाँ, यहीं वह रेखा दीखी, वह रेखा जो हँसते-खाँसते साँस लेते ज़िन्दा लोगों को मुर्दा लोगों से अलग करती है। यहीं वह क्षण आया जब आदमी बौखला उठा, पागल हो गया।

हुस्सार डगमगाए और पीछे लौटे। मेरे देखते-देखते हमारे कम्पनी कमाण्डर चेरनेत्सोव ने एक जर्मन हुस्सार को काटकर फेंक दिया। मेरी आँखों के आगे छठी कम्पनी के एक कज़ाक ने एक जर्मन को दौड़ाया और पागलों की तरह उसके घोड़े के पुट्ठे टुकड़े-टुकड़े कर डाले। तलवार उठी और गिरी तो खाल के पौन इधर-उधर उड़े। जो देखा उसकी अब कल्पना भी नहीं की जा सकती, उसे कोई नाम नहीं दिया जा सकता।

लौटते समय मैंने उन्हीं चेरनेत्सोव का चेहरा देखा तो खुशी से खिला हुआ पाया, जैसे कि वहाँ कुछ हुआ ही न हो, जैसे कि मेज़ के किनारे जमे वे सिर्फ़ ताश खेलते रहे हों, जैसे कि अभी-अभी जर्मन का

तलवार के घाट उतार देने में उनका किसी तरह का कोई सम्बन्ध ही न हो।

कम्पनी कमाण्डर चेरनेत्सोव बड़ी तरक्की करेंगे आदमी लायक हैं।

४ सितम्बर

हम आराम कर रहे हैं। दूसरी फौजी कोर की चौथी कम्पनी मार्चे पर लाई जा रही है। हमने कार्तिलिना के छोटे गाँव में पड़ाव डाल रखा है। आज सुबह ग्यारहवें घुड़सवार डिवीजन के लोग और ऊराल के कज्जाक तेज रफ्तार में कस्बे से गुजरे। एक तूफान है जो एक क्षण को भी रुकता ही नहीं। खाने के बाद मैं मार्चे के अस्पताल में गया। घायल फौजियों की एक गाड़ी अभी अभी आई थी। स्ट्रेचरवाले एक बड़े डिब्बे से घायल नीचे उतार रहे थे और हँस रहे थे। मैं उनके पास तक गया। एक हल्के भूरे बालोंवाला फौजी एक अर्दली के सहारे अभी अभी कूदकर नीचे आया था। वो मुझे सम्बोधित करते हुए बोला कज्जाक क्या ख्याल है तुम्हारा इस सबके बारे में? उन्होंने मटर की एक बोरी मार दी मुझ पर उसमें बन्दूक की गोलियाँ थीं।

अर्दली ने पूछा आपके पीछे बम फटा था क्या?

पीछे की बात छोड़ो आग लगे उसको मैं तो खुद उस पीछे के पीछे की बात छोड़ो... डिब्बे के ठीक पीछे था। एक भापकी सी नस निकली मैंने उस पर नजर डाली तो मेरे हाथ पर एकाएक इस तरह ढील हुए कि मुझे उस गाड़ी का सहारा लेना पड़ा "उस नस की शक्ल सीजा की शक्ल से इस तरह मिलती थी कि कुछ हद हिसाब नहीं। वैसी ही आँखें वैसा ही अण्डाकार चेहरा वैसी ही नाक और बस ही बाल आवाज भी बिलकुल वैसी ही कहीं ऐसा तो नहीं कि मुझे सिर्फ लगा हो ऐसा? मेरा ख्याल है कि अब जो भी औरत मेरे सामने आयेगी वही मुझे लीजा से मिलती जुलती लगेगी

५ सितम्बर

थोड़ा बहुत दिन आराम और खाने का चारा-दाना मिला। पर हम फिर मार्चे के लिए रवाना हो गए। जहाँ तक मेरा सवाल

में फैलता चला गया ।

स्टाफ के प्रधान कार्यालय में बड़े हमले की योजना बनाई गई । जनरल नक्शों में जुट गए । हरकारे लड़ाई का हुक्म लेकर इधर उधर दौड़ने लगे । लाखों फौजी जानें हथेली पर रखकर आगे बढ़े ।

अनुसंधानिक दस्तों ने सूचना दी कि दुश्मन की घुड़सवार फौज शहर की ओर बढ़ती चली आ रही है । जंगलों में कज्जाकों की टुकड़ियों और शत्रुओं के अग्रिम रक्षकों के बीच जहाँ-तहाँ मुठभेड़ें हुईं ।

ग्रिगोरी ने भाई से मिलने के बाद हमेशा अपने दुःखभरे विचारों को दूर रखने और पहले की तरह शान्त रहने का प्रयत्न किया । किन्तु इसमें वह असफल रहा । स्थायी सेना की दूसरी पंक्ति से भरती हुए लोगों में से अलेक्सेई उरयूपिन नामक कज्जाक ग्रिगोरी के दल में आया । उरयूपिन कद में लम्बा था । कन्धे गोल थे निचला जबड़ा आगे की ओर उभरा हुआ था । गलमुच्छे कातिलाना ढंग से झुके हुए थे । उसकी निडर आँखें हमेशा खुशी से चमकती रहतीं । वह गंजा था । बस गुद्दी की खोपड़ी में थोड़े-से भूरे बाल थे । आने के साथ ही उसका नाम कलगीशाह रख दिया गया ।

वान्न के चारों ओर लड़ने के बाद रेजीमेंट को एक दिन की साँस मिली । ग्रिगोरी और उरयूपिन एक ही झोंपड़ी में रहे । दोनों में बातचीत छिड़ी—

मेलेखोव तुम्हारे तो जैसे रोयें गिर रहे हैं ? उरयूपिन बोला ।

रोयें गिरने से तुम्हारा मतलब ? ग्रिगोरी ने त्योरी चढ़ाते हुए पूछा ।

तुम ऐसे ढीले हो जैसे कि तुम्हें कोई बीमारी हो ।

वे घोड़ों को खिला पिलाकर फार्म में बनी चहारदीवारी के सहारे पीठ टेके सिगरेटें पी रहे थे । सड़क पर चार चार की पंक्तियों में घोड़ों पर सवार हुस्सार जा रहे थे । सारे चारों ओर पड़ी थी कि ऑस्ट्रियन। के पीछे इस समय गली-सड़कों पर लड़ाई हुई । एक बहुत मन्दिर के खण्डहर में जलाया जा रही थी । सारा शहर तबाह हो गया था । शाम के रंग बिरंगे आसमान के बीच भी यहाँ बरबादी और दिल दहलाने वाली

मैं बिलकुल ठीक हूं ग्रिगोरी ने अपने साथी की ओर बिना देखे थूकते हुए कहा।

झूठ बोलते हो मेरी भी आँख है।

अच्छा तो तुम्हें क्या दीखता है ?

तुम सहमे हुए हो तुम्हें मौत से डर लगता है।

बेवकूफ हो तुम। ग्रिगोरी ने अपनी अंगुलियों के नाखूनों की ओर ताकते हुए नफरत से कहा।

यह बतलाओ कि तुमने कभी किसी को मारा है ?

हाँ। तो इससे क्या हुआ ?

तुम्हारे दिमाग पर उस घटना का तो बोझ नहीं ?

मेरे दिमाग पर तो बोझ नहीं ग्रिगोरी कटुता से मुसकराया।

उरयूपिन ने म्यान से तलवार निकाली। कहो तो तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर दूं ? उसने पूछा।

क्या होगा कह दूं तो ?

मुंह से बिना उफ निकाले मैं तुम्हें तलवार के घाट उतार दूंगा। मेरे हृदय में दया नहीं है। उरयूपिन की आँखें चमकने लगीं। किन्तु उसके स्वर और उसके नथुनों की फड़कन से ग्रिगोरी ने समझा कि यह दोस्ती वाली बात नहीं कर रहा। उसने उसके चेहरे का गहराई से अध्ययन किया और बोला तुम अजीब आदमी हो तुम जंगली हो।

छोड़ो भी तुम्हारा दिल पानी का है। वह बोला तुम्हें यह बार आता है ? देखा। उसने बच का एक पुराना पेड़ चुना और उसको निगाहों से नापता सीधा उधर ही बढ़ा। उसकी उभरी नसों वाली लम्बी बाँहें और उसकी गैर-मामूली ढंग की चौड़ी कलाइयाँ जड़-सी झूलती रहीं। पेड़ के पास पहुँचकर बोला देखना।

उसने धीरे-धीरे कटार उठाई और पूरी ताकत से उस पेड़ पर तिरछा वार किया। धरती से चार फुट की ऊँचाई से पेड़ कटकर गिर पड़ा। उसकी डालियाँ से झोपड़ी की दीवार और खिड़की आगे गई।

देखा तुमने ? इसको सीखो। बख्लानोव नाम के एक अतामान

का नाम सुना है तुमने ? उसकी कटार की धार म चाँदी भरी हुई थी लेकिन वह एक हाथ में ही घोडे के दो टुकडे कर सकता था—बिलकुल इसी तरह ।

नये वार का भला सीखने म ग्रिगारी को बहुत समय लगा । तुम तगडे जरूर हो लेकिन कटार के मामल म गधे हो । तरीका यह है । उरयूपिन न उसकी कटार को तेजी से तिरछा साधते हुए उसे समझाया हिम्मत से आदमी का काट डालो । आदमी ता मक्खन की तरह मुलायम होता है । उसकी आँखो म मुसकान तैर गई— यह मत सोचो कि कैसा और किसलिए । तुम कज्जाक हो । तुम्हारा काम सवाल करना नही बल्कि काटकर बराबर कर देना है । लडाई म दुश्मन को मारना धर्म है । तुम जितने लोगो को मारोगे भगवान् तुम्हारे उतने ही पाप कम ही काटेगा जैसे किसी साँप को मारने से काटता है । वह अधार्मिक है अपवित्र है । वह धरती म जहर घालता है । उसकी जिन्दगी कुकुरमुत्ते की तरह है ।

इस पर ग्रिगोरी ने उसका विरोध किया तो वह क्रोधित हो गया और चुप्पी साध गया ।

ग्रिगारी का यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उरयूपिन से सारे घोडे डरते थे । वह उनके पास पहुँचता तो वे अपने कान खडे कर लेते जैसे कि उनके पास मानव नहीं दानव आ पहुँचा हो । एक बार कम्पनी को जंगल और दलदलवाले जिले पर पदली हमला करना पडा । घोडे एक छोटी-सी घाटी म अलग बाँध दिये गए । उरयूपिन का भी घोडा की रक्षा करने वाले दस्ते म रखा जा रहा था लेकिन उसने साफ मना कर दिया ।

'उरयूपिन आखिर घोडा का हाँककर ले क्यो नहीं जाना ?' दूसरे साजेंट उस पर बरसा ।

वे डरते हैं मुझसे भगवान् कसम डरते हैं । उसने उत्तर दिया । अपने घोडो म काम की किसी भी पारी पर वह नहीं गया । अपने घोडे पर वह बहुत मेहरबान था पर ग्रिगारी ने देखा कि जब कभी वह उधर जाता घोडे की पीठ की नस काँपने लगतीं और वह हिनहिनाने लगता ।

एक दिन ग्रिगोरी ने उससे पूछा, "यह बतलाओ कि घोड़े तुमसे घबराते क्यों हैं?"

"मुझे नहीं मालूम।" कंधे झटककर वह बोला, "मुझे उन पर बहुत दया आती है।"

"घोड़े शराबियों से डरते हैं, वे उन्हें पहचानते हैं, लेकिन तुम तो शराबी भी नहीं हो।"

"मेरा दिल सख्त है और शायद वे यह बात समझते हैं।"

"तुम्हारा दिल भेड़िये का-सा है। हो सकता है कि तुम्हारे दिल हो ही नहीं, पत्थर हो दिल की जगह।"

"हो सकता है।" उरयूपिन ने विरोध नहीं किया।

दल को मालूमयातिक कार्य के लिए भेजा गया। शाम को प्रास्त्रिपन गाँव से आगे चेकोस्लोवाकिया के एक भगोड़े ने रूसी कमान को दुश्मन की फौज की स्थिति बतलाई और प्रत्याक्रमण करने की सलाह दी। उसने कहा कि जिन सड़कों से दुश्मन की रेजीमेंटें गुजरेंगी उन पर बराबर नजर रखी जानी चाहिए।

ट्रूप अधिकारी ने एक जंगल के किनारे पर सार्जेंट के साथ चार कज्जाक छोड़ दिए और बाकी लोगों को साथ लेकर अगली पहाड़ी पर बसे नगर की ओर बढ़ लिया। सार्जेंट के साथ थे ग्रिगोरी, उरयूपिन, मीशा कोशेवोई और एक दूसरा कज्जाक।

सार्जेंट ने घोड़ों से उतरने का हुक्म दिया और कोशेवोई से बोला, "घोड़ों को दरख्तों के झुरमुट के पीछे ले जाओ और उनका ध्यान रखो।"

कज्जाक एक गिरे हुए देवदार के सहारे लेटकर सिगरेट पीने लगे और सार्जेंट दूरबीन से सामने के विस्तृत प्रदेश को देखने-समझने लगा। दायीं ओर कहीं से बंदूकें चलने की आवाज बराबर आती रही। कुछ फासले पर एक खेत लहरा रहा था। खेत की राई इकट्ठी न की गई थी। बालों में दाने भरे थे। ग्रिगोरी रेंगकर राई में घुस गया और कुछ रसदार बालों से चुन दाने निकाल खाने लगा।

दो घुड़सवारों का एक दल दूर के बगीचे से निकला। रुककर उन्होंने फैले हुए इलाके का सर्वेक्षण किया और फिर कज्जाकों की तरफ बढ़े।

आस्ट्रियना के अलावा और कोई नहीं हो सकता। सार्जेंट दब स्वर में बोला, पास आने दो फिर मजा चखायेंगे हम उन्हें। तुम सबकी राइफलें तो तैयार हैं न ? उसने उत्तेजित होकर पूछा।

घुड़सवार स्थिर गति से पास आये। वे हरी वर्दी हुस्सार थे। उन्होंने किनारी और डोरी लगे शानदार खूबसूरत कोट पहन रखे थे। उनका नेता एक बड़े काले घोड़े पर सवार, रानें साधे शान्त भाव से झूमता चला आ रहा था।

फायर ! कासेवोई की चौंक से भरी चीख दबकर के पड़ा व पीछे से आई ऐ नतानो ! तुम जहाँ-के-तहाँ खड़े हो जाओ ! हुस्सार नाक के पीछे एक अनाज के खेत में घुस गए। उनमें से एक ने यानी उनके नेता ने हवाई गोली चलाई। आखिरी हुस्सार पीछे रह गया। वह अपने घोड़े की गरदन से लग गया और उसने अपनी टोपी बाएं हाथ से साध ली।

सबसे पहले उरयूपिन अपने परों के बल कूदा और अपनी राइफल की नोक से लगाए राई के बीच से गिरता-पड़ता भागा। लगभग सौ गज दूर जाने पर उसे टाँगें पटकता और संघर्ष करता एक घोड़ा गिरा दिखाई दिया। घोड़े के पास ही कुचली टाँग के घुटने को मसलता एक हुस्सार खड़ा था। उसने उरयूपिन से चिल्लाकर कुछ कहा और अपने भागते हुए साथियों की ओर देखकर हाथ ऊँचे कर आत्मसमर्पण कर दिया।

यह सब इस तरह देखते-देखते हुआ कि जब तक उरयूपिन अपने बन्दी को साथ लेकर लौटा तब तक ग्रिगोरी समझ हो न पाया कि यह सब हो क्या रहा है।

छोड़ दो ! उरयूपिन हंगरियन के हाथ से तलवार झटकता हुआ चिल्लाकर बोला।

बन्दी हानी की कल्पना कर मुसकराया और अपनी पेटी पर अगुलियाँ फेरने लगा। वह तलवार देने को बिलकुल तैयार था पर उसके हाथ काँप रहे थे और वह पेटी खोल न पाया। ग्रिगोरी ने सावधानी से उसकी सहायता की। रंग पर घूम हुए गाल और ऊपर के होठ के गिर पर निशान उस पर उस हुस्सार ने मुसकराकर सिर हिलाकर सहायता



के लिए उसे धन्यवाद दिया। हथियार छिन जाने पर वह प्रसन्न ही हुआ। उसने अपनी जेब खखोरकर चमड़े की एक छोटी थली निकाली और कज्जाकों को तम्बाकू भेंट करता हुआ कुछ बुदबुदाया।

'हमारी खातिर कर रहा है।' सार्जेंट ने मुसकराकर कहा और सिगरट के कागज ढूंढने लगा। कज्जाकों ने हुस्सार की तम्बाकू से सिगरेट बनाई और धुआं उड़ाया। काला तेज तम्बाकू उन्हें लग गई।

'इसकी राइफल कहाँ है?' सिगरेट के कश खींचते हुए सार्जेंट ने पूछा।

'यह रही राइफल।' उरयूपिन ने अपनी पीठ की ओर इशारा किया।

'अच्छा हो कि इसे कम्पनी पहुँचा दिया जाए। इसे जो कहना होगा वहाँ कहेगा।'

'कौन ले जाएगा इसे?' सार्जेंट ने अपने सनिकों पर दृष्टि डालते हुए पूछा।

'मैं ले जाऊंगा।' उरयूपिन ने तुरन्त ही जवाब दिया।

'ठीक है, ले जाओ।'

कैदी समझ गया कि मेरा भविष्य क्या है। उसकी मुसकान में चिन्ता झलकी। उसने अपनी जेबें उलट दीं और कज्जाकों को कुछ टूटे हुए चॉकलेट भेंट किए।

'रूसिन इच रूसिन नन मास्किन्ने!' वह भद्दे ढंग से मुँह बनाते और चाकलेट आगे की ओर बढ़ाते हुए हकलाया।

'कोई हथियार है?' सार्जेंट बोला, 'बक-बक न करो, हमारी समझ में कुछ नहीं आता। रिवाल्वर है तुम्हारे पास? बम है?' सार्जेंट ने कल्पित घोड़ा दबाया। कैदी ने भयानक ढंग से सिर हिलाया।

उसने अपनी तलाशी राजी-खुशी दे दी। उसके फूले गाल कांपते रहे। घायल घुटने से खून बहता रहा। लगातार बातें करते-करते उसने उस पर अपना रूमाल बाँधा। वह घोड़े के पास अपनी टोपी छोड़ आया था। सो उसने जाकर टोपी, कम्बल और नोटबुक लाने की आज्ञा माँगी। नोटबुक में उसके परिवार के फोटो थे। सार्जेंट ने उसकी बात समझने की भरसक कोशिश की और अन्त में निराशा से हाथ हिलाकर

वाला स आओ इसे ।

उरयूपिन अपने घोड़े पर सवार हुआ और पीठ पर राइफल बाँध कर उसने कदी को इशारा किया। उसकी मुसकान से बढ़ावा पाकर हंगेरियन भी मुसकराया और उसके घोड़े की बगल-बगल चलने लगा। घनिष्ठता बढ़ाने की दृष्टि से उसने उरयूपिन का घुटना थपथपाया पर कज्जाक ने सख्ती से उसका हाथ झटक दिया और घोड़े की रास खींच ली।

चलो इधर से तुम्हारी चालाकियाँ यहाँ नहीं चलेंगी।

कदी अपराधी की भाँति घोड़े से अलग हट गया और गम्भीरता से लम्बे डग भरता हुआ चलने लगा। वह कभी-कभी मुड़कर कज्जाकों की तरफ देख लेता। उसके बाल उसके सिर पर चिपके से हुए थ। इसी रूप म वह ग्रिगोरी की कल्पना म अंकित हो गया—कंधे पर पड़ा छोटा कोट सन के-से बाल और आत्मविश्वास और विनय से भरी चाल।

मेलेखोव आप्पा उसके घोड़े का साज उतार लो। सार्जेंट ने अपनी सिगरेट के बचे हुए टुकड़े का थूकने हुए आदेश दिया। वह सिगरेट उसने इस तरह पी थी कि उसकी अंगुलियाँ जलने लगी थी

ग्रिगोरी उस गिरे हुए घोड़े के पास गया काठी खोली और जाने क्या उसने पास पड़ी टोपी उठा ली। उसने कपड़े को सूघा। उसमें से सस्ते साबुन और पसीने की बास आई। वह घोड़े के साज को लेकर पेड़ों के बीच वापस पहुँचा और हुस्सार की टोपी होशियारी से अपने हाथ में लिये रहा। कज्जाकों ने जमीन पर बठकर चला की सवारी और नये किस्म की काठी के नमूने को दिलचस्पी से देखा।

'उसके पास तम्बाकू बढ़िया था। हमे उससे और ले लेना चाहिए था। सार्जेंट तम्बाकू का ख्याल कर पछताया और थूक निगल गया।

कुछ क्षणों बाद ही देवदार के बीच एक घोड़े का सिर चमका और उरयूपिन घोड़े पर सवार होकर मुड़ दिया।

क्या आस्ट्रियन कहाँ है? भगा तो नहीं दिया? सार्जेंट ने बराबर काठी से उछलते हुए पूछा। उरयूपिन चाबुक नचाता आया और नीचे उतरा।

वह आस्ट्रियन क्या हुआ ? सार्जेंट ने उसके पास पहुँचते हुए फिर पूछा।

'उसने भागने की कोशिश की।' उरयूपिन गुर्राया।

'और तुमने उसे जाने दिया ?'

'हम एक खुले मैदान में पहुँचे कि उसने... इसलिए मैंने उसके दो टुकड़े कर डाले।'

'तुम झूठे हो।' ग्रिगोरी चिल्लाया, 'तुमने उसे बेकार ही मार डाला।'

'तुम चीख क्या रहे हो ?' ग्रिगोरी चीखा, 'तुमसे क्या मतलब है ?' उरयूपिन ने ग्रिगोरी पर बर्फीली नजर जमा दी।

'क्या कहा ?' ग्रिगोरी धीरे-धीरे उठा।

'जहाँ जरूरत न हो वहाँ टाँग न अड़ाओ, समझे ?' उरयूपिन ने कड़ाई से जवाब दिया। ग्रिगोरी ने झटके में अपनी राइफल छीन और साध ली। पर अंगुली घोड़े पर जाते ही थरथरा उठी और चेहरा क्रोध से काँपने लगा।

'ठा...!' सार्जेंट ने धमकाते हुए रास्ते से मौड़कर उसके पास आकर कहा। उसके धक्के से निशाना चूक गया और पेड़ की डाल को छेदती हुई गोली सन्न से निकल गई।

'यह सब क्या हो रहा है ?' कोशेवोई ने हाँफते हुए पूछा। सिलान्तयेव का जबड़ा नीचे आ गया और वह अब भी मुँह खोले बैठा रहा।

सार्जेंट ने ग्रिगोरी को सीने से धक्का दिया और राइफल उसके हाथ से छीन ली। उरयूपिन पर बिना कमर पेटी पर बायाँ हाथ रखे उसी तरह खड़ा रहा।

'फिर चलाओ गोली।' वह बोला।

'मैं तुम्हें जान से मार डालूँगा।' ग्रिगोरी उसकी तरफ झपटा।

'आखिर यह सब हो क्या रहा है ? क्या तुम कोर्ट-मार्शल चाहते हो कि तुम्हें गोली मार दी जाए ? हथियार नीचे रखो !' सार्जेंट ने चीखकर कहा।

ग्रिगोरी को पीछे की ओर धनियात वहि फैलाकर यह दोनों के बीच म भा खड़ा हुआ।

तुम झूठ बोलते हो तुम मुझे मार नहीं सकते ! उस्त्यूपिन गुमक शया।

दोनों वक्त मिलन पर व घोड़ा पर सवार वापस जा रहे थे कि सबसे पहले ग्रिगोरी की ही निगाह रास्त में पडी उस हुस्सार की लाश पर पड़ी। वह सबसे आगे आगे था। उसने आगे डर हुए घोडे को रोका और एकटक नीचे नजर गडाई। मृतक सवार की मसमनी मलह पर हाथ फलाय पड़ा था। उसका चेहरा नीचे की ओर था। पतझड़ की पत्तियों की तरह पीली हथेलियाँ खुली हुई थीं। उस पर पीछे से वार कर कमर से उसके दो टुकड़े कर दिये गए थे।

'उसके दो टुकड़े कर दिए' सार्जेंट न बगल से गुजरने पर बुद बुदाते हुए कहा।

घोड़ों पर सवार वजवाब लाश के पास से गुजरते हुए चुपचाप कम्पनी के प्रधान कार्यालय पहुँचे। अब तक शाम के साय गहरे हो गए थे। पश्चिम के घुघराले बाल बाल्ल को ठडी हवा का झोंका उड़ाये जा रहा था। पास के दलदल से घास और सीलन की महक भी बराबर आ रही थी। एक तितलौया बोल रही थी। ग्लानि उनींदी हो रही थी। शोर गुल के नाम पर घोड़ों के साज झनझना रहे थे रकाबों पर तलवारों की टक्करें लग रही थीं और घोड़ों की टापों के नीचे देवदार के दूरग क कुचलन की आवाज हो रही थी—और बस। डूबते सूरज की लाली देवदार के पेड़ों की टहनियों पर पड़ रही थी। उस्त्यूपिन सिगरेट-पर सिगरेट पीता जा रहा था और सिगरेट की चिनगारियों स लाल नाखूनों वाली उसकी मोटी अंगुलियाँ चमक रही थीं।

जगल के ऊपर बादल महरा रहा था। वह धरती पर पहलवान नाम क दम्भरे रंगीन सायों का और गहरा बना रहा था। साये एक एक कर उड़े जा रहे थे।

१२

अगले दिन सुबह नगर पर चढ़ाई शुरू कर दी गई। घुड़सवार फौजी

टुकड़िया से घिरकर पदल सेना का तड़के ही जगल से भाग चलना था। पर कहीं किसी से चूक हो गई और पदल रजीमट समय मे नहा आइ। २११वा राइफल रेजीमन्ट का बाई ओर चलन की आज्ञा हुई और किसी दूसरी रजीमट द्वारा किय गए हमल म पडकर यह अपनी बटरिया का आग स आप जलकर राख हो गई। इस बहूदी गडबडी स सारी योजनाएँ चौपट हो गई। हमला अगर बरबादी की नहीं तो असफलता की धमकी तो दने ही लगा पदल टुकडियाँ इस तरह धिसटती रहा कि ग्यारहवा घुड़सवार डिवीज़न का आगे बढ़न का हुक्म दे दिया गया। पल्न फ़ौजी जगली दलदली जमीन म तयार खडे थे। वहाँ इतन बडे अभियान का सम्भावना नहा थी। कई बार ता टुकडियो को दल बनाकर बढना पड़ा। बारहवी रजीमट की चौथी और पाँचवी कम्पनिया को जगल म ही रिज़र्व रख लिया गया। कुछ ही क्षणा म लडाइ के हाहाकार स धरती के पर्दे फटन लग।

लोगा म उत्साह की लम्बी लहर लहराई। बाइ-न-कोई बड़बडाव जरूर-तर ना बाल पडता यह वार हमारा है।

'शुरू कर दिया उन लोगों न

कसा शोर हाना है इस मशीनगन स!

'हम अपन जवानों को आखिर क्यों ?

अब व क्यु नहीं नजर आते हैं न ?

अभी वहाँ नहीं पहुँचे ?

'एकाध मिनट म पहुँच हा जायेंगे।

दोना कम्पनियाँ जगल के मदान म पहुँचा। देवगार्ग के माद नता न आड का काम किया और आगे बढ़ने स रोक लिया।

एक पल्ल कम्पनी बहुत ही तज रफ़्तार म बगल स गुज़र गई। एक घुड़सवार नाल रमीयान पफ़मग न पीछे म चिल्लाकर कहा कोई नगा बात न कर।

कम्पनी गुज़री ता उनक साज़-सामान म झनझनाहट-सी हुई। परन्तु धालरे न फ़ुरमुट क पीछे जाने पर वह जल्दी ही अदृश्य हो गई।

पडो के बाच स अब भी अरू-तव दूर की आवाज़ें आती और फिर

बुझ जाती।

अब वे लोग पहुँच गए शायद वहाँ

हाँ, वे वहीं हैं शायद... एक-दूसरे को मार रहे हैं।

कज़ाकों ने कान लगाकर आहट लेने की कोशिश की पर कुछ और सुनाई न पड़ा। दायें किनारे पर ऑस्ट्रिया के तोपची हमला करने वालों पर आग बरसाते रहे। तोपों की गरज के बीच-बीच में मशीनगनें खड़खड़ाती रहीं।

ग्रिगोरी ने अपने ट्रूप के चारों ओर देखा। कज़ाक परेशान और बेचैन लगे। घोड़े डाँसों से परेशान दीखे। उरयूपिन ने काठी पर टोपी रखकर अपने गंजे सिर पर हाथ फेरा। ग्रिगोरी की बगल में मीशा कोशेवोई ने घर की बनी तम्बाकू की सिगरेट से लम्बा कश खींचा। धारा पार जो कुछ भी था साफ था और जरूरत से ज्यादा सच्चा था।

कम्पनियाँ तीन घण्टे तक रिज़र्व रखी गईं। इस बीच मशीनगनों और तोपों का आकाशभेदी गर्जन कभी एकदम खत्म हो गया तो कभी और तेज हो गया। सहसा ही एक हवाई जहाज ऊपर थहराया और कुछ चक्कर काटकर पूरब की ओर चला गया—और ऊँचाई पर उड़ते हुए। हवाई जहाज पर ऐंटी-एयरक्राफ्टगनों ने आग बरसाई तो आसमान के नीलम में जहाँ-तहाँ धब्बे-से पड़ गए। तम्बाकू का सारा स्टॉक समाप्त हो गया था और सैनिक आस लगाये बैठे थे कि कहीं से तम्बाकू मिलेगा। पर दोपहर से कुछ ही देर पहले एक अर्दली हुक्म लेकर घोड़ा दौड़ाता आया। चौथी कम्पनी का कमाण्डर अपने सैनिकों को लेकर धार में गया। ग्रिगोरी को लगा कि हम लोग आगे नहीं बढ़ रहे बल्कि पीछे लौट रहे हैं। उसकी कम्पनी चल भी और लगभग बीस मिनट तक जंगल में भटकती रही। लड़ाई की आवाजें ज्यादा-से-ज्यादा पास आती गईं। कुछ तोपें उनसे बहुत पास नहीं तो बहुत दूर भी नहीं आग उगलने लगीं। सिर के ऊपर से आसमान में श्रैपनल बम निकले। जंगल में सँकरे रास्ते के कारण कम्पनी का क्रम बिगड़ गया। फिर कम्पनी धूप में निकली तो अव्यवस्थित रूप में निकली। बाद आधा वर्स्ट के फासले पर हंगरी के हुस्सार दस्ते के एक सारजेण्ट के साथियों को तलवार से घाट उतारने लग पड़े।

कम्पनी सावधान ! कमाण्डर न चाखकर आदेश दिया ।

और कदज्जाक पूरी तरह व्यवस्थित भी नहीं हो पाये कि अगला आदेश मिला कम्पनी तलवार निकालो ! आगे बढ़ो हमला करो !

तलवारों की धारें बिजली की तरह चमकीं । कज्जाकों ने तेज दुलकी चलते घोड़ों को सरपट दौड़ा दिया ।

बटरी की ठीक दायीं ओर छः हुस्सार फील्ड-गन के घोड़ों में उलझे रह गए थे । एक उत्तेजित घोड़े की लगाम पकड़कर घसीट रहा था दूसरा उन पर अपनी तलवार की मूठ पर मूठ जमा रहा था और बाकी पहिये के आरों को नोच रहे थे । पूँछ कटे घोड़े की पीठ पर सवार एक अधिकारी की दम-खम में दम भागे काम हो रहा था । कज्जाकों को देखते ही उसने कुछ आज्ञा दी जिसे सुनते ही हुस्सार कूदकर अपने घोड़ों की पीठ पर सवार हो गए ।

और पास और पास

ग्रिगोरी ने उधर ही अपना घोड़ा दौड़ाया कि उसके एक पाँव से रकाब निकल गई । अपने को सँभाल में पाते ही वह मुड़ा और पाँव के अँगूठे से उसने झूलते हुए लोहे को पकड़ने की चेष्टा की । रकाब के पाँव में आते ही उसने सिर उठाया तो फील्ड-गन के छहों घोड़ों को उसने अपने सामने पाया । सबसे आगे के घोड़े का सवार घोड़े की गर्दन को पकड़े उससे चिपका हुआ था । उसकी समाज खून में तर थी । सहसा ही एक मुर्दा लाशों के ऊपर ग्रिगोरी के घोड़े का पाँव पड़ा । बक्से के ताले के ऊपर औंधे मुँह पड़ा दो मुर्दे और पड़े हुए थे । चौथा तोप की गाड़ी के ऊपर एक सरदार लेटा था । हुआ था । ग्रिगोरी के सामने उसका कटना था एक सरदार लटका था । ग्रिगोरी के सामने उसका चेहरा था एक कहानी बनाई । कज्जाक हवा में हथियारों के अधिकारी ने ठीक सामने में गोली चलाई । कज्जाक हवा में हवा में गोली चलाई । ग्रिगोरी ने घोड़े की रास खींची और राय भुनाता हुआ भटक पड़ा । ग्रिगोरी ने घोड़े की रास खींची और दायीं ओर ने अधिकारी के पास पहुँचने की कोशिश की । उसने तलवार से वार करना ही चाहा किन्तु अधिकारी ने उसे देख लिया और गोली चला दी । फिर पिस्तौल की गोलियाँ समाप्त हो गई तो उसने अपनी तलवार निकाली । उसने कहीं देखना से ऊपर से तीन जानलेवा

वार गये। फिर भी ग्वावा म सहं भेनर ग्रिगारी उस पर चौथी वार भपटा। उनके घोड़े लगभग अगल-बगल भागने रहे कि अब मास्ट्रियन के हल्के भूरे गाल के साथ ही उसकी कमाज के कॉलर पर सिल्की रेजीमेंट की संख्या दिखाई दी। उसने चक्कर देकर अधिकारी का ध्यान बटाया और वार की दिशा बदलकर तलवार की नोक हंगरियन के कंधा म घुसेड़ दी। दूसरा वार उसने गर्दन पर किया। अधिकारी के हाथ म लगाम और तलवार छूट पड़ी और एक बार कुछ सीधा होने के बाद वह घोड़े की काठी पर झूल गया। ग्रिगारी ने आपने को छुटकारा पाकर अपना सिर हिलाया और उसके कान के ऊपर की हड्डी पर पड़ी तलवार की चोट लगी।

सहसा हा पीछे से किसी ने ग्रिगारी पर वार किया और वह बेहोश हो गया। उसे गरम नमकीन खून की अनुभूति हुई और उसे लगा कि मैं गिर रहा हूँ। उसका सिर चक्कर खाने लगा और लगा कि ठूँठों से भरी जमीन नाचती उसकी ओर बढ़ी आ रही है। जमीन पर धड़ाम से गिरने पर उस थोड़ा होश आया। उसने आँखें खोलीं तो उनमें बन्द-बहकर खून आने लगा। उसके पास से कोई पाँव पटकता निकला। घाड़ों की तेजी म चलती साँसें भी उसे सुनाई दीं। उसने आखिरी बार आँख खोली तो किसी घाड़े के फूले हुए नथुन और ऊपर सवार के पैर रकाब म दिखलाई दिए। समाप्त! उसके मस्तिष्क म साँप की तरह रेंगती हुई शान्ति छा गई। एक गरज हुई और फिर घना अँधेरा घिर आया।

१३

अगस्त के मध्य म यवोनी लिस्तनित्स्की ने अतामान की लाइफगार्ड रेजीमेंट से अपनी बदली करवाकर कज्जाक फौजी रेजीमेंट में जाने का निश्चय किया। उसने आवेदन-पत्र भेजा और तीन हफ्ते म उसकी मनमानी नियुक्ति हो गई। सेंत पीटर्सबुग से चलने के पहले उसने अपने पिता को एक पत्र लिखा

पापा मैंने अतामान के रेजीमेंट से नियमित सेना म तबादले की अर्जी दी थी। मरी अर्जी मंजूर हो गई और आज नियुक्ति मिल गई।

मैं मोर्चे के लिए रवाना हो रहा हूँ। वहाँ दूसरी ओर से कमाण्डर की सेवा में उपस्थित होना है। शायद आपको मेरे फैसले से ताज्जुब होगा लेकिन मैं इसका कारण बतलाना चाहूँगा। मैं अपने चारों ओर के वातावरण से ऊब गया हूँ—परेडें, रक्षण-यात्राएं, पहरे की ड्यूटियाँ इस सारे तूफान में मेरी जान परेशान हो गई है। मेरी तबीयत उखड़ गई है। मैं शानदार काम करना चाहता हूँ। कहने को कह लीजिए कुछ बहादुरी के करिश्मे दिखलाना चाहता हूँ। शायद यह लिस्तनित्स्की परिवार के खून की पुकार है। शायद यह उस प्रतिष्ठित परिवार के खून की पुकार है जिसने १८१२ की लड़ाई से अब तक बराबर रूसी पराक्रम के यश के इतिहास में चार चाँद लगाये हैं। मैं मोर्चे पर जा रहा हूँ। आशीर्वाद दीजिए।

पिछले सप्ताह सम्राट के प्रधान कार्यालय के लिए रवाना होने से पहले मैंने उनके दर्शन किये। मैं उस व्यक्ति की पूजा करता हूँ। मैं महल के अन्दर पहरे पर था कि मेरी बगल से गुजरते हुए वह मुसकराए और गौर्जियाशों से अंग्रेजी में बोले— मेरा नामी गार्ड है यह। मैं विल्हेम का हाथ मिलवा सकता हूँ इसके हाथ से। मैं तो उनको स्कूली लड़की की तरह पूजता हूँ। मुझे यह मानने में कोई संकोच नहीं यद्यपि आज मेरी उम्र अट्ठाईस वर्ष से अधिक है। मुझे महल के अन्दर की बेसिर-पैर की बातों से बड़ी तकलीफ होती है। वहाँ लोग सम्राट के उज्ज्वल नाम को कलंकित करना चाहते हैं। मैं उनकी बातों का यकीन नहीं करता। कर नहीं सकता। अभी उस दिन कप्तान ग्रोमोव ने साम्राज्ञी की शान के खिलाफ मुँह खोला तो मैंने उस गाली से उड़ाते-उड़ाते छोड़ा। बात नीचता की थी और मैंने उससे कहा कि जिन लोगों की रगों में नैतिहर मजदूरों का खून बहता है सिर्फ वे ही अपने मुँह से ऐसे कमीनेपन की बातें निकाल सकते हैं। घटना कई दूसरे अफसरों के सामने घटी। मैं आपे से बाहर हो गया और मैंने अपना रिवाल्वर तान लिया। मैं तो उस गधे पर अपनी एक गोली खर्च कर देता, परन्तु हुआ यह कि लोगों ने रिवाल्वर मेरे हाथ से छीन लिया। इस नरक में दिन-ब-दिन मेरी जिन्दगी बद से बदतर होती जा रही है। गार्ड रेजीमेंट में—

यतलाया कि हम लोग दक्षिण-पश्चिम के मार्चे स आये हैं। अस्पताल यवोनी की रजीमेंट के इलाके म ही जा रहा था। डाक्टर ने अपने ऊपर के अधिकारियों की बहुत टीका-टिप्पणी की डिवीजन के ऊपर स नीचे तक के स्टॉफ अधिकारियों को जी भरकर कोसा और अपनी दाढ़ी पर अंगुलियाँ फेरते हुए चश्मे के अन्दर स आँखें चमकाते हुए नये परिचित के सामने सारा गुस्सा उँडेल दिया।

क्या आप मुझे वेरेजयाली तक ले चलेंगे ? यवानी ने उसकी बात काटते हुए पूछा।

हाँ लेफ्टिनेंट ! आप हमारी टोली में शामिल हो जाइये। उसने कहा और परिचिता की भाँति येवानी के कोट के बटन को घुमाते हुए अपनी शिकायतें उगलता रहा।

लेफ्टिनेंट साहब जरा सोचिये हम जानवरों से खिंचनेवाली सवारियों पर दो सौ वस्ट का फ़ासला तय करके यहाँ आये हैं आवारागर्दी करने। हमारे पास यहाँ कोई काम नहीं है और जिस इलाके से हम आये हैं उसमें दो दिन से खून की नदियाँ बह रही हैं। वहाँ सैकड़ों लोग पड़े हैं जिन्हें हमारी मदद की जरूरत है।

डॉक्टर ने खून की नदियाँ नफ़रत से भरकर दोहराया।

इस बेहूदगी की क्या और कम सफ़ाई दे सकते हैं आप ? लेफ्टिनेंट ने विनय से पूछा।

' क्या और कम ? डॉक्टर ने व्यंग्य से भरी निगाह ऊपर की और गरजा अव्यवस्था उपद्रव और कमान के कर्मचारियों का गधापन यह है इस क्या और कैसे का जवाब। बदमाश बड़ी-बड़ी जगहों पर जमे हुए सारा सत्यानाश कर रहे हैं। कुशल तो क्या होगी उसमें तो अकल का भी टोटा है। आपको वरमायेव के रूसी-जापानी युद्ध के संस्मरणों का ध्यान है ? वह सभी सब-कुछ दोबारा घट रहा है और कोढ़ में खाज ऊपर से हो गई है।

निरुत्तरित डॉक्टर का सस्पूट वरगाड़ियों का थार बढ़ा। डॉक्टर के गाल वैसे ही तमतमाये रहे। यानी लड़ाई में हमारी हार होकर रहेगी लेफ्टिनेंट ! हम जापानियों से लड़े और हार पर अक्ल हम न

आई। हम लम्बी-लम्बी डाँगें भर मार सकते हैं और बस!" और डाक्टर निराशा से सिर हिलाता पगरिया की ओर चल दिया। राह के गड्ढे-गड्ढों में तेल और पानी के घोल-मेल से इन्द्रधनुष बनते रहे।

फौजी अस्पताल के नागा से बरेजयागो पहुँचते-पहुँचते दोनों समय मिलने लगे। हवा अनाज के पौधों को छूती रही। बादल पश्चिम में जमा होते रहे। जो बादल ऊँचाई पर थे वे गहरे बैगनी रंग के थे। पर जो बादल नीचे थे उनका रंग धुएँ के समान हल्का नीला था। बीच में वे आकाशद्वीन थे और नदी के बाँध के पानी में एक किनारे पड़े बर्फ के तूदों-से जमा थे। बीच की सफेदी से छनता हुआ नारंगी रंग प्रकाश से घुल मिलकर तरह-तरह के रंग बुन रहा था।

सड़क के किनारे की झाड़ के पास एक मरा हुआ घोड़ा पड़ा मिला। उसका एक पैर अजीब ढंग से ऊपर की ओर उठा हुआ था और उसकी नाल चमक रही थी। बग्घी बगल से गुजरी तो सिस्तनित्स्की ने लाश को गौर से देखा। उसकी बग्घी हाँकने वाले ने घोड़े पर थूका और बोला—"यह ज्यादा खाने से मरा है। खेतों में घुस गया होगा।" वह समझा। वह दोबारा थूकने जा रहा था पर अन्तसीजी का ख्याल आया तो थूक निगल गया और आस्तीन से अपना मुँह पोंछने लगा। "अब मर गया है तो इस जमीन में गाड़ भी तो कौन गाड़े। यह रूसी है, जर्मन नहीं।"

"तुम इस बारे में क्या जानते हो?" यवानी पखारेण हो क्रोधित होकर बोला। उस समय उसे चपरासी के चेहरे के बड़प्पन और तिरस्कार के भाव के प्रति घृणा हो आई। चपरासी का चेहरा सितम्बर के सूर्य ढलने से भर सेना की तरह सूना और भयानक लग रहा था। उसमें और उन हजारों किसान फौजियों में उसे कोई अन्तर न लगा। ऐसे हजारों लोग उसे रास्ते में मिले थे। सभी के चेहरे ...नर और मुरझाये हुए थे। सभी की भूरी, नीली या हरी आँखों में उदासी थी। उन्हें देखकर वर्षों पहले ...न तांबे के पिस दिमाय मिस्त्रों की तस्वीर सहज ही सामने आ जाती थी।

"मैं लड़ाई में पन्द्रह साल मार जर्मनी में रहा हूँ।" चपरासी ने सहज उत्तर दिया। उसकी आवाज में भी उसके चेहरे का बड़प्पन और

तिरस्कार भरा था।

ज़बान बन्द करो! लिस्तनित्स्की ने मन्नी से कहा और मुँह फेर लिया। उसने फिर मरे हुए घोड़े पर नज़र डाली। घोड़े के कान उसकी आँखों पर आ गए थे और उसके दाँत धूप में पीले लगते थे। घोड़ा देखने में मज़बूत और अच्छी नस्ल का मालूम होता था।

गाड़ियाँ ऊँची-नीची सड़क पर बढ़ती रहीं। पश्चिम में रंग हल्के पड़ने लगे, हवा चली। हवा धूल और यात्रियों को उड़ाने लगी। रास्ते में उनके पीछे मरे पड़े घोड़े की उठी हुई टाँग सड़क के किनारे के टूटे हुए बाँस-सी लगी। लिस्तनित्स्की ने पीछे मुड़कर देखा तो अकस्मात् ही घोड़े पर गिरती धूप का नारंगी रंग देखा। इने-गिने यात्रियों वाली उसकी टाँग किसी पौराणिक कथा की बिना पत्तियों की शानदार शाख-सी लगी।

फौजी अस्पताल कारगयागा पहुँचा तो उस राह में घायल फौजियों वाली गाड़ियाँ मिलीं। पहली गाड़ी का मालिक एक बुज़ुर्ग सा बेला रूसी था। पटसन की रासें उसके हाथ में थीं और वह घोड़े के सिर के पास चल रहा था। गाड़ी में एक कज़्ज़ाक लेटा हुआ था। उसके सिर पर पट्टी बँधी हुई थी और वह कुहनियों के सहारे लेटा आँखें बन्द किए रोती स्वर गा रहा था। उसकी बगल में एक दूसरा सैनिक लेटा हुआ था। घुटनों पर से फटा उसका सिकुड़ा हुआ पाजामा गाढ़े खून से तर था। बिना सिर उठाए ही वह बहुत बुरी तरह गालियाँ बक रहा था। उसके लहजे से लिस्तनित्स्की घबरा गया क्योंकि उसे लगा जैसे कि कोई ईश्वरवादी उत्साह से प्रार्थनाएँ दोहरा रहा हो।

दूसरी गाड़ी में पाँच-छः फौजी अगल-बगल लेटे थे। उनमें से एक बड़ा ही खुशमिज़ाज था। उसकी आँखों में असाधारण चमक और आग थी। इस समय वह एक कहानी सुना रहा था

लगता है कि उसने सम्राट ने अपना राजदूत भेजा और उसने समझौते का प्रस्ताव रखा बात यह है कि यह खान मुझसे ज़्यादा ईमानदार आदमी नहीं है मैं नहीं समझता कि उसने दूत की भी होगी

और मैं समझता हूँ कि उसने दूत की सी है। एक व्यक्ति ने सन्देह भरे दिल से उत्तर दिया और सिर हिलाया। उसके सिर पर दाग थे।

य दाग इधर कठमाना क प्रताप के बाद पडे थे।

'पर गायद वह सचमुच ही आया हो।' घोडा की तरफ पीठ कर बठे हुए एक तीसरे आम्मान वोल्गा प्रदेश के लोगा कन कामन स्वर में कहा।

पाँचवी बगन में तीन कज्जाक आराम मे वैठे हुए थे। उन्होंने पास म गुजरत लिस्तनित्स्की को मौन भाव स देखा। उनके सम्ब चहरा पर अधिकारी के प्रति सम्मान का किसी तरह का कोई चिह्न नहीं झलका।

'ज्द्रावयद्येत[1] कज्जाको!' लफ्टिनेंट ने उनका अभिवादन किया।

'ज्द्रावयद्यन साहब!' कोचवान क पास बठे सुन्दर-से सुनहली मूँछा वाले कज्जाक न अनमन भाव स जवाब दिया।

'किस रजीमेंट क हो तुम?' लिस्तनित्स्की न फिर पूछा और कज्जाक क कंधे की नीली पट्टी पर अकित सख्या पढ़नी चाही।

'बारहवा रजीमेंट का'

'अब तुम्हारा रजामेंट कहाँ है?'

'पता नहा साहब!'

'लकिन तुम जख्मी कहाँ हुए?'

'गाँव क पास यहाँ से दूर नहीं है वह जगह।'

कज्जाक आपस म कुछ फुसफुसाये कि अपने स्वस्थ हाथ मे अपना जख्मी हाथ साधते हुए एक कज्जाक गाडी स नीचे कूद गया। उसके हाथ की पट्टी कायदे स बधी न थी।

'एक मिनट साहब!' गाली म फट गए अपने हाथ की होशियारी म फिक्र करता वह नग परों सडक पार करने लगा। उसका हाथ या भी सूजन-सा लगा था।

'आप ल्यानस्काया क हैं क्या? आप लिस्तनित्स्की ता नही हैं?'

'मैं लिस्तनित्स्की ही हू।'

'यही हम लगा' आपके पास कोई सिगरट है? हो तो प्रभु यीशु

---

1 गुड डे।

के नाम पर दे दीजिए तलब से जान निकली जा रही है।

वह गाड़ी का रंगा हुआ बाजू थाम चलता रहा। लिस्तनित्स्की ने अपना सिगरेट-केस निकाला।

क्या एक दर्जन सिगरेटें हम दे सकते हैं आप? हम तीन हैं।

कज़्ज़ाक की मुसकान में अनुराग घुल उठा।

लिस्तनित्स्की ने सारी सिगरेटें उसकी हथेली पर उलट दीं और पूछा तुम्हारी रेजीमेंट में बहुत लोग घायल हुए हैं?

कोई दो दर्जन

जानें बहुत गई हैं?

हममें से बहुत लोग मारे गये हैं क्षमा कीजिये जरा कृपा कर दियासलाई जला दीजिये धन्यवाद! कज़्ज़ाक ने सिगरेट जलाई और पीछे रह गया। पर बात का जवाब चिल्लाकर दिया आपकी जागीर के पास के तातारस्की के तीन कज़्ज़ाक मारे गए हैं। दुश्मनों ने हममें से बहुतों को भून डाला है।

उसने अपना स्वस्थ हाथ हिलाया और अपनी गाड़ी पकड़ने के लिए तेज कदम बढ़ाये। उसका ट्यूनिक हवा में फड़फड़ाता रहा। पट्टी बंधी न थी।

लिस्तनित्स्की की नई रेजीमेंट के कमाण्डर का प्रधान कार्यालय एक पादरी के मकान में था। गाँव में पहुँचने पर लिस्तनित्स्की ने अपने ऊपर दया दिखलाकर साथ लाने वाले डॉक्टर से विदा ली और अपने ट्यूनिक की धूल झाड़ता हुआ अपने दफ्तर की खोज में निकला। जगह उसे मिल गई। युद्धस्थल से दूर स्थित अन्य सभी प्रधान कार्यालयों की भाँति यह स्थान भी शान्त और बेजान-सा था। सारे-के-सारे क्लर्क मेज पर झुके हुए थे। एक वृद्ध कप्तान फ़ील्ड-टेलीफोन के आगे में अपनी हँसी रोके रहा था। खिड़कियों के पास मक्खियाँ भिनभिना रही थीं और दूर में टेलीफोनों की घण्टियाँ मच्छरों की तरह भन भन कर रही थीं। एक में एक अर्दली यवोनी को रेजीमेंट के कमाण्डर के निजी कमरे में लिवा ले गया। दरवाजे पर ही लम्बा कनल मिल गया। वह यवोनी से उदासीन भाव से मिला और इशारा कर उसे अन्दर बुलाया।

अन्दर पहुँचकर दरवाज़ा बन्द करते हुए कर्नल ने अनमनीय मकान का दिखावा कर अपने बालों पर हाथ फेरा और धीमी नीरस आवाज़ में बोला ब्रिगेड स्टॉफ ने मुझे कल आपके रवाना होने की सूचना दी थी बैठ जाइये।"

उसने यवानी से उसकी पिछली सेवाओं की जानकारी प्राप्त करनी चाही, राजधानी की ताज़ा खबर पूछी और उसके सफ़र के बारे में पूछताछ की। पर बातचीत के सिलसिले में एक बार भी उसके चेहरे की ओर आँख उठाकर नहीं देखा।

शायद मोर्चे पर बहुत खटना पड़ा है। थकान से चूर चूर लगता है। यवानी ने सहानुभूति से सोचा। जैसे जान-बूझकर खुमारी दूर करने के लिए कर्नल ने तलवार की मूठ से अपनी नाक खुजलाई और बोला अच्छा लेफ्टिनेंट आपको अपने बन्धु-अधिकारियों से जान-पहचान कर लेनी चाहिए। क्षमा कीजियेगा मैं लगातार तीन रातों से नहीं सोया हूँ। इस काल-कोठरी में ताश खेलने और शराब पीने के अलावा और कोई काम ही नहीं है।

लिस्तनित्स्की ने अभिवादन किया और अनादर की भावना पर मुस्कान का पर्दा डालते हुए दरवाज़े की ओर मुड़ा। पहले परिचय में कमान अधिकारी ने उस पर कुछ अच्छा असर नहीं डाला। कर्नल की थकी आकृति और ठाढ़ी के ढिल में उत्पन्न आदर के प्रति व्यंग्य में मन ही-मन मुस्कराता हुआ वह बाहर चला गया।

१४

यवानी की रेजीमेंट का काम सिर्फ़ नदी की घेराबन्दी करने और दुश्मन पर पीछे से हमला करने का था। कुछ दिनों में ही लिस्तनित्स्की की रेजीमेंट के अफ़सरों से जान-पहचान हो गई और वह लड़ाई के वातावरण में ढल गया। इससे उसकी आत्मा में प्रविष्ट आराम तलबी और सुस्ती घटी।

घेराबन्दी का काम तत्परता से किया गया। डिवीज़न दुश्मन की सेना के पिछले हिस्से में जा पहुँचा। दुश्मन की सेना भारी मार से

बढ़ती रही। आस्ट्रिया के लोगों ने मगयार के घुड़सवारों की सहायता से हमले का जवाब देना चाहा कि कज्जाक बैटरियों ने बम बरसाने शुरू कर दिए। उधर बायीं ओर से जो मशीनगनें चलीं तो मगयार सेना के पैर उखड़ गए। वह भाग दी। कज्जाक घुड़सवारों ने उनका पीछा किया सो ऊपर से।

लिस्तनित्स्की अपनी रेजीमेंट ले प्रत्याक्रमण के लिए बढ़ा। उसके चार सैनिक घायल हुए और एक खेत रहा। उनमें से एक कज्जाक तो अपने मुर्दा घोड़े के नीचे कुचल गया। उधर से गुजरते समय लेफ्टिनेंट बाहर से ऐसे जम शान्त बना रहा जैसेकि कज्जाक की आह-कराह उसके कानों में पड़ ही न रही हो। दूसरी ओर जख्मी कज्जाक लिये कज्जाक उधर से गुजरनेवाले तमाम लोगों से मिन्नत करता रहा।

"भाइयो, मुझे इस तरह मत छोड़ो। भाइयो, मुझे घोड़े के नीचे से निकालो।"

उसका धीमा दुःख से भरा स्वर इतना धीमा रहा कि किसी भी कज्जाक के कानों में पड़ा ही नहीं। पर कज्जाकों के उफनते हुए दिलों में नाम को भी करुणा नहीं उपजी। अगर उपजी भी तो शायद इच्छा शक्ति ने कुचल दी। वह इच्छा शक्ति उन्हें बराबर आगे-ही आगे बढ़ने को प्रेरित करती रही और उनके घोड़ों से उतरने के नाम पर नाक-भौं अरुची दिखलाती रही। दल अपने घोड़ों को पाँच मिनट तक दुलकी चाल चलाता रहा ताकि घोड़े थोड़ी साँस ले लें। आगे खेत के पासने पर तितर-बितर मगयार सेना दम छोड़कर भागती रही। उनमें इधर उधर बीच-बीच में दुश्मन की पैदल सेना के लोग फँसे रह। पहाड़ी की चोटी पर आस्ट्रिया की एक मालगाड़ी धीरे-धीरे बढ़ती रही और सिर पर मंडराते बम के गोले उन्हें दिखाई देते रहे। बायीं ओर से एक बैटरी उस गाड़ी पर बम बरसाती रही और तोपों की गरज सेना पर मुड़कती रही और जंगल में बीच गूँजती रही।

सार्जेंट-मेजर ने टुकड़ी के आगे आगे चलते हुए हुक्म दिया, "कदम चाल!" और तीनों कम्पनियाँ उसी तरह आगे बढ़ चलीं। सवारों के घोड़े सहराने लगे और उनके मुँह से झाग उछल-उछलकर इधर उधर

उडन लग ।

रेजीमेंट न रात में एक छोटे-स गाँव में पड़ाव डाला । बारह अधिकारी एक ही झोपड़ी में ठहरे । थकान और भूख स चूर व सोने क लिए लेट गए । फ़ौजी बावर्चीखाना लगभग आधी रात को आया । कोरनत चुवाव गोश्त की एक पतीला लकर आया । महक स अफ़सर जाग गए खान पर टूट पड़े और पिछल दो दिन की कमी पूरी करन लग । बहुत देर स खान के कारण उनकी नींद उड गइ और व अपन सवालों पर लम्कर बातें करने और सिगरटें पीन लग ।

प्रथम लफ्टिनेंट काल्मीकोव कद म छोटा और गोलमटोल था—चहरे और नाम दोनों स ही मगोलियन । वह भयकर चुटकुले बनाता हुआ बाला यह लड़ाई मेर लिए नही है । मैं चार सदी पहल पदा हुआ हू और तुम्ह मालूम होना चाहिए कि इस लड़ाई क खत्म होने स पहल-ही पहल चल बसूगा ।

आह छोड़ो भी किस्मत का गाना ।

यह किस्मत का गाना नहा है । मेर भाग्य म इसी तरह मरना लिखा है । मेरा नक्ल मेर पुरखा स मिलती है और मैं यहाँ बिलकुल बकार हूँ । आज जब हम लोगों पर गाल बरस थ मैं क्रोध स काँप उठा । दुश्मन आँखा के सामन न हो मैं यह बर्दाश्त नही कर सकता । दुश्मन डर-जमा लगता है । दुश्मन बस्टों दूर स गाल बरसात हैं और हम घायल चिड़ियो की तरह लगी मदान में घाह पर दौड़त चल जात हैं । मैंने दुपानका म भास्ट्रियाई हाविम्जर तोपें देखी तुमम स किसी न देखा है ?

कप्तान भतामान चुकोव न पूछा ।

क्या शानदार चीज हाती है उसन सामन म पूछा कारनेत चुबोव न जोर स कहा । इस बीच उसन एक कटोरा खाली और साफ कर लिया ।

मैंन भी देखा है पर मरी अपनी कोई राय नहा है । तोपों क मामल में मैं बिलकुल गधा हूँ । मुझे तो वह बन्दूक-जमी लगती है सिवाय इसक कि उसकी नली और बड़ी होती है ।

निस्तनित्स्की की ओर मुड़कर काल्मीकोव कहता गया मुझे तो

पुराने जमाने के लड़नेवाला से ईर्ष्या होती है। बराबर की लड़ाई हो दुश्मन सामने हो तलवार से चीरकर उसके दो टुकड़े कर दो—यह तो हुई लड़ाई। पर आज की लड़ाई तो शैतान की ही समझ में आएगी।

भविष्य में लड़ाई में घुड़सवारों के लिए कोई गुंजाइश नहीं रहेगी। इसका नाम निशान मिट जाएगा।

यह तो मैं नहीं कह सकता।

लेकिन आदमी का काम मशीन नहीं कर सकती। तुम बहुत आगे निकल गए।

मैं आदमी की नहीं घोड़ों की बातें कर रहा हूँ। मोटर-साइकिलें या मोटरें आ जाएगी इनकी जगह।

मेरी आँखों के सामने तो मोटरों की कम्पनी की तसवीर आ रही है।

ये सब बेवकूफी की बातें हैं। कारगीनोव ने उत्तेजित होकर बात काटी झक्कीपन की बातें हैं। कौन कह सकता है कि दो-तीन सौ साल बाद लड़ाइयाँ कैसी होंगी लेकिन आज तो घुड़सवार-फौजें हैं ही।

सारे मोर्चे पर खाइयाँ-ही-खाइयाँ खुद जाएगी तो आप इन घुड़सवारों का क्या करेंगे यह बतलाइए मुझे?

खाइयों को तोड़कर उनके पार निकल जाना और सेना के पृष्ठ भाग से धावा बोलना यह काम होगा घुड़सवार फौज का।

बकवास है।

अच्छा बन्द करो बातें अब थोड़ा सो लो। किसी ने कहा।

बहस समाप्त हो गई और बन्त्स की जगह गुर्रोंगा ने ले ली। सड़े भूसे की पुआल पर बिछे लबादे पर पीठ के बल लेटा लिस्तनित्स्की तीखी गन्ध का अनुभव करता रहा। उसकी बगल में लेटा हुआ था कारगीनोव।

तुम्हें बगुन नामक स्वयंसेवक से बातें करनी चाहिए। उसने यवोनी से धीरे से कहा वह तुम्हारे रंग में है। बड़े मजे का आदमी है।

किन मामले में ? कोल्मीकोव का सार पाठ करते हुए यवानी ने पूछा।

यह कज़ाक का रूसी रूप है। मास्को में एक आम मेहनतकश की तरह रहता था लेकिन उस मशीन में दिलचस्पी है। खुद मशीनगनें चलाने में तेज़ है।

आओ, आ जाओ। मिस्त्रीनिल्को ने कहा।

हाँ शायद अब खाना ही चाहिए   कोल्मीकोव ने कुछ सोचते हुए कहा और त्यारियाँ चढ़ाई।

आप मुझे माफ़ करें, कमिसार साहब! मेरे पर कम्प कर रहे हैं। आप जानते हैं मैंने कल कई दिन से आज नहीं खाया, परेशान से मर गए हैं बिलकुल। बहुत ही गन्दे हैं। एक जोड़ी किसी से लेना चाहिए।

बिलकुल नहीं। मिस्त्रीनिल्को ने खाने के लिए लपकते हुए कहा।

यवानी का कोल्मीकोव की बन्दूक के विषय में बतलाई गई बातों का ध्यान ही नहीं रहा, लेकिन अगले दिन अकस्मात ही वह व्यवसाय उसे मिल गया। रेजीमेण्ट के कमाण्डर ने उस दस्ते की मनुष्य-पालन-कार्य के लिए घोड़े पर जाने की आज्ञा दी और कहा कि यदि सम्भव हो तो बायीं पार्श्व से बराबर आगे हो बढ़ती पैदल सेना से सम्पर्क स्थापित कर लेना। झुटपुटे में लड़खड़ाता तथा सोते हुए कज़ाकों के ऊपर गिरता पड़ता यवानी ट्रुप-मार्जेन्ट के पास जा पहुँचा और उसे जगाकर बोला मनुष्य-पालन-कार्य के लिए अपने साथ ले जाने को मुझे पाँच आदमी चाहिएँ। मेरा घोड़ा तैयार करा दो जरा जल्दी!

वह सार्जेन्ट के आने की प्रतीक्षा में बैठा रहा कि एक मझोला-सा कज़ाक ओसारे के दरवाज़े पर आया।

हुज़ूर! उसने कहा, सार्जेन्ट मुझे आपके साथ नहीं आने दे रहे क्योंकि आज मेरी बारी नहीं है। क्या आप मुझे ले चलेंगे?

तुम तगड़ी चाहते हो? तुमने कुछ गड़बड़ तो नहीं की?   यवानी ने अँधेरे में उस व्यक्ति का चेहरा देखने की कोशिश करते हुए कहा।

मैंने कुछ भी ऐसा नहीं किया।

ठीक है तब तुम चल सकते हो। यवानी ने प्रसन्नता प्रकट किया। लौटने के

निग कज्ज़ाक ने पीठ फेरी ही थी कि यशोनी ने उसे पुकारा ऐ सार्जेंट से कह देना

मेरा नाम बचुक है। कज्ज़ाक ने उसकी बात काटते हुए कहा।

स्वयंसेवक हो?

जी हाँ।

परेशानी से उभरते हुए लिस्तनित्स्की ने बात करने का अपना ढंग सुधारा अच्छा बचुक कृपा कर सार्जेंट से कह देना कि अच्छा रहने दो मैं स्वयं कह दूँगा।

सुबह का अँधेरा घटा कि लिस्तनित्स्की अपने आदमियों को लेकर गाँव से बाहर आया। थोड़ी दूर चलने के बाद यशोनी ने आवाज़ दी स्वयंसेवक बचुक!

हुज़ूर!

कृपया अपना घोड़ा मेरे घोड़े की बगल में ले आओ।

बचुक अपना मामूली-सा घोड़ा यशोनी के अच्छी नस्ल के घोड़े की बग़ल में ले आया।

किस गाँव के हो? लिस्तनित्स्की ने उसकी आकृति को ध्यान से देखते हुए पूछा।

नोवोचरकास्स्क का।

क्या तुम बतला सकते हो कि तुम्हें स्वयंसेवक के रूप में फ़ौज में क्यों आना पड़ा?

बेशक। बचुक ने हलके हलके मुसकराते हुए उत्तर दिया। उसकी हरी स्थिर आँखों में कठोरता थी— मुझे लड़ाई की कला में दिलचस्पी है। मैं उसमें माहिर होना चाहता हूँ।

इस काम के लिए तो सैनिक विद्यालय है।

मैं पहले व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूँ। सिद्धान्त पीछे सीख लूँगा।

'लड़ाई शुरू होने के पहले तुम क्या करते थे?

कामगार था।

कहाँ काम करते थे?

पीटसबुर्ग रोस्तोव म और तुला के हथियारों के कारखाने म। मैं मशीनगन की टुकड़ी में अपनी बदली कराने के लिए अर्जी देना चाहता हूँ।

मशीनगनों के बारे में कुछ जानकारी है तुम्हें ?

मैं वरतायर मदसन मेक्सिम हॉचकिस विकस सविस और कई दूसरी कम्पनियों की बनी मशीनगन चला सकता हूँ।

अच्छा मैं इसके बारे म रेजीमेंट के कमाण्डर से बात करूँगा।

बड़ी मेहरबानी होगी।

लिस्तनित्स्की ने बचुक के हृष्ट-पुष्ट तगड़े शरीर पर एक बार फिर दृष्टि डाली। उसे देखकर उसको दोन किनारे के नाट एल्म के पेड़ की याद हो आई। उस व्यक्ति म कोई खास बात न थी। केवल मजबूती से भिंचे होठ और निगाहें को चुनौती देती हुई उसकी आँखें ही ऐसी थी जो उसे बाकी कज्जाकों की भीड़ से अलग करती थी। वह मुसकराता लेकिन बहुत कम और मुसकराता तो होठों-ही-होठों म मुसकराता। किन्तु उसके नेत्रों की कठोरता कम नहीं होती। उनम एक अलगाव बना ही रहता। उस दोन की गीली मिट्टी म उगनेवाला नाटा एल्म ही समझिए। यह एल्म सबकी तरफ से विमुख और उदासीन रहता है।

थोड़ी देर तक घोड़ों पर सवार म शान्ति से चलते रहे। बचुक ने काठी पर अपनी चौड़ी हथेलियाँ टेक दी। लिस्तनित्स्की ने एक सिगरेट निकाली और उस बचुक की तीली से जलाया। जलाते समय बचुक के हाथों से उसे घोड़े के पसीने की तीखी बास आई। उसके हाथ पर घोड़े की खाल के समान घने भूरे बाल निकलाई दिए। यवोनों की बलात् इच्छा हुई कि उसे झटक दे।

तेज तम्बाकू का धुआँ निगलते हुए वह बोला जंगल म पहुँचते ही तुम दूसरे कज्जाक के साथ बायीं ओर के रास्ते पर मुड़ जाना समझे ?

जी

मगर आधे वक्त तक हमारी पल्टन टुकड़ी तुम्हें न मिले तो वापस आ जाना

'बहुत अच्छा !'

उन्होंने घोड़ों को दुलकी दौड़ा दिया ।

जंगल में सड़क के मोड़ पर नये बर्चों का झुरमुट था । उनमें आग दबगार के छोटे पीले सूखे पेड़ थे और आस्ट्रिया की सेना से कुचली हुई झाड़ियाँ और छोटे पौधे थे । दाहिनी ओर दूरी पर तोपखाना ज़मीन हिला रहा था लेकिन यहाँ बर्चों के पास बिलकुल शान्ति थी । जहाँ-तहाँ घनी ओस पड़ी हुई थी । शरद की घास गुलाबी पड़ती जा रही थी और अपना रंग उड़ जाने की सम्भावना से दुखी थी । इस में बर्चों के पास लिस्तनित्स्की ने घोड़ा रोका, दूरबीन निकाली और जंगल के आगे की पहाड़ी की ओर देखा । उसकी तलवार की मूठ पर एक शहद की मक्खी आ बैठी ।

'बेवकूफ़ !' चुबुक ने शान्त भाव से हमदर्दी दिखाते हुए कहा ।

'क्या बात है ?' येवोनी ने उसकी ओर मुड़कर पूछा ।

चुबुक ने शहद की मक्खी की ओर आँखों से इशारा किया । लिस्तनित्स्की मुसकरा उठा ।

'इसके शहद में तेज़ी आ जाएगी, यह नहीं सोचा ?' वह बोला ।

चुबुक ने तो उसे कोई उत्तर नहीं दिया किन्तु उत्तर दिया दूर के देवदारों के समूह की शान्ति भंग कर एक नीलकंठ ने और बच-पड़ा के बीच में आई गोलियों की बौछार ने । एक गोली से एक डाल टूटकर लिस्तनित्स्की के घोड़े की गर्दन पर आ गिरी ।

वे लौटकर घोड़ों पर चीखते चिल्लाते और कोड़े बरसाते तेज़ी से गाँव की ओर चल दिए । आस्ट्रियन मशीनगन ने अपनी बाकी गोलियाँ बरसाईं ।

इस पहले हमले के बाद लिस्तनित्स्की ने स्वयंसेवक चुबुक से कई बार बातचीत की । हर बार उसे चुबुक की आँखों में दृढ़ विश्वास की झलक मिली । वह नहीं जान सका कि इस व्यक्ति के इतने साधारण दिखाई देने वाले चेहरे को कौन-सी अनजानी गूढ़ता ने घेर रखा है । चुबुक सदा हत्या में भिड़ जाने पर मुसकान सजाकर ही बातें करता और सवानी के मन पर सदा यही छाप छोड़ता कि मैं दुश्मन मारने की ताक में लिए

एक निश्चित नियम का प्रयोग करता है। उसकी इच्छानुसार उनकी नियुक्ति मशीनगन की टुकड़ी में हो गई। कुछ दिन बाद रेजीमेंट मोर्चे के पीछे आराम कर रही थी कि जल हुए मकान की दीवार के पास लिस्तनित्स्की उससे मिला।

'ओह ! स्वयंसेवक बंचुक !' उसने पुकारा।

कज्जाक ने मुड़कर उसका अभिवादन किया।

'कहाँ जा रहे हो ?' येवोनी ने पूछा।

'अपने कमाण्डर के पास।'

'तो हमारा रास्ता एक ही है।'

थोड़ी देर तक वे दोनों उस बरबाद गाँव की गलियों में चुपचाप चलते रहे।

लोग बाहर की इमारतों के पास जा रहे थे। वे इमारतें अब तक सुरक्षित थीं। बगल से घुड़सवार गुज़र रहे थे। गली के बीच फौजियों का बावर्चीखाना धुआँ उगल रहा था। सामने कज्जाकों की एक लम्बी क़तार थी। सब अपनी अपनी पारी का इन्तज़ार कर रहे थे। हवा में बूंदों के छींटे थे।

'तो युद्धकला सीख रहे हो ?' लिस्तनित्स्की ने बंचुक की ओर कनखी से देखते हुए पूछा। बंचुक उससे ज़रा पीछे था।

'जी, सीख रहा हूँ।'

'लड़ाई के बाद क्या करने का इरादा है ?' लिस्तनित्स्की ने किसी कारण उसके हाथ पर निगाह डालने हुए पूछा।

'कुछ लोग जो बोयेंगे वो काटेंगे, लेकिन जहाँ तक मेरा सवाल है देखा जाएगा।' बंचुक ने जवाब दिया।

'इस बात का क्या मतलब लगाऊँ मैं ?'

'आपने सुना है कि जो हवा बोता है वह अंधड़ काटता है। बस यही मतलब लगाइए।'

'पहेलियाँ मत बुझाओ।'

'बात बिलकुल साफ़ है। क्षमा कीजिएगा, मैं यहाँ से बायीं ओर मुड़ूंगा।'

मैं आपको सूचित करता हूँ उसने पढ़ना शुरू किया फिर सहसा ही बेंच से नीचे उतरकर दहाड़ मार-मारकर रोने लगी।

पापा! माँ उफ माँ हमारा ग्रीश्का हाय हाय! ग्रीश्का मारा गया।

जिरनियम पौध की आधी मुरझाई पत्तियों में फंसी हुई एक बर रह रहकर खिड़की से टकराती रही। हाते में मुर्गी सन्तोष से कुड़कू-कू करती रही। खुले हुए दरवाजे से किसी बच्चे की हंसी की खिलखिलाहट अन्दर आई।

नताल्या का चेहरा कांप उठा किन्तु उसके होठों पर अब भी थर थराती हुई मुसकान थिरकती रही। लक्कड़ की तरह ऐंठा हुआ चेहरा उठाकर पन्तली ने परेशानी और बौखलाहट से दून्या की ओर देखा।

पत्र इस प्रकार था

आपको सूचना दी जाती है कि आपका पुत्र बारहवीं दोन कज्जाक रेजीमेन्ट का ग्रिगोरी पन्तेलिएविच मेलेखोव १६ सितम्बर को कामेन्का स्त्रुमिलोवो नामक नगर के पास लड़ाई में खेत रहा। आपके पुत्र ने वीर गति पाई। भगवान् करे कि इस समाचार से आपको थोड़ा सन्तोष का अनुभव हो हालांकि जो क्षति आपको पहुंची है उसकी पूर्ति असम्भव है। उसकी चीजें और बाकी सामान उसके भाई प्योत्र मेलेखोव को सौंप दिया जाएगा। उसका घोड़ा रेजीमेन्ट के साथ रहेगा।

—पोलोवोवनीकोव जूनियर कप्तेन कमाण्डर चौथी टुकड़ी— १८ सितम्बर १९१४।

पन्तेली बेटे की मौत की खबर से टूट गया। हर नया दिन आकर उसके बूढ़े चेहरे में और बुढ़ापा घोलने लगा। उसकी स्मरण-शक्ति नष्ट होने लगी और मस्तिष्क का ज्ञान लुप्त होने लगा। कमर झुक गई। चेहरा तांबे-सा काला पड़ गया। उसकी चमचमाती आंखों से अमाद्य करुणा टपकने लगी।

पत्र उसने देवमूर्ति के नीचे छिपा दिया। अब दिन में कितनी ही बार वह बरसाती में जाकर दून्या को इशारे से बुलाता और दून्या आ जाती तो उसे वहां से पत्र निकालकर सुनाने का आदेश देता। पर मौत

के कमरे के दरवाज़े की ओर आँखों से देखता जाता क्योंकि वहाँ पड़ी उसकी पत्नी दिन रात गाली-बकती रहती। इसलिए आँख मारते हुए कहता — धीरे-धीरे ऐसे पढ़ जैसे कि मन-ही-मन पढ़ रही हो। आँसुओं को पोंछती हुई दुन्या पहला वाक्य पढ़ती और फिर पन्तेला एड़ियों के बल बैठकर अपना भूरा हाथ उठाए कहता 'ठीक है, ठीक है। बाकी मुझे मालूम है। चिट्ठी वहीं ले जाकर रख दे जहाँ से लाई थी।' धीरे से कहता—'मेरी लाडली माँ' और बार-बार पलकें झपकाता। सारा चेहरा पेड़ की जली हुई छाल की तरह ऐंठ उठता।

उसके बाल पकने लगे और फिर गिरने लगे कि थोड़े-से यहाँ रह गए तो थोड़े-से वहाँ। दाढ़ी के बाल बट-से उठे। वह पेटू हो गया। अब खाने पर बैठता तो चीज़ें निगलता चला जाता।

मृतक प्रार्थना के नौ दिन बाद मेलेखोव-परिवार ने मृत प्रियजनों की स्मृति भोज में फ़ादर विसारियोन और अपने सम्बन्धियों को न्यौता। इस अवसर पर पन्तेली खाता ही चला गया। सामी के जहाँ-तहाँ छू जाने से दाढ़ी के बालों से छल्ले-से बन उठे। इलीनीचिना बहुत दिनों से उसकी इस अवस्था पर चिन्तित थी। वह फूट पड़ी 'तुम्हें आखिर हो क्या गया है?'

'क्या है?' बूढ़े ने अपनी धुँधली आँखें प्लेट से हटाईं और ताक उठा। इलीनीचिना ने हाथ हिलाते हुए उधर से मुँह फेर लिया और आँखों से रुमाल लगा लिया।

"बाबा, तुम इस तरह खाते हो जैसे कि तीन दिन के भूखे हो।' दारया ने क्रोध से कहा। उसकी आँखें क्रोध से चमकने लगीं।

'मैं खाता हूँ, अच्छा नहीं खाऊँगा।' अपने मन की परेशानी पर काबू पाते हुए पन्तेली ने जवाब दिया। उसने मेज़ के चारों ओर निगाह डाली, होंठ भींचे, भौंहें चढ़ाईं और चुप हो रहा। फिर सवालों के जवाब भी नहीं दिए।

'आह प्रोकोफ़िएविच, हिम्मत से काम लो। इतना दुखी होने से फ़ायदा?' भोजन समाप्त होने पर फ़ादर विसारियोन ने उसको धैर्य बँधाना चाहा 'ग्रिगोरी की मृत्यु पावन कर्म है। प्रभु के कोप भाजन न बनो! तुम्हारे

पुत्र न जार के लिए अपने देश के लिए काँटों का ताज पहना और तुम—यह पाप है प्रभु तुम्हें क्षमा नहीं करेंगे।

ठीक कहते हो फादर! वीरगति पाई यही बात तो उसके कमाण्डर ने कही।

बूढ़े ने पादरी का हाथ चूमा और दरवाजे पर झुककर बुरी तरह फूट पड़ा। उसका शरीर पत्ती की तरह काँपने लगा। पत्र आने के समय से आज तक ऐसा कभी न हुआ था।

उस दिन से वह अपनी सम्हाल में रहने लगा। धीरे धीरे आघात से थोड़ा उभरा

सभी को चोट पहुँची थी पर अलग-अलग ढंग से। नताल्या ने दून्या को ग्रिगोरी की मौत की खबर पर रोना-चिल्लाना सुना तो वह भागकर अहाते में चली गई। मैं भी मर जाऊंगी। अब मेरे लिए दुनिया में रहा ही क्या? इस विचार के साथ वह आग की तरह आगे ही आगे चलती गई। वह दार्या की बाँहों में ढह पड़ी और जैसे कि वह उस क्षण को भुलाने और टालने के लिए बेहोश हो गई। यो लगा जैसे कि उसे कुछ आराम मिला कि अभी न होश आएगा न होश के साथ प्रियतम की मृत्यु का ध्यान। दुसह विस्मृति में ही एक सप्ताह व्यतीत हो गया। यथार्थ जगत् में वह लौटी तो बहुत बदली हुई—शान्त कदाचित् जड़ता से आहत अन्तर लिये।

मेलखोव-परिवार के घर पर प्रेत मंडराने लगा और परिवार का हर सदस्य उसकी घुटन और सड़ाँध का बोझ ढोने लगा।

१६

ग्रिगोरी की मृत्यु का समाचार मिलने बारह दिन बीते कि प्योत्र के दो पत्र एक साथ डाक से आए। दून्या ने उन्हें डाकखाने में ही पढ़ लिया और वहाँ से ऐसी भागी जैसे किसी मूस निकले को तेज हवा के पंख लग जाएँ। फिर वह ठिठकी और एक चहारदीवारी के सहारे खड़ी हो गई। उसने गाँव में उथल-पुथल पैदा कर दी और अपने घर में अकथनीय उत्तेजना।

ग्रीश्का जिन्दा है। हमारा प्यारा ग्रीश्का जिन्दा है! थोड़ी दूर से ही सिसकियों से भीगे स्वर में वह बोली प्योत्र ने लिखा है ग्रीश्का घायल हो गया है पर मरा नहीं है। वह जिन्दा है जिन्दा है!

प्योत्र ने अपने २० सितम्बर के पत्र में लिखा था

श्रद्धेय पापा प्यारी माँ प्रणाम। मैं आपको सूचित कर दूं कि हमारा ग्रीश्का मौत के मुंह में चला गया था किन्तु भगवान् की कृपा से अब सही-सलामत है। हम सर्वशक्तिमान् से आपकी कुशलता और स्वास्थ्य की कामना करते हैं। उसकी रेजीमेंट को कामेन्का-स्त्रुमिलोवो नगर के पास मार्चा सना पड़ा और उसके दल के कज़ाकों से एक हंगेरियन हुस्सार का उस पर तलवार चलाते देखा। ग्रिगारी घोड़े से नीचे गिर पड़ा और फिर क्या हुआ यह किसी को पता नहीं चला। मैंने उससे पूछा तो कुछ भी बतला न सके। किन्तु बाद में माना कोर्शुनोवाई ने मुझे बतलाया कि ग्रिगारी रात तक वहां पड़ा रहा। फिर उसने रेंगते हुए भाग बढ़ने की कोशिश की। उसने सितारों की रोशनी में रास्ता तय किया और रेंगते रेंगते हमारे एक घायल अधिकारी के पास आ पहुँचा। उस अधिकारी का पेट और पैर जख्मी थे। ग्रिगारी ने उसे उठाया और छः वर्स्ट का फासिला उसे लादकर तय किया। इसके लिए ग्रिगारी को सन्त-जार्ज का पदक प्रदान किया गया और उसे कॉरपोरल बना लिया गया है। जरा सोचो कि यह कितनी शान की बात है! उसको चोट ज्यादा नहीं आई है। उसकी खोपड़ी की खाल भर जख्मी हुई है। पर हुआ यह कि वह घोड़े से गिरा तो उसे सख्त धक्का पहुँचा। माना कहता है कि वह मार्चे पर वापस पहुँच भी गया। माफ करना इस पत्र में अधिक कुछ नहीं लिख सका क्योंकि मैं घोड़े पर सवार हूं और इस लिख रहा हूं।

दूसरे पत्र में प्योत्र ने अपने परिवार के वालों को सूखी मछलियों की मांग की थी और लिखा था— मां माँ मुझे भूलें नहीं पत्र जल्दी जल्दी लिखें। उसी पत्र में उसने ग्रिगारी की बुराई की थी क्योंकि उसे पता चला था कि वह अपने भाई का ठीक से ख्याल नहीं रखता। प्योत्र को गुस्सा था क्योंकि भाई तो दस्तखत तक करता था। उसने बापू का

लिखा तुम ग्रिगारी को लिख दो। बस मैंने ग्रिगारी को सन्देश भेज दिया है कि अगर तुम घोड़े की देखभाल ठीक से नहीं करोगे तो मैं तुम्हारी नाक तोड़ दूँगा—इसकी जरा भी परवाह न करूँगा कि तुम्हें मन-आज का पदक मिल चुका है।

बूढ़े पन्तेली की दशा दयनीय हो उठी। लगा कि वह प्रसन्नता का उद्गार सम्हाल नहीं पा रहा है। दोनों पत्रों को हाथ में लेकर वह गाँव में गया और पढ़े लिखे लोगों के गाँव में रोक रोककर जबरदस्ती पढ़वाने लगा। मिथ्याभिमान नहीं खुशी उछालता फिरा वह गाँव भर में।

क्या कहते हो! क्या समझते हो तुम मेरे ग्रीशका को! पत्र पढ़ने वाला जब प्योत्र द्वारा वर्णित ग्रीशका के पराक्रम पर आता तो वह हाथ उठा लेता अपने गाँव में सबसे पहले उसी को सेंत जॉर्ज का पदक मिला है। वह सब से कहता पत्र अपनी टोपी की बाड़ में छिपा लेता और दूसरे पाठक की खोज में आगे बढ़ जाता।

सर्गेई मोखाव ने उसे अपनी दूकान की खिड़की से देखा तो वह भी अपनी टोपी उतारते हुए बाहर आया।

'प्रोकोफियेविच! एक मिनट को अन्दर चलो।

अन्दर जाकर बूढ़े की मुट्ठियाँ अपने मोटे गोरे हाथों से कसकर बोला बधाई देता हूँ मैं तुम्हें बधाई! तुम्हें अपने बेटे पर गर्व होना चाहिए। मैंने अभी अखबारों में उसकी बहादुरी की गाथा पढ़ी है।

क्या अखबार में छपा है कुछ? पन्तेली का कंठ सूख गया और पूरा मन में अटक गया।

हाँ मैंने अभी अभी पढ़ा है।'

मोखाव ने आलमारी में अच्छी-से अच्छी तुर्की तम्बाकू का एक पैकेट उतारा और एक पल में बिना तौले ही बढ़िया किस्म की ढेर सारी मिठाइयाँ भर दीं। फिर सब चीज बूढ़े के थमाते हुए बोला ग्रिगारी पन्तेलियेविच को कुछ भेजो तो मेरी ओर से ये चीजें भेज देना। साथ ही मेरा स्नेह भी लिख देना।

हे भगवान् कितना स्वरूप मिली है ग्रीशका को! सारा गाँव उसी की चर्चा कर रहा है। यहीं दिन दहाड़े को जीता रहा हूँ मैं आज

तब   दूकान की सीढ़ियों से नीचे उतरते समय बूढ़ा बड़बड़ाया। उसने अपनी नाक छिनकी और अपने गालों पर बहते हुए आँसुओं को कमीज़ की आस्तीन से पोंछते हुए बोला

मैं बूढ़ा हो गया हूँ। आँसू आसानी से निकल आते हैं। आह पन्तेली प्रोकोफ़िएविच! तेरी ज़िन्दगी ने कैसी करवट बदली है! कभी तू चकमक पत्थर की तरह कठोर था, आठ पूड बोझ पीठ पर लाद लेता था और उस चिड़िया का पंख समझता था, लेकिन अब   अब ग्रीष्का के गोरखधन्धे ने कमर थोड़ी झुका दी है।

मिठाइयों के थैले को साने से सटाए वह सड़कों पर चलता हुआ गली में बढ़ा कि फिर उसके विचार ग्रिगोरी के चारों ओर चक्कर काटने लगे और ऐसे चक्कर काटने लगे जैसे टिड्डी दलदल के इर्द-गिर्द मंडराती है। सामने से ग्रिगोरी का ससुर कोर्शूनोव आता दीखा। उसने पन्तेली को आवाज़ दी   पर पन्तेली एक मिनट रुकना पड़ा।

लड़ाई शुरू होने के बाद आज पहली बार वे एक-दूसरे से मिल रहे थे। ग्रिगोरी के घर छोड़ने के बाद इन दोनों के बीच एक खिंचाव-सा अपने आप आ गया था। मिरोन को बड़ा गुस्सा था कि नताल्या ने ग्रिगोरी के सामने अपनी गर्दन नीची की थी और उन्हें भी अपनी गर्दन नीची करने पर मजबूर किया था।

मिरोन सीधा पन्तेली के पास पहुँचा और अपने शाहबलूत के रंग के हाथ उसके हाथों में ठूँसते हुए बोला   कहो, मज़े में तो हो?

भगवान की कृपा है

कुछ सामान ले रहे थे

पन्तेली ने अपना सिर हिलाया   हमारे बेटे का पत्र मिला है न। सार्जेंट ल्यावानोविच ने अख़बार में उसकी बहादुरी का कारनामा पढ़ा और उसके लिए चाँदी-सा तमगा और मिठाइयाँ दी हैं। तुम्हें पता मालूम   उसकी आँखों में आँसू आ गए। बूढ़े ने मिरोन के चेहरे पर दृष्टि गड़ाए गर्वीली मुस्कान लिए कहा। उसने मिरोन के चेहरे पर भाव को पढ़ना चाहा।

मिरोन की आँखों के नीचे बादल जमा हो गए। उसके चेहरे पर

निन्दा से भरी मुसकान खिल उठी।

यह बात है! वह बोला और सड़क पार करने के लिए मुड़ा। क्रोध से काँपता और यश को कोसता हुआ पन्तेली तेजी से उसके पीछे हो लिया।

यह लो, देखो ये चाक्लेट शहद की तरह मीठी है। उसने घृणा से कहा, खाकर देखो, मैं अपने लड़के के नाम पर यह तुम्हें नजर करता हूं। तुम्हारी जिन्दगी में कोई मिठास नहीं है, इसलिए तुम इस चाक्लेट से अपनी जिन्दगी में मिठास घोल सकते हो। तुम्हारा लड़का भी किसी दिन इतनी ही इज्जत पैदा कर सकता है, लेकिन हो सकता है कि न भी करे।

मेरी जिन्दगी के राज़ों में न पड़ो, मुझसे ज्यादा उन्हें कोई नहीं समझ सकता।

लो, एक चखकर तो देखो, मुझ पर कृपा करो। अत्यन्त विनम्रता से मांगते हुए पन्तेली ने मिरोन के सामने जाकर थैले में हाथ डाला।

हम लोग मिठाइयाँ खाने के आदी नहीं। मिरोन ने उसका हाथ झटक दिया, फिर यह भी है कि अजनबियों की भेंटों से हमारे दाँत खराब और होते हैं। तुम्हारे लिए यह शोभा की बात नहीं कि तुम अपने लड़के के लिए भीख माँगते फिरो। अगर तुम्हें किसी बात की तकलीफ हो तो तुम अभी भी मेरे पास आ सकते हो। हमारी नताल्या तुम्हारी रोटियाँ तोड़ रही है। तुम्हारी गरीबी में हम तुम्हारी मदद कर सकते थे।

ऐसी बेसिर-पैर की बातें मुंह से न निकालो। हमारे खानदान में आज तक किसी ने किसी के सामने हाथ नहीं फैलाया। तुम्हें बहुत घमण्ड हो गया है। बहुत ज्यादा घमण्ड हो गया है। हो सकता है कि तुम्हारी लड़की के हमारे यहाँ आ जाने से तुम्हारे यहाँ रकम बढ़ गई हो।

ठहरो! मिरोन ने अधिकार भरे स्वर में कहा, 'हमारा इस लड़ाई का क्या मतलब? मैंने तुम्हें इसलिए नहीं रोका कि तुमसे झगड़ा करूं। मुझे तुमसे कुछ काम की बातें करनी हैं।

हमारे बीच काम की बात कोई नहीं हो सकती।

लेकिन है सुना सा।

उसने पन्तली की आस्तीन पकड़ी और उसे घसीटकर एक गलियारे में ले गया। वे गाँव से बाहर निकलकर मैदान में आ गए।

खैर बात क्या है? पन्तली ने रूखे तरीके से पूछा। उसने तिरछी दृष्टि से कोरशूनोव की ओर देखा। अपने लम्बे कोट का पिछला सिरा दबाकर मिरान एक झाड़ी के किनारे बैठ गया और उसने तम्बाकू की अपनी पुरानी थैली जेब से निकाली।

भगवान् ही जाने कि तुम झगड़ालू मुर्गे की तरह मेरे पीछे क्यों पड़ गए? बात यह है कि हालत जो और जैसी कुछ भी है—ठीक है न? उसका स्वर कठोर और रूखा हो उठा। मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुम्हारा लड़का कब तक दुनिया के सामने मेरी नतात्या की हँसी उड़वाता रहेगा। यह बतला दो मुझे।

इस बारे में तुम्हें उससे पूछना चाहिए, मुझसे नहीं।

मुझे उससे कुछ नहीं पूछना। तुम घर के बड़े हो और मैं तुमसे बातें करना चाहता हूँ।

घबराकर पन्तली के हाथ में अब भी सधा रहा। उसकी हथेली चिपचिपी हो गई। हथेली उसने किनारे की लाल जमीन से पोंछी और तुर्की तम्बाकू का पैकेट [illegible] उसमें से चुटकी भर तम्बाकू निकालकर चुपचाप सिगरेट बनाने लगा। फिर उसने पैकेट मिरान की ओर बढ़ाया। कोरशूनोव ने बिना हिचकिचाहट के उसे ले लिया और ग्रिगोरी के लिए मास्कोव द्वारा उपहार में दी गई तम्बाकू से उसने भी सिगरेट बना ली। उनके ऊपर बादल का कपूर छाया रहा कि एक नाजुक-सा तार हवा में लहराता बादल में जुड़ गया।

दिन ढलने लगा। सितम्बर की स्थिरता का मधुरिमा और शान्ति लहराने लगी। आसमान से गर्मी की अनजानी [illegible] किया न ध्यान सा और वह धुन में नहाया-सा पहले की तरह रंग का हो उठा। सब कान्तियाँ भगवान् जाने कहाँ से आकर खाई पर बैंगनी रंग छितर गई। सड़क पहाड़ियों की सहस्रों चोटियों पर जाकर अदृश्य हो गई और क्षितिज पन की तरह हरी सपने की तरह धुंधली रेखा को पार करने को बेकरार

कोशिश करने लगा। अपनी झापड़ियों और रोज़मर्रा के पशु से बंधे लोग मनवक्त में टूटते रहे और मलियान में थकान से चूर होते रहे। रास्ता क्षितिज पार कर अनात जगत में रमता रहा। हवा उस रास्ते पर मरती भरती और धूल के बादल उड़ाती रही।

तम्बाकू तेज नहीं है। घास जैसी है। मिरान ने धुएं का बादल उड़ाते हुए कहा।

तेज नहीं है मगर अच्छी है। पन्तेली ने अर्ध-स्वीकृति दी।

पन्तेली मेरे एक सवाल का जवाब दो। कोरशुनोव ने अपनी सिगरेट बुझाते हुए शान्त स्वर में कहा।

ग्रिगोरी अपनी चिट्ठियों में इस बात की कोई चर्चा नहीं करता। इस वक्त वह जख्मी है।

हाँ मैंने सुना है।

बाद में क्या होगा मैं नहीं जानता। हो सकता है कि वह मर जाए फिर भला क्या होगा?

लेकिन इस तरह कैसे चलेगा? मिरान ने व्यग्रता से धुएं में और कमाई। मेरी नताल्या है कि न तो क्वाँरी है न बीवी है और न असल में विधवा है और यह बड़े अपमान की बात है। मुझे पहले से ऐसा मालूम होता तो मैं ब्याह की बात पक्की करानेवाले को अपनी ड्योढ़ी में पाँव न रखने देता। उधर पन्तेली पन्तली कोई ऐसा न हो जिस अपनी औलाद का दुख न व्यापता हो। खून आखिर खून होता है।

तुम कहना क्या चाहते हो इसमें मैं क्या करूं? पन्तेली ने क्रोध को दबाते हुए जवाब दिया बतलाओ मुझे तुम्हारा ख्याल है कि अपने लड़के में घर में बस जाने से मुझे खुशी है? इससे मेरा कोई फायदा हुआ है? तुम लोग जो सब हो!

"उसको लिखो मिरान बोला और उसके हाथ के नीचे से छन में गिरती हुई धूल ने उसके नाम की गति का साथ दिया उसे यार से मुँह खोलकर जवाब देना दे।

उस औरत से उसका एक बच्ची है

और इस औरत से भी उसका एक बच्चा हो जाएगा। कोरशूनाव चीखा "क्या किसी इन्सान के साथ ऐसा बर्ताव किया जाता है? एक बार उसने अपनी जान देने की कोशिश की और अब जिन्दगी भर के लिए मजबूर हो गई? तुम उसे कब्र में दफनाना चाहते हो? ग्रिगोरी का दिल ग्रिगोरी का दिल" मिरान ने एक हाथ से अपनी छाती पीटते और दूसरे से पन्तेलेई के कोट को खींचते हुए कहा "ग्रिगोरी को भेड़िए का दिल मिला है!"

पन्तेलेई बड़बड़ाता हुआ मुड़ गया।

"लड़की उस पर जान देती है। उसके बिना उसका जीना मुमकिन नहीं। क्या तुम्हारा गुलाम बनकर आई है क्या वह?" मिरान ने पूछा।

"वह हमारे लिए बेटी से ज्यादा है। अपनी जबान सम्हालो!" पन्तेलेई चीख उठा और उठकर खड़ा हो गया।

विदा का एक शब्द भी मुंह से कहे बिना वे दोनों अलग अलग दिशाओं में चल गए।

१७

जिन्दगी अपने स्वाभाविक प्रभाव से हट जाती है तो अलग अलग धाराओं में बंट जाती है। फिर यह कहना कठिन हो जाता है कि किसको वह अपनी भयानक चपेट में ले लेगी और किस नहीं ... रेतील किनारों पर बहने वाले सोतों के समान जहां आज कुछ बूंद भर नजर आता है वहीं कल अपरम्पार पानी की बाढ़ आ सकती है।

अकस्मात् ही नताल्या ने यागोदनाए जाकर अक्सीनिया से मिलने का निश्चय किया। उसने सोचा मैं उससे मिलकर कहूंगी कि ग्रिगोरी को मुझे लौटा दे। न जाने क्यों उसे लगा कि सब कुछ अक्सीनिया की मर्जी पर निर्भर है। यदि मैं उससे कहूंगी तो ग्रिगोरी लौट आएगा और उसके साथ ही लौट आएगी मेरी पहले की हंसी-खुशी। इसके बाद उसने यह भी न सोचा कि यह बात हो भी सकती है या नहीं या मेरे इस तरह के अनुरोध पर अक्सीनिया क्या कहेगी और क्या नहीं। अपने अन्तमन के उद्गारों से परिचालित होकर उसने जल्दी-जल्दी अपने पसन्द पर

अमल करने की सोची।

महीने के आखिर में ग्रिगोरी का एक पत्र आया। पिता और माँ के लिए आदर लिखने के बाद उसने नताल्या के लिए शुभकामनाएँ और स्नेह भेजा। इन शुभकामनाओं और स्नेह के भेजे जाने का कारण कुछ भी क्यों न रहा हो, पर नताल्या का इससे दिल बढ़ा और अगले रविवार को ही वह यागोदनोए जाने के लिए तैयार हो गई।

कहाँ जा रही हो नताल्या? नताल्या को शीशे के टुकड़े में शक्ल निहारते देखकर दार्या ने पूछा।

मैं पापा, माँ वगैरह से मिलने मायके जा रही हूँ। नताल्या साफ़ झूठ बोल गई। उसे पहली बार अनुभव हुआ कि मैं घोर अपमान की स्थिति में अपने को डाल रही हूँ और मेरे चरित्र की गहरी और बड़ी परीक्षा होगी यह। उसका चेहरा आरक्त हो उठा।

आज शाम को मेरे साथ घूमने-फिरने चलो—एक बार तो चलो। दार्या ने प्रस्ताव किया, बोलो तो आज चल रही हो न।

वह नहीं सकती, पर नाच-गाने चलूँगी नहीं।

बेवकूफ़ हो तुम, मर्द जब बाहर होते हैं तभी तो मौका मिलता है हमें। आँख मारकर दार्या अपने नए पीले-नीले गरारे की कामदार गोट पर हाथ फेरने लगी। प्योत्र के जाने के बाद दार्या बहुत बदल गई थी। उसकी आँखों, चाल-ढाल और पूरे तौर-तरीकों में एक चंचल-सी लहरें सन लगी थी। अब वह इतवारों को अपने लिबास और सजावट की ओर विशेष ध्यान देती, काफ़ी रात गए घर लौटती और लौटती तो उसकी आँखें बुझी-बुझी-सी रहतीं, तबीयत में चिड़चिड़ाहट घुली रहती। वह नताल्या से शिकायत-सी करती, पतली है, सचमुच हालत पतली है। अच्छे-अच्छे सभी कज़ाक मोर्चे पर चले गए हैं। गाँव में रह गए हैं बूढ़े और लड़के और बस।

तो इससे तुम्हारे लिए क्या फ़र्क़ पड़ता है?

क्या? अब शाम बिताने के लिए कोई नहीं मिलता। पहले कि एक दिन मिल तक जाने का मौका मिल जाता। यहाँ इस बूढ़े ससुर के साथ

क्या रखा है ?' और सनकिया की तरह नताल्या से साफ़-साफ़ पूछ बैठा, 'समझ में नहीं आता कि तुम रहती कैसे हो ! इतने दिन हो गए हैं बिना किसी करज्ञाम के सोने से लगे !'

'भाड़ में जाओ ! तुम्हारे पास आत्मा जैसी कोई चीज़ है या नहीं ?'

नताल्या का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा।

'तुम्हारी तबीयत कभी नहीं मचलती ?'

'साफ़ है कि तुम्हारी तबीयत मचलती है।'

'हाँ भई, मेरी तबीयत तो मचलती है।'

दार्या के चेहरे पर लाली दौड़ गई। वह हँस पड़ी और उसकी भौंहों की कमानें कँपकँपाने लगीं।

'मैं छिपाऊँ क्या ? मैं तो ऐसा कर सकती हूँ कि कोई बूढ़ा भी हो तो बौखला जाए और उसकी मट्टी हो जाए। ज़रा सोचो तो सही, प्यार का यहाँ से गए पूरे दो महीने हो चले।'

'दार्या, तुम अपने लिए काँटे बो रही हो।'

'मुँह बन्द कर ! बड़ी इज़्ज़त वाली बनी है बुढ़िया ! मैं सब पहचानती हूँ तुम्हारे जैसे चुप्पे लोगों को। तुम कभी कुछ मानकर थोड़े ही दोगी।'

'मेरे पास मानने को ऐसा कुछ हो भी तो !'

दार्या ने उसकी ओर मुसकराते हुए कनखी से देखा और अपने होंठ काटे। उसी दिन अतामान का लड़का तिमोफ़ेई मानित्स्कव मेरे पास आकर बैठ गया। मुझे साफ़-साफ़ लगा कि वह अपनी ओर से पहल करने से डर रहा है। फिर उसने चुपचाप अपना हाथ उठाया और मेरी बगल में खिसका लिया। हाथ काँप रहा था। मैं मुँह से बोली कुछ नहीं कि देखूँ अब क्या करता है यह ! लेकिन मुझे गुस्सा आ गया। काश कि वह एक जवान मर्द होता—लेकिन नहीं, अभी तो वह छोकरा है—सत्रह साल का। सोलह साल से एक दिन ऊपर नहीं। सो मैं चुप बैठी रही पर वह हाथ सहलाता रहा, सहलाता रहा। फिर धीरे से बोला, 'मामी, बाड़ में चलें।' इस पर मैंने उसे झिड़क दिया एक ! वह खिलखिलाकर हँस पड़ा। ऐसा उसकी सफ़ेद पलकों से छलकता

अमल करने की सोची।

महीने के आखिर में ग्रिगोरी का एक पत्र आया। पिता और माँ के लिए आदर लिखने के बाद उसने नताल्या के लिए शुभकामनाएँ और स्नेह भेजा। इन शुभकामनाओं और स्नेह के भेजे जाने का कारण कुछ भी क्यों न रहा हो पर नताल्या का इससे दिल बढ़ा और अगले रविवार को ही वह यागोदनोए जाने के लिए तैयार हो गई।

कहाँ जा रही हो नताल्या ? नताल्या को शीशे के टुकड़े में नयन निहारते देखकर दार्या ने पूछा।

मैं पापा माँ वगैरह से मिलने मायके जा रही हूँ। नताल्या साफ झूठ बोल गई। उसे पहली बार अनुभव हुआ कि मैं घोर अपमान की स्थिति में अपने को डाल रही हूँ और मेरे चरित्र की गहरी और बड़ी परीक्षा होगी यह। उसका चेहरा आरक्त हो उठा।

आज शाम को मेरे साथ घूमने फिरने चलो—एक बार तो चलो। दार्या ने प्रस्ताव किया बोलो तो आज चल रही हो न।

वह नहीं सकती पर शायद चलूँगी नहीं।

बेवकूफ हो तुम अरे मर्द बाहर होते हैं तभी तो मौका मिलता है हमें। आँख मारकर दार्या अपने नए पीले-जीन गरारे की कामदार गोट पर हाथ फेरने लगी। प्योत्र के आने के बाद दार्या बहुत बदल गई थी। उसकी आँखों चाल-ढाल और पूरे तौर-तरीकों में एक बेचैनी-सी लहरें लेने लगी थी। अब वह इनवारों को अपने लिबास और सजावट की ओर विशेष ध्यान देती काफी रात गए घर लौटती और लौटती तो उसकी आँखें बुझी-बुझी-सी रहतीं तबीयत में चिड़चिड़ाहट घुली रहती। वह नताल्या से शिकायत-सी करती पतली है सचमुच हालत पतली है। अच्छे मर्द सभी कज्जाक लाम पर चले गए हैं। गाँव में रह गए हैं बूढ़े और लड़के और बस।

तो इससे तुम्हारे लिए क्या फर्क पड़ता है ?

क्या अब शाम बिताने के लिए कोई नहीं मिलता। शायद कि एक दिन मिल तक जाने का मौका मिल जाता। यहाँ इस बूढ़े ससुर के साथ

क्या रखा है ? और सनकिया की तरह नताल्या से साफ-साफ पूछ बठा
समझ म नही आता कि तुम रहती कस हो ! इतने दिन हो गए हैं
बिना किसी कज्जाक के सीने से लगे !

शम करो ! तुम्हारे पास आत्मा जसी कोई चीज है या नहीं !
नताल्या का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा ।

तुम्हारा तबीयत कभी नहीं मचलती ?

साफ है कि तुम्हारी तबीयत मचलती है ।

"हाँ, भई मेरी तबीयत तो मचलती है

दार्या के चेहरे पर लाली दौड गई । वह हँस पड़ी और उसकी
भौंहो की कमानें कपकपाने लगीं ।

"मैं छिपाऊँ क्यों ? मैं तो ऐसा कर सकती हूँ कि कोई बूढ़ा भी हो
तो बौखला जाए और धधकती भट्ठी हो जाए । जरा सोचो तो सही
प्यारे को यहाँ से गए पूरे दो महीने हो आए ।

"दार्या तुम अपने लिए काँटे बो रही हो ।

मुँह बन्द कर ! बडी इज्जत वाली बनी है बुढ़िया ! मैं खूब
पहचानती हू तुम्हारे जस चुप्प लोगों को । तुम कभी कुछ मानकर
थोडे ही दोगी

मेरे पास मानने को ऐसा कुछ हो भी तो !

दार्या ने उसकी ओर मुसकरात हुए कनखी से देखा और अपने
होंठ काटे । अभी उस दिन मकान का लडका तिमोफी मालिनव
मेरे पास आकर बठ गया । मुझे साफ-साफ लगा कि वह अपनी ओर
से पहल करने म डर रहा है । फिर उसने चुपचाप अपना हाथ उठाया
और मेरी बगल म खिसका दिया । हाथ काँप रहा था । मैं मुँह से बोली
कुछ नहीं कि देखूँ अब क्या करता है यह ! लेकिन, मुझे गुस्सा आता
गया । काश कि यह एक जवान मर्द होता—लेकिन नहीं अभी तो यह
छोकरा है—सोलह साल का । सोलह साल से एक दिन ऊपर नहीं । सो
मैं चुप बठी रही, पर वह हाथ चलाता रहा चलाता रहा । फिर धीरे
से बोला 'आओ झाड़ म चलें । इस पर मैंने जमा दिया एक ! वह
खिलखिलाकर हँस पड़ी । हँसी उसकी उधमुँदी पलकों से छलकने

लगी। मैं उछल पड़ी— अरे तू कमीना कहीं का! कुत्ते का बच्चा! तू मुझे फँसा लगा इस तरह? कितने दिन हुए तुझे आखिरी बार बिस्तरा गीला किए? यह समझो कि मैंने उसका बुखार उतार दिया।

इधर नताल्या के प्रति दार्या का व्यवहार बदल गया था। उनके सम्बन्धों में सहजता और मित्रता शुरू हो गई थी। दार्या अब उसे पहले की तरह नापसन्द न करती थी और हर दृष्टि से एक-दूसरे से अलग ये दोनों औरतें अब स्नेह से रहने लगी थीं।

सो नताल्या कपड़े पहनकर बाहर निकली कि दार्या ने उसे बरसाती में आ पकड़ा। पूछा आज रात को दरवाजा कौन खोलेगी मेरे लिए?

नायद मैं रात में मायके में ही रहूँ।

दार्या विचार में खो गई। उसने कन्धे से अपनी नाक सहलाई और सिर हिलाकर कहा उफ कोई बात नहीं। मैं दुन्या से कहना नहीं चाहती थी लेकिन दूसरा कोई चारा दीखता नहीं।

नताल्या इलीनीचिना को पीहर जाने की सूचना देकर चल दी। चौक में आकर उसने देखा कि गाड़ियाँ खड़-खड़ करती बाजार से लौट रही हैं और लोग गिरजाघर से लौट रहे हैं। वह बगल की एक गली में मुड़ी और जल्दी जल्दी पहाड़ी पर चढ़ गई। चोटी पर उसने घूमकर पीछे निगाह डाली। गाँव धूप में नहा रहा था। चूने से पुते मकान चमक रहे थे और दिन की इकहरी छत आँखों में चकाचौंध पैदा कर रही थी। छत की लादें की चद्दर तभी लगा रही थी जल पिघला हुआ लोहा।

१८

लड़ाई में जाने के कारण तातारस्की में भी पुरुष कम हो गए थे। बनयामिन और तिखान जा चुके थे। जगह खाली हो गई थी। बनयामिन की जगह ज्यादा भार गुनमान और बीरान हो गई थी। बनयामिन की जगह अरसीनिदा जनरल की सेवा में रहती था। आगे चूनसाना तुरेरिया माना चलाना और मुर्गों को दाना चुगाने का भार आ पड़ा था। बूढ़ा नाना पाश की देखरेख करने और बगीचे के रख रखाव की चिन्ता

करने लगा था। एक आदमी कम गया था। यह था बूढ़ा रजगार निकिनिच। उसे कोचवानी का काम सौंपा गया था।

इस वर्ष वृद्ध निस्तनिरस्की ने बाग़ाह कम कराई थी। बीसेक घोड़े सेना के हाथों बेच दिए थे। बस तीन चार इलाके की जरूरतों के लिए रख लिए थे। वह पक्षियों का निशाना बनाने और शिकारी कुत्तों को साथ लेकर शिकार खेलने में अपना सारा समय व्यतीत करता था।

अक्सीनिया के पास भूले भटके ग्रिगोरी का छोटा-सा पत्र आ जाता कि अब तक मैं सकुशल हूं और चक्की में बाकायदा पिस रहा हूं। उसने कभी शिकायत नहीं की कि मोर्चे की नौकरी जानमार है। या तो इस बीच वह तगड़ा हो गया था या फिर अपनी कमजोरी अक्सीनिया के सामने प्रकट करना नहीं चाहता था। उसके पत्रों में जाने अक्सर नीरसता होती जैसे कि सिर्फ लिखने के लिए ही उसने पत्र लिखे हों। केवल एक ही पत्र ऐसा था जिसमें उसने लिखा था — सुबह से लेकर रात तक सारा समय मोर्चे पर ही बीतता है। मैं लड़ाई से ऊबता गया हूं। मौत की बाट पर रात-रात थक गया हूँ। पर हर पत्र में वह बच्ची के बारे में पूछताछ करता और अक्सीनिया से उसके विषय में लिखने का आग्रह करता।

अक्सीनिया बड़ी हिम्मत से वियोग सहन करती। ग्रिगोरी के प्रति अपने अन्तर का सारा प्रेम वह लड़की के ऊपर उँडेलती। जब से उसे इस बात का विश्वास हुआ था कि बच्ची ग्रिगोरी की है तब से तो वह उसे और भी अधिक स्नेह देने लगी थी। इसके उसे कितने ही प्रमाण मिले थे। लड़की के गहरे लाल बालों का रंग काला पड़ गया था और वे घुंघराले हो चले थे। उसकी आँखें काली और बड़ी लगने लगीं। वह दिन-ब-दिन अपने पिता पर पड़ती जा रही थी यहाँ तक कि उसकी मुसकान भी ग्रिगोरी की मुसकान से मिलती थी। अब बिना किसी सन्देह के अक्सीनिया को उसमें ग्रिगोरी का प्रतिबिम्ब झलकता था और उसके लिए उसके मन का प्यार गहराता चला जा रहा था।

पर दिन एक-एक कर बीतते जा रहे थे और हर दिन हर समय अक्सीनिया के अन्तर में कटुता घर करती थी। प्रियतम के जीवन की चिन्ता

उसके दिमाग में दिन रात सूई-सी चुभोती रहती थी। दिन में काम करते समय तो मन बंधा रहता पर रात में सारे बांध टूट जाते। वह बिस्तर पर पड़ी करवटें बदलती सिसकती बच्चों के जाग जाने के डर से अपने हाथ में रह रहकर दांत काटती, और शरीर के कष्ट में दिमाग की परेशानी डुबाना चाहती। फिर भी यदि आंसू निकलते ही चले आते तो उन्हें बच्चों के तौलिये से पोंछ लेती और अपने बच्चों के-से भोले ढंग से सोचती यह बच्ची नीना की है वह भी कलप रहा होगा और समझ रहा होगा कि मैं किस तरह तड़प रही हूं उसके लिए।

ऐसी रातों के बाद वह भोर उठती तो सुबह ऐसा लगता कि उस रात में किसी ने उसे बहुत ही बेरहमी से मारा हो। उसका सारा बदन दुखता नसों में चांदी की हथौड़ियां-सी चलतीं हाथों के कानों से पीर झांकती। यानी होत-करत कलप की इन अनगिन रातों ने अक्सीनिया को बूढ़ा-सा कर दिया।

इतवार को अक्सीनिया जनरल का नाश्ता कराकर सीढ़ी पर खड़ी थी कि उसने एक औरत को फाटक के पास आते देखा। सफेद रूमाल के साथ की आंखें जानी-पहचानी लगीं। औरत फाटक खोलकर हाते में दाखिल हुई। नताल्या को सामने पाकर अक्सीनिया पीली पड़ गई। भारी कदमों से उसकी ओर बढ़ी। नताल्या के जूतों पर धूल की मोटी परत जमी दीखी। वह ठिठकी। उसके लम्बे मर्दाना से बड़े हाथ बगल में बेजान-से झूलते रहे। उसने हांफते हुए अपनी टेढ़ी गर्दन को सीधा करने की कोशिश की पर वह सीधी हुई नहीं तो ऐसा लगा जैसे कि वह तिरछी नज़रों से देख रही हो।

'अक्सीनिया मुझे तुमसे कुछ काम है।' सूखी जीभ को अपने होठों पर फिराती हुई वह बोली।

अक्सीनिया ने घर की खिड़कियों पर तेज़ी से निगाह डाली और नताल्या को चुपचाप अपने कमरे की ओर ले चली। नताल्या पीछे हो ली। उसके मनमनाहट से भरे शब्दों को अक्सीनिया ने स्वर की सरसराहट बहुत ही तेज़ आवाज़ करती लगी। अनेकानेक विचारों से भरे उसके परेशान दिमाग ने कहा तुम्हारे कामों में कुछ खराबी है। शायद

गरमी के कारण ऐसा हो रहा है।

कमरे में पहुँचने के बाद अक्सीनिया ने दरवाजा बन्द किया, एप्रन में अन्दर हाथ डालकर खड़ी हुई और स्थिति को हाथों में लेते हुए बहुत धीरे से बोली, "कहो, कैसे आना हुआ?"

"थोड़ा-सा पानी दो मुझे पीने को।" नताल्या ने कमरे के चारों ओर दुखभरी दृष्टि डालते हुए कहा।

अक्सीनिया प्रतीक्षा करती रही तो नताल्या ने बड़ी कठिनाई से अपनी आवाज ऊँची कर कहना आरम्भ किया, "तुमने मेरा आदमी छीन लिया है मुझसे... मेरा ग्रिगोरी वापस कर दो मुझे। तुमने मेरी जिन्दगी बरबाद कर दी है। देखो मेरा क्या हाल है..."

"तुम अपना आदमी चाहती हो?" अक्सीनिया ने दाँत किटकिटाए और उसके मुँह से शब्द ऐसे निकलने लगे जैसे पानी की बूँदें पटापट पत्थर पर पड़ें। "तुम अपना आदमी चाहती हो? किसको माँग रही हो तुम? क्यों आई हो तुम यहाँ? बहुत देर में होश आया है तुम्हें, सचमुच बहुत देर में होश आया है!"

व्यंग्य से हँसते हुए अक्सीनिया सीधी नताल्या की ओर बढ़ी। उसका सारा बदन काँपने लगा। अपने दुश्मन के चेहरे की ओर देखकर वह उसका मजाक उड़ाने लगी। नताल्या असली पत्नी थी, पर तो भी जिसे उसके पति ने त्याग दिया था। वह अपमान से तार-तार और पीड़ा से बुरी तरह कुचली हुई-सी वहाँ खड़ी थी। अक्सीनिया को लग रहा था कि यही है वह औरत जो मेरे और ग्रिगोरी के बीच आ गई थी, जिसने मेरी जिन्दगी में दर्द का तूफान उठा दिया था, जो ग्रिगोरी को दुलारती और मुझ पर हँसती रही थी, और जिसने मुझे शायद ठुकराया हुआ मान लिया था—पर मैं जिस तरह कलपती रही थी उन दिनों—तरसती रही थी उन दिनों!

"मैं," अक्सीनिया आवेश से काँपने लगी, "और तुम मेरे पास यह कहने आई हो कि मैं उसे छोड़ दूँ? कालो नागिन, पहले तूने मुझसे छीना था ग्रिगोरी को! मुझे उसके मेरे साथ रहने की जानकारी थी। फिर भी तूने उससे ब्याह क्यों रचाया? मैंने तो सिर्फ अपनी चीज वापस ली है।

यह मरा है। मुझे तो उससे एक औलाद भी है लेकिन तू

असीम घृणा ■ उसने नताल्या की ओर घूरकर देखा और बेहूदगी से हाथ नचा-नचाकर जहर उगलने लगी प्रीशका मेरा है और मैं उसे किसी को द नहीं सकती। वह मेरा है और सिर्फ मेरा है ! सुना तूने ? मेरा है ग्रीशा। निकल जा यहाँ से बेशर्म कुतिया यहीं की ! तू उसकी औरत नहीं है। तू एक बच्च से उसका बाप छीनना चाहती है ! और आना ही था तो पहले क्या नहीं आई ? हाँ-हाँ पहले क्या नहीं आई ?

नताल्या बेंच के किनारे जाकर बैठ गई सिर झुका लिया और हथेलियों म अपना मुँह छिपा लिया।

तुम अपना मद छोड़ चुकी हो। इस तरह चालाक मत !

ग्रीशा के सिवाय मेरा और कोई नहीं नहीं कोई नहीं दुनिया म कहीं नहीं ! अन्दर उमड़ते हुए क्रोध को जब कहीं निकलने की जगह नहीं मिली तो अक्सीनिया बुखार मे काँपते हुए नताल्या के लाल बाल के गुच्छे को एकटक घूरने लगी। पूछा 'वह चाहता है तुझे ? जरा अपनी टेढ़ी गर्दन तो देख ! और तू सोचती है कि वह जान देता है तुम पर क्या ? पर उसने तो मुझे तब छोड़ दिया जब तू ठीक-ठाक थी। अब तेरी इस मुड़ी गर्दन पर तो वह निगाह उठाकर देखेगा भी नहीं तेरी तरफ समझी ! मैं भिखारी को छोड़ नहीं सकती ! बस यही मुझे तुमसे कहना है। अब जा निकल जा यहाँ से !

अक्सीनिया अपने मामले को बचाने की कोशिश म अपना सारा ईमान-ईमान खो बैठी। अतीत म उसने जो दुख और जितना दुख सहा था उसके जख्म गिन गिनकर बदल लिये। बस उसकी नजरों ने उसमें बराबर कहा कि अपने भारी-सी टेढ़ी है तो क्या पर नताल्या पहले-सी ही सुन्दर अब भी है। नताल्या के गालों और होठों पर ताजगी है। वार की उम्र तुम्हीं प्रमुनिया म व बिलकुल शहन हैं। पर, दूसरी ओर तुम्हारी आँखों के चारों ओर झुर्रियाँ पड़ गई हैं आँखें गड्ढों म धंस गई हैं और यह सब इसी नताल्या के कारण हुआ है।

'तुम्हारा ख्याल है कि मैं यह उम्मीद लेकर आई थी कि मैं माँगूँगी और तुम भिखारी को मुझे वापस दे दोगी ? दुख म पीड़ित

नताल्या ने अपनी आँखें ऊपर उठाकर कहा।

"तब फिर आई क्या थी?" अकसीनिया ने पूछा।

"मेरी कलप मुझे घसीट लाई थी।"

शोरगुल से अकसीनिया की बेटी जाग उठी और रोने लगी। माँ ने बेटी को उठा लिया और खिड़की की ओर मुँह करके बैठ गई। नताल्या का अंग-अंग काँप रहा था। उसने बच्ची की ओर देखा। उसका कंठ सूख गया, आवाज कम हो गई। बच्ची के चेहरे पर जड़े ग्रिगोरी के नेत्रों ने उस पर प्रश्नात्मक दृष्टि डाली।

नताल्या रोती, डगमगाती बरसाती में आई। अकसीनिया उसे पहुँचाने तक नहीं गई। दो-एक क्षण बाद दाश्का आया।

"कौन थी यह औरत?" अपने स्वर में थोड़ी नासमझी भर उसने पूछा।

"गाँव की एक औरत थी।"

नताल्या तातारस्की गाँव को लौटी। उसने जैसे-तैसे तीन वर्स्ट तय किए। पर फिर वह एक जंगली झाड़ी के नीचे पड़ रही। मन की वेदना ने ऐसा कुचला कि उसे किसी चीज का ध्यान नहीं रहा। बच्ची के चेहरे पर जड़ी ग्रिगोरी की उन्हीं में जली काली आँखें प्रतिपल उसके सामने रही आईं।

१८

दर्द ने जैसे अपना बना लिया उसे। लड़ाई के बाद की रात सम्मन की ग्रिगोरी के मस्तिष्क पर अंकित हो गई। नदी के ढाल में थोड़ा पहले उसे होश आया। बगैर झाड़ों में पड़े उसके हाथों में हरकत हुई और वह सिर के दर्द से कराह उठा। उसने बड़ी कठिनाई से अपना हाथ उठाया और रक्त से लथपथ बाल टटोले। घाव पर अँगुली पड़ी तो ऐसा मालूम हुआ जैसे किसी ने धधकता अंगारा रख दिया हो वहाँ। फिर दाँत किटकिटाते हुए वह उलट गया। सिर के ऊपर पास में खड़े पेड़ों की पत्तियाँ सरसराईं और पत्तियों से बूँदें टप-टप कर टपकीं तो जैसे काँच खनका। नीले आसमान के साये में पेड़ों का काला ढाँचा साफ नजर आई

मन इस प्रकार था—

घुड़सवारों की नवीं रेजीमेंट के कमाण्डर लेफ्टिनेंट-कर्नल गुस्ताफ प्राइवग की जान बचाने के लिए बारहवीं दोन कज़ाक रेजीमेंट के मेलेखोव ग्रिगोरी को कारपोरल के पद पर नियुक्त किया जाता है। इसके अलावा सिफारिश की जाती है कि उसे चौथे दर्जे का संत जॉर्ज-क्रॉस भी प्रदान किया जाए।

ग्रिगोरी की कम्पनी दो दिन से कामेन्का-स्त्रुमिलोवा में हटी थी और अब लोग फिर आगे कूच की तैयारी कर रहे थे। सो ग्रिगोरी को वह मकान भी मिल गया जिसमें दन के लोग ठहरे हुए थे। वह वहाँ अपना घोड़ा देखने गया। काठी के थैले से कुछ तौलिये और कुछ नीचे पहनने के कपड़े गायब मिले।

मेरे देख-रेख से चीज़ें उड़ा ली लोगों ने ग्रिगोरी! मीशा कोशेवोई ने अपराध-सा स्वीकार किया। पैदल सेना यहीं ठहरी थी, उन्हीं लोगों ने की है यह हरकत।

खैर, वे चीज़ें उन्हें मुबारक रहें, मुझे परवाह नहीं। मुझे तो सिर्फ अपने सिर की मरहमपट्टी की चिंता है।'

तुम मेरा तौलिया ले लो।

वे दोनों बाड़े में खड़े रहे कि उरयूपिन आया और उसने आते ही अपना हाथ इस तरह बढ़ाया जैसे कि उसमें और ग्रिगोरी में कभी कोई झगड़ा रहा ही न हो।

हलो मेलेखोव, तो तुम अभी ज़िन्दा हो!

हाँ, कहने को तो हूँ ही।

तुम्हारा सिर लहूलुहान हो रहा है। खून पोंछो।

'पोंछूँगा समय से।

ज़रा देखूँ तो कि तुम्हारे सिर की क्या हालत कर दी है दुश्मनों ने!'

उसने ग्रिगोरी का सिर चौंध लिया और चीखा, तुमने उन्हें अपने पास क्यों आने दिया? क्या हालत बन गई है तुम्हारी! ऐसे में डॉक्टर कुछ न कर सकेंगे, लाओ मैं खुद करूँ मरहमपट्टी

ग्रिगोरी की स्वीकृति की प्रतीक्षा किए बिना ही उसने अपनी पेटी से एक कारतूस खींचा उसमें से बारूद बाहर निकाली और काला पाउडर अपनी हथेली पर उड़ेला। बोला मोशा मकड़ी का एक जाला लाओ कहीं से।

मोशावोई ने अपनी तलवार की नोक से मकड़ी का एक जाला खींचा और उरयूपिन को दे दिया। उरयूपिन ने उसी तलवार से थोड़ी-सी मिट्टी खोदी और उसे मकड़ी के जाले और पाउडर से मिलाकर दाँतों से चबा डाला। अब वह खिलखिला-प्लास्टर उसने खून की जगह पर चिपका दिया और हँस पड़ा।

जख्म तीन दिन में बिलकुल ठीक हो जाएगा। उसने घोषणा की पर जरा देखो कि मैं तुम्हारी इतनी सेवा कर रहा हूँ और तुम हो कि तुमने मुझे मार डाला होता।

सेवा के लिए धन्यवाद। लेकिन अगर मैं तुम्हें मार डालता तो मेरी आत्मा के ऊपर से एक पाप का बोझ और हट जाता।

तुम बुद्धू हो।

हो सकता है कितना जख्म हुआ है सिर में?

आधा इंच गहरा घाव है। आस्ट्रियनों की यादगार समझो।

मैं उन्हें भूलूँगा नहीं।

भूलना चाहोगे तब भी भूल नहीं पाओगे। आस्ट्रियन अपनी तलवारों में सान आपके से नहीं रखवाते इसलिए इस जख्म का निशान जिन्दगी भर बना रहेगा।

किस्मत के सिकन्दर हो ग्रिगोरी तलवार कहीं सीधी बैठ जाती तो दूसरे देश की जमीन में दफन होते। मोशावोई ने मुसकराते हुए कहा।

मैं अपनी इस टोपी का क्या करूँ? ग्रिगोरी ने फटी पट्टी खून से लथपथ टोपी परेशानी से मरोड़ी।

फेंक दो कुत्ते सा जाएँगे इसे।

खाना आ गया जवानो आओ और ले लो। पर के एक दरवाजे से आवाज आई।

मरवाक शेड से बाहर आये। ग्रिगोरी का कुम्मन घोड़ा उसे देखकर प्रसन्नता से हिनहिनाने लगा।

'यह तुम्हारे पीछे बड़ा दुखी रहा, ग्रिगोरी!' कोशेवोई ने घोड़े की ओर सिर हिलाते हुए कहा, 'खाना नहीं खाता था—सारे दिन हिनहिनाता रहता था। मुझे तो बड़ा ही ताज्जुब हुआ।

रेंगते रेंगते भी मैं इसको आवाज देता रहा।' ग्रिगोरी ने भारी स्वर में कहा, 'मुझे पूरा यकीन था कि यह मुझे छोड़कर नहीं जायेगा और कोई अजनबी इस आसानी से पकड़ नहीं पायेगा।'

'सच है! इसको जबरदस्ती लाना पड़ा हमें। फन्दा डाला हमने।'

'अच्छा घोड़ा है। मेरे भाई प्योत्र का है।' अपनी गीली आँखों को छिपाने के लिए ग्रिगोरी ने पीठ मोड़ ली।

वे लोग घर में गये। येगोर मारकोव सामने के कमरे में स्प्रिंगदार चटाई पर पड़ा सो रहा था। वहाँ की हर चीज जिस तरह अस्त-व्यस्त पड़ी थी उससे पता चलता था कि घर के मालिक बहुत ही हड़बड़ी में घर छोड़कर भागे थे। जहाँ-तहाँ बिखरे पड़े थे—टूटे हुए बर्तन, फटे कागज, किताबें, सामानों के टुकड़े, बच्चों के खिलौने, पुराने जूते और [illegible]।

यमेल्यान बोगव और प्रोखोर जिकोव ने कमरे के बीच की जगह साफ कर ली थी। वे वहाँ बैठे खाना खा रहे थे। ग्रिगोरी को देखते ही प्रोखोर की भारी आँखें आश्चर्य से फटने-सी लगीं। 'ओहो! अरे तू कहाँ से आ टपका?'

'दूसरी दुनिया से!'

'जाओ, भागकर इसके लिए कुछ खाना लाओ। इस तरह घूर घूर कर न देखो!' सरयूपिन चीखा।

'अभी लाया! खाना उस कोने में बँट रहा है।'

प्रोखोर मुँह चलाता हुआ उठकर दरवाजे की ओर गया। थका हुआ ग्रिगोरी बैठ गया। 'मुझे याद नहीं कि आज से पहले खाना कब खाया था।' वह अपराधी की भाँति मुसकराया।

तीसरी कोर की यूनिटें शहर से गुजर रही थीं। सँकरी सड़कों में पैदल सेना के लोग, रसद की गाड़ियाँ और फौजी घुड़सवार समाते

न थे।

चौराहों पर निकलने का रास्ता न था और आने-जानेवालों की आवाज़ें बन्द दरवाज़े भेदकर अन्दर पहुँच रही थीं। ऐसे में बर्तन भर दारचीनी और पल भर बाद फिर ओवेचकिन खोंखोर करते-करते लौट आया।

'यह चीज़ किसमें डालूँ?'

ओशाव ने बिना सोच-समझे ही एक बर्तन उठाकर देते हुए कहा इसे हत्थेदार बर्तन में डाला।

तुम्हारे बर्तन से बदबू आती है। आखार ने त्योरी चढ़ाते हुए कहा।

कोई बात नहीं। इसमें भर लो। बाद में हिस्सा-बाँट हो जाएगा।

जिरोव ने कड़िया बर्तन के ऊपर उलट दी और गाढ़ा मोटे माँड वाला दलिया उसमें भर गया। लाल-लाल चर्बी उसके चारों ओर तैरती रही। वे बातें करते और खाते रहे।

'बगल में घुड़सवार तोपचियों का एक कम्पनी ठहरा हुआ है। अपने पाजामे पर पड़ी एक बूँद को चाटकर बड़बड़ाते हुए वह बोला वे अपने घोड़ों को खिला रहे हैं। उनके वारंट अफसर ने कहीं पढ़ा है कि जर्मनों के साथी जगह खाली कर रहे हैं।

मैलखाव मालूम कि तुम आज सुबह यहाँ होते! उस्तूजिन ने मुँह चलाते हुए कहा हम लोगों को स्वयं डिवीज़नल-कमाण्डर ने धन्यवाद दिया। उसने हमारा निरीक्षण किया और हमारी वे दुश्मनों को मारकर अपने तोपख़ाने की रक्षा करने के लिए हमारा आभार माना। वह बोला शाबाश! जाओ और आपकी पितृभूमि कम के दिन में आपकी याद हमेशा ताज़ा रहेगी।

उसकी बात पूरी भी नहीं हो पाई कि बाहर बन्दूक दगने की आवाज़ सुनाई दी और मशीनगन चलने लगी। चमचा को पटककर सब बाहर भागे। एक हवाई जहाज़ नीचे उतरकर उनके सिरों के ऊपर चक्कर लगा रहा था। जहाज़ की मशीनगन लोगों का जम चमका रही थी।

या" की ग्राड म लेट जाग्रो । बम गिरा ही चाहता है। भगन घर में तोपखाने के लोग हैं। उरयूपिन चिल्लाकर बोला कोई जानर यगार को जगा द नहीं तो मुलायम चटाई पर ही उसका काम तमाम हो जाएगा।

राइफलें निकालो !

उरयूपिन ने निशाना साधकर सीढ़िया पर से गोली चलाई। घुटना के बल रेंगते हुए सनिक गलियो म भागे। अगले आँगन स घोडा की हिनहिनाहट और एक ग्रादेश के स्वर सुनाई दिए। ग्रिगोरी न चहारदीवारी की ओर देखा। तोपची फुरती स तोप को छप्पर के नीच ले जात दीखे। उसन नीलासमान पर आँखें गडाई तो सर्राटा भरते हुए उस पक्षी को भटके स नीच की ओर आते देखा। इसी क्षण कोई चीज धूप म चमचमाती हुई तेजी स सहसा ही नीचे गिरी।

टुकडे टुकडे कर देने वाली गरज स पूरा मकान काँप गया। बगल क हाते म एक घोडा मौत को सामन देखकर हिनहिनाया। बारूद का जहरीला धुआँ पूरी बाड पर लहर गया।

पट लेट जाग्रो ! उरयूपिन सीढ़िया स भागकर उतरा। ग्रिगोरी उसक पीछ लपका और दोनो ही झुककर ग्रहाते म जाकर लेट गए। मुडते ही हवाई जहाज का एक पख चमका। गली म बीच-बीच म गोली चलती सुनाइ दी। ग्रिगोरी न अपनी राइफल म कारतूस भर ही थे कि जोर क एक धमाक ने उस उठाकर बाड स दो फुट दूर फेंक दिया। मिट्टी का एक ढोका उसके सिर म ग्राकर लगा ग्रौर उसकी ग्राँखें धूल स भर गईं।

उरयूपिन न उस उठाकर खडा किया। ग्रिगोरी की बायी ग्राँख म तज दद शुरू हो गया। इसके कारण नजर ने काम करना बन्द कर दिया। यही मुश्किल स दायी आँख खोलकर उसने देखा कि मकान का आधा हिस्सा उड गया है। टूटा या उखडा सीधा शहतीर लगा है और उसक ऊपर गद का गुलाबी बादल मडरा रहा है।

ग्रिगोरी खडा घूरता रहा कि यगोर ज्ञारकोव सीढ़िया के नीच स रेंगता हुआ बाहर निकला। उसका सारा चेहरा रुग्राँसा-रुग्राँसा-सा

नग। उनरा आँखा स खून की बूँदें चूती जाती। व जम बाहर निकल आइ थी। वह च चा क बीच मिर भुलाए रेंगता रहा। वह मु न्द किय भालनाद करता रहा। उमक गाठकान पड गए थ।

उसका एक टाँग पीछे घिसट रहा थी। वह जाँघ स अलग हो गइ थी और कुचल हुए पतलून का पाँयचा उसक ऊपर था। दूसरा टाँग बिलकुल हा गायब थी। वह हाथा क बल धार धार रेंग रहा था। उमक मह स पतली बच्चा जसी चीखें निकल रही था। फिर चीखें रुक गइ और वह चुप गया। उसका चहरा कडी ग्ग और कीचड भरी जमीन स जा टकराया। कोइ उसक पास नहीं फटका।

उमको उठा लो ! ग्रिगोरी चिल्लाकर बोला। उसन अपनी बाया आँख स हाथ नहीं हटाया।

पल्न मना हात का मार भागा। इसी समय टेलीफोन-कर्मचारियो की एक गाडी आकर दरवाज पर रुकी। 'वहाँ खड मुह क्या देखा रह हो ?' दो आगे और काला लम्बा कोट पहन एक बूढा ऊपर आया। लाश के पास देखत-देखत भीड जमा हो गई। ग्रिगोरी न भीड म घुसकर देखा कि घायल अभी भी साँस ल रहा है रो रहा है और काँप रहा है। उसकी पीली भौंहो पर पसीने की बूँदें थी। चहरे पर मौत की छाप थी।

उठा लो उसको ! तुम लोग इन्सान हो या हैवान !

क्या बात पाई डालत हो ? एक लम्बा-सा पदल सैनिक बोला, 'उठा लो उठा लो उसको ! लकिन मगर कहाँ जाएँ हम लकर ? देख नहीं रहे, यह तो दम तोड रहा है।

'दोनो पर मन गय

खून तो देखा जरा !

'स्ट्रेचरवाले कहाँ हैं ?

'उनस कौन-सा भला हो जाएगा अब !

और अब भी होश है उसे

एक सार्जेंट न पीछे से ग्रिगोरी के कंधे पर हाथ रखा 'उस छिपाओ उठाओ नहीं वह घाव म जाता ... सा हो सा दूसरा तरफ स

आकर देखा।'

उसने ग्रिगोरी की आस्तीन पकड़कर घसीटा और भीड़ को एक ओर ढकेल दिया। ग्रिगोरी ने एक नजर देखा फिर बच्चों को झटका और लौटकर दरवाज़े की ओर चला गया। नीली और गुलाबी अंतड़ियाँ भारकोव के पेट से बाहर निकलकर लटक आई और धुआँ दे रही थीं। एक हिस्सा रेत और लीद पर बिखरा पड़ा था। दम तोड़ रहे फौजी का हाथ बगल में ऐसे पड़ा था जैसे कि ज़मीन को जहाँ-तहाँ से टटोल रहा हो।

'मुँह ढक दो।' किसी ने अपनी ओर से कहा।

अकस्मात् ही भारकोव अपने हाथों पर बल देकर थोड़ा उठा और अपना सिर पीछे झटककर मोटे अस्वाभाविक अमानवीय स्वरों में चिल्लाया 'भाइयो मार डाला मुझे! आह भाइयो मुझे मार डाला!'

२०

गाड़ी का कम्पार्टमेण्ट धीरे-धीरे हिलता डुलता रहा। उसके पहियों की खड़खड़ाहट जैसे लोरियाँ सुनाकर मानो सुलाती रही। लालटेन से प्रकाश की पीली धारी फूट रही थी। ग्रिगोरी ने जूते उतारकर पाँवों को आज़ाद कर अपनी सारी ज़िम्मेदारियाँ भुलाकर लेट रहना बहुत अच्छा लगता। साथ ही जब यह मालूम हुआ कि जीवन पर भय और मौत के काले साये अब नहीं तो आनन्द और भी बढ़ गया।

पहियों की तरह-तरह की खटर-पटर को सुनकर साथ लगी हुई गाड़ियाँ इंजिन के हर झटके से नगाड़े की भाँति पीछे और पीछे खिंचता गया। ग्रिगोरी लेटा हुआ अपने नंगे पाँव में अंगुलियों का ऐंठना उस खटर-पटर में अनुभव होना और ताज़ा साफ़ लिनन का सुख लेता रहा। उसे ऐसा लगा जैसे कि उसने गन्दी खाल उतार फेंकी हो वह एकदम निर्मल हो गया हो और नये जीवन में प्रवेश कर रहा हो।

उस समय उसके लिए हर ओर आनन्द ही आनन्द था। यदि कोई दर्द था तो वह था उसकी बायीं बाँह का दर्द। कभी दर्द रुक जाता,

और कभी अचानक ही फिर उठ आता। उसकी आँखें जलने लगतीं और पट्टी के नीचे से आँसू बह चलते। मार्चे के अस्पताल में कम उम्र यहूदी डाक्टर उसके नेत्रों की परीक्षा कर कहा था, "तुम्हें वापस जाना पड़ेगा। तुम्हारी आँख की हालत बहुत खराब है।"

"डॉक्टर, आँख चली तो नहीं जाएगी?"

"ऐसा क्यों सोचते हो!" ग्रिगोरी की घबराहट से भरी आवाज़ सुनकर डॉक्टर ने मुसकराकर कहा, "लेकिन इसका इलाज तुम्हें कराना पड़ेगा। हो सकता है कि आपरेशन भी कराना पड़े। हम तुम्हें पीटर्सबुर्ग या मास्को भेज देंगे। डरने की बात नहीं, आँख ठीक हो जाएगी।" उसने ग्रिगोरी का कंधा थपथपाया और उसे तरीके से गलियारे से बाहर पहुँचा दिया। लौटकर उसने ऑर्डरली को तैयारी का और अपनी आस्तीनें ऊँची कीं।

काफी इधर-उधर के बाद ग्रिगोरी ने अपने को अस्पतालीट्रेन में बैठा पाया। वह कितने ही दिनों तक लेटा, उस आनन्दपूर्ण शान्ति का उपभोग करता रहा। रेल के डिब्बों की लम्बी कतार को पुराना इंजिन पूरी ताकत लगाकर खींचता रहा। रात को गाड़ी मास्को पहुँच गई। गम्भीर रूप से घायल लोगों को स्ट्रेचरों में लाया गया। चलने की स्थिति में जो लोग रहे उन्हें प्लेटफार्म पर जमा किया गया। रेलगाड़ी के साथ आए डाक्टर ने ग्रिगोरी को पुकारा और पता लिखाना बताकर उसे एक नर्स के हवाले कर दिया।

"सामान साथ है?"

"कज्जाक के पास क्या सामान हो सकता है भला? एक ओवरकोट, एक फ़ौजी थैला और बस!"

"मेरे पीछे-पीछे आओ!"

नर्स अपनी कुछ सकपकाती स्टेशन के बाहर आई। ग्रिगोरी अनिश्चित-सा उसके पीछे हो लिया। बाहर आकर उन्होंने एक घोड़ागाड़ी ली। उस विशाल नगर के कोलाहल, ट्राम की घरघराहट और बिजली के नाना प्रकार ने उस ग्रिगोरी को कुचल डाला। वह गाड़ी की सीट से पीठ सटाकर बैठ गया और सड़क की भीड़भाड़ की ओर कौतूहल से

दसन नगा। पास बठी औरत के उत्तेजित शरीर के कारण उन क्षण विचित्र विचित्र-सा लगा। नालों म पानी का आगमन हो चुका था। सन्ध्या की रागनी म गुलबारा के पत्तों की पत्तियाँ पीली-पीली-सी लग रही थीं रात की साँसों म जाड़े की ठिठुरन घुल चली थी। पटरियाँ चमक रही थीं। आसमान मे शीतल सितारे निर्मल थे। नगर के मध्य म बाजार व नोग किनारे की एक वीरान गली की ओर मुड़े। नीचे की सिटूिया पर घोड़ा व खुर बजे। ऊँची गद्दी पर बठा नील लम्बे कोट म लिपटा कोचवान इधर-से-उधर हिला और उसने घोभी के सिर के ऊपर चाबुक नचाया। दूर पर रेल के इंजिन ने सीटी दी। शायद कोई गाड़ी दोन के दहाने की तरफ जा रही है। ग्रिगारी ने बड़ी हसरत से सोचा।

नीन्द आ रही है? नम ने पूछा।

नहीं तो।

अब पहुँचते ही हैं हम लोग। लोहे के जंगल के पार एक तालाब का तनहा पानी चमका। ग्रिगारी ने लोहे की रेलिंग-सहित एक घाट देखा और घाट के किनारे बँधी हुई एक नाव। हवा म नमी महसूस हुई।

यहाँ दोन की-सी बात नहीं है यहाँ तो पानी भी लोग लोहे में जकड़कर रखते हैं। ग्रिगारी ने सोचा। गाड़ी के रबड़ के टायरों के नीचे पत्तियाँ चरमराईं।

गाड़ी एक झिलमिल मकान के सामने रुकी। ग्रिगारी उतरकर बाहर आया।

ज़रा अपना हाथ दीजिए। उसकी तरफ मुड़ते हुए नम बोली। ग्रिगारी ने उसका दायाँ मुलायम हाथ थामा और उसे नीचे उतरने म सहायता दी।

आपके बदन म मनिका के पसीने की बू आती है। नम धीमे स्वर में हँसी और उसने घंटी बजाई।

तो तुम यहाँ दिन रात रह सको तो तुम्हारे बदन म किसी और चीज़ की बू आने लगे। ग्रिगोरी ने अपना क्रोध दबाते हुए कहा। दरवाज़ा दरबान ने खोला। कालीन बिछी जगमगाती सीढ़ियों पर

चढ़कर दूसरी मंजिल पर पहुँचे। सामने के कमरे का पाम्दग ग्रिगोरी एक गोल मेज़ के पास जाकर बैठ गया और नर्स सफ़ेद चोगेवाली एक औरत से धीमे-धीमे बातें करने लगी।

अलग-अलग रंगों के चश्मे चढ़ाए लोग दरवाज़ों के आस-पास नज़र आए। दरवाज़े पूरे गलियारे में दोनों ओर दीख पड़े।

कुछेक मिनटों में सफ़ेद कपड़े पहने एक अर्दली आया और ग्रिगोरी को एक बाथरूम में ले गया।

'कपड़े उतार दो।'

'किसलिए?'

'तुमको नहाना पड़ेगा।'

इधर ग्रिगोरी कपड़े उतारते हुए उस नहाने के कमरे को ताज्जुब से देखता रहा, उधर अर्दली ने टब में पानी भरकर पानी की गर्मी नापकर ग्रिगोरी को नहाने का आदेश दिया।

'इस टब में मेरा काम नहीं चलेगा।' ग्रिगोरी ने अपना साँवला पैर ऊपर उठाते हुए कहा। अर्दली ने ग्रिगोरी को नहलाने में भी मदद की और शरीर पोंछने को तौलिया, कपड़े, घरेलू जूते और एक भूरा लबादा दिया।

'और मेरे कपड़े क्या हुए?' ग्रिगोरी ने आश्चर्यचकित होकर पूछा।

'जब तक आप यहाँ रहेंगे आपको यही कपड़े पहनने होंगे। अस्पताल से छुट्टी पाने पर आपके कपड़े आपको लौटा दिए जाएँगे।'

दीवार पर एक शीशा टंगा हुआ था। ग्रिगोरी ने उसमें अपनी शक्ल देखी तो वह अपने-आपको पहचान नहीं पाया। उसका चेहरा लम्बा काला हो गया था। गालों पर मांस धँस पड़ गए थे और दाढ़ी-मूँछ बढ़ आई थी। वह ड्रेसिंग गाउन पहने हुए था। उसके बाएँ गालों पर पट्टी बंधी हुई थी। इस समय के और पहले के ग्रिगोरी में समानता नाम भर को ही थी। 'मेरी उम्र जम कर घट गई है।' वह मन-ही-मन मुस्कराया।

'बाएँ हाथ तीसरा दरवाज़ा—दायीं ओर अस्पताल का

देखन लगा। पास बठी औरत के उत्तजित शरीर के कारण उन बड़ा विचित्र विचित्र-सा लगा। नाल्कों म पाग का आगमन हो चुका था। लम्पों की रोशनी म बुलवारा के पडा की पत्तियां पीली पीली-सी लग रही थीं रात की साँसा म जाड़ की ठिठुरन घुस चली थी। पटरियाँ चमक रही थीं। आसमान के अनेक सितारे निमग्न थ। नगर के मध्य म आकर व लोग किनारे की एक वीरान गली की ओर मुड़े। नीचे की गिट्टियों पर घोड़ों के खुर बज। ऊंची गद्दी पर बठा नीले लम्बे कोट म लिपटा कोचवान इधर-स-उधर हिला और उसने चाबुक व सिर के ऊपर चाबुक नचाया। दूर पर रेल के इंजिन ने सीटी दी। शायद कोई गाड़ी दान के इलाके की तरफ जा रही है। ग्रिगारी न बड़ी हसरत स सोचा।

कोई आ रही है? नम न पूछा।

नहीं तो।

अब पहुँचते ही है हम लोग। लाह के जगल के पार एक तालाब का ललहा पानी चमका। ग्रिगारी न लाह की रलिंग-सहित एक घाट देखा और घाट के किनार बँधी खड़ी एक नाव। हवा म नमी महसूस हुई।

यहाँ शान की-सी बात नहीं है यहाँ तो पानी भी लोग लोहे स जकड़कर रखते हैं। ग्रिगारी न सोचा। गाड़ी के रबड़ के टायरों के नीचे पत्तियाँ चरमराई।

गाड़ी एक तिमजिले मकान के सामने रुकी। ग्रिगारी उतरकर बाहर आया।

जरा अपना हाथ दीजिए। उसकी तरफ झुकते हुए नम बोली। ग्रिगारी न उसका ठण्डा मुलायम हाथ थामा और उस नीचे उतरने म सहायता दी।

मानव जन्म म मनिखा के पसीने की बू आती है। नम जाने क्यों हँसी और उसने घण्टी बजाई।

जरा तुम थोड़ दिन यहाँ रह लो तो तुम्हारे जन्म म किया और बाज की बू आने लगे। ग्रिगारी न अपना क्रोध दबाते हुए कहा।

दरवाजा दरबान ने खोला। पत्थर की जालीदार सीढ़ियों पर

चढ़कर दूसरी मंजिल पर पहुँचे। सामने के कमरे को पारकर ग्रिगोरी एक गोल मेज के पास जाकर बैठ गया और नर्स सफेद चोगेवाली एक औरत से धीमे धीमे बात करने लगी।

अलग अलग रंगों के वर्दी चढ़ाए लोग दरवाजों के आस-पास नजर आए। दरवाजे पूरे गलियारे में दोनों ओर दीख पड़े।

कुछेक मिनटों में सफेद कपड़े पहने एक अर्दली आया और ग्रिगोरी को एक बाथरूम में ले गया।

'कपड़े उतार दो।'

'किसलिए?'

'तुमको नहाना पड़ेगा।'

इधर ग्रिगोरी कपड़े उतारते हुए उस नहाने के कमरे को ताज्जुब से देखता रहा, उधर अर्दली ने टब में पानी भरकर पानी की गर्मी नापकर ग्रिगोरी को नहाने का आदेश दिया।

'इस टब में मेरा काम नहीं चलेगा।' ग्रिगोरी ने अपना [illegible] पर ऊपर उठाते हुए कहा। अर्दली ने ग्रिगोरी को नहाने में भी मदद दी और शरीर पोंछने का तौलिया, कपड़े, घरेलू जूते और एक सूती लबादा दिया।

'और मेरे कपड़े क्या हुए?' ग्रिगोरी ने आश्चर्यचकित होकर पूछा।

'जब तक आप यहाँ रहेंगे आपको यही कपड़े पहनने होंगे। अस्पताल से छुट्टी पाने पर आपके कपड़े आपको लौटा दिए जाएँगे।'

दीवार पर एक शीशा टंगा हुआ था। ग्रिगोरी ने उसमें अपनी शक्ल देखी तो वह अपने-आपको पहचान नहीं पाया। [illegible] लम्बा [illegible] हो गया था। गालों पर [illegible] मूंछें बढ़ आई थीं। वह [illegible] पहने हुआ था। [illegible] पर पट्टी बंधी हुई थी। इस समय [illegible] नाम भर की ही थी। 'मेरी उम्र अभी [illegible] है।' [illegible] मुसकराया।

'वाह दोस्त' तीसरा [illegible]

आदमी बोला।

ग्रिगोरी बड़े सफ़ेद कमरे में घुसा कि अस्पताली चोगा पहने चश्मा लगाए एक पादरी उठ खड़ा हुआ: आह, पड़ोस में रहोगे? बड़ी खुशी हुई तुमसे मिलकर, साथ रहेगा। मैं जरस्क का हूँ। ग्रिगोरी की ओर कुर्सी उठाते हुए वह बोला।

थोड़ी देर बाद एक मोटी-सी नर्स ने दरवाजा खोला।

मेलेखोव! हम तुम्हारी आँखें देखना चाहते हैं। उसने धीरे से कहा और उसे निकलने का मार्ग देकर एक ओर को हटकर खड़ी हो गई।

२१

सैनिक कमाण्डर ने दक्षिण-पश्चिमी मोर्चे पर एक बड़ा आक्रमण करने का निश्चय किया। सोचा गया कि शत्रु की पंक्तियाँ तोड़कर उसकी डाक-तार वग़ैरह की व्यवस्था गड़बड़ करने और उसकी फ़ौजों को तितर-बितर करने के लिए हमले अकस्मात् पीछे से किए जाएँ। कमाण्डर ने बहुत-सा अनाज इकट्ठा किया और घुड़सवारों की बड़ी सेनाओं को उस क्षेत्र में जमा कर लिया। इन्हीं घुड़सवारों में थी कज़ाकी लिस्तनित्स्की की रेजीमेंट। धावा १० सितम्बर को बोलना था, लेकिन आँधी-पानी के कारण यह अगले दिन के लिए टाल दिया गया।

तबके डिवीज़न को हमले की तैयारी के सिलसिले में एक बड़े क्षेत्र में फैला दिया गया।

आठ बजे के क़रीब पैदल सेना ने दाहिनी ओर एक ऐसी ग़फ़लत का काम कर दिया कि दुश्मन चौकन्ना हो गया। दूसरी ओर एक घुड़सवार डिवीज़न के कुछ दल ग़लत दिशा में भेज दिए गए।

लिस्तनित्स्की की रेजीमेंट के सामने दूर-दूर तक कहीं दुश्मन का नाम निशान न था। कज़ाकों ने देखा कि लगभग एक वर्स्ट दूर वीरान खाइयों की पंक्तियाँ हैं और उनके पीछे मक्के की नीली धूप में नहाए हुए सहरान गाड़े गए हैं। दुश्मन ने तैयारी से आक्रमण का अनुमान लगा लिया होगा क्योंकि रातों रात में वे लोग कई दस वर्स्ट पीछे हट

गए थ और हमलावरो को ढकने के लिए केवल मशीनगनो में यहू छोड गए थे।

बरसाती बादलो के पीछे से सूरज उग रहा था। सारी घाटी पीली धूप से नहा रही थी। ऐसे में आगे बढ़ने का आदेश मिला और रेजीमेंट आगे बढ़ चली। हजारो घोडो की टापो से पैदा हुई गगनभेदी आवाज धरती के नाद में आती-सी लगी। घोड़े को तेज रफ्तार से न दौड़ने देने के लिए लिस्तनित्स्की ने लगाम खींची। एक वस्ट तय करने के बाद आक्रामक सेनाओं की पंक्तियाँ दलदलों से भरी के पास आ पहुँची। आदमी की कमर से ऊंची घास और लताओं से लिपटी राइ के कारण घुड़सवारों का आगे बढ़ना दुश्वार हो गया। उनके सामने राई की भूरी बालें लहराती रहीं और पीछे की राई खुरो से रौंदी गई। इस तरह के चार वस्ट के सफर के बाद घोड़े पसीने-पसीने हो गए और लड़खड़ाने लगे फिर भी शत्रु का कोई चिह्न कहीं न मिला। लिस्तनित्स्की ने अपने कम्पनी-कमाण्डर पर नजर डाली। कप्तान के चेहरे पर गहरी निराशा का भाव झलक आया।

छः वस्ट की दुश्वार मंजिल ने घोडो की सारी ताकत तोड दी। कुछ अपने सवारों को लिए लिए गिर पड़े। ताकतवर-से-ताकतवर घोड़े भी लड़खड़ा गए और आगे बढ़ने से मुँह मोड़ गए। अब आस्ट्रिया की मशीनगनों ने गोलियों की बौछारें शुरू कीं। राइफलें आग बरसाने लगीं। हमारा आग न आगे के दस्तों का भून डाला। सबसे पहले बर्छी वाली एक रेजीमेंट बौखलाकर पीछे मुड़ी। एक कज्जाक रेजीमेंट तितर बितर हो गई। मशीनगनों की बौछार ने उनके पैर उखाड़ दिए। इस तरह यह असाधारण बड़ा आक्रमण पूरी पराजय में बदल गया। कुछेक रेजीमेंटों में आधे सैनिकों के घोड़े मारे गए तो आधे घोड़ों के मालिक मारे गए। अपनी लिस्तनित्स्की की रेजीमेंट के चार सौ कज्जाक और सात अधिकारी पलक के पलक में समा गए या घायल हो गए।

यवाना का अपना घोड़ा मर गया और स्वयं उसके सिर और पैर में चोटें आई। एक सार्जेंट मेजर अपने घोड़े से कूदा और उस उस पर घोड़े पर सवार होकर भाग लिया।

उस डिवीज़न के स्टॉफ प्रमुख कर्नल घोलावाचेव ने आत्मसमर्पण के दिनन ही फोटो खींचे और बाद में उन्हें युद्ध अधिकारियों को दिखलाया। इस पर एक घायल लेफ्टिनेंट ने उसके मुँह पर घूँसा मारा और रो पड़ा। फिर कज्जाक उस पर टूट पड़े और काटकर उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए, उसकी लाश से खिलवाड़ किया और फिर उसे सड़क की बगल के एक गड्ढे में ढकेल दिया। इस भाँति अन्त हुआ इस घोर अपमानजनक आत्मसमर्पण का।

वारसा के अस्पताल से यवोनी ने अपने पिता को लिखा कि मुझे छुट्टी मिल गई है और मैं यागान्नाए आ रहा हूँ। वृद्ध कमरे को बन्द कर दिन भर पड़ा रहा और अगले दिन जाकर कहीं बाहर निकला। उसने निश्चिन्त कोचवान से तेज़ चलने वाले घोड़े को बग्घी में जोतने को कहा, फिर नाश्ता किया और व्येशेन्स्काया के लिए रवाना हो गया। वहाँ से उसने अपने लड़के के नाम तार से चार सौ रूबल भेजे और साथ ही भेजा एक छोटा-सा पत्र

प्यारे बेटे,

मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि तुमने अग्नि-दीक्षा ले ली है। बड़े घरों के लड़कों की जगह यहाँ है, महलों में नहीं। तुम बहुत ही ईमानदार और समझदार हो। तुम अपने आत्मा का गिरना कभी पसन्द न करोगे। हमारे परिवार में कभी किसी ने ऐसा नहीं किया। यही कारण है कि तुम्हारे बाबा सम्राट के कृपापात्र नहीं रहे और यागान्नोए में मर गए। जीते जी न उन्होंने सम्राट का अनुग्रह चाहा, न उसकी आशा रखी। यवोनी, अपनी चिन्ता करो और जल्दी से जल्दी अच्छे हो जाओ। याद रखना कि दुनिया में जो कुछ हो, मेरे लिए तुम ही हो! तुम्हारी चाची तुम्हें प्यार भेजती है। वह अच्छी है। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं क्या लिखूँ? तुम जानते हो कि मैं कैसे रहता हूँ! मोर्चे पर जैसी भी हालत है, यह क्या है आखिर? क्या अक्ल से काम करने वाले लोग हमारे यहाँ हैं या नहीं? मैं अखबारों की खबरों पर यकीन नहीं करता। वे सब झूठ से भरी होती हैं। मेरा पिछले वर्षों का अनुभव भी यही कहता है। यवोनी, क्या हम लड़ाई हार जाएँगे? मैं यहाँ बेचैनी से तुम्हारी राह

देख रहा हूं।

और सचमुच लिस्तनित्स्की के जीवन में ऐसी कोई बात न थी जिसकी चर्चा की जाए। ज़िन्दगी पहले की तरह घिसट रही थी। कोई अन्तर नहीं था। केवल मज़दूरों की मज़दूरी बढ़ गई थी और शराब की कमी हो गई थी। मालिक अब और ज़्यादा पीता था, बातचीत में और ज़्यादा बिगड़ता था और ज़्यादा कुसूर निकालता था। एक दिन उसने अक्सीनिया को बुलाया और शिकायत करते हुए बोला "तुम काम कायदे से नहीं करती। कल नाश्ता ठंडा क्यों दिया? बिछावन ठीक से साफ़ क्यों नहीं किया? दुबारा ऐसी ग़लती की तो मैं तुम्हें निकाल दूंगा। मुझे यह सब पसन्द नहीं, समझी?

अक्सीनिया ने होंठ भींच लिए। उसकी आंखों से आंसू बह चले। बोली निकोलाई अलेक्सेएविच, मेरी लड़की बीमार है। मुझे उसकी देखभाल करने का वक़्त चाहिए। मैं उसे छोड़ नहीं सकती।

बच्ची को क्या हो गया?

उसके गले में कफ़ अटक गया है।

क्या? क्या उसे लाल बुखार है? तूने पहले क्यों नहीं बताया, बेवकूफ़ कहीं की! जा, निकितिच के पास भागकर जा कि वह व्योशेन्स्काया से डाक्टर को बुलाकर लाए। भागकर जा। जल्दी कर!

अक्सीनिया वहां से भागी। बूढ़ा इस बीच अपनी भारी आवाज़ में उसी तरह बड़बड़ाता रहा क्या बेवकूफ़ औरत है तू, एँ?

निकितिच अगले दिन सुबह डॉक्टर को ले आया। डॉक्टर ने बुखार से बेहाल पड़ी बच्ची की परीक्षा की। और अक्सीनिया के सवालों का उत्तर दिए बिना सीधा मालिक के पास पहुंचा। वृद्ध उससे सामने वाले कमरे में मिला।

'कहो, बच्ची का क्या हालचाल है? उसने डॉक्टर का अभिवादन लापरवाही से सिर हिलाकर स्वीकार करते हुए पूछा।

लाल बुखार है, सरकार।

ठीक हो जाएगी? कोई उम्मीद है?

मुश्किल है। कोई उम्मीद नहीं है।

"बेवकूफ़! बहुत साल हो गया तुम्हारी डॉक्टरी से फायदा? ठीक करो उसको।" डॉक्टर के सामने ही उसने मकान से कमरे का दरवाज़ा बन्द कर लिया और इधर-से-उधर टहलने लगा।

अक्सीनिया ने दरवाज़ा खटखटाया और अन्दर दाखिल हुई। "डॉक्टर अस्पताल को लौटने के लिए घोड़ागाड़ी माँगता है।"

वृद्ध एड़ियों के बल घूम पड़ा, "कह दो उससे कि वह काठ का उल्लू है। कहना कि जब तक बच्ची ठीक न हो जाएगी उसे यहीं ठहरना पड़ेगा। उसको एक कमरा ठहरने को दे दो और पेट भर खाना खिला दो।" घूँसा हिलाते हुए वह चीख़कर बोला। फिर खिड़की के पास पहुँचा, क्षण भर अँगुलियाँ खटखटाता रहा और फिर अपने बेटे का फोटो देखने लगा। फ़ोटो में बेटा आया की गोद में था और वह उसके बचपन में लिया गया था। फिर बूढ़ा दो कदम पीछे हटा और नज़रें जमाकर देखने लगा, जैसे कि बच्चे को पहचान न पा रहा हो।

बच्ची के बीमार होते ही अक्सीनिया को लगा कि भगवान् उसे नतालया को तंग करने का दंड दे रहा है। बच्ची की ज़िन्दगी ख़तरे में देखकर वह आपे से बाहर हो गई और होश में नहीं रही। अब वह इधर उधर बेमतलब घूमती और कोई भी काम न कर पाती। "चाहे कुछ हो भगवान् इसे धरती से उठायेगा नहीं"—वह बार-बार सोचती। न वह मानती और न वह मानने की कोशिश करती कि बच्ची बचेगी नहीं। पागलों की तरह भगवान् से प्रार्थना करती—"हे प्रभु! अन्तिम बार दया कर बच्ची की जान बचा लो।"

पर बुखार नन्ही-मुन्नी बच्ची को भूनता रहा। बच्ची पत्थर की तरह बिन लेटी रही। गला सूज गया और साँस हाँफी बनकर घर्राटों में बदल गई। डॉक्टर ने उसे दिन में चार चार बार देखा। शाम को नौकरों के क्वार्टरों के पास जा खड़ा हुआ और शरद् के तारों की ओर देखकर सिगरेट पीता रहा।

अक्सीनिया सारी रात बच्ची के सिरहाने बैठी रही। बच्ची की घरघराहट में रह-रहकर उसका कलेजा मुँह को आता रहा। वह आहें भर भरकर गाती रही—

मेरा नन्ही-मुन्नी बेटी मेरी मुन्नी रानी मेरी नन्ही अपनी माँ को छोड़कर जा मत मेरी तान्योचका ! देख तो मुन्नी आँखें तो खोल आ लौट आ मेरी काली आँखों वाली मुनिया उफ हे भगवान् क्या हो रहा है इसे ?

कभी-कभी बच्ची आग-सा जलती पलकें खोलती और खून की तरह लाल आँखों से काँपती हुई नजर से देखती। माँ लोभ से उसकी निगाह पकड़ने की कोशिश करती। पर निगाह जैसे कि अपने आप में खोती और डूबती चली जाती।

बच्ची ने अपनी माँ की गोद में दम तोड़ दिया। उसका छोटा-सा मुँह आखिरी बार खुला और सारा बदन ऐंठ गया। नन्हा-सा सिर माँ की गोद में झूल गया। मेलखाव की आँखें अचरज और उदासी से भरकर एकटक निहारती-की-निहारती रह गई।

वृद्ध शाश्का ने झील के किनारे के पुराने चिनार के नीचे एक छोटी सी कब्र खोदी ताबूत का ले जाकर उसमें रखा उस काँपते हाथों से मिट्टी से ढँका, धीरज से देर तक मिट्टी के ढूह से मक्सीनिया के उठने की प्रतीक्षा करता रहा। अन्त में जब उससे न रहा गया तो अपनी नाक जोर से बजाता हुआ अस्तबल में लौट आया। यहाँ उसने यू डी-कोलोन की एक शीशी और उतरी हुई स्पिरिट की एक सुराही निकाली और दोनों को एक बोतल में मिलाया। यह कॉकटेल गले के नीचे उतारने लगा तो बुदबुदाया—

'उस फूल-सी बच्ची की याद में। भगवान् करे कि स्वर्ग की राजधानी के द्वार उस बच्ची के लिए खुल जाएँ। दबूत धरती में उठ गया' उसने बोतल खाली कर दी। अब टमाटर का अचार दाँत से काटा तो जोर-जोर से सिर हिलाया और बालक की आर ममता से देखते हुए बोला दुलारी मेरी मुझे भूलना मत मैं भी तुझे कभी नहीं भूलूँगा और फूट पड़ा

सात हफ्ते बाद यवानी लिस्तनित्स्की ने एक तार दिया और लिखा कि मैं घर आ रहा हूँ। तीन घोड़ों की बग्घी उसे लेने स्टेशन गई। इलाके का हर आदमी उसके स्वागत के लिए उत्सुक हो उठा। मुर्गाबियाँ और

कसहस काटे गए। वृद्ध नाम्का ने एक मेड हलास की। शानदार बॉल की पूरी तयारी हो गई। छोटे मालिक रात को घर पहुँचे।

इस बीच ठिठुरन बढ़ गई और पानी बरसने लगा। पानी के गढे गढ़या म लम्पो की रोशनी की नन्ही-नन्ही किरणें झिलमिलाने लगी। गाड़ी सीढ़ियों के पास आकर रुकी तो घोड़ा की घटियाँ बजी। यवानी नाम्का के ऊपर अपना गरम लबादा पटककर कुछ-कुछ लगड़ाता-सा बड़ी उतावली म सीढ़ियों पर चढ़ा। पिता न कमरे से कुर्सियाँ इधर उधर की और बेटे स मिलन क लिए आग बढ़ा।

अक्सीनिया ने खान क कमरे म खाना सजाया और उन्हें बुलाने को पहुँची। उसन चाबी के छेद स वृद्ध को बेटे के कधे चूमते देखा। वृद्ध की गरदन का माँस हिलता लगा। कुछ मिनट रुकन के बाद उसने फिर झाँका। इस बार जमीन पर फैले एक बड़े नक्श के सामने यवोनी घुटना के बल बैठा दीखा। वृद्ध मुह स तम्बाकू के धुए के बादल उड़ाता कुर्सी के हत्थे पर अगुलियाँ के जोड़ बजाता नफ़रत से चीखता सुन पड़ा—

असम्भव! यह नहीं हो सकता! मैं विश्वास नहीं करता।

यवोनी ने नक्शे पर अपनी अगुलियाँ फिरात हुए बड़ी शान्ति स उत्तर दिया। वृद्ध भारी आवाज म बोला अगर ऐसा है तो प्रधान सेनापति ने गलती की है। दूरन्देशी की बिलकुल कमी रही। देखो यवोनी मैं रूसी जापानी-युद्ध की एक ऐसी ही मिसाल तुम्हारे सामने रखता हूँ। सुनो सुनो मेरी बात!

अक्सीनिया ने दरवाजा खटखटाया। उत्साह और प्रसन्नता स परिपूर्ण वृद्ध बाहर निकला। उसके नशा म यौवन की-सी चमक थी। अपने लड़के के साथ उसने १८०५ की अगूर की शराब पी। उनके खुशी स भरे चेहरे को देखकर अक्सीनिया को अपनी जिन्दगी का अकेलापन और भी खटका और खला। चेहरा दस अन्तर काटने लगा पर आँखों से आँसू एक नहीं निकला। बच्ची की मौत के बाद उसने रोना चाहा था किन्तु आँसू निकलने ही नहीं थ। उसकी हिचकी तो बँधती थी पर आँखें सूखी ही रहती थीं। वह जैसे पत्थर हो गई थी और इससे उसका दुख दुगुना हो उठा था। वह अचेतना म चैन पाना चाहती और काफ़ी

दर तक साना रहता । पर बच्ची की किलकारी नींद म भी उसके काना म पड़न लगती । उम लगता कि बच्चा उसकी बगल म है। बस वह तो करवट बदल लती और बिस्तर का हाथा स टटोलन लगता । कोइ उसन काना म बराबर फुसफुसाता रहता— माँ माँ ! सपन म वह कहती— मेरी राना मुन्नी ! और उसके हाथ पर कप जम जाती । दिन क मतगयारण प्रकाश म भी कभी-कभी उस बच्ची घुटनों पर बठी लगती । बस वह ता उसक घुघराल बाला पर हाथ फेरन को उमगती

मवाना का आए तीन दिन हुए कि एक शाम का वह अस्तबल म गया और वहाँ शाक्या म काफी दर तक दान प्रदश के कज्जाका क स्वतन्त्र जीवन की सहज कहानियाँ सुनता रहा । वह वहाँ स काइ नौ बजे उठा । महाल म तेज हवा सरसैट भर रही थी । कोचड पौधा क नीचे चपचप कर रही थी । ऐस म पील चाँद न बादलों का आवरण चीरा । मवानी न चाँदनी म अपनी घड़ी देखी और नौकरा क क्वाटरा की ओर मुड गया । उसने सीढ़िया क पास खडे होकर सिगरेट जलाई एक क्षण खड़ा विमूलता रहा और फिर कधे झटकता ऊपर चढ गया । उसन गावयाना म सिगरनी लगानी और अक्सीनिया क कमरे म पहुँचकर दियासलाइ जलाई ।

कौन है ? कम्बल ओढ़ते हुए अक्सीनिया बाली ।

मैं हू लिस्त्रनित्स्की ।

एक मिनट म कपडे पहनकर आती हू ।

तकलीफ मत करा । मैं ता बस दा-एक मिनट ठहरूगा ।

उसन अपना ओवरकोट उतारकर एक ओर रखा और चारपाइ की पाटी पर बठ गया ।

तो तुम्हारा बच्चा जाती रही

जी हाँ अक्सीनिया जरा जार स बाला ।

तुम बहुत बदल गई हा । मैं समझ सकता हूँ कि बच्ची क जान स तुम्हें कितना दुख हुआ होगा । लेकिन मरा ख्याल है कि तुम बेकार ही अपन का मता रही हा । बच्चा अब वापस तो आ नहीं सकती । फिर तुम्हारी उम्र भी कोइ निकल नहीं गई है । अभी ता तुम जवान हा,

और बच्चे हो सकते हैं। सम्हलो और अपने को साधो। आखिर तुम्हारा सब-कुछ तो लुट नहीं गया सारी जिन्दगी सामने पड़ी है।

यवोनी ने प्यार से उसका हाथ दबाया और उसे दुलराया किन्तु उसमें अधिकार की भावना भी रही। उसने बातों का स्वर नीचा कर लिया। फिर यह फुसफुसाहट में बदल गया और अक्सीनिया की दबी सिसकियों पर वह उसके आँसुओं से भीगे गाल और पलकें चूमने लगा।

नारी का हृदय संवेदना और करुणा के हाथों म सहज ही आ जाता है। निराशा के भार के नीचे दबी अक्सीनिया कुछ न समझी और येवोनी की बाँहों में भर गई। उसके अन्तर की सुप्त वासना पूरे वेग से जागी और अक्सीनिया ने अपना बदन ढीला कर दिया। पर बौखलाकर तबाह करने वाले आनन्द का गहरा उतार पर आया कि अक्सीनिया होश मे आई और तेजी से चीखी। उसे न उचित-अनुचित का ध्यान रहा और न लज्जा का खयाल रहा। वह अपनी सिर्फ कुरती पहने सीढ़ियों की ओर भागी। येवोनी तुरन्त ही उसके पीछे-पीछे बाहर आया। बाहर आते आते उसने अपना कोट पहन लिया और दरवाजा खुला छोड़ दिया। पर की सीढ़ियों पर चढ़ते समय उसने सन्तोष और आनन्द की साँस ली।

वह बिस्तरे म लेट गया और अपने कोमल सीने पर हाथ फेरते हुए सोचने लगा अगर ईमानदार आदमी की नजर से देखा जाए तो मैंने जो कुछ भी किया है वह लज्जाजनक है, अनैतिक है। ग्रिगोरी को मैंने अपने पड़ोसी को लूटा है। लेकिन इससे क्या? मोर्चे पर मैंने अपनी जिन्दगी भी तो दाव पर लगा दी थी। अगर गोली जरा और दायाँ काट देती तो मेरा सिर उड़ जाता और फिर इस समय कीड़े मेरा नाश्ता करते। इन दिनों हरेक को आनेवाले हर क्षण को दाँत से पकड़ना चाहिए। मुझे इजाजत है मैं कुछ भी कर सकता हूँ। क्षण भर को वह अपने ही विचारों म भयभीत हो उठा किन्तु फिर उसकी कल्पना ने आक्रमण का भीषण दृश्य उसके सामने ला उपस्थित किया। उसे याद आया कि वह अपने मुर्दा घोड़े से उठा फिर गिर गया और फिर गोलियाँ बरसने लगीं सोने से पहले उसने निश्चय किया इस पर भी सिर धुनने को कम समय बहुत मिलेगा फिलहाल आराम करना चाहिए।

अगले दिन सबेरे स्नान के कमरे में उसने अकसीनिया को अकेला देखा तो अपराधी की भाँति मुसकराता हुआ उसके पास पहुँचा। किन्तु वह दीवार से सट गई और बचाव के लिए हाथ आगे बढ़ाते हुए उस पर लानत बरसाने लगी दूर रह शैतान कहीं का!

पर जीवन के अपने नियम होते हैं। ये नियम कहीं लिखे नहीं हैं। वे इन्सान को अपने साँचे में ढालते हैं। तीन दिन बाद येवोनी रात को फिर अकसीनिया के पास गया तो अकसीनिया ने कुछ नहीं कहा। इन्कार भी नहीं किया।

२२

एक छोटा-सा बगीचा साँको के अस्पताल से लगा हुआ था। मास्को में बाहर ऐसे कितने ही अटपटे बगीचे हैं जहाँ शहर की पथरीली कोलाहल भरी मनहूसियत से आँखों को छुटकारा नहीं मिलता। उन पर दृष्टि पड़ती है तो खुले हुए जंगलों की याद दिल को और गहराई से कचोटने लगती है। अस्पताल के बगीचे में शरद की बहार थी। सन्तरा और बाज के पेड़ों की पत्तियों से रास्ते भरे पड़े थे। सुबह के पाले ने फूलों को मसल दिया और जहाँ-तहाँ की घास को नहला-सा दिया था। जिन दिनों मौसम अच्छा होता रोगी पगडण्डियों पर चहलकदमी करते अमनिष्ठ मास्को के चर्चों की घंटियाँ सुनते। जब मौसम खराब होता रोगी एक कमरे से दूसरे कमरे में आते या अपने बिस्तरों पर चुपचाप लेटे रहते—ऊबते हुए या एक-दूसरे को उबाते हुए। उस साल ऐसे दिन अक्सर ही आते।

अस्पताल में घायल रोगी अधिक थे। घायल फौजियों का एक अलग कमरे में रखा गया था। वे कुल पाँच थे—लम्बा गुलाबी रंग का नीली आँखों वाला सार्जेण्ट जान वारीविच ब्लादीमिर प्रदेश का सुन्दर-सा घुड़सवार इवान ब्रूक्नेवस्की साइबेरिया का तोपची कासिम, एक पीला ठिगना चपल सनिक बुदिन और शिरोरी। सितम्बर के अन्त में उनमें एक और आ मिला।

ये पाँचों नाम की चाय पी रहे थे कि घण्टी की लम्बी आवाज उनके

दाना म पड़ी। ग्रिगारी न गलियारे म झाँककर देखा। तीन लोग हाल म भाये—एक नम काश्नास का लम्बा कोट पहने एक आदमी और उसकी बग़ल स सधा एक तीसरा आदमी। फौजी की गन्दी टयुनिक और सीने पर पड खून क दागा स पता चला कि वह अभी अभी स्टेशन स आया है।

उमी दिन शाम का उसका आपरेशन हो गया। आपरेशन थियेटर म उसके जान के कुछ ही मिनटा बाद अन्य रोगिया को गाने की भर्राई हुई आवाज सुनाई दी। उस क्लोरोफाम सुघा दिया गया था और सजन उसकी बम से घायल एक आँख का बचा हुआ हिस्सा निकाल रहा था कि वह गाना गा रहा था और गालियाँ दे रहा था। गालियाँ समझ में नही आ रही थी। आपरेशन क बाद उसे वाड म ल आया गया जहाँ अन्य सनिक रख गए थ। जब क्लोरोफाम का असर खत्म हुआ तो उसने बतलाया कि मेरा नाम गारान्का है मैं जमनी के मार्चे पर घायल हुआ हू चरनीगाव प्रान्त का उक्रान्नी हूँ और सेना म मशीनगन चलाता रहा हू। ग्रिगारी म उसकी खास दोस्ती हो गइ। ग्रिगारी का बिस्तरा उसकी बगल म लगा था। शाम के मुआइन क बाद दोना बड़ी देर तक धीमे स्वरा म बातें करत रह।

कहो गरज़ाप भाई क्या हालचाल हैं ? पहल उसन बातचीत शुरू की।

हालत पतला है

और जान्री रहगी क्या ?

मुझे मुर्दनी लगाई जा रही है।

कितनी उम्र हुई अब तक ?

अठारह।

मूड लगत समय तकलीफ हाती है क्या ?

'नही मुझे ता अच्छा लगता है।

'उनस कहा कि आँख सीधे-साधे बाहर करें।

आखिर क्या ? हर आदमी का काना होना जरूरी है क्या ?

मो ता है।

गिगोरी का पीला, झुर्रीला चेहरा किसी भी बात से सन्तुष्ट नहीं था। वह सरकार, लड़ाई, क्रिस्मन मुसलमान के खान, बावर्ची, डाक्टरों और हर चीज़ को बुरा भला कहने लगा। जो मुँह में आया, वो बकने लगा।

तुम चाहते हो कि हम लोग लाम पर आखिर गये क्यों, यह जानना चाहता हूँ? उसने कहा।

हम बस हो गये जैसे और लोग गये।

क्या कहते हो! तुम बेवकूफ़ हो! मुझे तुम्हें इस सिर में सब-कुछ समझाना पड़ेगा। हम बुज़ुआ लोगों के लिए लड़ रहे हैं। समझ नहीं आता तुम्हें? जानते हो कि यह बुर्जुआ लोग क्या बला हैं? ये पेड़ों की चिड़ियाँ हैं।

उसने कठिन शब्दों के अर्थ गिगोरी को समझाये और बात-बीच में गालियाँ पिरोईं। इतनी जल्दी न बोलो। मेरी समझ में तुम्हारी उलझनें नहीं आतीं। धीरे-धीरे बोलो। गिगोरी ने उसे टोका।

मैं एसी जल्दी-जल्दी तो बात नहीं कर रहा, साहबज़ादे! तुम सोचते हो कि तुम ज़ार के लिए लड़ाई लड़ रहे हो! लेकिन यह ज़ार क्या है? ज़ार है सट्टेबाज़ और ज़ारीना है बाज़ारू औरत, और ये दोनों हमारी पीठ पर बोझ की तरह सवार हैं। समझे तुम? मिल-मालिक वोदका ढालता है, सिपाही बैठा जूँ मारता है। कारखानेदार मुनाफ़ा कमाता है, मज़दूर नंगा रह जाता है। यह है हमारे यहाँ की दुनिया। चर जाओ नौकरी, बरबाद कर जाओ! एक और और मिल जायगा तुम्हें इस बार साहबज़ादों का खान मिलेगा।

वह यों तो उर्दू में बातें करता, किन्तु जोश में आता तो शुद्ध रूसी बोलने लगता और उसमें तो गालियों की भरमार रहती।

वह गिगोरी को हर दिन नई-नई बातें बताता। वह उसे युद्ध के सही कारण समझाता और बादशाहों का मज़ाक उड़ाता। गिगोरी उसका विरोध करना चाहता, किन्तु गारान्झा उससे साफ़ प्रश्न पूछकर उसका मुँह बन्द कर देता। गिगोरी को उससे सहमत होना ही पड़ता।

सबसे भयानक बात तो यह हुई कि ग्रिगारी सोचने लगा कि गाराभा ठीक कहता है और उसके विरोध में कहने को मेरे पास कुछ नहीं है। यह अनुभव कर वह भय से सिहर उठा कि मेरे मन में जार, देश या कज्जाक की हैसियत से अपने फौजी कर्तव्यों के प्रति जो पुराने विचार हैं यह चतुर कटु उक्रइनी धीरे धीरे उन सभी की जड़ खोद रहा है और उमकर खा रहा है। उक्रइनी के आने के एक महीने के अन्दर-अन्दर ग्रिगारी की जिन्दगी की नींव की सारी दुनियाएं हिल गई, ढह गई और धुआँ देने लगीं। वह सोचा तो लड़ाई की बेहूदगी से पहले ही सड़-गल चुका था। बस एक धक्के की जरूरत थी सो धक्का लग गया और ग्रिगारी का सीधा-सादा दिमाग जैसे सोते से जाग उठा। वह इस घम संकट से उबरने के लिए बेचैन हो गया। उसका रास्ता खोजने लगा और वह रास्ता उसे मिला गाराभा के जवाबों में।

एक दिन काफी रात गए ग्रिगोरी उठा। उसने गाराभा को जगाया और उसके उक्रइनी बिस्तर की एक ओर जा बैठा। सितम्बर के चाँद की किरणें खिड़की से कमरे में आई। गाराभा के कपोल झुर्रियों के कारण साँवले लगे। उसकी आँखों की काली पुतलियाँ नमी से चमकती लगीं। उसने अंगड़ाई ली और पाँवों पर कम्बल डाला।

तुम्हें नींद नहीं आई ?

मैं सो नहीं पा रहा। ग्रिगोरी ने जवाब दिया मुझे एक बात बतलाओ क्या यह बात ठीक है कि लड़ाई एक आदमी के लिए अच्छी है तो दूसरे आदमी के लिए बुरी ?

'तो ? उक्रइनी ने अंगड़ाई ली।

ठहरो ! ग्रिगारी ने गुस्से से गरम होकर धीमे स्वरों में कहा तुम कहते हो कि हम अमीरों के फायदे के लिए लड़ाई में भाग लिया गए हैं। लेकिन लोगों के बारे में क्या कहना है तुम्हें ? क्या लोग यह नहीं समझते ? क्या कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो उन्हें बतलाए, उनके पास जाकर कहे भाइयो इसलिए मौत के मुँह में समाने जा रहे हो तुम' क्या समझे ?

कैसे कोई कह सकता है यह सब ? तुम बतलाओ मुझे ! थोड़ी देर

को मान लो कि तुमने यह सब कहा तो जानते हो क्या होगा ? मात समझो। हम यहाँ सरपत के बीच में कलहंसों की तरह दबे स्वरों में बातें कर रहे हैं। जरा आवाज ऊँची करो। सटाक से गोली मार दी जाएगी। लोग कुछ नहीं जानते। गहरी नींद में पड़े हैं। लड़ाई उन्हें जगाने का काम करेगी। बादलों की गरज के बाद बिजली की कड़क के बाद तूफान आता है।

तो फिर यह बताओ कि करना क्या चाहिए ? तुमने तो मेरे अन्दर उथल-पुथल पैदा कर दी है।

'और तुम्हारा दिल क्या कहता है ?

'मैं दिल की जबान समझ नहीं पा रहा।

जो मुझे कगार से नीचे ढकेलने की कोशिश करेगा उसे खुद कगार के नीचे झोंक दिया जाएगा। हम अपने दुश्मनों के खिलाफ राइफलें तानने में हिचकना नहीं चाहिए। लाशों की तरह में अजनबियों की लाशों का निशाना बनाना हमारा फर्ज है। गारा भर उठकर बैठ गया और दाँत किटकिटाते हुए हाथ फैलाकर बोला एक लम्बी-चौड़ी लहर उठेगी और उन सबको अपने साथ बहा ले जाएगी।

यानी तुम्हारे खयाल से हर चीज को उलट देना चाहिए ?

'हाँ, हमें सरकार को पुराने कम्बल की तरह उठाकर एक तरफ फेंक देना होगा। जमींदारों और रईसों की खाल खींच लेनी होगी क्योंकि वे जाने कब से लोगों का खून बहाते चले आ रहे हैं।

'और नई सरकार बन जाएगी तो लड़ाई का क्या होगा ? हम एक-दूसरे के खून के प्यासे बने रहेंगे। हम यह पेशा छोड़ देंगे तो हमारे बच्चे हाथ माँगेंगे। लड़ाई को जड़ से उखाड़कर कैसे फेंका जा सकता है ? लोग जाने कब से लड़ते चले आ रहे हैं।

"सच है कि लड़ाई शुरू से ही चली आ रही है और तब तक चलती रहेगी जब तक कि निकम्मी सरकार को हम बदल नहीं देंगे। लेकिन जब हर सरकार मेहनतकशों की सरकार कामगारों की सरकार हो जाएगी तब लोग बिल्कुल नहीं लड़ेंगे। बस यही करना है हम लोगों को और यह होकर रहेगा। हमारे दुश्मनों पर गाज गिरकर रहेगी। जब जमनी

फ्रांसीसी और दूसरे लोग मजदूर किसानों की सरकारें बना लेंगे तो फिर हम रहेंगे ही क्या ? हम मार्चों से दूर होंगे गुस्से से दूर होंगे। एक हसीन जिन्दगी का पसारा सारी दुनिया में होगा। आह ! गारासीन ने लम्बी निश्वास छोड़ी और गलमुच्छों के सिरों को ऐंठा। उसकी एक आँख में सपना न लो दी— ग्रीष्का मैं उस दिन को अपनी आँख में देखने के लिए खून की एक एक बूँद दे दूँगा।

दोनों तड़का होने तक बातें करते रहे। परछाइयाँ भूरी पड़ी तो गिरागी की आँख लग गई। पर उसका मन नींद में भी परेशान रहा।

सुबह दूसरों की बातचीत और एक आदमी के गाने की आवाज ने उसे जगाया। उन्होंने देखा कि वूल्नब्स्की बिस्तर पर चेहरा औंधाए सिसक रहा है और उसके पास खड़े हैं जान वारीकिन और कोसिन।

क्या चीख-पुकार है यह ? चुदिन ने अपना चेहरा कम्बल से बाहर निकालते हुए भुनभुनाकर कहा।

इसने अपनी आँख फाड़ ली यह आँख गिलास से निकाल रहा था कि वह हाथ से छूटकर जमीन पर आ गिरी। वासिल ने हमदर्दी कम दिखलाई बुरा बयान निकाला।

नकली आँख बचने वाले एक यहूदी अमन ने देशभक्ति की भावना में प्रेरित होकर अपना माल फौज को मुफ्त सप्लाई करने का फैसला किया था और अभी परसों ही व्रूल्नब्स्की का जो आँख लगा दी गई थी वह ऐसी सफाई से बनाई गई थी कि हद है ! कोई पास से देखकर भी क्या कह देता कि यह आँख नकली है ! बड़ी खूबसूरत बनी ही नीली नीला। व्रूल्नब्स्की उस लम्हे-भरकर बच्चा की तरह खुश हुआ और हँसता रहा था। बोला आल्या प्रत्यक्ष सामने सहज में— मैं जाऊंगा जिस लड़की को चाहूंगा उसी को पसन्द लूंगा शादी कर लूंगा और कह बतला दूंगा कि मेरी आँख काँच की है।

और यह बतला भी देगा शैतान की आँख ! चुदिन बड़बड़ाया।

और अब आँख जो हाथ से गिरकर चूर चूर हो गई तो सपना चूर चूर हो गया। खूबसूरत जवान को लगा कि अब वह अपने गाँव को जाएगा तो उसके एक ही आँख रहेगी।

चाओ मत तुम्हें एक दूसरी आँख मिल जाएगी यहीं न। ग्रिगोरी न धीरज बँधाया।

वूल्मस्की न आँसुओं म तर अपना चहरा तकिय पर म उठाया तो आँख की खाली जगह नजर आने लगी।

नहीं नहीं मित्रगी। एक आँख तीन सौ रूबल की आती है। अस्पताल वाले नई आँख बिलकुल न देंगे।

उस पर बसी गुलबमूत आँख थी वह एक-एक लकीर नाप थी। बोमिल वाला।

नाश्त क बाद वूल्मस्की नमक साथ उस रूसी उमन की दुकान म गया और उमन उस नई आँख द दी।

देखा जमन जमीया मे क्या अच्छ होत हैं वूल्मस्की न खुशी म पागल होते हुए कहा कोई रूसी तिजारती होता तो एक कोपक की बात न रता और यह है कि इसम एक नई आँख ठायर या ही द दी।

मितम्बर वाला। अयालत उन्द स भरे एक-एक कर दिन बीतत गए। रोगियो को सबेरे तो यक चाय मिलता और चाय क साथ मिलन शामीमी डबलरोटी के दो मनामन टुकडे और हरक को अगुली के नाखून के बराबर मक्खन का एक टुकडा। दोपहर क भोजन के बाद भी व भूख रह जाते। शाम को उन्ह चाय मिलती तो एकरसता भंग करन क लिए व चाय क साथ बीच-बीच म पानी पीत। प्रौजी-स्पाइ क रागी बदलन लग। पहले दास्तरियन गया फिर गया लातवियन। अक्तूबर क अन्त म ग्रिगोरी की भी बारी आई।

अस्पताल क सर्जन न ग्रिगोरी की आँखो की जाँच की और हालत सन्तापजनक बतायी। किन्तु उस दूसरे अस्पताल म भेज दिया गया क्योंकि उसक सिर का घाव अस्पताल ही म खुल गया था और उसम हलका-सा मवाद भी आ गया था। मास्को म विदा होत समय ग्रिगोरी बोला क्या कभी फिर भेंट होगी?

इस पहाड आपस म कभी नहीं मिलत पर

अच्छा साथीन तुमन मेरी आँखों म ऊपर स धन्द हटाया

फ्रांसीसी और दूसरे लोग मजदूर-किसानों की सरकारें बना लेंगे तो फिर हम लोगों ही क्या ? हम मोर्चों से दूर होंगे गुम्मों से दूर होंगे। एक हसीन जिन्दगी का पसारा सारी दुनिया में होगा। आह ! गोराफोव ने गोध निश्वास छोडी और गलमुच्छा के सिरों को ऐंठा। उसकी एक आँख में सपना ने लो दी— मौका मिले उस दिन को अपनी आँख से देखने के लिए खून की एक-एक बूंद दे दूंगा।

दोनों तब तक होने तक बातें करते रहे। परछाइयाँ भूरी पड़ीं तो ग्रिगोरी की आँख लग गई। पर उसका मन नींद में भी परेशान रहा।

सुबह दूसरा की बातचीत और एक आदमी के गाने की आवाज ने उन्हें जगाया। उन्होंने देखा कि प्रकनव्स्की बिस्तरे पर चेहरा औंधाए सिसक रहा है और उसके पास खड़े हैं जान वारीकिस और कोसिन।

क्या चीज-गुजार है यह ? कुम्नि ने अपना चेहरा कम्बल से बाहर निकालते हुए मुसकुराकर कहा।

इसने अपनी आँख फाड ली यह आँख गिलास से निकाल रहा था कि वह हाथ से छूटकर जमीन पर जा गिरी। वासिल ने हमदर्दी भरा सिलवाई युद्ध स्वास्थ्य निवाला।

नकली आँखें बेचने वाले एक ज्मी जमन ने देशभक्ति की भावना से प्रेरित होकर अपना माल फौज को मुफ्त सप्लाई करने का फैसला किया था और अभी परसों ही प्रकनव्स्की को ढीली की जो आँख लगा दी गई थी वह ऐसी सफाई से बनाई गई थी कि हद है ! कोई पास से देखकर भी क्या यह कह सकता कि यह आँख नकली है ! बड़ी खूबसूरत कभी ही नीली नीली। प्रकनव्स्की उस दम सकपकर बच्चों की तरह खुश हुआ और हँसता रहा था। बोला कमला प्रन्याक साथ लहज में— मैं जाऊँगा जिस लड़की का चाहूंगा उसी को पकड़ लूँगा, शादी कर लूँगा और तब बताना दूंगा कि मेरी आँख कांच की है।

और यह बतना भी देगा शैतान की आँत ! कुम्नि बड़बड़ाया।

और अब आँख जो हाथ से गिरकर चूर-चूर हो गई तो सपना चूर-चूर हो गया। म बासुरुन जवान को लगा कि अब वह अपने गाँव को जायेगा तो उसके एक ही आँख रहेगी।

चौथा मत तुम्हें एक दूसरी आँख मिल जाएगी यहाँ म। ग्रिगोरी ने धीरज बधाया।

यू क्लव्स्की ने आँसुओं में तर अपना चेहरा तकिये पर से उठाया तो आँख की खाली जगह नजर आने लगी।

नहीं नहीं मिलेगा। एक आँख तीन सौ रूबलों की आती है। अस्पताल वाले नई आँख बिलकुल न देंगे।

उस पर बसी खूबसूरत दीन सा इद एक-एक लकीर साफ थी। कौमिश्र वाला।

नाश्ते के बाद यू क्लव्स्की नयक बाप पर सी जमन की दूकान म गया और उसने उस नई आँख दे दी।

देखो जमन रूसियों से धीमे ह होते हैं पागल होते हुए कहा कोई भी निगारवी होता तो एक कोपक भी चाहे न देता और यू क्लव्स्की ने एक नई आँख उठाकर या ही दे दी।

सितम्बर बीता। मयानक रूप से म्हएक कर दिन बीतते गए। रोगियों का सबेरे नौ बजे चाय ... ठबलरोटी के दो मनामन ... के साथ मिलते फ्रांसीसी बराबर मक्खन का एक टुकड़ा ... हाथ की अंगुली के नाखून के बराबर ... शाम को उन्हें चाय मिलती ... खाने के बाद भी वे भूखे रहे। चाय के साथ बीच-बीच म पानी ... मन करने के लिए वे पहले मान्वरिन गया फिर गया ... रोगी बदलने लगे। की भी पारी आई। ... के अन्त में ग्रिगोरी

दम्ननाम के मबन न ग्रिगोरी ... सल्लापजनक बातें। किन्तु ... सोच की और नानत क्योंकि उनके सिर का घाव ... में भेज दिया गया हल्का-सा बुखार भी आ गया था। ... था और उसमे बोला क्या कभी फिर भेंट होगी ... जाते समय ग्रिगोरी

'दो पहाड़ आपस में कभी न ...

... आसमान तुमने ...

धन्यवाद। मेरी नजर के सामने सही नक्शा आ गया है अब।

अपनी रजीमेंट में जाना तो मेरी बतलाई हुई बातें दूसरे कज्जाकों को भी बतला देना।

जरूर बतला दूँगा।

और अगर कभी चरनीगाव जिले में गोरोखोवका गाँव की तरफ़ आने का मौका मिले तो वहाँ अन्द्रेई गारान्झा लुहार का अता-पता पूछ लेना। मुझे तुमसे मिलकर बहुत खुशी होगी। अच्छा तब तक के लिए दास्विदानिया।[1]

वे एक-दूसरे से गले मिले। ग्रिगोरी के दिमाग़ में एक आँख वाले उक्रइनी की तसवीर बहुत दिनों तक बनी रही। उसके गालों की झुर्रियों में प्रसन्नता की रेखाएँ भी ज्यों-की-त्यों खिंची रहीं।

ग्रिगोरी दस दिन दूसरे अस्पताल में रहा। वह मन-ही-मन बड़ी-बड़ी कल्पनाएँ करता रहता। गारान्झा की शिक्षाओं का पीलिया उसके अन्दर अपना काम करता रहा। वार्ड में वह अपने पड़ोसियों से बातें करता लेकिन बहुत कम। उसकी बातचीत और व्यवहार से एक खास तरह की परेशानी और घबराहट का संकेत मिलता।

कुछ दिनों तक तो ग्रिगोरी वहाँ बुखार में पड़ा रहा और उसके कान सनसनाते रहे।

बहुत चंचल है यह आदमी! बड़े डॉक्टर ने पहली परीक्षा के समय उसका गैर मामूली चेहरा देखकर फतवा दिया।

उसके बाद एक विशेष घटना घटी—

एक दिन पता चला कि शाही खानदान का एक उच्चाधिकारी सदस्य अस्पताल देखने के लिए आयगा। खबर मिलते ही अस्पताल के कर्मचारी इधर-उधर इस तरह उछलते नजर आए जैसे खलिहान में चूहे। उन्होंने घावों पर नई पट्टियाँ चढ़ाई और निश्चित समय से पहले ही रोगियों के बिछौने बदल डाले। एक जवान डॉक्टर ने उन्हें उच्चाधिकारी से बात करने का ढंग तक समझाया कि किस सवाल का जवाब किस तरह दिया जाए। यह समाचार रोगियों को भी दे दिया गया तो कुछेक घटा पहले

---

[1] विदा गुड-बाइ।

से ही आपस म कानाफूसी करने लगे। दोपहर के समय सामने के फाटक पर मोटर का भोंपू बजा फिर अनेक अधिकारियों और अफसरों से घिरा उच्चाधिकारी अस्पताल म आया।

तबीयत से खुशमिजाज एक जोकर किस्म के जख्मी ने बाद म अपने साथ के रोगियो को विश्वास दिलाते हुए कहा 'जब शाही मेहमान अस्पताल में घुसा तो मौसम गैर-मामूली तौर पर साफ था और हवा तक न थी इस पर भी बाहर का रेड क्रॉस का झण्डा तजी से फरफराने लगा। इसके साथ ही बाज की दूकान के साइनबोर्ड का घुमराल वाला वाला छला सचमुच अदब स झुका-का झुका रह गया।

सो मेहमान न घूम-घूमकर चाड देखे और अपनी स्थिति और परिस्थिति के खयाल स हमेशा की तरह ही इस बार भी बेसिर पर के सवाल किए। बीमारो ने आँखें फाड-फाडकर उसे देखा और जूनियर सर्जन ने जस बताया था बस ही सवालो के जवाब दिए 'ठीक है सरकार ! बिलकुल सही सरकार !' सर्जन उनके जवाबों के साथ अपनी ओर से जो-सा कहता रहा। उस समय उसकी चाल ढाल देखकर कुल्हाडी-खाए घायल साँप की याद आई। दूर से वह बडा ही दयनीय लगा। मेहमान ने छोटी-छोटी दवमूर्तियों कोठरियो के बीच चाँटी। चमाचम वर्दियो की लौ के साथ बेशकीमती इत्र की महक पिगारी की ओर आई। वह अपने बिस्तर के पास खडा था और उसकी हजामत बढी हुई थी। बुखार के कारण उसकी आँखें लाल थी। उसके चुचके गालों की भूरी चमडी की हल्की कपकपी उसके मन की परेशानी जाहिर करने लगी।

'यह य लोग हैं !' वह सोचने लगा 'यह व लोग हैं जिनसे हम गाँवा स उखाड़कर मौत के मुह म मारने म मजा आता है। आ- सूअर! मौत पड़े इन पर ! हमारी पीठ पर लदी हुई आफतें य हैं। क्या इन्ही लोगों के लिए हमने दूसरा के अनाज के अम्बारों को अपने पाडो क पाँवो तले रौंद डाला और अजनबियों को तलवार के घाट उतार दिया ? क्या इन्हा के लिए मैं कटे हुए सना की ठूठों पर रेंगा और गला फाडकर चिल्लाया ? यह है हमारे लिए होया। इन्होंने हम हमारे घरवालो म

नीचकर अलग किया और बरका म भूम्मा मारा। इन विचारो स उसक दिमाग म आग-सी धधकन लगी। उसक होठ क्रोध स काँपन लगे। इनक फूल हुए चहर कस चमकत हैं ! मैं तुम्हें वहाँ मोर्चे पर भेजूँगा ! शतान ल जाए तुम्हें ! तुम्ह घाडे पर लादकर तुम्हारी पीठ पर राइफल रखूँगा तुम्हारी पीठ पर जाँचें लादूगा तुम्ह सडी हुई रागी और कीडो से भरा गान खिलाऊगा !

ग्रिगारी ने एक एक कर सभी अधिकारियो का गौर स देखा। आखिर उसकी निगाह खास मेहमान के चहर पर जा जमी।

दान प्रदेश क इस कज्जाक को सन्त आज का पदक प्रदान किया गया है। सजन ग्रिगारी की ओर इगित कर हुआ। पर उसके स्वर स एसा लगा जस कि पदक ग्रिगोरी क बजाय उसी को दिया गया हो।

किस जिल क हो ? शाही मेहमान ने उसे रेन का मूर्ति हाथ म ली और पूछा।

व्यान्स्काया का सरकार !

पदक किस बात क लिए प्रदान किया गया तुम्हें ?

महमान की निमल गानी-गाला-सी आँखा म सन्ताप और ऊब लहरें लती दाखी। उसकी बायी भौं बनावटी ढग स ऊपर उठाई गई नजर आई ताकि चहर पर विशेष भाव झलक। क्षण भर क लिए ग्रिगोरी का खून ठण्डा पड गया और एक विचित्र-सी घुटन ने उसका आ दबाचा। ऐसी ही अनुभूति उस लाम पर जाते समय हुई थी। उसक होठ ऐंठकर बरबस थरथरान लग।

माफ कीजिएगा मैं बुरी तरह स सरकार बाद मन्द द हो मुझे। ग्रिगारी या लडखडाया जस कि उसकी पीठ टूट गई हो। फिर उसन बिस्तर की ओर इशारा किया।

सरकार की बायीं भौं और ऊपर उठी। ग्रिगोरी का दयमूर्ति दा क लिए आधा आग बढा हुआ हाथ वहीं-का-वहीं रुक गया। मुह आश्चय स घुमा रह गया। अपनी बगल म खड एक भूर बालो वाल जनरल स उसने अग्रजी म कुछ पूछा। साथ क लागो के चहरा पर हल्की-सी परशानी दौड गई। कधे क फीते वाल एक लम्ब अधिकारी ने अग्रज

दस्ताने वाला हाथ अपनी मॉंग पर रखा। दूसर न सिर भुका लिया। तीसरा अपन पड़ोसी की ओर प्रश्नात्मक दृष्टि से देखने लगा। भूरे बालों वाला जनरल विनम्रता से मुसकराया और उसने सरदार को अंग्रेजी में उत्तर दिया। सरदार ने प्रसन्न होकर मूर्ति ग्रिगोरी के हाथ में थमा दी और उसके कन्धे पर हाथ रखा जैसे कि यह उनकी ओर सम्मान दिए जाने की पराकाष्ठा हो!

मेहमानों के जाने के बाद ग्रिगोरी अपने बिस्तर पर लेट गया और तकिये में मुंह छिपाकर कुछ मिनटों तक लेटा रहा। उसके कन्धे फड़कते रहे। कहना कठिन है कि वह रो रहा था या हँस रहा था। इतना है कि जब वह उठा तो उसकी आँखें गीली नहीं थीं। उसे तुरन्त ही सर्जन के कमरे में बुलाया गया।

'तू उजड्ड नहीं तो!' हाथ में दाढ़ी पकड़े डॉक्टर ने कहना प्रारम्भ किया।

मैं उजड्ड नहीं हूँ, काले नाग!' ग्रिगोरी ने डाक्टर की ओर बढ़ते हुए कहा, 'मैंने तुम्हें मोर्चे पर कभी नहीं देखा।' फिर अपने पर काबू पाते हुए शान्ति से बोला, 'मुझे घर भेज दो।'

डाक्टर मुड़ा और अपनी मेज की ओर जाते हुए जरा धीमे से बोला, 'भेज दिए जाओगे, चाहना तो नर्क में चले जाना!'

ग्रिगोरी बाहर चला आया। उसके होंठों पर मुसकान खिलती रही, आँखें चमकती रहीं। सरदार के सम्मुख नहीं और असम्य व्यवहार करने के कारण उसको तीन दिन तक खाना न देने का फैसला किया गया। पर वार्ड के साथियों और बावर्ची ने उसे खाने की कमी नहीं होने दी।

२३

चार नवम्बर की शाम को ग्रिगोरी स्टेशन से अपने जिले के पहले गाँव में पहुँचा। मोर्चे/नाएँ यहाँ से बहुत कुछ दूर रह गया था। वह गड्ढ से गुजरा तो उसने नदी की तरफ़ों के पास आकर बच्चों का तेज कज़ाक गाना गाते सुना

नजदार चमचमाती तलवारें लिये घोडा पर सवार चले जा रहे हैं।'

इन परिचित शब्दों को सुनते ही उसके बदन की नसों का खून पल भर को जम गया। आँखों में कठोरता घुल गई। चिमनियों से निकलते धुए की बास लेता वह गाँव में से निकला। स्वर पीछे से कानों में पड़ते रहे।

मैं भी कभी यह गीत गाता था लेकिन अब मेरी आवाज खत्म हो गई है। जिन्दगी ने मेरा गीत तोड़ दिया है। जरा देखिए कि मैं जाकर किसी दूसरे की पत्नी के साथ ठहरूँगा। मेरा अपना कोई कोना नहीं, कोई घर नहीं गोया मैं कोई भड़िया हूँ। वह थकान के बावजूद एक गति से चलते हुए सोचने लगा और अपनी जिन्दगी की गाड़ी के अजीब ढंग से पटरी से हट जाने पर हँसा। गाँव से बाहर निकलकर पहाड़ी पर चढ़कर उसने पीछे मुड़कर देखा। आखिरी घर की खिड़की से अटकते हुए लैम्प की रोशनी छन रही थी। उसकी रोशनी में उसने चरखा चलाती एक बुढ़िया देखी।

वह सड़क के किनारे की ओस से तर घास पर चलता गया। एक छोटे-से गाँव में रात बिताकर प्रकाश की किरणें फूटते ही वह फिर रवाना हो गया। शाम होते होते वह बागोदनोए जा पहुँचा और चहार दीवारी लाँघकर मस्तबग के बाग में गुजरा। खाँसते हुए शाश्का की आवाज को सुनकर रुका और चिल्लाया शाश्का दादा सो गए क्या?

ठहरो कौन हो तुम? आवाज मैं पहचानता हूँ। कौन हो तुम?

अपने कंधों पर पुराना कोट डालकर शाश्का बाहर निकला।

हे भगवान् यह तो ग्रीश्का है! अरे शैतान तू कहाँ से आ टपका?

उन्होंने एक-दूसरे को बाँहों में भरा। बिमारी से चेहरे को एकटक देखते हुए शाश्का बोला अन्दर आकर सिगरेट पी लो तब जाओ।

नहीं अभी नहीं। कल आऊँगा। मैं

अन्दर आया न मैं कहता हूँ।

ग्रिगोरी न चाहते हुए भी अन्दर चला गया और लकड़ी के तख्तों

का खाट पर जाकर बठ गया। नब तक बूढ़े की खाँसी उतार पर आ गई। ग्रिगोरी बोला ता दादा अभी तुम सही-सलामत हो ?

'मैं ता चकमक पत्थर की तरह हूँ। मुझमें कुछ घटना-बढ़ना नहीं।

और अक्सीनिया का क्या हाल है

अक्सीनिया ? ठीक है वह मज म है।

बूढ़ा तजी से खाँसने लगा। ग्रिगोरी पहचान गया कि बूढ़ा अपनी परेशानी को छिपाने के लिए खाँसी का बहाना कर रहा है।

'दानिया को कहाँ दफनाया ?

चिनार के वृक्ष के नीचे बगीचे म।

अच्छा अब बाकी खबरें सुना जाओ।

ग्रीश्का यह खाँसी मुझे बहुत परेशान करती रही है।

'बाग ?

हम सब जिन्दा हैं मज म हैं। मालिक बहुत पीने लग हैं। होश हवास नहीं रहता बसकल हैं।

अक्सीनिया कैसी है ?

'वह ता मानकिन के घर म काम करन लगा है। पियो न एक सिगरेट तम्बाकू बहुत अच्छी है।

सिगरेट पीने की इच्छा नहीं है। बात बतलाओ नहीं ता मैं जाता हूँ। मुझे लगता है कि ग्रिगोरी मुड़ा ता उसके नीचे का तख्ता चरमराया मुझे लगता है कि तुमने कोई बात छिपाकर अपने कलेजे म पत्थर की तरह बाँध रखी है। बाता न।

मैं कह देता हूँ ग्रीश्का मुझमें छिपाने की ताकत नहीं। फिर चुप रहना गम की बात होगा।

तब फिर कह डाला। ग्रिगोरी ने बूढ़े के कन्धे पर प्यार से हाथ रखते हुए कहा। वह अपनी पीठ झुकाए प्रतीक्षा करता रहा।

'तुम एक साँप पालते रहे हो। साश्का ने तेज और मन्द आवाज म कहा तुम साँप को दूध पिलाते रहे हो। वह येव्गेनी के साथ मजे लूटती रही है।

कज्ज़ाक चमचमाती तलवारें लिये घोड़ा पर सवार चले जा रहे हैं।

इन परिचित शब्दों को सुनते ही उसके बदन की नसों का खून पल भर को जम गया। आँखों में कठोरता घुल गई। चिमनियों से निकलते धुएं की बास लेता वह गाँव में से निकला। स्वर पीछे से कानों में पड़ते रहे।

मैं भी कभी यह गीत गाता था लेकिन अब मेरी आवाज़ खत्म हो गई है। जिन्दगी ने मेरा गीत तोड़ दिया है। ज़रा देखिए कि मैं जाकर किसी दूसरे की पत्नी के साथ ठहरूँगा। मेरा अपना कोई कोना नहीं, कोई घर नहीं गोया मैं कोई भेड़िया हूँ। वह थकान के बावजूद एक गति से चलते हुए सोचने लगा और अपनी जिन्दगी की गाड़ी के अजीब ढंग से पटरी से हट जाने पर हँसा। गाँव से बाहर निकलकर पहाड़ी पर चढ़कर उसने पीछे मुड़कर देखा। आखिरी घर की खिड़की से लटकते हुए लैम्प की रोशनी छन रही थी। उसकी रोशनी में उसने चर्खा चलाती एक बुढ़िया देखी।

वह सड़क के किनारे की ओस से तर घास पर चलता गया। एक छोटे-से गाँव में रात बिताकर प्रकाश की किरणें फूटते ही वह फिर रवाना हो गया। शाम होते होते वह थातादनोए जा पहुँचा और चहार दीवारी लाँघकर अस्तबल के आगे से गुज़रा। खाँसते हुए नाश्का की आवाज़ को सुनकर रुका और चिल्लाया नाश्का दादा सो गए क्या ?

ठहरो कौन हो तुम ? आवाज़ मैं पहचानता हूँ। कौन हो तुम ?

अपने कन्धों पर पुराना कोट डालकर साश्का बाहर निकला।

हे भगवान् यह तो ग्रीश्का है ! अरे शैतान तू कहाँ से आ टपका ?

उन्होंने एक-दूसरे को बाँहों में भरा। ग्रिगोरी के चेहरे को एकटक देखते हुए साश्का बोला अन्दर आकर सिगरेट पी लो तब जाओ।

नहीं अभी नहीं। फिर आऊँगा। मैं

अन्दर आओ न मैं कहता हूँ।

ग्रिगोरी न चाहते हुए भी अन्दर चला गया और लकड़ी के तख्तों

का खाट पर जाकर बैठ गया। तब तक बूढे की खाँसी उतार पर आ गई। ग्रिगोरी बोला तो दादा ग्रभी तुम सही-सलामत हो ?
मैं तो चकमक पत्थर की तरह हूँ। मुझमे कुछ घटना-बढना नही।
और अक्सीनिया का क्या हाल है ?
अक्सीनिया ? खुश है वह मज़े मे है।
बूढा जोर से खाँसने लगा। ग्रिगोरी पहचान गया कि बूढा अपनी परेशानी को छिपाने के लिए खाँसी का बहाना कर रहा है।
तानिया को कहाँ दफनाया
चिनार के वृक्ष के नीचे बगीचे मे।
अच्छा अब बाकी खबरें सुना जाग्रो।
ग्रीश्का यह खाँसी मुझे बहुत परेशान करती रही है।
आग ?
हम सब जिन्दा हैं मजे मे हैं। मालिक बहुत पीने लगे हैं। होश हवास नही रहना अक्लमन्द हैं।
अक्सीनिया कैसी है ?
'वह तो मालकिन के घर मे काम करने लगी है। दिया न एक सिगरेट तम्बाकू बहुत अच्छी है।
सिगरेट पीने की इच्छा नही है। बात बतलाग्रो नही तो मैं जाता हूँ। मुझे लगता है कि ग्रिगोरी मुँह को उसके नीचे का तम्बा कसमसाया 'मुझे लगता है कि तुमने कोई बात छिपाकर अपने कलेजे से पत्थर की तरह बाँध रखा है। बोलो न।
मैं कह देता हूँ ग्रीश्का मुझमे छिपाने की ताकत नहीं। फिर चुप रहना गम की बात होगी।
तब फिर कह डालो। ग्रिगोरी ने बूढे के कन्धे पर प्यार से हाथ रखते हुए कहा। बूढा अपना पाठ दुहराए प्रतीक्षा करता रहा।
तुम एक साँप पालते रहे हो। सास्का ने तेज और मस्त आवाज मे कहा तुम साँप को दूध पिलाते रहे हो। वह औरत जवानी के साथ मज़ा लूटती रही है।

वृद्ध की ठोडी पर थूक टपक पड़ा। उसे पोंछकर उसने अपने हाथ पाजामे से पोंछे।

सच कह रहे हो तुम? ग्रिगोरी ने पूछा।

मैंने अपनी आँखों से देखा है। वह हर रात उसके पास जाता है। मेरा तो खयाल है कि अब भी वह वहीं मिलेगा।

खैर, तो ठीक है! ग्रिगोरी ने अपना नाखून चबाया और कंधे झुकाए देर तक बैठा रहा। उसके चेहरे की नसें फड़कने लगीं।

औरत बिल्ली की तरह होती है। दाश्का बोला, जो भी उसे दुलारता है, वह उसी की हो जाती है। उस पर भरोसा नहीं करना चाहिए। उसे अपना विश्वास नहीं देना चाहिए।

उसने एक सिगरेट बनाई और ग्रिगोरी के हाथ में पकड़ा दी। दोनों पियो।

ग्रिगोरी ने दो कश खींचे और अंगुली से सिगरेट बुझा दी। फिर बिना मुँह से कुछ कहे चल दिया। वह जाकर नौकरों के कमरों की खिड़की के पास रुका। उसने हाँफते हुए दरवाजा खटखटाने को कई बार हाथ उठाया, पर हर बार उसका हाथ नीचे गिर गया, जैसे कि किसी ने चोट कर दी हो उस पर। अन्त में उसने पहले दरवाजे पर अंगुलियों से खटखटाया। किन्तु फिर अधीर होकर दीवार से पीठ सटाकर दरवाजा घूँसों से धमाधम पीटने लगा। घूँसों से चौखटा हिलने लगा और शीशे पर रात की रोशनी थरथराने लगी।

अक्सीनिया का सहमा हुआ चेहरा क्षण भर के लिए खिड़की पर झलका। फिर उसने दरवाजा खोला और ग्रिगोरी को देखते ही उसके मुँह से चीख निकल गई। ग्रिगोरी ने उसको बाँहों में कस लिया और उसकी आँखों में आँखें डालीं।

तुमने इतनी जोर से दरवाजा खटखटाया कि मैं तो डर गई। तुम्हारे आने की तो कोई उम्मीद थी ही नहीं। मेरे प्यारे!

मैं ठंड के मारे बर्फ हुआ जा रहा हूँ।

अक्सीनिया ने देखा, हालाँकि हाथ जैसे बुखार से तप रहे हैं, पर उसका सारा बदन थर थर काँप रहा है। इस पर पहले तो वह बेकरार

का इधर-उधर करती रही फिर उसने लम्प जलाया और भर हुए कधो पर शाल डाले कमरे म जहाँ-तहाँ दौडने लगा। अन्त म उसने अगीठी जलाई।

तुम्हारे आने की मुझे कोई उम्मीद नहीं थी। चिट्ठी आये भी तो बहुत दिन हो गए। मैंने सोचा कि तुम अब कभी नहीं लौटोगे। तुम्हें मेरा आखिरी खत मिला था? मैं तुम्हें पारसल भज रही थी। फिर मैंने सोचा कि पहले तुम्हारा पत्र

उसने कनखी से ग्रिगोरी को देखा। उसके नारे होठ मुस्कान से सद हो गए।

ग्रिगोरी ओवरकोट उतारे बिना ही बेंच पर बैठ गया। उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी। गाल जल रहे थे। उसके नाक का लम्बा साया जमीन पर पड रहा था। वह कोट उतारने लगा कि अकस्मात् उसने तम्बाकू की अपनी थैली टटोली और अपनी जेब के कागज सारे। उसने बडी हसरत से अक्सीनिया के चेहरे पर नजर डाली।

उसे लगा कि उसकी गरहाजिरी में उसका स्वास्थ्य बहुत सुधर गया है। उसके मनोहर चेहरे पर अधिकार की भावना आ गई है। वस उसकी आँखें और लच्छेदार मुलायम बाल ज्यों-के-त्यों हैं। वस आदमी को तबाह करने वाला उसका आग-सा धधकता रूप अब नहीं रहा। हाँ भी कम सकता है अब वह मालिक के लड़के की दुलारी बन बैठी है!

तुम घर का काम करनेवाली नौकरानी बिलकुल नहीं लगती। अब तो मालकिन जैसी लगती हो।

अक्सीनिया ने उसकी ओर चौंककर देखा और जबरदस्ती हँसी।

अपना बक्स घसीटता ग्रिगोरी दरवाजे की ओर बढ़ा।

कहाँ जा रहे हो?

जरा सिगरेट पी आऊँ।

मैंने कुछ अण्डे तल रखे हैं।

अभी आता हूँ देर नहीं लगेगी।

ड्योढ़ियों पर ग्रिगोरी ने अपना बक्स खोला और उसके नीचे से साफ कपडे में लिपटा हाथ की कढ़ाई का एक रूमाल खींचकर बाहर

निकाला। यह रूमाल उसने मीतामीर के एक यहूदी व्यापारी से गोरबल में खरीदा था और सदा अपनी आँख के तारे की तरह सहेजकर रखा था। वह कभी-कभी उसे बाहर निकालता, उसके इन्द्रधनुषी रंगों को मुग्ध होता और कल्पना करता कि उसे अक्सीनिया के सामने पेश करेगा तो वह कितनी खुश होगी! पर अब उसे लगा कि यह भी भला क्या तोहफा है! क्या यह धनी जमादार के बेटे की भेंटों का मुकाबला कर सकता है? आँसू एक नहीं निकला, पर उसकी हिचकियाँ बंध गई। उसने रूमाल टुकड़े-टुकड़े कर सीढ़ियों के नीचे फेंक दिया। उसने बडल गलियारे की बेंच पर लुका दिया और कमरे में वापस आ गया।

उठ जाओ, ग्रीश्का! मैं तुम्हारे बूट उतार दूँ। अक्सीनिया बोली।

एक जमाने से मालकिन के अछूते उसके उजले हाथ ग्रिगारी के भारी फौजी जूतों में चुभते रहे। वह उसके पाँवों में गिर पड़ी और बहुत देर तक रोती रही। ग्रिगारी ने उस दिन भरपूर रो लेने दिया। फिर बोला, क्या बात है? मेरे आने से तुम्हें खुशी नहीं हुई?

बिस्तर पर पड़ते ही वह सो गया। अक्सीनिया सिर्फ कमीज पहने बाहर सीढ़ियों पर गई और कनेजों को गपा देने वाली ठण्डी हवा में सीने खम्भे को बाँहों में घेरे भोर तक खड़ी रही।

सुबह कंधों पर ओवरकोट डाल ग्रिगोरी हवेली में गया। बड़े मालिक फर की जाकिट पहने, पीली धारियों की टोपी लगाये द्वार पर ही मिले।

अरे, यह आ गया हमारा ग्रिगारी—सन्त जॉर्ज पदक का विजेता! लेकिन मेरे दोस्त, हो तो आदमी! उसने ग्रिगारी को सल्यूट मारी और अपना हाथ आगे बढ़ाया।

अब रहोगे न कुछ दिन? उसने पूछा।

दो हफ्ते रहूँगा, सरकार!

हमें तुम्हारी सदरी को दफनाना पड़ा। बहुत दुख ... दुख

ग्रिगारी चुप रहा। इसी समय हाथों पर दस्ताने चढ़ाता यवानी सीढ़ियों पर नजर आया।

पर यह तो ग्रिगारी है ! कहाँ से आ रहे हो ?

ग्रिगोरी की आँखें गहरा उठीं पर वह मुसकराया नाल्का से मुट्ठी पर।

तुम्हारी तो आँख में चोट आ गई थी न ? मैंने सुना था। कितना शानदार लड़का निकला यह क्या पाया

उसने ग्रिगोरी की तरफ देखकर सिर हिलाया और कोचवान को पुकारते हुए अस्तबल की ओर मुड़ गया घोड़ा लाओ निकितिच !"

निकितिच घोड़े को कस चुका था। उसने ग्रिगोरी की ओर अनमनी दृष्टि से देखा और फूले फूले घोड़े का दुलकी चलाता मालिक के पास लाया। अब गाड़ी जुती और चली तो उनकी दुलकी गाड़ी बर्फ के पहियों के नीचे की बर्फ चरमराई।

हुजूर एक जमाने में आपकी सवारी नहीं दी लाइए मैं ही चलूं आपको। ग्रिगोरी ने मुसकराते हुए कज़ाकों की ओर मुड़कर आग्रह से कहा।

लड़का कुछ जान नहीं पाया है। अब यह सन्नाटे में मुसकराते हुए सवारी ने सोचा और बिना कमानी के चश्मे के अन्दर उसकी आँखें खुशी से चमकीं।

ठीक है चलो तुम्हीं ले चलो।

यह नया क्या हुआ अभी-अभी तो आये हो और अपनी जवान बीवी को छोड़कर सवारी के साथ चले जा रहे हो ? बूढ़े निकितिच ने उदारता से मुसकराते हुए कहा।

ग्रिगोरी हँसकर बोला इसी बात पर तो हानी नहीं कि उसके जंगल में आग जाने का डर हो !

वह कोचवान की गद्दी पर जा बैठा। अब उसने चाबुक सम्हाला और गर्ने साथी आह मैं आपको सर बगाऊँगा सवाना निकोलाइविच !

'जायें' से मेरे बगीचे तो जाय इनाम में मिलेगा।

ऐसा भी कौन कम एहसान है आपके मुन्ने का ! मैं आपका शुक्रगुजार हूँ आपने पिलाया है—मेरा अपमानित था—उसे नाहक तुम डाला है

नगाया।

सीढ़ियाँ जान-पहचान ढग स चरमराइ। ग्रिगारी उह पार कर दरमानी म ग्राया। उसकी वृद्धा माँ लडकिया की तरह तजी स भागती ग्राइ। उसक ग्रावरकाट क पल्ला को ग्राँसुग्रा स तर करत हुए उसन बेटे का भुजाग्रा म कस लिया ग्रौर ग्रपन ढग स कहन लगी। मा की यह भाषा कवल माँ ही समझ सकती है। इस भाषा को शब्दा म बाँधना कठिन है। दरवाज क पास ही चापट पकड़े खडी मिली नताल्या। उसका चहरा पीला था ग्रार उसके पर डगमगा रहे थे। उस पर ग्रिगारी न उस इस तरह उडती-उडती-सी बुझी-बुझी-सी नजर स दखा कि वह ज़मीन पर ढ पडी।

उस रात पन्तली न ग्रपनी पत्नी का बाहुनियाया ग्रौर धीमे स बोला चुपचाप जाकर दख ग्राग्रा कि दोना एक साथ लेटे हैं या नही?

मैंन पलग पर उनका बिस्तरा लगा दिया था।

पर जाकर देख ता ग्राग्रा जरा ग्ग ग्राग्रो!

इलीनीचिना उठी ग्रौर उसन बड कमरे क दरवाज की सध स ग्रन्दर भाँककर दखा। लौटकर बाली दाना साथ सा रहे हैं।

शुक्र है मालिक-मालिक शुक्र है! बोल्नितिया क बल उठकर ग्रपन सीन पर क्रास बनात हुए बूढ़ा बाला।

ग्रिगोरी की आवाज़ अकस्मात् ही फट गई और अक्सीनिया ने मन में एक अस्पष्ट दुराव-सी शंका जाग उठी — सचमुच इसे नहीं मालूम है क्या ? क्या यह वाकई नहीं जानता ? जान भी कैसे सकता है ? उसने गद्दी से पीठ सटाई और एक सिगरेट जलाई।

दूर न निकल जाना। पीछे से लिस्तनित्स्की ने पुकारकर कहा।

ग्रिगोरी ने घोड़े की लगाम खींची और घोड़े को पूरी रफ्तार से हाँका। गाड़ी पन्द्रह मिनट में टीला पार कर गई और हवेली आँखों से ओझल हो गई। पहली घाटी पड़ते ही ग्रिगोरी नीचे कूदा और सीट के नीचे से चाबुक खींचा।

क्या बात है ? अक्सीनी गुर्राया।

अभी बतलाता हूँ तुम्हें !

ग्रिगोरी ने चाबुक नचाया और पूरी ताकत से अक्सीनी के चहरे पर जमाया। फिर चाबुक की मूठ से उसने अफसर के चहरे और हाथ पर बार-बार वार किये। उसने उसे जगह से हिलने तक का मौका न दिया। चश्मे के एक काँच के टुकड़े ने अक्सीनी की भौं के ऊपर का माँस काट गया और खून की धार आँखों तक आई। पहले तो उसने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया, मारों की रफ्तार तेज़ हो गई। क्रोध और रक्त से उसका चेहरा बिगड़ गया। आख़िरकार वह कूदकर नीचे आया और उसने अपने को बचाने की चेष्टा की, किन्तु ग्रिगोरी ने हटकर पीछे उसकी कलाई पर ऐसी चोट की कि हाथ बेकार हो गया।

यह अक्सीनिया की तरफ से! यह मेरी तरफ से! यह अक्सीनिया की तरफ से! यह और अक्सीनिया की तरफ से! अब यह मेरी तरफ से!

चाबुक की वहीं से सीटी की-सी आवाज़ निकलने लगी। अन्त में ग्रिगोरी ने अक्सीनी को पथरीली सड़क पर पटककर उस घुड़सवारी सिखाई और आपे से बाहर होकर अपने नाल जड़े जूतों से ठोकर-पर-ठोकर जमाने लगा। जब उसकी ताकत जवाब दे गई तब वह बग्घी की सीट पर जा पड़ा और गालें खींचता हुआ वापस लौट पड़ा। उसने बग्घी दरवाजे पर छोड़ी और चाबुक को अपने हाथ ओवरकोट के पल्लों से उलझाना

भागता हुआ नौकरों के क्वार्टर में पहुंचा।

दरवाजा खुलने से थरथराया तो अक्सीनिया ने मुड़कर देखा।

तू नागिन कुतिया कहीं की! चाबुक हवा में सर्राया और उसके चेहरे पर जा जमा।

ग्रिगोरी हाँफता हुआ दौड़कर आँगन में आया और ग्राश्का के सवालों के जवाब दिए बिना जागीर छोड़कर चल दिया। वह एक वस्ट निकल गया कि अक्सीनिया ने उसे जा पकड़ा। ज़ोर-ज़ोर से हाँफते हुए वह उसकी बगल में चुपचाप चलती रही। बीच में कभी-कभी उसकी आस्तीन पकड़कर खींच लेती। सड़क जहाँ दूसरी सड़क से मिली वहाँ किनारे पर बनी भूरे रंग की समाधि के पास वह अजीब-से दूर-दूर के-से स्वर में बोली ग्रीशा माफ कर दो मुझे।

उसने दाँत पीसे कन्धे झटकाये और अपना ओवरकोट का कालर उलटा। अक्सीनिया समाधि के पास ही खड़ी रह गई। ग्रिगोरी ने एक बार भी पीछे मुड़कर नहीं देखा। अक्सीनिया के हाथ फल-के फल रह गए।

२४

तातारस्की गाँव की पहाड़ी की चोटी पर पहुँचने पर भी अपने हाथों में चाबुक देखकर उसे आश्चर्य हुआ। उसने चाबुक फेंक दिया और नीचे उतरकर गाँव में आ गया। लोगों ने अपने चेहरे शीशों में सटा लिए। लोग उसे देखकर आश्चर्य में पड़ गए। उसके सामने से जाती स्त्रियाँ निकलीं उन्होंने सिर झुकाकर उसका अभिवादन किया।

वह अपने अहाते में पहुँचा कि एक काली आँखों वाली खूबसूरत-सी लड़की उसे देखते ही उसकी ओर दौड़ी उससे लिपट गई और उसने उसके सीने में अपना मुंह छिपा लिया। उसके गालों पर हाथ रख कर ग्रिगोरी ने उसका सिर उठाया तो वह दून्या निकली।

पन्तली प्रोकोफिएविच मचकता हुआ सीढ़ियों से नीचे उतरा। दिमाग में कानों में घर में ज़ोर-ज़ोर से रोती अपनी माँ का स्वर पड़ा। दाएँ हाथ दून्या चूमती रही इसलिए बाएँ हाथ से उसने पिता को सीने से

लगाया।

सीढ़ियाँ जान-पहचान ढंग से चरमराई। ग्रिगोरी ड्योढ़ी पार कर बरसाती में आया। उसकी बूढ़ी माँ सड़किया की तरह तेजी से भागती आई। उसके ओवरकोट के पल्लों को आँसुओं से तर करते हुए उसने बेटे को भुजाओं में कस लिया और अपने ढंग से कहने लगी। माँ की यह भाषा केवल माँ ही समझ सकती है। इस भाषा को शब्दों में बाँधना कठिन है। दरवाजे के पास ही चौखट पकड़े खड़ी मिली नताल्या। उसका चेहरा पीला था और उसके पैर डगमगा रहे थे। उस पर ग्रिगोरी ने उस इस तरह उड़ती-उड़ती-सी बुझी-बुझी-सी नजर से देखा कि वह ज़मीन पर ढह पड़ी।

उस रात पन्तेली ने अपनी पत्नी को कोहनियाया और धीमे से बोला, "चुपचाप जाकर देख आओ कि दोनों एक साथ लेटे हैं या नहीं?"

"मैंने पलंग पर उनका बिस्तरा लगा दिया था।"

"पर जाकर देख तो आओ जरा, देख आओ!"

इलीनिचिना उठी और उसने बड़े कमरे के दरवाजे की संध से अन्दर झाँककर देखा। लौटकर बोली, "दोनों साथ सो रहे हैं।"

"शुक्र है, लाख-लाख शुक्र है!" कोहनियों के बल उठकर अपने सीने पर क्रॉस बनाते हुए बूढ़ा बोला।